अनुपमा

श्री सुन्दरलाल दुगड़ अभिनन्दन ग्रंथ

सहृदय, मितव्ययी, उदारमना, विनम्रवान
सेवा, सहयोग और स्नेह के संगम, समाजबन्धु, उद्योगपति

श्रेष्ठिवर्य श्री सुन्दरलाल दुगड़

का सादर अभिनंदन

सेवा, सहयोग और स्नेह के पर्याय

मरुधर प्रान्त का देशनोक गाँव, विश्व विश्रुत माँ करणी की कर्मस्थली, मोती और सूरज का यह लाल तन, मन से ही नहीं अपितु सर्वांग सुन्दर है। सेवा, सहयोग और स्नेह का पर्याय यह व्यक्तित्व स्वनिर्मित और स्वावलम्बी है तथा राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के 'वैष्णव जन' का प्रतीक है।

कथनी और करनी के एक रूप

प्रदर्शन, पाखण्ड और विज्ञापन से सर्वथा दूर कथनी और करनी के एक रूप श्री सुन्दरलाल दुगड़ का कर्मठ सेवा भावी व्यक्तित्व समय की कसौटी पर सदैव खरा उतरा है। कष्ट-काठिन्यों, विपुल-वात्याचक्रों की अग्नि परीक्षा में तप कर कुन्दन की तरह दैदीप्यमान यह बहु आयामी, मृदु एवं मितभाषी, सहज सरल व्यक्तित्व भगवान महावीर की वाणी 'समयं गोयम मा पमायए' के समुज्ज्वल स्वरूप है।

सम्यक् विभाजनम् इति दानम् की प्रकृष्ट प्रतिमा

शिक्षा, धर्म, चिकित्सा एवं मानव क्या प्राणिमात्र की सेवा का प्रत्येक अवसर श्री दुगड़ की उत्कृष्ट उदारता, दरियादिली और सहृदयता से अनुप्राणित है। न केवल पश्चिम बंगाल अपितु भारत का प्रत्येक प्रान्त उनके सम्यक् विभाजनम् इति दानम् के ज्वलन्त प्रमाण और कीर्ति का अक्षय कीर्तिस्तम्भ है। समय के ललाट पर लिखा कालजयी अमिट लेख है।

गागर से विराट की यात्रा

सेवा, सहयोग और स्नेह के सुगन्ध: अजातशत्रु, उद्योगपति

श्रेष्ठिवर्य श्री सुन्दरलाल दुगड़

का सादर अभिनंदन

सेवा, सहयोग और स्नेह के पर्याय

मरुधर प्रान्त का देशनोक गाँव विश्व विश्रुत माँ करणी की कर्मस्थली, मोती और सूरज का यह लाल तन, मन से ही नहीं अपितु सर्वांग सुन्दर है। सेवा, सहयोग और स्नेह का पर्याय यह व्यक्तित्व स्वनिर्मित और स्वावलम्बी है तथा राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के 'वैष्णव जन' का प्रतीक है।

कथनी और करनी के एक रूप

प्रदर्शन, पाखंड और विज्ञापन से सर्वथा दूर कथनी और करनी के एक रूप श्री सुन्दरलाल दुगड का कर्मठ सेवा भावी व्यक्तित्व समय की कसौटी पर सदैव खरा उतरा है। कष्ट-काठिन्य, विपुल-वात्यचक्रो की अग्नि परीक्षा मे तप कर कुन्दन की तरह देदीप्यमान यह बहु आयामी, मृदु एव मितभाषी, सहज, सरल व्यक्तित्व भगवान महावीर की वाणी 'समय गोयम मा पमायए' का समुज्ज्वल स्वरूप है।

सम्यक विभाजनम् इति दानम् की प्रकृष्ट प्रतिमा

शिक्षा, धर्म, चिकित्सा एव मानव क्या प्राणिमात्र की सेवा का प्रत्येक अवसर श्री दुगड की उत्कृष्ट उदारता, दरियादिली और समरसता मे अनुप्राणित है। न केवल पश्चिम बंगाल अपितु भारत का प्रत्येक प्रान्त उनके सम्यक् विभाजनम् इति दानम् का ज्वलन्त प्रमाण और कीर्ति का अक्षय कीर्तिस्तम्भ है। समय के ललाट पर लिखा कालजयी अमिट लेख है।

वामन से विराट की यात्रा

श्री दुगड का जीवन वामन से विराट की यात्रा का ऐसा जाज्वल्यमान पृष्ठ है जो सर्वथा सत्य और नितान्त खुला है, आपनत्व, सौमनस्य, सहिष्णुता और धैर्य का पावन सगम है। समता, मिलनसारिता एव मृदुभाषिता का अद्भुत समन्वय गगा, जमुना और सरस्वती की तरह निर्मल और स्फटिक वत पारदर्शी। कुसुम-सी सहधर्मिणी, विनोद-सा सपूत और रूपरेखा-सी सुपुत्री पाकर श्री दुगड का जीवन धन्य है।

श्री दुगड आचार्य श्री अमितगति के इस श्लोक के प्रतीक है–

> सत्त्वेषु मैत्री, गुणिषु प्रमोदम्, क्लिष्टेषु जीवेषु कृपा परत्व।
> माध्यस्थ भावो विपरीत वृत्तौ, सदा ममात्मा विदधातु देवा।

श्री दुगड [illegible] जैन सभा, [illegible] के प्राण और आधार [illegible]। ५ फरवरी २००८ को इन्होंने ७५ वर्ष [illegible] समाज और राष्ट्र की सेवा मे [illegible]। [illegible] अभिनन्दन पत्र, सम्मान पत्र [illegible] समर्पित है।

सरदारमल कांकरिया
अध्यक्ष

विनोद मिन्नी
मंत्री

श्री [illegible] जैन सभा, कोलकाता

रविवार, १० फरवरी २००८, साइन्स सिटी सभागार, कोलकाता

दानपाथेय : श्री सुन्दरलाल दुगड़

सामाजिक क्षेत्र मे कार्य करते हुए मुझे पाँच दशक का दीर्घ अनुभव है। इस अवधि मे विभिन सामाजिक आर्थिक एव शैक्षणिक सस्थानो तथा ट्रस्टो आदि के माध्यम से शिक्षा, सेवा और चिकित्सा के क्षेत्र मे कार्य करने और आर्थिक ससाधन प्राप्त करने का भी मुझे एक दीर्घ अनुभव है। सामाजिक क्षेत्र मे कार्य करते हुए अनेक व्यक्तियो और दानदाताओ से निकट सम्पर्क रहा है। करोडो-करोडो रुपये का अनुदान उदारमना महानुभावो से प्राप्त कर रचनात्मक कार्यो मे विनियोजित करने का मुझे अच्छा अनुभव रहा है। कई व्यक्तियो से मै प्रभावित भी हूँ किन्तु इन सब मे 'सुन्दरलाल दुगड' का नाम लेते हुए मुझे अत्यन्त उल्लास होता है।

मैंने अपने सामाजिक जीवन मे सुन्दरलाल दुगड जैसा उदारमना व्यक्ति नही देखा। मैंने इन्हे सदैव अपने अनुज के रूप मे ही महसूस किया है। सामाजिक कार्यो मे सहभागिता की प्रेरणा यद्यपि मुझे मेरे अग्रज श्री पारसमलजी काकरिया से मिली किन्तु उसमे उल्लास एव नवीन सचार सुन्दरलाल दुगड की उदरतापूर्ण दान देने की शैली से हुआ है। मेरे आग्रह पर कई दानदाताओ ने बडी मात्रा मे अर्थ सहयोग किया है, उन सबको स्मरण करते हुए भी जब मै इनकी ओर दृष्टि डालता हूँ तो यह कहने मे मुझे जरा भी सकोच नही है कि मै किसी भी रचनात्मक कार्य हेतु इनसे अनुदान दिलवाना चाहूँ, यह बात ये मुझसे सुनने की अपेक्षा मेरी भावना को समझ कर तत्काल ही उदारतापूर्वक अनुदान देने मे सदैव अग्रणी रहते है। 'नेकी कर और भूल जाओ' इस उक्ति को इन्होने अपने जीवन-व्यवहार मे आत्मसात कर रखा है। विगत एक दशक मे सम्पूर्ण भारत के विभिन्न प्रान्तो मे सम्प्रदाय निरपेक्ष दृष्टि से इन्होने स्कूलो, हॉस्पीटलो, छात्रावासो, स्थानको, मदिरो आदि मे करोडो रुपये के स्थाई निर्माण कार्य करवाये है। साथ ही निर्धन एव असहाय तथा विधवाओ को आर्थिक सहयोग, छात्रो को शैक्षणिक सहयोग आदि देने मे ये सदैव अग्रणी रहते है। किसी को भी अनुदान देने मे यश और प्रतिष्ठा प्राप्ति करने का अश मात्र भाव भी मैंने इनमे कभी नही देखा। ये सदैव निस्पृह भाव से अनुदान देते है। इनकी दानशीलता और उदारवृत्ति की प्रशसा करने की अपेक्षा मै जिनदेव से कामना करता हूँ कि लक्ष्मी की कृपा इन पर सदैव बनी रहे और ये इसी प्रकार उदारता पूर्वक अनुदान देकर समाज के जरुरतमद व्यक्तियो और सस्थाओ को सम्बल प्रदान करते रहे। भाई सुन्दरलालजी सच्चे अर्थो मे दान पाथेय है। इनकी दान देने की शैली और प्रवृत्ति अन्यो के लिए अनुकरणीय है।

मै श्री सुन्दरलालजी दुगड के प्रति अपना आत्मीय भाव प्रकट करता हूँ और जिनदेव से कामना करता हूँ कि ये सस्वस्थ शतायु हो और अपने आत्मबल से अर्जित सम्पत्ति का विनियोजन इसी प्रकार रचनात्मक एव सृजनात्मक कार्यो मे सदैव करते रहे।

विगत दो-तीन वर्षो से सभा श्री सुन्दरलालजी दुगड के सार्वजनिक अभिनन्दन के लिए प्रयत्नशील थी किन्तु श्री दुगडजी की स्वीकृति न मिलने के कारण यह सभव नही हो पा रहा था। अन्तत उन्हे समझाने-बुझाने एव सही समय पर यह कार्य सपादित करने के लिए न चाहते हुए भी उन्होने इस शर्त के साथ स्वीकृति प्रदान की कि किसी आयोजन मे उनके अभिनन्दन का कार्यक्रम रखा जाय फलत सभा ने अपने अष्ट दशकीय कर्म सकुल जीवन की पूर्णता पर अमृत महोत्सव आयोजित कर श्री दुगडजी का अभिनन्दन करने का निर्णय किया। सयोजन का भार मुझे सौपा गया जिसे मुझे स्वीकारना पडा।

एव महधर्मिनी ही नही है अपितु उनके सुख-दु ख की सहभागी है, हमकदम है और है एक सद्गृहिणी, वात्सल्यमयी माँ और करुणामयी शक्ति रूपा देवी। सुपुत्र विनोद है होनहार बिरवान के होत चिकने पात, सुपुत्री रूपरेखा प्राण है दुगडजी की, सौभाग्यदायिनी है।

और चमत्कार हो गया। घाटा लाभ मे परिणत हो गया।

कहते है–

भवन्ति नम्रास्तरव फलोद्गमै
र्नवाम्बुभिर्दुर विलम्बिनो घना ।
अनुद्धता सत्पुरुष समृद्धि
स्वभाव एतैव परोपकारिणाम्।

फल क भार मे लदकर वृक्ष झुक जाते है, जलभार से बादल बरस कर पृथ्वी को परितृप्त करते है। सज्जन पुरुष समृद्धि पाकर परोपकार मे रत हो जाते है, यह उनका स्वभाव है। श्री दुगड की समृद्धि भी लोक-कल्याण एव पर पीडा हरने मे निरन्तर लगी रहती है। श्री दुगडजी सच्चे अर्थो मे वैष्णव जन है। जो परपीडा जानता है एव उसको शान्त करता है, वही तो वैष्णव जन है। **'वैष्णव जन तो तेने कहिये जे पीड पराई जाणे रे'**।

बुद्ध की करुणा, महावीर की अहिंसा एव राष्ट्रपिता गाधी जी के ट्रस्टीसीप मे विश्वास रखने वाले श्री दुगड बहुत कम बोलते है, भले ही वे बहुत जानते है। महाकवि शेक्सपीयर का यह कथन उनपर शत प्रतिशत चरितार्थ होता है कि –

Have more than thou showest
Speak less than thou knowest

श्री दुगड यह भलीभाति जानते है कि शरीर क्षण भगुर है किन्तु गुण कीर्ति स्थायी है– **'शरीर क्षण विध्वसि, कल्पात स्थायिनो गुण**

मान-गुमान, गर्व-अहकार, आडबर-प्रदर्शन, विज्ञापन-प्रलोभन से सर्वथा दूर अकिचन एव अमानी है दुगड 'सबहि मानप्रद आप अमानी'

विनय निरहकार, निस्पृह एव निर्लेपता श्री दुगड के स्वाभाविक भूषण एव अलकार है। उनका जीवन निम्न श्लोक का प्रतिरूप है।

जाड्य धियो हरति सिचति वाचि सत्य
मानोन्नति दिशति पापमाकरोति।
चेत प्रमादयति दिक्षु तनोति कीर्ति,
सत्समगति कथय कि न करोति पुसाम्।

विद्युत-वज्रपातों, भीषण झझावाता एव दुर्धर्ष दुर्दिनो म भी श्री दुगड सदैव अविचल, अडिग एव अकम्प रहे है। आधी-तूफानो म भी उनका मन दीप सा प्रज्वलित रहा है, दीप्तिमान रहा है और कातिमान बनकर अधकार मे भी सदैव प्रकाश विकीर्ण किया है। धनीभूत अधकार हो या राशि-राशि उत्ताल तरंग उनकी जीवन नौका कभी डगमगाई नही अविचलित रही और आज भी अविचलित है वस्तुत दिनकर के शब्दो मे वे पौरुष के पुजीभूत ज्वाल है।

[illegible] है–

अवयव की दृढमास पेशिया उर्जस्वित था वीर्य अपार।
स्फित शिरायें स्वस्थ रक्त की, होता था जिन मे सचार।।

एव सहधार्मिनी ही नही है अपितु उनके सुख-दु ख की सहभागी है, हमकदम है और है एक सद्गृहिणी, वात्सल्यमयी माँ और करुणामयी शक्ति रूपा देवी। सुपुत्र विनोद है होनहार बिरवान के होत चिकने पात, सुपुत्री रूपरेखा प्राण है दुगडजी की, सौभाग्यदायिनी है।

और चमत्कार हो गया। घाटा लाभ मे परिणत हो गया।

कहते है–

भवन्ति नम्रास्तरव फलोद्गमै
र्नवाम्बुभिर्दुर विलम्बिनो घना ।
अनुद्धता सत्पुरुष समृद्धि
स्वभाव एतैव परोपकारिणाम्।

फल के भार से लदकर वृक्ष झुक जाते है, जलभार से बादल बरस कर पृथ्वी को परितृप्त करते है। सज्जन पुरुष समृद्धि पाकर परोपकार मे रत हो जाते है, यह उनका स्वभाव है। श्री दुगड की समृद्धि भी लोक-कल्याण एव पर पीडा हरने मे निरन्तर लगी रहती है। श्री दुगडजी सच्चे अर्थो मे वैष्णव जन है। जो परपीडा जानता है एव उसको शान्त करता है, वही तो वैष्णव जन है। **'वैष्णव जन तो तेने कहिये जे पीड पराई जाणे रे'**।

बुद्ध की करुणा, महावीर की अहिसा एव राष्ट्रपिता गाधी जी के ट्रस्टीसीप मे विश्वास रखने वाले श्री दुगड बहुत कम बोलते है, भले ही वे बहुत जानते है। महाकवि शेक्सपीयर का यह कथन उनपर शत प्रतिशत चरितार्थ होता है कि –

Have more than thou showest
Speak less than thou knowest

श्री दुगड यह भलीभाति जानते है कि शरीर क्षण भगुर है किन्तु गुण कीर्ति स्थायी है– **'शरीर क्षण विध्वसि, कल्पात स्थायिनो गुण**

मान-गुमान, गर्व-अहकार, आडबर-प्रदर्शन, विज्ञापन-प्रलोभन से सर्वथा दूर अकिंचन एव अमानी है दुगड 'सबहि मानप्रद आप अमानी'

विनय निरहकार, निस्पृह एव निर्लेपता श्री दुगड के स्वाभाविक भूषण एव अलकार है। उनका जीवन निम्न श्लोक का प्रतिरूप है।

जाड्य धियो हरति सिचति वाचि सत्य
मानोन्नति दिशति पापमाकरोति।
चेत प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिं,
सत्ससगति कथय कि न करोति पुसाम्।

विपुल-वात्याचक्रों, भीषण झझरवातो एव दुर्धर्ष दुर्दिनो मे भी श्री दुगड सदैव अविचल, अडिग एव अकम्प रहे है। आधी-तूफानो मे भी उनका मन दीप सदा प्रज्ज्वलित रहा है, दीप्तिमान रहा है और कातिमान बनकर अधकार मे भी सदैव प्रकाश विकीर्ण किया है। धनीभूत अधकार हो या राशि-राशि उत्ताल तरगे उनकी जीवन नौका कभी डगमगाई नही अविचलित रही और आज भी अविचलित है वस्तुत दिनकर के शब्दो मे वे पौरुष के पूजीभूत ज्वाल हैं।

प्रसादजी के शब्दो मे कहा जा सकता है–

अवयव की दृढमास पेशिया उर्जस्वित था वीर्य अपार।
स्फित शिराये स्वस्थ रक्त की, होता था जिन मे सचार।।

कविवर सुमित्रानदन पत के शब्दो मे उनके जीवन का उद्देश्य है–

जग पीडित रे अति दु ख से
जग पीडित रे अति सुख से
मानव वट जाये सुख दु ख औ दु ख सुख मे

अत्यन्त सुख भी पीडाकारी है एव अत्यधिक दु ख भी महाकष्टदायी है अत सुख और दु ख को बाटकर मनुष्य सुखी बन सकता है। यह समत्व, यह समता, यह समरसता ही विश्व को सुखी और समृद्ध वना सकती है। कामायनी के प्रणेता जयशकर प्रसाद कहते है–

शक्ति के विद्युत कण जो व्यस्त विकल बिखरे है, हो निरूपाय
समन्वय उनका करे समस्त विजयनी मानवता हो जाय।

श्री दुगड का जीवन आत्म निर्मित है। वीहड और कटकाकीर्ण पथ मे उन्होने अपनी राह स्वय बनाई है निर्भय, निडर और निश्चल रहकर बधु-बाधवो सगेसम्वन्धियो के लिए ही नही अपितु हर पीडित सन्त्रस्त और असाध्य रोगी के लिए कल्पतरु है श्री दुगड। अर्भाभाव के कारण उच्चाध्ययन से वचित छात्रो के लिए कामधेनु है श्री दुगड। माखन लाल चतुर्वेदी एक भारतीय आत्मा' की काव्य पक्ति–

'दो हथेली है, कि धरती गोल कर दो

श्री दुगड मानते है कि अथक अध्यवसाय, दृढसकल्प शक्ति एव निष्कलुष निश्चय से कठिन से कठिन समस्याओ को सुलझाया जा सकता है। धैर्य, सहिष्णुता, प्रवन्धपटुता, कार्य दक्षता एव उदारता से श्री दुगड ने काल के भाल पर, समय की शिला पर जो लेख लिखे है, जो चिन्ह अकित किये है वे चिरस्थायी है, अमिट है और है काल जयी। कालिकाल गुरु आचार्य हेम चन्द्र के शब्दो मे कहा सकता है–

भव बीजाकुर जनना रागधा,
क्षणमुपागता यस्य
ब्रह्मा वा विष्णुर्वा हरौ
जिनो वा नमस्तस्मै।

ससार मे विचरण करने, परिभ्रमण करने, पर्यटन करने के कारण जिनके रागादि नष्ट हो गये है, क्षय हो गये है उसे मै नमन करता हूँ, नमस्कार करता हूँ, प्रणाम करता हूँ चाहे वे ब्रह्मा हो, विष्णु हो, शिव हो या जिन हो। ऐसे श्री दुगड को हमारा कोटि-कोटि अभिवादन, नमन एव प्रणाम। वे पाच दिन पूर्व ५ फरवरी २००८ को ५५वे वर्ष मे प्रवेश कर चुके है, मोती की काति एव सूरज के तेज से समन्वित यह सुन्दर दीर्घायु हो, स्वस्थ हो, जीवेम, शरद शतम्।

श्री दुगड का यह अभिनन्दन ग्रन्थ आपको एव सुधी पाठको को समर्पित करते हुए अत्यन्त प्रसन्नता है। सपादक मडल के प्रयत्नो का एव सयोजक महोदय की प्रेरणा का प्रतिरूप है यह अभिनन्दन ग्रन्थ। विद्वानो के विचारो से वेष्टित यह ग्रन्थ आपको कैसा लगा, जानकर प्रसन्नता होगी। मै विद्वानो के प्रति अपनी भूयसी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

इसे सर्वाग सुन्दर बनाने मे श्री पद्म वावू नाहटा, उनके सहयोगी श्री मनोज डागा एव मुद्रक तथा प्रकाशक श्री श्वेताम्वर स्थानकवासी जैन सभा के प्रति केवल आभार प्रकट कर हम अपने कर्तव्य से मुक्त नही हो पायेगे। श्री रिधकरणजी बोथरा तो नींव के पत्थर है रीढहै उनके प्रति आभार प्रकट करना धृष्टता ही कहलायेगी। श्री राधेश्याम मिश्र के प्रति कृतज्ञता-ज्ञापन उनके महत्व को कम करना होगा। आचार्य अमित गति के इस श्लोक से अपनी कलम को विराम दे रहा हूँ-

सत्वेषु मैत्री गुणीषु प्रमोदम,
क्लेष्टेषु जीवेषु कृपा परत्व,
माध्यस्थ भाव विपरीत वृत्तौ
सदाममात्मा विदधातु देवा।

भूपराज जैन

श्री सरदारमल काकरिया
सयोजक
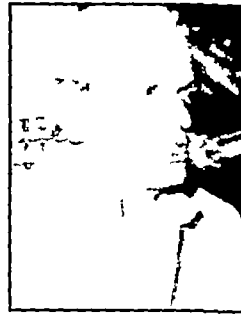
डॉ सागरमल जैन
परामर्श दाता

डॉ कृष्णबिहारी मिश्र
परामर्श दाता

सम्पादक मण्डल

श्री भूपराज जैन

श्री रिधकरण बोथरा
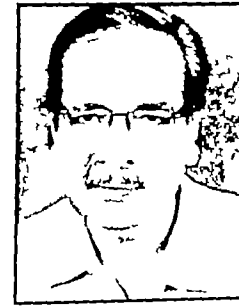
श्री पदमचन्द नाहटा
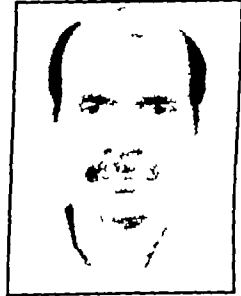
डॉ प्रेमशकर त्रिपाठी

श्री प्रकाश चिडालिया

डॉ वसुमति डागा

डॉ इन्दु जाशी

श्री राधेश्याम मिश्र
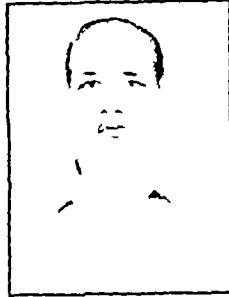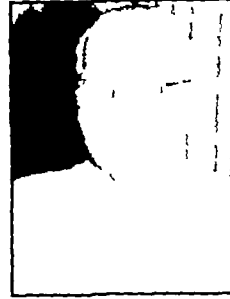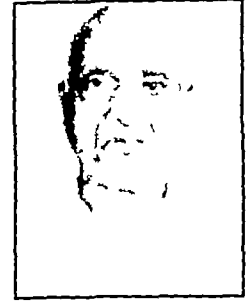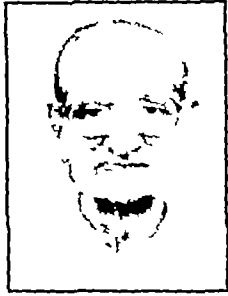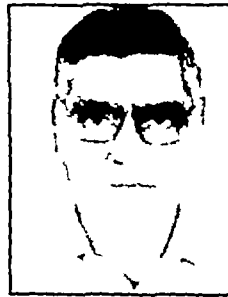
श्री पुष्करलाल केडिया

श्री सतोष जैन

श्री गौतम दुधोरिया

श्री थानमल बोथरा

श्री तरुण सेठिया
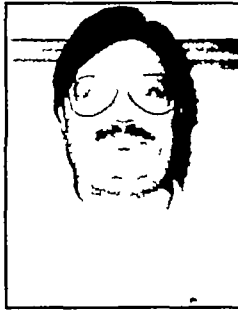
श्री विनोद बैद

श्री पानमल मालू
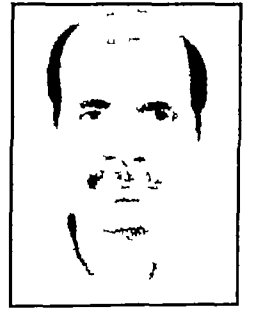
डॉ प्रेमशकर त्रिपाठी

श्री विश्वम्भर नेवर
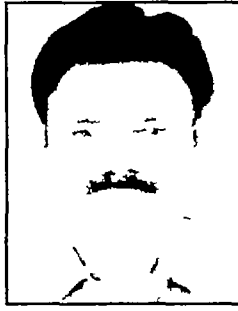
श्री प्रकाश चिडालिया

श्री आनन्द ओसतवाल
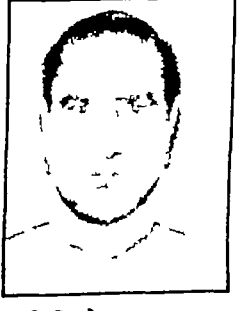
श्री तिलोकचन्द डागा
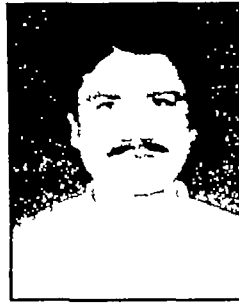
श्री सुरेन्द्र दुगड

श्री सुरेन्द्र चौरडिया

श्री सदीप भृतोडिया

श्री बी आर नाहर

अभिनन्दन समिति

श्री मूलचद राठी
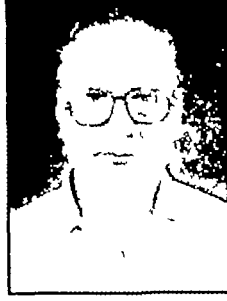
श्री टीकमचद डागा
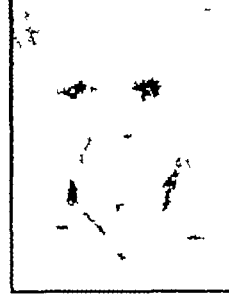
श्री भूपतभाई कमानी

श्री विमल लाठ

श्री विजय दम्माणी

श्री मोहनलाल दुजारी

श्री भवरलाल सिघी

श्री गुलाबचन्द वैद

श्री रूपचन्द सावनसुखा

श्री कातिलाल मुकीम

श्री अश्विन भाई देसाई
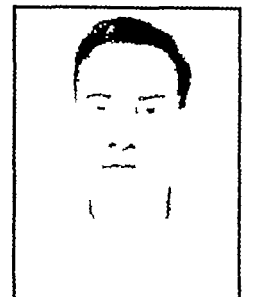
श्री सजय नखत

श्री कुशलचद बाठिया

श्रीमति फूलकुवर काकरिया

डॉ वसुमति डागा
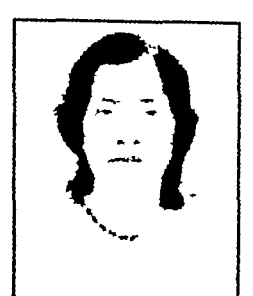
डॉ किरण सिपानी
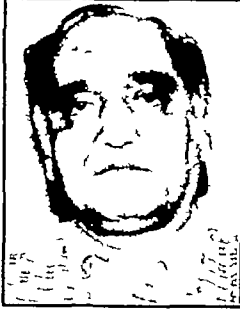
श्री विनोद मित्री

श्री रिधकरण बोथरा
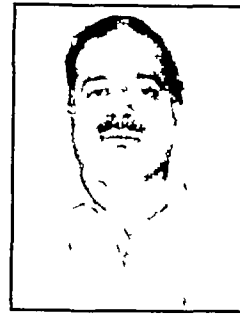
डॉ सुरेश सिसोदिया

श्री भवरलाल दुगड

श्री हनुमानमल सेठिया

श्री फागमल अभाणी

श्रीमति तारा दुगड

श्रीमति लीलादेवी बोथरा

श्री शिवकुमार जैन

डॉ इन्दु जोशी

डॉ कृष्णबिहारी मिश्र
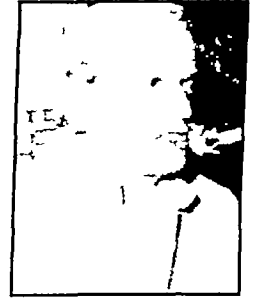
डॉ सागरमल जैन
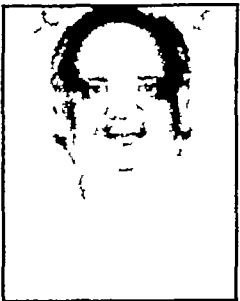
श्री राधेश्याम मिश्र

श्री भूपराज जैन

श्रीमती मीना पुरोहित

श्री जयचन्दलाल रामपुरिया

श्री अशोक मित्री

आशीर्वाद

'नेकी कर कुएँ मे डाल' इस उक्ति को चरितार्थ करते हुए सघरत्न, समाज गौरव मूकसेवी श्री सुन्दरलाल दुगड ने अपने जीवन काल मे अगणित सुन्दर कार्य किए हैं। नाम की लालसा अथवा यशलिप्मा से रहित निष्कामभाव से कार्य करके श्री दुगड ने समाज के समक्ष प्रेरक एव अनुकरणीय आदर्श उपस्थित किया है।

मेरे कोलकाता चातुर्मास मे तथा तत्पश्चात् भी मेरे प्रत्येक आदेश को विनम्रतापूर्वक स्वीकार करके श्री दुगड ने प्रत्येक कार्य मे उदारतापूर्वक अग्रणी भूमिका निभाई है। उनका हृदय पूर्णतया साम्प्रदायिक सद्भावना से ओत-प्रोत है।

मै इतना अवश्य कहना चाहूँगा कि वर्तमान विषमकाल मे ऐसा देवतापुरुषतुल्य व्यक्तित्व मिलना अत्यत ही विरल है, जिनका सम्पूर्ण जीवन सघ, समाज, शासन तथा राष्ट्र की सेवा के लिए समर्पित है। समाज उनकी स्वर्णिम सेवाओ को कभी विस्मृत नहीं कर पाएगा। ऐसे कर्मयोगी, दानवीर भामाशाह, नि स्पृह सेवाशील, शासन गौरव, आदर्शगुरुभक्त श्री सुन्दरलालजी दुगड के बहुआयामी व्यक्तित्व का अभिनन्दन करना सकल समाज के लिए अत्यन्त गौरवस्पद विषय है।

खुडाला (राज)   आचार्य विजय नित्यानद सूरि

हमारे यहाँ पर परम पूज्य युगद्रष्टा आचार्य प्रवर श्री ज्ञानचन्द्रजी म सा आदि ठाणा-८ सुख-शाति से विराजमान है।

विशेष – आपका पत्र प्राप्त हुआ। आप एव अभिनदन समारोह समिति के द्वारा किये जा रहे "गुणिपु प्रमोद" सपृक्त सद्प्रयास देश एव समाज मे गुण विकास की दिशा मे मील का पत्थर सावित होगा।

मितभाषी, उदारमना श्री सुन्दरलालजी दुगड से एक लम्बे अर्से से सम्पर्क चला आ रहा है। उनका जब-तब दर्शनार्थ आना हो ही जाता है। श्रीमान् दुगडजी मे एक नहीं अनेक विशेषताएँ परिलक्षित होती है। सरल-सौम्य व्यक्तित्व के साथ धन की सपन्नता के वीच धर्म के प्रति निष्ठा एव गुरुजनो के प्रति अहोभाव उनकी पुण्यशीलता का परिचायक है।

जिन्दगी मे उतार-चढाव की अनुभूति को भी समता मे निमज्जित कर मुस्कराते रहना आपका स्वभाव है। साप्रदायिक परिवेश मुक्त होकर सदा आपने "गुण पूजा" को महत्व दिया है। जैन श्रावक के लिए चार महत्वपूर्ण आचरणीय सूत्र वतलाए है–उसमे प्रथम है दान। आपमे दान देने की प्रवल भावना रहती है। किसी भी जन हितार्थ, प्राणी कल्याणार्थ या फिर सामाजिक उद्धार हेतु कोई भी कार्य हो, उसे सतुष्ट कर आगे वढाने का आपका लक्ष्य है। अधिकाशत व्यक्तियो मे अपना नाम हो, यह भावना प्रवल रहती है लेकिन श्री दुगडजी का व्यक्तित्व उसका अपवाद नजर आता है। ऐसे व्यक्तित्व का मूल्याकन सम्यक् दृष्टि भाव का सपोषक है।

भगवान महावीर ने अपने ही अनुयायी श्रावक कामदेव के गुणो की प्रशसा अपने पूजनीय साधु-साध्वीवर्ग के सामने की थी। अत गुणो का सम्मान एक शाश्वत परपरा है।

प्रेषक अनूपचन्द सेठिया   पू ज्ञानमुनि म सा का धर्मलाभ

गणिवर श्री महिमाप्रभसागरजी म० सा० आशीर्वाद देते हुए

आचार्य श्री विजय नित्यानन्दजी म० सा० का घर पर स्वागत करते हुए

शिखरजी में आ० कल्याणसागरजी की निश्रा में क्षुल्लक दीक्षा समारोह में दीक्षार्थी के माता पिता के वेश में श्री सुन्दरलाल दुगड़ व श्रीमति कुसुमदेवी दुगड़, साथ में है माताजी

प्रवर्तिनी श्री चन्द्रप्रभाश्री जी म० सा० से आशीर्वाद लेते हुए

आचार्य श्री चन्दनाजी से आशीर्वाद ग्रहण करते हुए

मदर टेरेसा के साथ वार्तालाप करते हुए
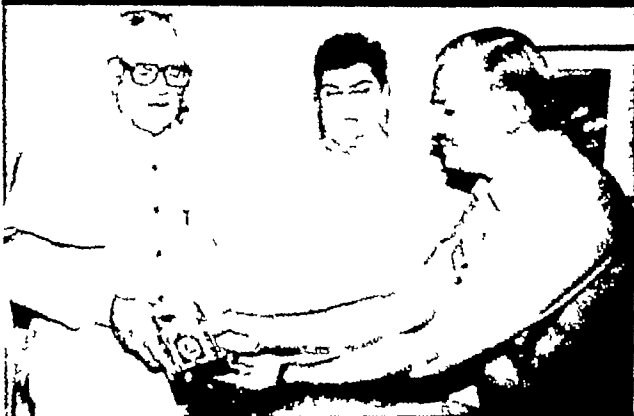
महामहिम उपराष्ट्रपति श्री भैरोंसिंह शेखावत को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए

श्री जैन हॉस्पीटल के आई.टी.यु के उद्घाटन के अवसर पर पत्रकारों से बात करते हुए

पूर्वकृत पुण्य से प्राप्त सम्पत्ति का सद्व्यय पुण्यकार्यों मे करने वाले भाग्यवान पुण्यानुबधीपुण्य उपार्जित करते है। सत्ता, सम्पत्ति और स्वामित्व की प्राप्ति होने पर भी विनम्रता, दया, मानवता तथा समाजोद्धार की भावना विरले लोगो मे ही मिलती है। समाजसेवी श्री सुन्दरलालजी दुगड का व्यक्तित्व भी ऐसे सद्गुणो से सुवासित बना हुआ है। सारे समाज को जिन पर गर्व है ऐसे श्री दुगड का जितना अभिनन्दन तथा अनुमोदन किया जाए उतना ही कम है। मेरी ओर से भी शुभकामनाएँ।

बडौदा — विजय वीरेन्द्र सूरि का धर्मलाभ

सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री सुन्दरलालजी दुगड का व्यक्तित्व किसी परिचय का मोहताज नहीं। उनके श्रेष्ठतम कार्यो से समाज खूब लाभान्वित हो रहा है। दीन दुखियो के कल्याण हेतु रोगियो के आरोग्य, छात्रो के सर्वांगीण विकास तथा सघ-समाज के प्रत्येक कार्य हेतु जिनका तन-मन-धन समर्पित है ऐसे मूक समाजसेवी आदर्श कर्मयोगी के प्रति अभिनन्दन पुष्प अर्पित करके समाज अपने दायित्व का सुन्दर निर्वाह करने जा रहा है।
मेरी ओर से भी शुभकामनाएँ स्वीकार करे।

बडौदा — विजय वसन्त सूरि का धर्मलाभ

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि समाज-रत्न श्री सुन्दरलालजी दुगड का कोलकाता महानगर में सार्वजनिक अभिनदन हो रहा है। भाई श्री सुन्दरलालजी हमारे जीवन के करीबी लोगों में से एक है। इसी वजह से हम इनके प्रभावी एव विनम्र व्यक्तित्व से परिचित है। कोलकाता धर्म-सघ के जब हम "टॉप टेन" श्रावकों की लिस्ट बनाते है तो उनमें श्री सुन्दरलालजी का नाम प्रथम पक्ति में आता है। उनकी दानवीरता तो जग-विख्यात है, पर इससे भी बढकर बात यह है कि वे समाज के हर तबके एव स्तर के लोगों के काम आते है। शासन-प्रशासन में उनकी जबरदस्त पहुँच है। समाज का कोई भी व्यक्ति जब भी किसी मुसीबत में फसता है, ये उसकी हर तरह की समस्या को सुलझाने में मददगार साबित होते है। जब भी कोई इसान सकट की घडी में किसी के काम आ जाता है तो वह उसके लिए सकट मोचक हनुमान से कम नहीं होता।
वैसे श्री सुन्दरलालजी गच्छ-पथ की सकीर्णताओं से ऊपर है। इनके बारे में यदि भगवान श्री महावीर से पुछा जाए तो वे मुस्कराकर इतना ही कहेंगे कि सुन्दरलालजी दुगड जैन धर्म के एक सच्चे समर्पित सजग प्रहरी है।
हम इस समाज-रत्न के सार्वजनिक अभिनदन के अवसर पर अपनी ओर से उनकी पीठ थप-थपाते हुए उन्हें साधुवाद समर्पित करते है। हमारा उनसे अनुरोध है कि वे अपने इस अभिनदन को स्वीकार करते हुए समाज के प्रति आभार समर्पित करते समय सवा करोड जरूरतमद भाई-वहनों की शिक्षा एव आत्म-निर्भरता के लिए समर्पित करने का मानस वनाएँ।
श्री प्रभु से प्रार्थना है कि वे भाई श्री सुन्दरलालजी को आशीर्वाद प्रदान करें। श्री प्रभु उनकी रक्षा करे। हमारा स्नेह भाव भी उनके साथ है और आप सब लोगों के भी। इस अवसर पर हमारा स्वय पहुँचना होता तो हमें हार्दिक प्रसन्नता होती, पर अगर ऐसा नहीं हो पाया है तव भी आप हमारी स्नेहाभूति को स्वीकार करें

श्री चन्द्रप्रभ ध्यान निलयम्
सबोधि-धाम, कायलाना रोड, जोधपुर (राज) — -ललितप्रभ एव चन्द्रप्रभ

आशीर्वाद

ससार मे भाग्यशाली किसे कहा जाए ? क्या उसे जिसे अपार धन-सम्पदा की प्राप्ति हुई है यै उसे जो अपार धन सम्पदा को पीड़ित मानवता के उद्धार मे मुक्तहस्त से वितरित करता है। अनुभवी-ज्ञानी परोपकारी वृत्ति वाले व्यक्ति को ही भाग्यशाली मानते है। श्री सुन्दरलालजी दुगड एक सुप्रतिष्ठित उद्योगपति होते हुए भी नि स्वार्थ समाजसेवी है। उनका सम्पूर्ण जीवन परोपकार की पावनी गगा है। विना किसी लोकेषणा के उन्होने सघ-समाज के लिए अगणित कार्य किए है। उनका प्रेमभाव सभी को अपना वना लेता है। उनकी उदारता, दानशीलता, परोपकारिता तथा कर्त्तव्य परायणता के लिए सकल समाज खूव-खूब अनुमोदना तथा अभिनन्दन करता है। इस अवसर पर मेरी ओर से भी मगल आशीष स्वीकारे।

दिल्ली — विजय यशोभद्र सूरि का धर्मलाभ

समाजरत्न श्री सुन्दरलालजी दुगड एक वहुआयामी-कुशल समाजसेवी व विलक्षण व्यक्तित्व के धनी है। इन्होंने अपने जीवनकाल मे सघ सेवा, समाज सेवा, शासन सेवा के साथ लोकहितकारी जन कल्याण कार्यो के द्वारा अपने उज्ज्वल यश व कुल के गौरव को वढाया है। धार्मिक-सामाजिक-राजनैतिक-शिक्षा-चिकित्सा आदि अनेकविध क्षेत्रो मे अपनी सत्ता-सम्पत्ति-शक्ति व समय का सदुपयोग करके आदर्श कीर्तिमान स्थापित किये है। स्थान-स्थान पर मानव सेवारूप स्कूल-कॉलेज-हॉस्पीटल आदि के निर्माण मे उदारता का परिचय देते हुए आत्म आराधना-साधना-उपासना हेतु धार्मिक जैन धर्मशालाएँ-पाठशालाएँ-स्थानक आदि के निर्माण मे प्रथम भूमिका निभाई है।

वि स २००७ के कोलकाता चातुर्मास मे कई बार श्रद्धाभाव से दर्शन-वदन हेतु मेरे पास आये– अधिकाश आयोजनो मे उपस्थित हुए – जिन कार्यों के लिये इन्हे प्रेरित किया मुझे सफलता ही नजर आई।

श्री कुशलचन्दजी वाँठिया से मुझे यह सूचना मिली कि आपका अभिनदन ग्रन्थ अति अल्प समय मे प्रकाशित होने जा रहा है। विरल व्यक्तित्व, कुशल कृतित्व व ओजस्वी वाणी के धनी श्री दुगड सा के मौलिक गुणो के अभिनदन के समाचारों से प्रसन्नता सह सहज स्फुरणा हुई। सुविनीत आकृति मेरे समक्ष उभरी और शुभाशीर्वादात्मना दो शब्द लिखने का मानस वना। आप दीर्घायु होकर जीवन के प्रत्येक शुभ कार्यक्षेत्र मे सदा-सर्वदा उत्तरोत्तर प्रगति करते हुए ज्ञान-ध्यान-स्वाध्याय के द्वारा आत्म-चिन्तन को पुष्ट वनावे। आपका जीवन सद्गुणो की सौरभ व सरल, सुमधुर व्यवहार से सदा महकता रहे।

इसी शुभाशसा एव शुभाशीर्वाद के साथ आपके समुन्नत यशस्वी जीवन की मगल कामना

सदा-सर्वदा शुचि मानस मे,
शाश्वत रहता पावन प्रेम ।
इससे मानव पा सकता है,
लोकोत्तर आध्यात्मिक क्षेम ।।

श्री विचक्षण गुरु चरण रज
प्र चन्द्रप्रभाश्री

महामहिम नुरूल हसन, राज्यपाल, प. बंगाल, श्री सुभाष चक्रवर्ती, यातायात एवं क्रीड़ा मंत्री के साथ

श्री दुगड़ का सम्मान करते हुए सेठियाजी

श्री लक्ष्मन अगरवाल श्री दुगड़जी का सम्मान करते हुए
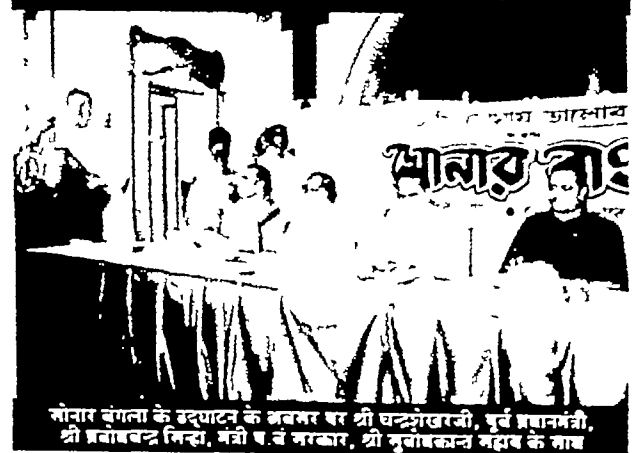
सोनार बंगला के उद्घाटन के अवसर पर श्री चन्द्रशेखरजी, पूर्व प्रधानमंत्री, श्री प्रबोधचन्द्र सिन्हा, मंत्री प. बं सरकार, श्री सुबोधकान्त सहाय के साथ

शेरे मारवाड़ी सम्मान प्रदान करते हुए श्री प्रकाश पुगलिया एवं राजस्थान वित्त आयोग के अध्यक्ष श्री माणकचन्द सुराणा

प्रवर्तिनी श्री चन्द्रप्रभाश्रीजी म.सा. के हावड़ा महामांगलिक के अवसर पर विशिष्ठ अतिथि के रूप में

राजस्थान पत्रिका के कोलकाता संस्करण के उद्घाटन के उपलक्ष में श्री गुलाबचन्दजी, श्री राजेन्द्रसिंह लोढ़ा के साथ

ओसवाल नवयुवक समिति द्वारा आयोजित समारोह में

आशीर्वाद

मृत्यु के दो ही दिन पूर्व महात्मा गॉधी अपने एक मित्र को लिखते हैं– ''जो नेता मुझे बहुमान देकर चलते थे, सत्ता के सिहासन पर बैठ जाने के पश्चात् वे ही मेरी अवगणना करने लगे है। मै कुछ भी कहता हूँ या परामर्श देता हूँ बूढे की बडबडाहट मे खप जाता है। मै जो कहता हूँ वह हसी मे गुजार दिया जाता है। उस सबसे मुझे लगता है इस देश में अब अधिक लम्बा जीने का कोई अर्थ नहीं है।''

''मैंने उनका साथ छोड दिया है, और अकेला ही निकल पडा हूँ, इस देश का क्या होना है, वह सब मैं देख सकता हूँ। पर काल समय-समय का काम करता है। मुझे अब कुछ भी नही करना है। तुम धीरज रखो, विधाता जब काम करने को उद्यत होता है, तब एक दिन मे ही सब कुछ कर डालता है। तब ये नेता मुह बाए देखते ही रह जायेगे। इन नेताओ को समझ नहीं पड रही है कि हो क्या रहा है।''

महात्मा गाधी जैसे राष्ट्र पुरुष, राष्ट्रपिता के मन मे निराश का भाव आ सकता है। फलासक्ति की कामना रह सकती है तो सामान्य कार्यकर्ताओ मे क्यो नहीं। कोई भी व्यक्ति परिवार के लिये, समाज के लिये, धर्म के लिये, सस्कृति के लिये, कला के लिये, देश के लिये, अनुसधान के लिये कार्य करता है, तो सम्मान मिलना ही चाहिये।

श्री सुन्दरलाल दुगड विरल व्यक्तित्व है। विनम्र निरभिमानी, पर-दुख कातर है। ये अपना अभिनन्दन नही चाहते है। पर समाज का कर्तव्य बनता है कि धर्म, सस्कृति, समाज देश के लिये अनवरत दान देने वाले, काम करने वाले श्री सुन्दरलाल दुगड का अभिनन्दन करे।

१९८६ की बात है, मै हावडा मे विराज रहा था। वहा दुगड जी से जुडाव हुआ। हावडा शिक्षा सदन मे अवधान प्रयोग रखा। अवधान प्रोग्राम हुआ जिसमे दुगडजी सक्रिय हुए उस समय से सम्बन्ध प्रगाढ होते गये।

मैने उस समय देखा कि दुगडजी मे धर्म के लिय, समाज के लिये कुछ करने की, करते रहने की ललक है। जज्बा है। तडफ रखते है। जहा तक मै जानता हूँ, साधु सतो मे सबसे पहले मेरे साथ जुडे। इनकी सहृदयता देखकर ही श्री महेन्द्र मुनि मिशन ने इन्हे 'युवक-रत्न' की उपाधि मदर टेरेसा के हाथो से दिलाकर नवाजा।

हमारी सस्था के उपाध्यक्ष तो है ही। सैकडो प्रोग्रामो मे भाग लिया। हमारी ही एक ऐसी सस्था है। जो कभी इनके पास मागने नही गई। कभी किसी कार्यक्रम के लिये कुछ मागा नही। इन्होने भी महानता का परिचय देते हुए श्री महेन्द्र मुनि मिशन के 'भोमिया भक्ति' प्रोग्राम मे स्वेच्छा से श्री महेन्द्र मुनि मिशन के भवन के पूरे ग्राउड फ्लोर के निर्माण का खर्च उठाने की घोषणा की,

हम अधिष्ठायक देव श्री भोमियाजी से प्रार्थना करते है इनको दीर्घायु बनाए। ये व्यवसाय मे तथा धर्म, समाज की सेवा मे दिन दुनी, रात चौगुनी प्रगति करे।

मुनि मणिकुमारजी

शुभाशंसा

राजस्थान भामाशाहो एव शूरवीरो की धरती है। प्रदेश के बीकानेर जिले के देशनोक गाँव मे जन्मे श्री सुन्दरलाल दुगड ने अपनी कर्मभूमि कोलकाता मे शिक्षा ग्रहण करने के बाद वही पैतृक व्यवसाय सभाला। तत्पश्चात् व्यावसायिक कौशल के बल पर उन्होने औद्योगिक उपक्रम को विस्तार दिया। दीन-दुखियो की निस्पृह भाव से सेवा करना, कलाकारो, साहित्यकारो, पत्रकारो, बुद्धिजीवियो का सम्मान करना किसी नि स्वार्थ व्यक्तित्व के लक्षण कहे जा सकते है। मानवीय सवेदना के इन्ही लक्षणो की बदौलत श्री दुगड ने अपनी अलग पहचान बनाई है।

आज के आपाधापी के युग मे सेवा का विलक्षण व्रत लेकर कोई व्यक्ति सामाजिक सरोकारो का निर्वाह करता है तो समाज उसे अपने आदर्श के रूप मे स्वीकार करता है। गरीब, जरुरतमद एव बीमार की मदद करने वाले शख्स निश्चित ही समाज मे सम्मान के पात्र बनते है। दानवीर श्री सुन्दरलालजी दुगड के सेवामय गौरवशाली जीवन के बारे मे उनके प्रशसको के प्रयासो से अभिनन्दन ग्रथ का प्रकाशन स्वागत योग्य है।

आशा है समाजसेवी श्री सुन्दरलाल दुगड के व्यक्तित्व एव कृतित्व के बारे मे प्रकाश्य अभिनन्दन ग्रथ युवा पीढी के लिए प्रेरणास्पद सिद्ध होगा।

शुभकामनाओ सहित,

वसुन्धरा राजे
मुख्यमत्री, राजस्थान

आई.सी.यु वार्ड के लोकार्पण के अवसर पर श्री सुन्दरलालजी के अभिनंदन करते हुए श्री रिखबदास भंसाली

श्री सुन्दरलाल दुगड विनम्रता, प्रेम, परोपकार और वात्सल्यता आदि गुणो के धनी है तथा श्री दुगड सदैव निष्पक्ष एव निस्वार्थ भाव से अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करते है। अपने इस बहुआयामी व्यक्तित्व के कारण श्री सुन्दरलाल दुगड अभिनन्दनीय है।

इस अभिनन्दन समारोह के सफल आयोजन हेतु मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाये।

राजेन्द्र राठौड
मत्री सार्वजनिक निर्माण एव ससदीय मामलात विभाग
राजस्थान सरकार

श्री दुगड जैसे त्यागी मनस्वी महापुरुष का अभिनन्दन करना अपने आप मे गौरवदायी क्षण होगा। पुरुषार्थ की इस कडी मे प्रकाशित अभिनन्दन ग्रथ के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाये।

वीरेन्द्र मीणा
राज्यमत्री, वित्त एव करारोपण
राजस्थान सरकार
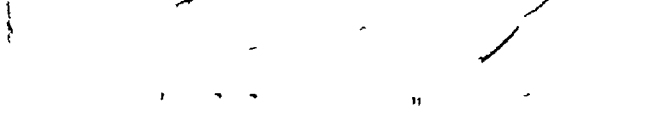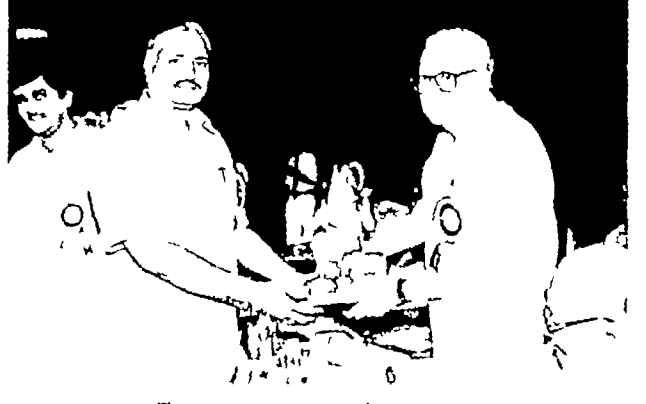
अखिल भारतीवर्षीय श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ के कार्यक्रम के अवसर पर मंचासीन
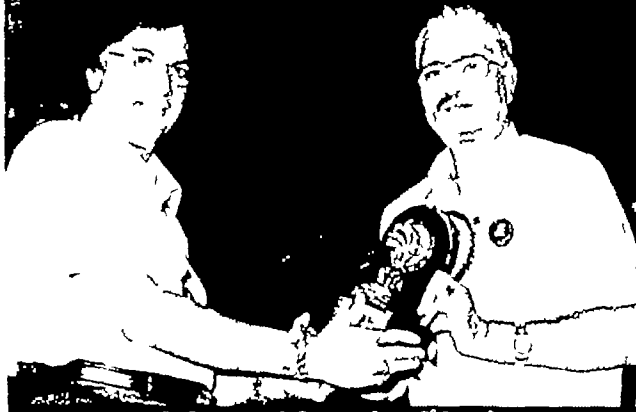
साध्वी श्री चन्द्रप्रभाश्रीजी म.सा. के प्रवर्तिनी पदरोहण समारोह के अवसर पर सम्मानित होते हुए

श्री जोधरीजी लोढ़ा अभिनन्दन समारोह में सम्मानित होते हुए
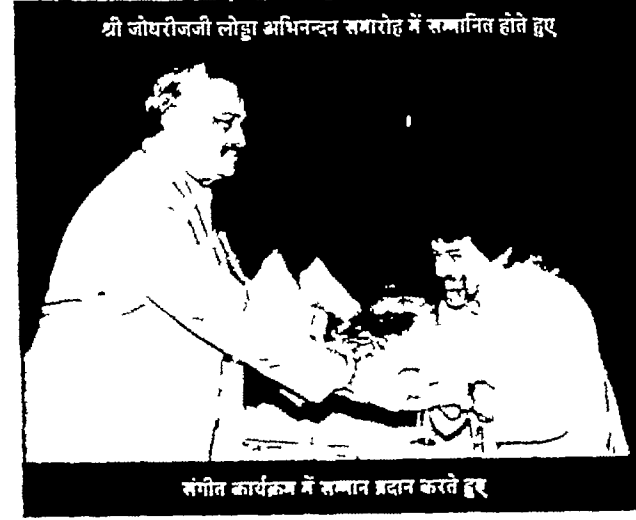
संगीत कार्यक्रम में सम्मान प्रदान करते हुए

आन-बान और शान की धरती राजस्थान शूरवीरो की ही नहीं बल्कि भामाशाहो की भूमि भी है। राजस्थान की यह धरा महाराणा प्रताप सरीखे युद्धवीरो की जन्मदात्री ही नहीं, अपितु भामाशाह सरीखे उदार-हृदय दानवीरो की भी जननी रही है। हमारे यहाँ तो कहा भी गया है–

'जननी अैडो पूत जण, कै दाता कै सूर ।
नीतर रहजे बाझडी, मती गवाजे नूर ।।'

हमारे गुरुकुलो मे यही सिखाया गया है। महाराणा प्रताप के अभिन्न, भामाशाह द्वारा सकटकालीन समय मे अपनी सर्वस्व सम्पत्ति महाराणा को भेट करते हुए उत्कृष्ट निष्ठा के मानदड स्थापित किए गए थे। महर्षि दधिचि ने तो अपनी अस्थियाँ भी दान मे दे दी थी। दानवीर कर्ण के व्यक्तित्व से हम आज भी अपने आपको गौरवान्वित महसूस करते है। दरअसल भारत का इतिहास भामाशाहो से भरा पडा है।

कोलकाता मे रहने वाले श्री दुगड के व्यक्तित्व की यही विशेषता है कि वे समाज सेवा के लिये सदैव तत्पर रहते है। कोलकाता मे रहते हुए भी वे अपनी मातृभूमि राजस्थान और यहाँ के लोगो के लिए तन-मन और धन से समर्पित है। ऐसे उदारमना भामाशाह के व्यक्तित्व एव कृतित्व पर अभिनन्दन ग्रथ का प्रकाशन नि सदेह स्तुत्य है। इससे औरो को भी प्रेरणा मिलेगी। मेरा उनसे व्यक्तिगत सम्पर्क रहा है। अपनत्व से सराबोर व्यक्तित्व के धनी श्री दुगड से जब भी मिलना होता है, उनकी चिर-परिचित मुस्कान जेहन मे तैरने लगती है।

घनश्याम तिवाडी
मत्री, शिक्षा (प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च, सस्कृत, तकनीकी),
भाषा एव भाषाई अल्पसख्यक तथा विधि एव न्याय विभाग
राजस्थान सरकार, जयपुर

श्री दुगड द्वारा देशनोक (बीकानेर) मे 'सहभागिता योजना' मे सामुदायिक चिकित्सा भवन का निर्माण, गरीब बच्चो के लिए बीकानेर मे ही 'मीड-डे-मील' के किचन का निर्माण के साथ-साथ ही निर्धन बच्चो की स्कूल फीस भरने में तो इनका सहयोग बडा ही सराहनीय है।

श्री सुन्दरलाल दुगड अभिनन्दन समारोह समिति द्वारा अभिनन्दन ग्रथ का प्रकाशन करना एक बहुत ही अच्छा प्रयास है। मैं इस हेतु आपकी सराहना करता हूँ तथा अपनी ओर से शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

युनुस खान
मत्री, यातायात, युवा एव खेलकूद विभाग
राजस्थान सरकार, जयपुर

शुभाशंसा

I am very happy and also glad to know that some organizations of Marwari Community is going to provide tribute to Sri Sundar Lal Dugar who is well known to me He is a successful businessman He is now successfully running Jute Mills, N T C and other business activities of various types including transport Apart from business activities he is also engaged with some philanthropic activities for the cause of upliftment of the society With great zeal he is running schools, institutions for physically and mentally retarded people Besides this he is running charitable hospitals and is associated with some Dharmasalas which provides a large number of facilities with a very little cost More over I specially consider that Sri Dugar is polite, gentle and full of kindness and sympathy for others

I wish him long life and successful continuation of his social activities

AMITAVA NANDY
MP, Lok Sabha
Member, Commerce Committee,
Railway Consultative Committee

Shri Sunderlal Dugarji is known to me for about two decades He is a man with dynamic and pleasant personality He is sober, amiable, very gentle and polite in his dealings with the people He is liked, loved and respected by the people cutting across political and social barriers He is a man with liberal outlook and wide heart

He has interest in various types of activities – social, cultural and educational – apart from his personal avocations He always stood and stands by the people in distress and need and extends his liberal helping hands towards them – whether they are affected by flood or other natural calamities, afflicted by disease or facing financial hurdles for prosecuting education He is a true friend of them all

His philanthropic activities and generous help are not limited to these cases and situations, but also extends to building up educational institutions and health centres and promoting socio-cultural and religious organisations He bears true faith to the causes which are very dear to his heart All these are constructive activities on the onward march and growth of the society

He renders all these services preferring to remain out of publicity or propaganda or having a pride for the same He has imbibed in himself the true spirit and characteristics of Indian Culture

In his family, he is a loving father and a benevolent guardian The members of his family also accept him as their friend, philosopher and guide

I wish him a long and healthy life to be dedicated to the service of the society

PRABODH CHANDRA SINHA
Ex-Minister West Bengal

मारवाड़ी रीलीफ सोसायटी में आयोजित एक सभा में श्री किशनगोपाल सिन्हा और श्री प्रियरंजन दास मुंशी के साथ

भूमि पूजन के अवसर पर श्री कांकरियाजी, श्री बांठियाजी के साथ श्री दुगड़जी

चितौड़गढ़में भूमि पूजन के अवसर पर सम्मानित श्री दुगड़जी
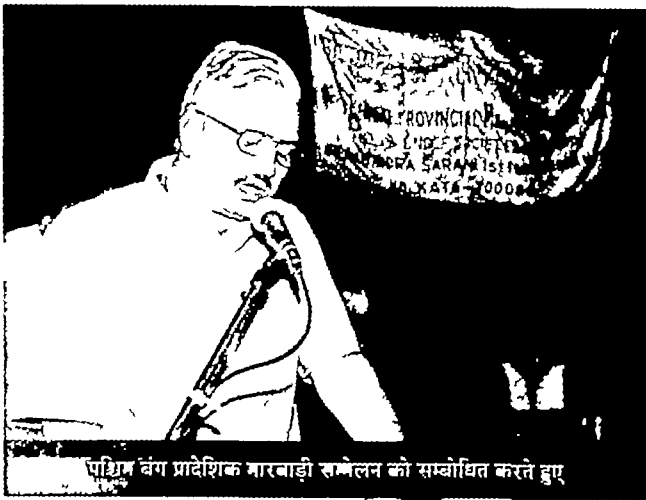
पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए
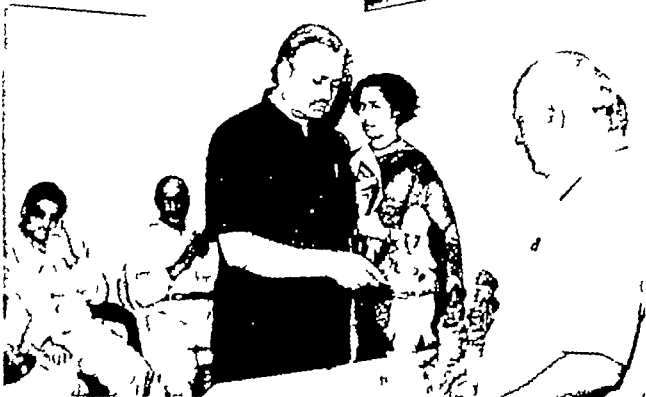
कुसुमदेवी दुगड़ आई.टी.यु। श्री जैन हॉस्पीटल एण्ड रिसर्च सेन्टर में आई.टी.यु विभाग का पुर्ननिर्माण एवं आधुनिकीकरण

श्री सुन्दरलाल दुगड़ का अभिनन्दन, स्वागत करते हुए श्री जयचंदलाल रामपुरिया, मंचासीन श्री सुब्रत मुखर्जी, पूर्व मेयर
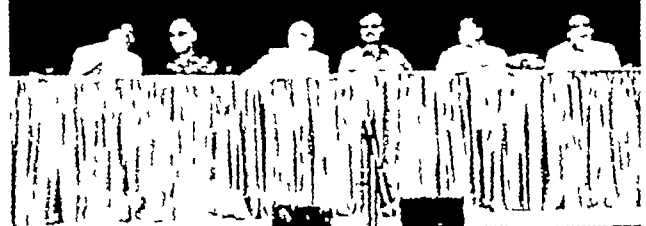
विशुद्धानन्द अस्पताल में एक निर्माण हेतु अनुदान, सम्मान सभा में श्री सत्यनारायण बजाज के साथ श्री दुगड़जी

दुगड कुल को उजलो दिवलो
सुन्दरलाल सुजान
सगला स्यु ओ भेलप राखे
सगला राखे मान (१)

खुले हाथ स्यु दान करे ओ
भामाशाह साख्याथ
हरख हूवै जद-जद सुणा
ईरै जस री बात (२)

जन हितरा ओ अठ करया है
कई मोटा काम
इण कारण स्यू जाण गया
सगला इणरो नाम (३)

जाम्यो मोतीलालजी, घर मे
इस्यो सपुत
कुणसो जवरी कर सके
इण हीरे री कुत (४)

सौ बरस तक रवै
जीवन ज्योत अशेष
रामलालजी गुरुवर री है
इण पर कृपा विशेष (५)

कन्हैयालाल सेठिया
कोलकाता

शुभाशंसा

अपार हर्ष का विषय है कि उदारमना, मितभाषी, कर्मनिष्ठ श्रीमान सुन्दरलालजी दुगड का सार्वजनिक अभिनन्दन हो रहा है। उनका अभिनदन समाज की ज्ञान चेतना का प्रतीक है। मरा उनमे तीन दशक से निकटतम सम्पर्क रहा है एव उनका स्नेह, आदर सदैव प्राप्त होता रहा है। मुक्त हस्त से दान देना उनका सदैव ही मानस रहा है। सर्जन के साथ विसर्जन की उनमे अद्भुत कला है। यही कारण है कि उनका प्रखर व्यक्तित्व एक सस्था के रूप मे दृष्टिगोचर होता है। आपने अनेको परिवारो को आर्थिक सहयोग देकर स्वावलम्बी बनाया। जन्म से जैन किन्तु कर्म से जन-जन मे जागरण के प्रयास मे उन्होंने अब तक अहम् भूमिका निभाई है।

यह अभिनन्दन उनकी मानव सेवा का तो अभिनन्दन है ही साथ शिक्षा और सेवा के क्षेत्र मे भावी पीढी के लिए भी प्रेरणास्रोत होगा।

मैं जिनेश्वर देव से यही प्रार्थना करता हूँ वे शतायु हो एव समाज के उत्थान मे अपने सक्रिय योगदान को अपनी सक्षम प्रतिभा से आलोकित करते रहे। मैं उनकी निरन्तर सेवाओ के प्रति आशान्वित हूँ। उन्हे मेरी हार्दिक अभ्यर्थना समर्पित है।

श्री रिखबदास भसाली
ट्रस्टी, श्री श्वे स्था जैन सभा, कोलकाता

वास्तव म श्री दुगडजी जैसे व्यक्तित्व ससार के उन बिरले व्यक्तियो मे शामिल है जो अपनी सम्पदा का उपयोग ना सिर्फ अपने लिए बल्कि समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए करने हेतु सदैव तत्पर रहते है। मारवाड के गौरव के अनुरूप आप सदैव ''सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय'' की परिकल्पना को साकार रूप प्रदान करने मे अग्रणी रहते है।

समाज सेवा के प्रत्येक क्षेत्र में चाहे वो शिक्षा हो या चिकित्सा, साहित्य प्रकाशन हो अथवा धर्म स्थानक निर्माण आपके मुक्तहस्त हमेशा दानभावना हेतु उन्मुक्त रहते है।

आप हमेशा से अर्जन के साथ-साथ विसर्जन के पक्षधर होने के कारण आप लोकोपयोगी कार्यो क लिए मुक्तहस्त से दान पुण्य कर इस तथ्य को प्रतिपादित कर रहे है कि किसी के पास चाहे कितनी भी धन सपदा हो उसका कोई विशेष अर्थ नही है, अर्थ इसमे निहित है कि वह औरो के लिए कितना लगा सकता है, कितना जुटा सकता है। सेवा के पर्याय श्री दुगडजी की सोच हमेशा उच्चकोटि की रही है, वास्तव मे आप शिक्षा, सेवा एव चिकित्सा की त्रिवेणी के सूत्रधार है।

श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ, वीकानेर को भी समय-समय पर आपका प्रभूत योगदान प्राप्त होता रहता है। आपके सहयोग से सघ की कई प्रवृत्तियाँ निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर है।

मे इस सुखद अवसर पर अपनी ओर से समारोह के मगलमय आयोजन की शुभकामना प्रेषित करता हूँ एव जिनशासन देव से कामना करता हूँ कि आप दीर्घायु होकर सघ एव शासन की निष्काम सेवा करते रहे।

पुखराज वोथरा
राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ, वीकानेर

धर्म सभा को सम्बोधित करते हुए

श्री जैन संघ द्वारा आयोजित श्री मेडिकल चेकअप के अवसर
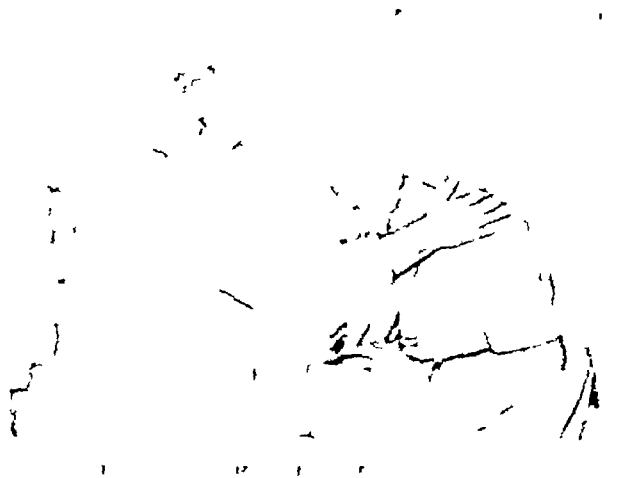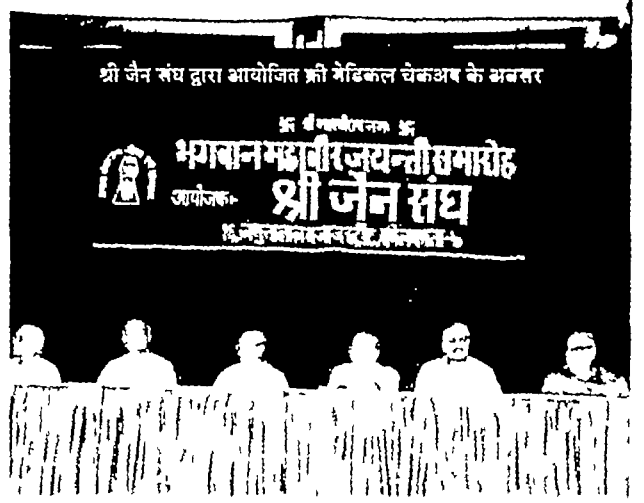
जैन संस्कृति संसद द्वारा आयोजित महावीर जयन्ती समारोह के अवसर पर महामहिम राज्यपाल श्री वीरेन.जे. शाह के साथ

श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सभा के पदाधिकारियों के साथ

श्री बलराम जाखड़-राज्यपाल आंध्रप्रदेश के साथ

विचार मंच द्वारा आयोजित समारोह में श्री दुगड़जी का अभिनन्दन करते हुए श्री पदमचन्द नाहटा

आपकी जन्म स्थली देशनोक व कर्म स्थली कोलकाता रही है। आपका जन्म एक सस्कारी परिवार मे हुआ है। देशाणे के दो सपूतो ने आध्यात्मिकता व मानवता के क्षेत्रो मे जो कार्य किया है आने वाली पीढियाँ कई वर्षो तक याद करती रहेंगी, आध्यात्मिकता के क्षेत्र मे कार्य किया है आचार्य श्री रामेश ने व मानवता का कार्य किया है श्री सुन्दरलालजी दुगड ने।

आप बहुत ही सरल स्वभावी है। आपने सादा जीवन उच्च विचार वाली कहावत को पूर्णतया अपने जीवन मे चरितार्थ किया है। श्री दुगडजी की दान-भावना मे दूर-दूर तक कहीं कोई यश व कीर्ति की आकाक्षा नहीं रहती है। हर सप्रदाय, हर कौम के लिए आप सहयोग करने को हमेशा तत्पर रहते है। आपके सामने कोई कभी भी उपस्थित हुआ हो, वह खाली नहीं गया। आपकी विशेष रुचि शिक्षा, चिकित्सा, मानव सेवा, गौ सेवा की रहती है। वैसे तो आपने हर क्षेत्र मे सेवा का कार्य किया है। आप एक कर्मठ कार्यकर्त्ता के रूप मे उभरे हैं।

आपश्री समाज के प्रेरणा स्तम्भ रहे है एव अनेको सस्थाओ को योगदान देकर समाज को समृद्ध किया है।

सकल्प के साथ जुडा हो ऊँचा लक्ष्य, महत्वाकाक्षी योजनाओ को आकाशी ऊँचाइया देती है तो क्रियान्विति की गति को ठोस लक्ष्य देना होगा और वह ठोस लक्ष्य दिया श्री दुगडजी ने। उस ठोस लक्ष्य को प्राप्त करके मुक्त हाथो से, खुले दिल से सघ समाज की सेवा का लाभ ले रहे हैं।

आप विशेषकर हुक्म सघ के एक श्रद्धालु स्तम्भ है।

मै श्री सुन्दरलालजी दुगड की स्वस्थ स्वास्थ्य एव दीर्घायु की मगल कामना करता हूँ तथा आशा करता हूँ कि इसी तरह धर्म, समाज, देश की सेवा करते रहे।

रतनलाल राका
अध्यक्ष श्री साधुमार्गी जैन सघ, चैन्नई

भारत के राजस्थान प्रान्त को ''धरती धोरा री'' कहा गया है। इसकी तुलना स्वर्ग के समान उच्च कोटि से की गई है। ऐसे अतुलनीय प्रान्त मे तथा राजस्थान के राज्यो मे बीकानेर प्रसिद्ध राज्य रहा है जहाँ के निकट उपनगर देशनोक मे भाई सुन्दरलालजी दुगड का जन्म हुआ तथा युवा अवस्था में सामाजिक, धार्मिक, व्यावसायिक एव शैक्षणिक क्षेत्रो मे सुख्याति अर्जित की। कोलकाता के जैन श्वेताम्बर ओसवाल समाज मे इस युवा को प्रथम श्रेणी के कर्णधारो मे गिना जाने लगा है।

कोलकाता महानगर, पश्चिम बगाल, राजस्थान व अन्य प्रान्तो की जिनके धार्मिक, सामाजिक सस्थाओ को बिना किसी भेदभाव के अनुदान दिया है। इनके हृदय मे समाज के प्रति जो सेवा भावना है वह निरन्तर बनी रहे तथा भारत की सामाजिक सस्थाएँ इनसे निरन्तर लाभान्वित होती रहें।

वर्तमान मे ऐसे वर्चस्वी, अनुदानी, सहज प्रसन्नता, सरलता तथा हृदय मे करुणा लिये व्यक्ति विरले ही होते है। इन्ही वजह से उन्हे राजस्थान सरकार, बगाल सरकार तथा व्यावसायिक समाज मे बहुत सम्मान प्राप्त है।

श्री दुगडजी का जीवन सतुलित ही नहीं बल्कि इन्हे शान्ति का स्वर्णसूत्र उपलब्ध है। ऐसे व्यक्ति का अभिनन्दन पूरे जैन समाज का कर्तव्य है।

जयचन्दलाल रामपुरिया
पूर्व अध्यक्ष, जैन विद्यालय, कोलकाता

शुभाशंसा

अपनी व्यावहारिकता, सरलता, सहजता, मिलनसारिता से अपने गाँव, शहर, प्रात मे ही नहीं, पूरे भारतवर्ष मे अपने बलबूते से उसने जो नाम कमाया है उसकी जितनी मै तारीफ करूँ वह कम ही रहेगी।

दुनिया मे पैसा तो बहुतो के पास है लेकिन उनको दान मे देकर सदुपयोग करना बहुत ही दुर्लभ कार्य होता है। सुनने व देखने मे भी आया है कि सुन्दर के द्वार पर आया कोई भी व्यक्ति खाली हाथ नहीं लौटा है इसलिए मैं उसे अपनी ८५ वर्ष की समझ व सोच से आज के युग का "कर्ण" भी कह दूँ तो कोई बडी बात नही होगी।

मेरी परमपिता परमेश्वर से यही प्रार्थना है कि "सुन्दर" दिन दुनी, रात चौगुनी उन्नति के पथ पर आगे से आगे बढता रहे।

लूणकरण हीरावत, दिल्ली

श्री सुन्दरलाल दुगड सिर्फ नाम से ही सुन्दर नहीं हैं वरन् कर्म से भी अत्यन्त सुन्दर हैं। जैन समाज मे ऐसे लोग विरले ही मिलते है जिनके मन में जैन समाज के सभी पथो के प्रति एक-सा आदर एव सम्मान का भाव हो और सभी समाज के साथ तन-मन-धन से जुडे हो। स्थानकवासी परपरा से जुडे होने के बावजूद भी सुन्दरलालजी के मदिरमार्गी सघ और तेरापथ सघ के साथ स्नेहपूर्ण घनिष्ठ सम्बन्ध हैं और यही बात आपको महावीर के अनेकातवाद सिद्धान्त के प्रबल समर्थक के रूप मे प्रस्तुत करती है। श्री सुन्दरलालजी की दानशीलता बहुतो के लिए प्रेरणा का स्रोत है। आपको इस युग का कर्ण कहा जाये तो अतिशयोक्ति नही होगी। आपने महावीर के अपरिग्रह के सिद्धान्त को बखूबी समझा है। आपने अपने जीवन मे धन के साथ-साथ विचारो का परिग्रह भी किया है जो श्रेष्ठतम है। तेजपुर श्री श्वेताम्बर गौडी पार्श्वनाथ मन्दिर के सदस्य आपके आनन्दमय, धर्ममय एव उन्नत भविष्य की कामना करते है। आप अपने लक्ष्य की तरफ उत्तरोत्तर बढते रहे।

मोतीलाल शाह बोथरा
सचिव, श्री जैन श्वेताम्बर गौडी पार्श्वनाथ मंदिर समिति
तेजपुर (असम)

When we heard from Shri Kankariaji that on the occasion of our Sabha celebrates 8 decades one more big event is likely to be added & we all were surprised & all in one voice supported that the Abhinandan of Shri Sunderlalji Dugar must be celebrated with full honours Shri Sunderlalji Dugar who is a recognised industrialist started his carrier with a small trading business, his achievements are well known to all in the community but his gesture love & kindness has become a proverb Presently he is recognised as the messiah of needy people It makes us more proud as he is one of the trustees of our institution

We pray god that he bestows more & more prosperity & happiness to him & his entire family

Vinod Minni
Secy Shri S S Jain Sabha Kolkata

श्री राजकरण बरड़िया एवं श्री रमेश बरड़िया के साथ सुशोभित दुगड़जी
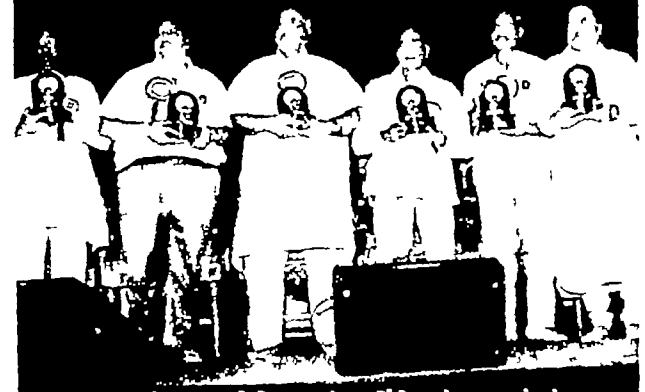
साध्वी श्री चन्द्रप्रभाश्रीजी म.सा. के प्रवर्तिनी पदरोहण समारोह के अवसर पर विशिष्ट अतिथिगण के साथ

श्याम गुणगान महोत्सव में अन्यान्य सदस्यों के साथ

एम.पी. श्री [illegible] का अभिनंदन करते हुए

श्री दुगड़जी का अभिनंदन
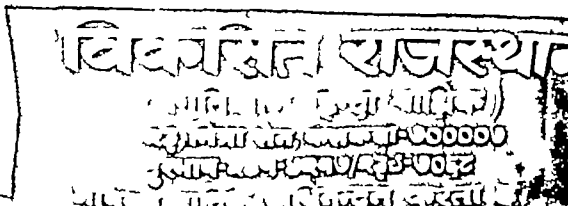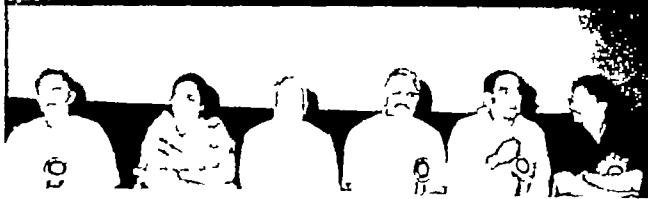
विकसित राजस्थान द्वारा आयोजित समारोह में श्री कृष्णगोपाल सिन्हा, श्री प्रह्लादराय अग्रवाल आदि के साथ

हावड़ा के मेयर श्री गोपाल मुखर्जी का शाल ओढ़ाकर स्वागत करते हुए

श्री राजेश खेतान के साथ सुन्दरलाल बिनोद दुगड़

स्वनाम धन्य श्रीमान् सुन्दरलालजी साहिब दुगड एक कुशल व्यवसायी होने के साथ-साथ श्रद्धानिष्ठ सुश्रावक है। आचार्य नानेश, रामेश के प्रति पूर्ण समर्पित होते हुए भी सभी सम्प्रदाय के धर्म गुरुओ के प्रति आदर-भावना आपके जीवन की विशेषता है। आपका व्यक्तित्व बहुआयामी है। धार्मिक क्षेत्र मे, शिक्षा के क्षेत्र मे, चिकित्सा के क्षेत्र मे, सेवा के क्षेत्र मे आप उदारतापूर्वक सहयोग करते है।

आपका जीवन करुणा, दया, वात्सल्यता से ओत-प्रोत होने के साथ-साथ अहकार, पाखड, प्रदर्शन से सर्वथा निर्लिप्त है।

आपने सुपुत्र के विवाहोपलक्ष पर साधुमार्गी सघ की कार्यकारिणी समिति का अधिवेशन कोलकाता मे आयोजित करने के लिए विशेष प्रेरणा की। अत अधिवेशन वहाँ सम्पन्न हुआ। उस प्रसग पर आपकी आत्मीयता का सहज ही अनुभव हुआ। कोलकाता से जयपुर आने वाली ट्रेन रात्रि के बजाय दूसरे दिन सबेरे प्रस्थान करने वाली थी, वह भी निर्धारित समय से ३-४ घण्टे विलम्ब से रवाना हुई। आप हमारे सबके लिए टिफिन तो लेकर आये ही, पर विशेष बात यह रही कि आप इतने व्यस्त होते हुए भी हमारे साथ ही विराजे रहे। आपको काफी निवेदन करने के उपरात भी आप ट्रेन रवाना होने पर ही पधारे, यह आपका स्नेह एव आत्मीयता परिलक्षित करती है।

आप लक्ष्मी पुत्र है, लक्ष्मी के दास नही पर स्वामी है। आप दुखियो को, जरुरतमद व्यक्तियो को, सस्थाओ को दान देकर लक्ष्मी का सदुपयोग कर आत्मसतोष प्राप्त करते हैं। आप ऐसी पुण्याई लेकर आये है कि आपको सर्वत्र सफलता ही प्राप्त होती है। धन्य है आप।

वीर प्रभु से यही प्रार्थना है कि आप शतायु हो। जो नैसर्गिक गुण आपको प्राप्त हुए हैं, उनमे अभिवृद्धि होती रहे ताकि जीवन सुन्दरतम रहे।

गुमानमल चोरडिया
जयपुर

धर्म, शिक्षा, सेवा एव स्वास्थ्य के प्रति समर्पित भाई श्री सुन्दरलालजी दुगड एक शान्त एव सौम्य प्रकृति के व्यक्ति है। एक छोटे से गाँव देशनोक (बीकानेर) राजस्थान से निकलकर कलकत्ता तक की यात्रा आपने अपने अदम्य उत्साह, सत्यनिष्ठा एव सरल प्रकृति से की। आपने अपने व्यापार, व्यवसाय एव उद्योग जगत मे भी महारत हासिल की है। कई स्कूलो, कॉलेजो, स्थानक आदि धार्मिक स्थलो, अस्पताल एव स्वास्थ्य केन्द्रो एव गरीव निर्धन वच्चो को छात्रवृत्ति, पुस्तके, दवाई, गौशाला आदि मे योगदान आपकी उदारता का परिचायक है। आपके पास आने वाला कोई व्यक्ति खाली नही लौटता, ऐसा मै मानता हूँ।

आप दीर्घायु हो एव सघ, समाज तथा मानव मात्र की सेवा मे निरन्तर लगे रहे। हमारी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

मदनलाल कटारिया, पूर्व महामत्री
श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ

शुभाशंसा

जीवन क्षणभगुर है। जीवन की क्षण भगुरता को कोई बिरला व्यक्ति ही समझ पाता है। साधारण मानव जन्म लेता है और पूरी जिन्दगी जीवन की आवश्यकताओ एव परिवार के लिये पूरी कर देता है और एक दिन जीवन का सूर्यास्त हो जाता है एव धीरे-धीरे सभी भूल जाते हैं लेकिन कुछ विरले मानव ऐसे होते है जो अपनी आवश्यकताओ के साथ दूसरो का भी ध्यान रखते है वस्तुत मानव नही अपितु महामानव है। ऐसे ही महामानव एव बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी है कोलकाता निवासी सुश्रावक रत्न श्री सुन्दरलालजी दुगड।

जीवन मे धर्म का आचरण तो लोग करते है लेकिन श्री दुगडजी ने धर्म को जीया है, जीवन मे उतारा है। हुक्मगच्छ के पट्टधर समता विभूति आचार्य श्री नानेश के आप परम भक्त है। आपने गुरुदेव के समता सिद्धान्त को आत्मसात् किया है। जीवन के प्रत्येक कार्य मे आपके समता झलकती है। यही समता सामायिक का स्वरूप है। इसी से कषायो की मात्रा कम होती है और जीव उर्ध्वगामी बनता है।

धन और वैभव पुण्य प्रताप से मिलते है। जीव धन और वैभव मे मदमस्त बनकर दुर्गति की ओर चला जाता है लेकिन श्री दुगडजी को धन और वैभव का बिल्कुल घमण्ड नही है। आप हमेशा कहा करते हैं कि धन वैभव और ऐश्वर्य सब पूर्व की पुण्याई से मिला है, आगे पुण्याई बाँधनी है तो धन का सदुपयोग करते जाओ। इसीलिये आप मे दान की भावना कूट-कूट कर भरी है। आपके दर पर आया कोई भी व्यक्ति कभी भी खाली नहीं जाता है। सघ और समाज के लिये आप अपना सर्वस्व अर्पण करने को सदैव तैयार रहते है।

निरभिमानिता, सरलता, सहजता, सौम्यता आपके जीवन के प्रत्येक कार्य मे झलकती है। आपको कभी गुस्सा नहीं आता है। सहज और सरल भाव से आप जीवन जीते है।

आप कई सघ और सस्थाओ से जुडे हुए है। आपने कभी पद की कामना नही की अपितु नि स्वार्थ भाव से आप सघ और समाज की सेवा करते आ रहे है। वस्तुत आप जिनशासन एव समाज के अनमोल सितारे है। आप जैसे महामानवो की वजह से ही आज धरती का कुछ अश जीवित है।

आपके अभिनन्दन करने से हम अपने आपको धन्य मानते है और शुभकामना करते है कि आप दीर्घायु हो, सदैव स्वस्थ हो।

रिधकरण सिपानी, बगलोर

Shri Sundarlal Dugar is a remarkable person with a smiling face & compassionate heart I have always found him sympathetic & helpful He is ready to open his purse to support any good course He runs a modern school, helps an orphanage & builds houses for the homeless He has donated a large amount for our Bodhana home for the mentally handicapped situated at Rajarhat. At the same time he manages corporate bodies for generating wealth for nation May God give him long life health happiness & prosperity

Dr Pratap Chander Chunder
Formerly Union Minister for Education

समता युवा संघ कपासन के अध्यक्ष श्री मदन चण्डालिया स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए

हावड़ा में श्रीमती इंदिरा गांधी की प्रतिमा का अनावरण कर माल्यार्पण करते हुए

आपका हार्दिक अभिनन्दन करती है।

राजस्थान परिषद के कार्यालय उद्घाटन पर श्री गुलाबचन्द कटारिया, गृह मंत्री राजस्थान, श्री जुगलकिशोर जैथलिया, श्री दिनेश बजाज विधायक, श्रीमती सुनीता झंवर काउन्सलर के साथ

श्री सुन्दरलालजी दुगड़ का अभिनंदन करते हुए श्री कांकरिया

विचार मंच द्वारा आयोजित समारोह में श्री यु. एन. विश्वास, डायरेक्टर सी.बी.आइ के साथ दर्शक दीर्घा में

सुपुत्री रूपरेखा की शादी के अवसर पर श्री तपन सिकदर-तत्कालीन केन्द्रिय राज्य संचार मंत्री के साथ

कथावन विद्यालय द्वारा श्री सुन्दरलालजी दुगड़ के जन्म दिन पर कार्यक्रम

सेवाभावी पर विनम्र एव सुख दु ख मे सहयोगी पर विज्ञापनबाजी एव छपास के रोग से सर्वथामुक्त विरल व्यक्तित्व के धनी हैं निष्काम कर्मयोगी श्री सुन्दरलाल दुगड। चिकित्सा, शिक्षा, गोरक्षा, महिला-उत्थान, बालविकास, मदिर-जीर्णोद्धार एव वनवासी कल्याण जैसे विविध लोक-कल्याणकारी कार्यों को राजस्थान एव पश्चिम बगाल ही नही, देशभर मे आपका खुले हाथ से सहयोग रहा है। ऐसे कार्य करने वाली केवल जैन सस्थाओ को ही नहीं, जैनेतर समाज के लोगो द्वारा सचालित सस्थाओ को भी भरपूर सहयोग देने में अग्रणी हैं, श्री दुगडजी।

वे दानी तो है ही, एक सक्रिय कार्यकर्त्ता के रूप मे भी उनकी भूमिका कम महत्वपूर्ण नहीं है। आप श्री जैन विद्यालय (हावडा) के सभापति, राजस्थान परिषद् (कोलकाता) के उप-सभापति, कोलकाता पिजरापोल सोसाइटी के ट्रस्टी, देशनोक नागरिक सघ (कोलकाता) के सस्थापक सभापति, प बगाल प्रादेशिक मारवाडी सम्मेलन के सरक्षक सदस्य, सच्चिया माँ सेवा ट्रस्ट के न्यासी एव आर्यन्स स्कूल अगरपाडा जैसे विविध क्षेत्रो मे कार्यरत सस्थाओ से सक्रिय रूप से जुडे है। यह सूची तो मात्र सकेतात्मक है, ऐसी ही महत्वपूर्ण पचासों सस्थाएँ और है, जिनके आप ट्रस्टी, पूर्व-अध्यक्ष/उपाध्यक्ष एव कार्यसमिति सदस्य हैं। ऐसी सभी सस्थाओ को यथायोग्य मार्गदर्शन सहज रूप से देते रहते हैं।

आपका जन्म बीकानेर जिले के सुप्रसिद्ध देशनोक ग्राम मे (जो देशभर मे करणीमाता के मदिर के कारण प्रसिद्ध है) १९५४ ई मे उदारचेता स्व मोतीलालजी एव माताश्री स्व सूरजदेवी के धर्मपरायण जैन परिवार मे हुआ। सत्रह वर्ष की उम्र मे ही उच्च-माध्यमिक पास कर आप कलकत्ता आ गये एव प्रारम्भ मे मणिहारी एव स्टेशनरी के पैतृक व्यवसाय मे लग गये। एक वर्ष बाद आपका विवाह बीकानेर निवासी स्व केवलचन्दजी सेठिया की सुपुत्री कुसुमदेवी से सम्पन्न हुआ। थोडे वर्ष रेडीमेड कपडे की रिटेल दुकानदारी के बाद १९८३ ई से आपने भवन निर्माण का कार्य प्रारम्भ किया एव यही से आर्थिक दृष्टि से आपकी तेजी से उन्नति हुई। इसके बाद तो जूट, प्लास्टिक, सिगरेट, ऑटोमोबाइल एव ट्रासमिशन जैसे उद्योगो के क्षेत्र मे भी आपने अधिकार जमाया एव आज एक सफल उद्योगपति के रूप मे प्रतिष्ठित है जिसमे आपके एकमात्र पुत्र विनोद का भी पूरा सहयोग है।

सफल उद्योगपति एव निरतर आर्थिक ऊँचाई के बावजूद आप सेवामूलक कार्यो से उसी तत्परता से जुडे है एव अहकार से सर्वथा दूर हैं। समाज के किसी भी क्षेत्र के कार्यकर्त्ताओ के लिये आप सदैव, सहज उपलब्ध रहते है। हँसते हुए मिलते हैं, आये हुए को खुशी-खुशी विदा करते है। देश की सैकडो सस्थाओ के भवन निर्माण या विस्तार मे आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा है, आज भी यह प्रक्रिया बद नही हुई है।

ऐसे निस्पृह, सेवाभावी कर्मयोगी के अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशन का जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सभा का निर्णय सर्वथा अभिनन्दनीय है। क्योंकि यह कार्यकर्त्ताओ के लिए प्रेरणास्रोत बनेगा। श्री दुगडजी स्वस्थ एव सक्रिय रहते हुए शतायु हो, यही प्रभु से प्रार्थना है।

जुगलकिशोर जैथलिया, एडवोकेट
कोलकाता

वहुआयामी व्यक्तित्व से सपन्न, कार्य मे दक्ष, कुशल नेतृत्व, दूरदर्शी, करुणामय हृदय, सेवा की साकार मूर्ति, सादगी का गहना, आत्मीय अपनत्व, सरल-सहज व्यक्तित्व के धनी, परोपकार हेतु समर्पित, दान के पर्यायवाची, दीन-दुखियो के दीनानाथ, धर्म भावना मे प्रदर्शन से दूर, गुरु श्रद्धा मे अटूट विश्वास आदि उत्कृष्ट गुणो से अलकृत श्री सुन्दरलालजी दुगड एक व्यक्ति नहीं अपितु सस्था हैं जिन्होंने पीडित मानवता की सेवा मे अपनी सम्पत्ति का, समय का एव सत्ता का कम उम्र मे सही सदुपयोग किया है।

जयशकर प्रसादजी ने अपनी श्रेष्ठतम कृति कामायनी मे लिखा है कि कर्म का भोग, भोग का कर्म यही जड का चेतन आनद। अर्थात् श्रद्धा की करुणा तथा कल्याण की भावना केवल परिवार के दायरे तक ही सीमित न रहकर सपूर्ण विश्व को अपनी धरोहर समझती है, ऐसा ही कुछ दुगडजी मे निहित है।

मैंने आदरणीय दुगडजी को जव भी देखा है चाहे उनके सान्निध्य मे हावडा मे लगा धार्मिक शिविर हो या पर्व पर्युषण पर सेवा का अवसर या पारिवारिक कार्यक्रम हो या अधिवेशन का सुनहरा अवसर हो, हर समय इतने बडे उद्योगपति होने के बावजूद भी सरल, सहज, कर्त्तव्यनिष्ठ, माला और सम्मान से दूर मिलनसार की पहचान मे ही पाया है।

हम गौरवान्वित है कि समाज रत्न श्री दुगडजी का अभिनन्दन समारोह आयोजित किया जा रहा है, ये नि सदेह उसके पात्र है। मेरी अशेष शुभकामनाएँ है कि वे चिरायु हो, हमेशा धर्म और सेवा मे अपना जीवन सफल वनाये।

श्रीमती रत्ना ओस्तवाल
राष्ट्रीय अध्यक्षा, श्री अ भा साधुमार्गी जैन महिला समिति

आदरणीय श्री सुन्दरलालजी दुगड सा सघ व समाज की सेवा मे पूरी तरह से समर्पित व्यक्ति है। आदरणीय दुगड सा का मुझ पर सदैव स्नेह रहा है।

मेरे अ भा सा जैन महिला समिति के तीन वर्षीय अध्यक्षीय कार्यकाल मे हमेशा मुझे इनका मार्गदर्शन, सहयोग तथा समय-समय पर महिला समिति के उत्थान हेतु बहुमूल्य सुझाव मिलते रहे। उनके ही आशीर्वाद एव मार्गदर्शन से मै महिला समिति का कार्य सचालन करती रही।

श्री दुगड़ सा ने आचार्य श्री नानेश समता विकास प्रन्यास नानेशनगर दाता मे २१ लाख रुपये की राशि स्कूल छात्रावास के लिए एव ११ लाख रुपये की राशि व्यसन मुक्ति केन्द्र के लिए वडी उदारता के साथ दान दी। मुक्त हस्त दान देने मे श्री दुगड सा की धर्मपत्नि श्रीमती कुसुमदेवी दुगड भी पीछे नही हैं। आपने भी नानशनगर दाता मे २१ लाख रुपये की राशि प्राथमिक स्कूल के लिए घोषित की है। श्राविकाओ के वढ़ते "गौरवमय कदम" के प्रकाशन पर मेरे एक फोन करने मात्र से आपने वडी उदारता के साथ २१,०००/- रुपये की राशि का सहयोग कर दिया।

श्री दुगड सा एक व्यक्ति न होकर अपितु पूरी एक सस्था है। आपके सहयोग से भारतवर्ष में अनेक स्थानो पर अस्पताल, स्कूल, गौशालाएँ नियमित रूप से चल रही है।

श्री दुगड सा ने त्याग, सेवा दानशीलता की जो मिशाल कायम की है वह समाज के लिए अनुकरणीय है। आपकी सेवा-भावना, त्याग-निष्ठा एव पूर्णरूपेण समर्पण समता के पर्याय बन गये है।

यह ग्रथ समाज के हर व्यक्ति के पास पहुँचे इन्हीं शुभ कामनाओ के साथ।

मीना राका
पूर्व अध्यक्ष श्री अ भा सा जैन महिला समिति

दुगड़ चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा आयोजित नि:शुल्क माइक्रोसर्जरी केम्प के समापन पर

श्री श्यामलकुमार सेन, राज्यपाल, प.बं की बाढ़पीड़ितों के सहायतार्थ चेक भेंट करते हुए
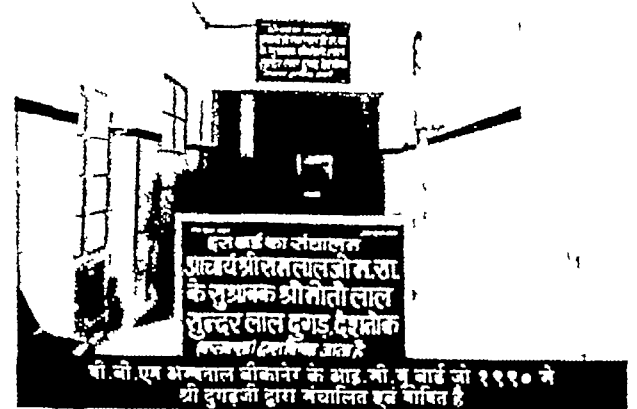
पी.बी.एम अस्पताल बीकानेर के आइ.सी.यू वार्ड जो १९९० से श्री दुगड़जी द्वारा संचालित एवं पोषित है

अपनी भाषा द्वारा आयोजित समारोह में प्रो. लोढ़ा के साथ

सरदार जोध सिंह एवं पूर्व प्रधानमंत्री श्री चन्द्रशेखर के साथ

श्री सुब्रतो मुखर्जी मेयर कोलकाता कॉरपोरेशन श्री सुन्दरलाल दुगड़ का अभिनन्दन करते हुए

कुसुमदेवी दुगड़ आई.टी.यु के उद्घाटन के अवसर पर

शुभाशंसा

मनुष्य प्रकृति की सर्वश्रेष्ठ रचना है। यदि आदमी की सोच सही एव काम उत्तम है तो वह उत्तरोत्तर ऊँचा उठता जाता है। जो समय पर मनुष्य जीवन का मोल समझ जाता हैऔर मानवोचित कर्म करता रहता है, उसे सफलता अवश्य प्राप्त होती है।

कोलकाता (देशनोक, बीकानेर - राज) निवासी श्री सुन्दरलालजी दुगड का जन्म देशनोक निवासी दुगड (जैन) परिवार मे हुआ। उनके पिताजी श्री मोतीलालजी दुगड समाज सेवक तथा परम गुरु भक्त, सुश्रावक रत्न थे। श्री सुन्दरलालजी दुगड की अष्टम पट्टधर आचार्य श्री नानेश तथा वर्तमान आचार्य प्रवर श्री रामेश के प्रति समर्पणा अवर्णनीय है।

राजस्थान के बीकानेर जिले के देशनोक मे सन् १९५४ मे जन्मे श्री सुन्दरलाल दुगड ने कोलकाता मे कपडे की दुकान प्रारम्भ करते हुए जूट मिल का व्यवसाय चालू किया। वर्तमान मे आप प्लास्टिक, जूट, ऑटोमोबाइल, भवन निर्माण एव प्लाईवुड उद्योग से धनोपार्जन करते हुए निरन्तर सामाजिक, शैक्षणिक एव चिकित्सा सम्बन्धित कार्यो मे धन का मुक्त हस्त से विसर्जन करते हैं, यह सब आपकी श्रम, निष्ठा एव ईमानदारी के साथ-साथ पूर्व मे सचित पुण्यो का भी परिणाम है।

आपश्री का सार्वजनिक जीवन प्रेरक एव अनुकरणीय है। आपके नेतृत्व में आपकी जन्मभूमि देशनोक मे मानव परोपकारी सस्था श्री करणी हॉस्पीटल का निर्माण लगभग पूरा किया है।

आचार्य श्री नानेश की जन्मस्थली दाता मे आपने बहुत बडी राशि दान देकर परम गुरु भक्ति का परिचय दिया है। श्री सुन्दरलालजी की विशेषता है कि आप छोटे से छोटे व्यक्ति को आत्मीयता देकर अपना बना लेते है।

निरभिमानता एव सरलता उनके जीवन के अविभाज्य अग हैं। कोई भी जरुरतमद व्यक्ति उनके यहाँ से खाली हाथ नही जाता है, यह उनका विशेष गुण है। आप दूसरो के कार्यो व तकलीफो मे अपना काम भूलकर उनके कार्य करने को तत्पर रहते है।

एक ओर गरीब, मेधावी एव प्रतिभा सम्पन्न विद्यार्थी आप द्वारा दी जाने वाले छात्रवृत्ति से अपना जीवन निर्माण कर रहे है, दूसरी ओर कत्लखाने मे जाती हुई हजारो गाये इनकी करुणा एव सहयोग से गोशालाओ मे रहकर अकाल मौत से बच रही है। स्वधर्मी तथा अन्य सभी को सहयोग–मन्दिर, अस्पताल, विद्यालय, महाविद्यालय, छात्रावास, समता-साधना भवन, धार्मिक एव चिकित्सा शिविरो के आयोजन मे मुक्त हस्त से दान देना इनका सहज स्वभाव है।

यही कारण है कि समाज की विभिन्न सस्थाओ ने आपको विशिष्ठ पद देकर स्वय को गौरवान्वित किया है। श्री जैन विद्यालय, हावडा के आप अध्यक्ष है। श्री करणी गौशाला, देशनोक के उपाध्यक्ष, जैन कल्याण सघ, कोलकाता के सरक्षक, महेन्द्र मुनि मिशन, कोलकाता एव बीकानेर के कार्डियोकेयर फाउण्डेशन ट्रस्ट के ट्रस्टी है। साथ ही देशनोक नागरिक सघ, कोलकाता के सस्थापक अध्यक्ष है। आप अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ, बीकानेर के उपाध्यक्ष रह चुके है। राजस्थान के मेवाड अचल में स्थित शैक्षणिक सस्थान जवाहर विद्यापीठ, कानोड के आप अध्यक्ष है।

आपके सुपुत्र श्री विनोदजी दुगड आपके ही पदचिन्हो पर चलते हुए सामाजिक एव धार्मिक कार्यो मे विशेष रुचि रखते है।

समाजसेवी, धर्मानुरागी, सरल स्वभावी श्री सुन्दरलालजी दुगड के यशस्वी एव मगलकारी जीवन की शुभकामना करते हुए परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि समाज का यह रत्न स्वस्थ एव दीर्घायु होकर भारतवर्ष मे काम करने वाली विभिन्न सामाजिक, शैक्षणिक एव धार्मिक सस्थाओ को अपनी साधना एव श्रम से उपार्जित धन से सींचते रहे, तन-मन-धन से सरक्षण देते रहे।

शान्तिलाल साड, बैंगलोर

शुभाशंसा

श्रेष्ठीवर्य श्री सुन्दरलालजी दुगड एक अद्भुत व्यक्तित्व के धनी हैं। मरुधर-बीकानेर की वीर भूमि के निकट देशनोक गाँव में आपका जन्म हुआ। विश्व के मानचित्र मे देशनोक मे करणीमाता का मदिर, जिसके दर्शनार्थ हजारो-हजार श्रद्धालु भक्त आते है। आचार्य श्री राम का जन्म भी इसी पावन स्थल पर हुआ। आप एव आपका पूरा परिवार आचार्य श्री रामलालजी म सा के प्रति अनन्य आस्थावान है। श्री दुगडजी का व्यक्तित्व असाधारण है। धर्म, समाज और क्षेत्रिय एव राष्ट्रीय विषमताओ को मिटाने मे आप वडी सजगता से सूझ-बूझ के साथ प्रयत्नशील रहते है। आप क्षेत्रिय, प्रादेशिक और राष्ट्रीय अनेक सस्थाओ से जुडे हुए है, सस्थाओ के मार्गदर्शन में सदैव तत्पर रहना आपका विशेष गुण है। आपकी कर्मभूमि महानगरी कलकत्ता है। आपने अपने श्रम एव दूरदर्शिता से अपने व्यवसाय मे विशेष सफलता अर्जित की है। लक्ष्मीपुत्र दुगडजी ने न केवल पैसा कमाने का लक्ष्य रखा, दान भी उसी तरह से मुक्तहस्त से दे रहे है। कॉलेज हो, स्कूल हो, अस्पताल हो, धार्मिक व सामाजिक कार्य हो या जन कल्याण के कार्य हो सभी मे आपका विशेष योगदान रहता है। हर क्षेत्र मे सदा सहज भाव से आप दान देने मे तत्पर रहते हैं। मृदुभाषी दुगडजी का जीवन सरल, सादगीपूर्ण और निरभिमानी है। दान देकर भूल जाना आपका स्वभाव है। इनकी उदारता को देखकर स्व सोहनलालजी दुगड की सहज ही स्मृति हो जाती है।

काफी समय से मेरा उनका परिचय है। मैने उनके अनेक गुण देखे है। श्री सरदारमलजी काकरिया एक जानेमाने समाज सेवी ही नही, आदमी को परखने की भी उनकी क्षमता विशिष्ट है। दुगडजी जैसे दानवीर, कर्मवीर, धर्मवीर व्यक्ति का अभिनन्दन करने का विचार कर एक सही कदम उठाया है। अभिनन्दन ग्रन्थ का कार्य श्री भूपराजजी जैन जो अभिनदन ग्रथ तैयार करने मे अपना सानी नहीं रखते, को सौपकर एक सही कदम उठाया है।

हम दुगडजी के यशस्वी, स्वस्थ एव दीर्घायु जीवन के लिए मगल कामना करते है कि वे इसी तरह राष्ट्र, धर्म और समाज की सेवा करते रहे।

केशरीचन्द सेठिया, चैन्नई

बहुत ही हर्ष का विषय है कि विनम्र समाज सेवी, दानवीर श्री सुन्दरलालजी दुगड कोलकाता के अभिनदन ग्रथ का प्रकाशन होने जा रहा है।

मै आपका कृतज्ञ हूँ कि इस महान् व्यक्ति पर आपने मेरे विचार आमत्रित किये हैं। श्री दुगडजी के लिए डॉ बशीर बद्र की ये पक्तियाँ बहुत ही मौजू होगी।

'मै शाहराह नही, रास्ते का पत्थर हूँ ।
यहाँ सवार भी, पैदल उतरकर चलते थे ।।"

श्री सुन्दरलाल दुगड जैसे अनेक भामाशाहो को प्रणाम।

अरुण खाबिया, नीमच (उ प्र)

श्री सोमेन मित्रा, एम.एल.ए के साथ श्री सुन्दरलालजी के दौहित्र जीत झाबक

श्री जैन हॉस्पीटल में श्री राजेशजी, IPS एस.पी हावड़ा का सम्मान करते हुए
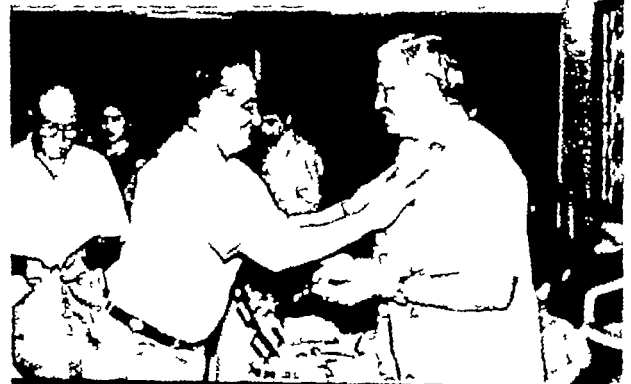
श्री दुगडजी का अभिनन्दन करते हुए श्री विनोद मिन्नी मंत्री श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सभा

श्वेताम्बर जैन कॉन्फ्रेंस कार्यालय में होली प्रीति सम्मेलन २००६

झंडावन्दन करते हुए श्री सरदारमल कांकरिया के साथ

SHREE VISHUDHANAND HOSPITAL
&
RESEARCH INSTITUTE
35 & 37, BURTOLLA STREET, CALCUTTA-700007

बिशुद्धानंद हॉस्पीटल स्मारिका का बिमोचन करते हुए
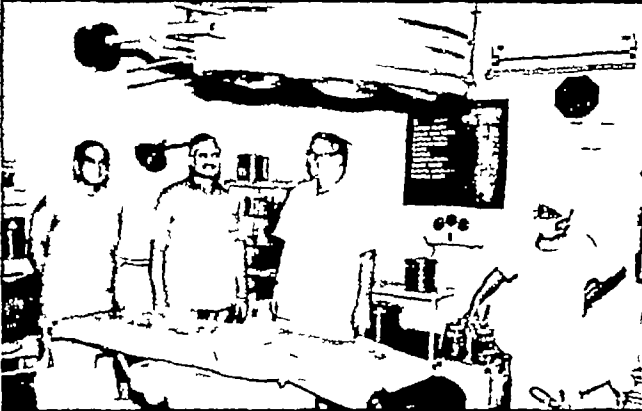
बिशुद्धानद हॉस्पीटल में श्री कृष्णगोपाल सिन्हा के साथ

शुभाशंसा
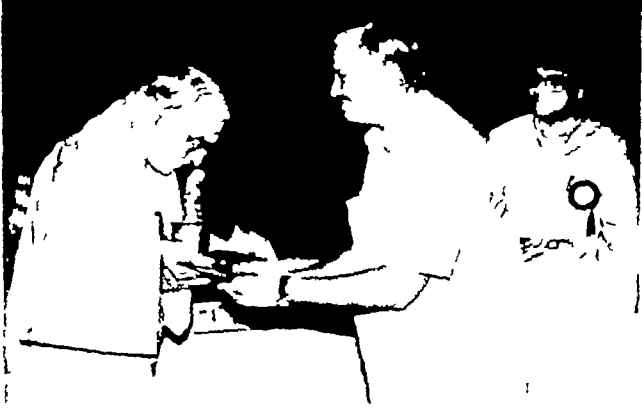
मै श्रीमान् सुन्दरलालजी सा दुगड से पिछले २०-२२ वर्षो से परिचित हूँ। श्रीमान् दुगड सा एक बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। वे न केवल तन से ही सुन्दर है अपितु मन, वचन और कर्म से भी सुन्दर है। उनका जीवन अपने सकल्पो और उद्देश्यो की पूर्ति के लिए सदा ही जागरुक रहता है। मानव जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है जिसमे उनका सहयोग नहीं हो। कोई अर्थाभाव से पीडित हो, सहयोग के अभाव मे यदि किसी की प्रगति कुठित हो रही हो, उचित चिकित्सा के अभाव मे कोई असहाय लग रहा हो तो श्री सुन्दरलालजी दुगड का हाथ हमेशा आगे बढजाता है एव अपने अविकल सहयोग से उसे उन अभावो, सकटो एव कष्ट कठिनाइयो से मुक्ति ही नही दिलाते, अपितु स्नेह-प्रेम एव सौजन्य से अपना बना लेते हैं।

ऐसे श्री सुन्दरलालजी सा दुगड के दीर्घायु एव मगलमय जीवन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

वीरेन्द्र सिह लोढा, उपाध्यक्ष
आगम अहिंसा-समता एव प्राकृत सस्थान, उदयपुर

श्री सुन्दरलालजी सा अपने जीवन के कार्यकाल मे प्रारभ से ही सघर्षरत रहे। आपने सघर्ष व साहस के बल पर अपने सफलता के रथ को आगे बढाया। पारिवारिक पृष्ठभूमि पर आपसे मेरा सगे सबधी का व्यवहार था। आपने कोलकाता की कर्मभूमि पर अपनी सफलता का परचम, समाज सेवा, उदारता व सहायता के रूप मे फहराया। उसी का परिणाम है कि आज दानवीर के रूप मे आपकी पहचान जैन जगत मे विख्यात है।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ बीकानेर के जब श्री चुन्नीलालजी मेहता अध्यक्ष थे और मैं मत्री पद पर था एव सघ के कार्यालय 'समता भवन' मे निर्माण कार्य करा रहा था लेकिन अर्थाभाव था। मैने श्रीमान् भवरलालजी दुगड कोलकाता से मिलने के प्रसग पर बातचीत मे बतलाया कि हमें 'समता भवन' के विकास के लिए थोडी आर्थिक सहायता की आवश्यकता है तब उन्होने कहा कि आप हमारे सहृदय उदार व्यक्ति श्री सुन्दरलाल दुगड से सम्पर्क करे, वे आपकी समस्या हल कर देगे। मैने श्री दुगड सा को पत्र प्रेषित किया जिसमे समता भवन हेतु सहयोग व श्री अ भा साधुमार्गी सघ से सक्रिय रूप से जुडने हेतु निवेदन किया। आपने मेरे निवेदन पर ध्यान ही नहीं दिया बल्कि सघ की प्रत्येक गतिविधियो मे सक्रिय अग्रिम सहयोगी होकर उभरे। तब से अब तक आप सघ के साहित्य प्रकाशन मे, समता भवनो के निर्माण व धार्मिक अध्ययन-अध्यापन, धार्मिक शिविरो के सचालन आदि सभी कार्यो मे मुक्तहस्त से दान दे रहे हैं। केवल यह धार्मिक सघ ही नही आपके पास कोई सद्कार्यो की सहायता हेतु उपस्थित व्यक्ति यथोचित सहायता प्राप्त करता है, जिसकी सूची बहुत लम्बी है।

कई एक प्रसग पर जब आपसे बातचीत होती है तो आपने कई बार कहा कि "श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ से तो पहले आपने ही मुझे जोडा"।

ऐसे उदार हृदय, सरल व्यक्तित्व के धनी, दानवीर, व्यवहार कुशल व्यक्ति का अभिनन्दन सद्गुणो का अभिनन्दन है। मै भी सर्वतोभाव से आपका अभिनदन करता हूँ। आप दीर्घायु हो और इसी प्रकार सर्वजन सुखाय उदारतापूर्वक सेवा करते हुए अपने को धन्य-धन्य बनावे।

धनराज बेताला

शुभाशंसा

धर्म आत्मा का विज्ञान है। अत धर्म का सम्बन्ध आत्मा से है। काव्य या भक्ति का सम्बन्ध हृदय स है और दर्शन तथा विज्ञान का सम्बन्ध मस्तिष्क से है। मस्तिष्क, हृदय एव आत्मा, जब तीनो के मध्य समन्वय, एक लयवद्धता स्थापित होती है तब हमारे भीतर, भावो के आकाश मे "सत्य" की ज्योति का आविर्भाव होता है, तत्क्षण अहकार के अन्धकार की मृत्यु हो जाती है, फलस्वरूप समता का "शिव" सगीत ध्वनित होता है। मृत्यु सदा असत्य की होती है। शरीर मृत है, आत्मा अमृत है, यह वोध जब घटित होता है तब वह व्यक्ति शरीर को शव मानकर समता के "शिव" की यात्रा की ओर उन्मुख हो जाता है, तव आनद की वृष्टि होती है, उसमे निरतर सरावोर जो रहता है, वह कहलाता है– "सुन्दर", जो सुन्दर होता है, वही ईश्वर के प्रति समर्पित होता है और समर्पण के फलस्वरूप उसे सहज अनुभव होता है – "मैं" नही, "तूँ" ही तूँ और "तेरा तुझको अर्पण क्या लागै मेरा"। धर्म के प्रति समर्पित व्यक्ति, आत्म-सौन्दर्य से उपजी, समता की क्षमता से, सहानुभूति की जगह समानुभूति मे प्रवेश करता हुआ, सर्व के दु ख को अपनी करुणा प्रदान करता है, अर्थदान के माध्यम से पीडित की वेदना दूर करने मे सदैव सहज रूपेण तत्पर रहता है।

"सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम्" को अपने मे समेट कर, कलापूर्ण जीवन जीने वाले, ऐसे है हम सव के प्रिय-सुप्रिय-जनप्रिय – "श्री सुन्दरलालजी दुगड"। अजातशत्रु वनकर, अपनी मृदुल-मुस्कान से सर्व के हृदय को सहज स्पर्श करते हुए, "जन सेवा" की ओर अवाध गति से अग्रसर है, अत वे निर्विवाद रूपेण वन्दनीय है, अभिनन्दनीय है।

उनके वैशिष्ट्य को शब्दो के माध्यम से अभिव्यक्त करना, किसी साहित्य-मनीषी के लिए सम्भव है, मेरे लिए तो असम्भव है। शब्दो की अपनी सीमा है और भाव असीमित होते है। भावो की प्रगाढता के समक्ष शब्द कगाल हो जाते है।

श्री सुन्दरलालजी दुगड के अन्त करण मे अध्यात्म की रश्मियाँ प्रवेश कर चुकी है। मेरा व मेरे परिवार का उनसे एक गहरा स्नेह सम्बन्ध विगत कई वर्षो से स्थापित होने के कारण, जो मेरे अनुभव मे उनकी भाव-दशा आई, मात्र उसे उल्लेखित करने का मैंने प्रयत्न किया है।

आयु के वेद की समस्त ऋचाये उन पर वरसती रहे, वे दीर्घायु हो और उनकी कीर्ति पताका अधिक से अधिकतर लहराती रहे। अपनी सवेदना की सम्पूर्ण गहराइयो के साथ इस गृहस्थाश्रम के मनीषी का प्रणाम करता हूँ।

राजेन्द्र सोपानी, कोलकाता

Shree Sunderlal Dugar has been known to me for sometime past I have seen him to be kind to the poorest sections of the society I have also seen him to be of great help to the poor people who are unable to meet the expenses for their costly medical treatment

It is a fact that he has come forward to donate clothes to the poorest sections of the society at the time of national festival like Durgapuja Kalipuja, Id Diwali etc He has also taken keen interest to promote sports in the remotest corner of the state by giving sports materials to different clubs

Debendra Nath Biswas
Member W Bengal Legislative Assembly

बच्चों का देश, राष्ट्रीय बाल मासिक के द्वारा आयोजित समारोह में महामहिम राज्यपाल आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री के साथ

श्री जैन विद्यालय एवं श्री जैन सभा द्वारा सहायता राशि का चेक देते हुए दुगड़जी

श्री कृष्णगोपाल सिन्हा, श्री सरदारमल कांकरिया आदि अतिथियों से सम्मानित श्री दुगड़जी

बच्चों का देश पत्रिका में पुरस्कृत करते हुए
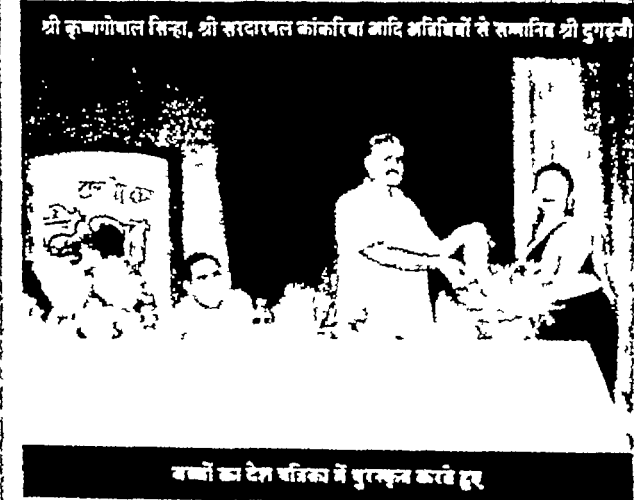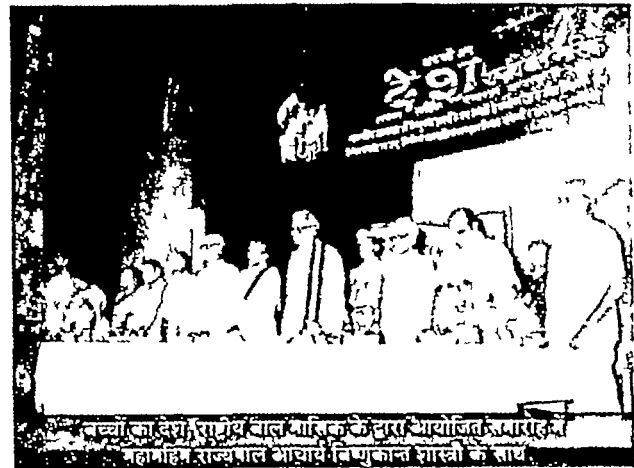
श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सभा के पदाधिकारियों के साथ

आचार्य नानेश समता छात्रावास में विशिष्ट अतिथि श्री कांकरिया, श्री भूपराज जैन, श्री कृष्णगोपाल सिन्हा के साथ

प.बं. प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा आयोजित समारोह में श्री दुगड़जी, श्रीमती आशा गुटगुटिया, श्रीमती अलका छाजेड़, श्री गौरीशंकरजी कांचा, श्री संदीप भुतोड़िया

शुभाशंसा

वैसे दुगड साहब से मेरा बहुत पुराना परिचय है। वे हमारे परिवार के निकटस्थो मे से भी हैं। इसलिये उनके कार्यो से हमारा परिवार सदा प्रभावित रहा है। ये हमारे समाज के ऐसे व्यक्ति है जिनको पाकर हमारा जैन समाज ही गौरवान्वित नही हुआ है अपितु जो भी उनके सम्पर्क मे आया, जो भी पीडित व्यक्ति उनके पास गया तो उसके दु ख को, बिना किसी भेदभाव के दूर करने मे उन्होने अपनी पूरी शक्ति लगा दी। ऐसे व्यक्ति को अभावो व कष्टो से मुक्ति पाने मे ही मदद नही की बल्कि उसे इतना स्नेह व प्रेम दिया कि वह सदा के लिये उनका वन कर रह गया।

जब भी मैंने किसी सस्था या व्यक्ति को उनको मदद करने के लिये कहा तो बिना कुछ पूछताछ किये तत्काल उसकी मदद करने को तैयार हो गये। जब भी मैंने पूछा कि सस्था मे इस राशि की जो रशीद बनेगी वह आपके नाम से बना ले क्या तो कहा कि नही मेरे नाम से न जमा-खर्च करना है, न रसीद कटवाना, किसी को भी यह खबर नही होनी चाहिये कि मैंने मदद की है। लाखो का दान सतत देते रहने पर भी नाम व प्रशसा से इन्होने सदैव अपने को दूर ही रखा है। इनका सदा यही मानना रहा कि मेरी थोडी-सी मदद से भी यदि जनता व समाज मे दु खो को थोडा भी कम करने मे मदद मिलती है तो इससे ज्यादा प्रसन्नता व सन्तोष की बात मेरे लिये क्या हो सकती है ?

ऐसे बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी केवल नाम से ही सुन्दरलाल नही, मन, वचन व कर्म से भी ये सर्वांग सुन्दर हैं। ऐसे व्यक्ति को पाकर समाज धन्य ही हुआ है। आज के युग मे सुन्दरलालजी जैसा निस्पृह व्यक्ति मिलना बहुत कठिन हो गया है जो दानी के साथ निर्लेप व निर्वकार भी हो। इनको मैंने कभी गुस्सा करते नही देखा, और न किसी से कभी कोई अपेक्षा रखते देखा।

ये शतायु होकर अपने जीवन व कर्म से औरो के जीवन को भी धन्य बनाने मे जुटे रहे और हमे सदैव प्रेरणा व प्रकाश देते रहे। समाज ऐसे ही अनेक प्रकाश पुज पैदा करने मे सफल हो, यही मेरी मगल कामना है।

डॉ सम्पतकुमार जैन, जयपुर

श्री सुन्दरलाल दुगड का अभिनन्दन समाज के प्रति उनके द्वारा की गई सेवा और कार्यो के लिए हो रहा है। इससे परोपकार, दयालुता और सहयोग जैसी भावनाएँ वलवती हागी जिनकी समाज मे नितात आवश्यकता है।

श्री दुगड ने एक समाजसेवी के रूप मे परोपकार और पर-पीडा मे पडने वाले व्यक्तित्व के रूप मे ख्याति अर्जित की, लेकिन इसके वावजूद भी उनमे लेशमात्र भी अभिमान नहीं है। मानवता के प्रति सवेदनशीलता, दीनहीन की सेवा के साथ-साथ मातृ, पितृ और गुरु भक्ति की त्रिवेणी भी उनके जीवन मे देखने को मिली। ऐसे व्यक्ति धन्य हैं, जो अनवरत सफलताओ को वरण करते है।

मैं इनके दीर्घायु होने की कामना करता हूँ एव समाजसेवा के पुनीत कार्यो मे इसी प्रकार जुटे रहने हेतु इनके उज्ज्वल भविष्य की मगल कामनाएँ करता हूँ।

डॉ बुलाकीदास कल्ला, विधायक
अध्यक्ष, राजस्थान प्रदेश काग्रेस कमेटी

शुभाशंसा

मुझे अति आनन्द की अनुभूति हो रही है कि युवक एव गभीर हृदय आदरणीय श्री सुन्दरलालजी दुगड का अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित किया जा रहा है। राजस्थान मे बीकानेर के उपनगर देशनोक के वासी कोलकाता प्रवासी श्री दुगडजी कुछ ऐसी ही महत्वपूर्ण विशेषताएँ समेटे हुए हैं। जहाँ तक मैंने उनके जीवन को परखा, मुझे लगा उनकी सफलता का राज निरअहकारिता तथा श्रद्धाशीलता है। समता व विनम्रता ने उनके 'विलपावर' को निरन्तर वृद्धिगत किया है। उनकी मिलनसारिता एव उदारता सराहनीय है। उन्होंने जैन, अजैन आदि देश की अनेक सस्थाओ को उदारतापूर्वक जनसेवा कार्यो के विकास हेतु निरन्तर आर्थिक सहयोग दिया है।

उन्होंने अपने औद्योगिक क्षेत्र मे भी अच्छी सफलता प्राप्त की है जिसका मुख्य कारण श्रम, सम्पत्ति एव व्यवस्था का सतुलन सही रूप मे करना है। दुगडजी ने अनेक सस्थाओ मे विशेष शीर्ष स्थान प्राप्त किया है। शिक्षा एव चिकित्सा के क्षेत्रो मे भी उनका आर्थिक सहयोग निरन्तर रहा है। मानसिक सतुलन मे उनकी मन स्थिति को निष्प्रकम्प रखा है। आने वाली पीढी श्री सुन्दरलालजी के धार्मिक जीवन से प्रेरणा लेकर तन, मन और धन से राष्ट्र और समाज हित के उपयोगी कार्य करती रहे, यही भावना है।

मै श्री दुगडजी के दीर्घायु की हृदय से कामना करता हूँ तथा उनकी उदारवृत्ति मे निरन्तर राष्ट्र हित के और ठोस कार्य होते रहे।

रतनलाल रामपुरिया
पूर्व अध्यक्ष, श्री जैन श्वेताम्बर तेरापथी महासभा, कोलकाता

श्री मदनजी दिलावर -समाज कल्याण मंत्री, राजस्थान सरकार के कलकत्ता आने पर स्वागत करते हुए श्री सत्यनारायण बजाज, भूतपूर्व विधायक, श्री जुगलकिशोर जैथलिया के साथ

श्री सुन्दरलाल दुगड़ को माल्यार्पण करते हुए श्री भँवरलाल बैद

भामाशाह पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री सत्यव्रत मुखर्जी M.I.C. भारतीय सरकार द्वारा

एक ओर जहाँ मानव मात्र मे करुणा का स्रोत सूख रहा है वही दानवीर श्री सुदरलालजी दुगड अपनी हृदय स्थली मे असीम करुणा का सागर लिये बिना किसी जाति भेद के अभावग्रस्त मानव की सेवा करने मे सदैव तत्पर रहते है। आज जहाँ दुनिया नाम, यश एव कीर्ति के पीछे अधी होकर भाग रही है वही एक हाथ से दान देकर दूसरे को खबर ही न हो इस उक्ति को चरितार्थ करते हुए श्री दुगडजी उदार चित्त से सेवा कार्यो मे निरतर जुडे हुए है।

कोई भी जरुरतमद व्यक्ति हो, सेवा कार्यो से जुडी किसी भी तरह की सेवास्थली हो, इस 'भामाशाह' की थैलियाँ सदैव खुली रहती हैं। इस व्यक्ति के बारे मे मुझे यह कहने मे तनिक भी अतिशयोक्ति नही लग रही है कि अपने युग के प्रख्यात दानवीर स्वर्गीय सेठ श्री सोहनलालजी दुगड के पश्चात् कलकत्ता के जैन समाज मे अगर कोई महादानवीर का नाम उभरा है तो वह नि सदेह रूप से 'श्री सुन्दरलाल दुगड' ही है।

सादा जीवन उच्च विचार के सिद्धात मे आस्था रखने वाले, पीडित मानव की अधेरी जिदगी मे प्रकाश की ज्योति प्रज्ज्वलित करने वाले श्री दुगड एक शिक्षक की भाँति अपने आचरण एव सौम्य व्यवहार से भावी पीढी को करुणा, सेवा, उदारता, मैत्री एव सर्वधर्म समभाव का पाठ पढा रहे है।

विराट व्यक्तित्व के धनी, मृदुभाषी, उदारमना, मिलनसार "यथा नाम तथा गुण" स्वभाव से, गुण से, सर्व दृष्टि से "सुन्दर", समाज की इस विलक्षण प्रतिभा को मेरा अतर्मन से बहुत बहुत अभिनदन।

फागमल अभानी, कोलकाता

कोलकाता वस्त्र व्यवसायी समिति द्वारा आयोजित समारोह में

राजस्थान परिषद द्वारा आयोजित समारोह में मुख्य न्यायाधीश श्री ए.के. माथुर के साथ

महामहिम राज्यपाल श्री बीरेन.जे. शाह सभा को सम्बोधित करते हुए।
समाज के विशिष्ट व्यक्तियों के साथ श्री दुगड़जी

शुभाशंसा

आदरणीय सुन्दरलालजी दुगड के बारे मे लिखना बहुत ही कठिन काम है क्योंकि श्री दुगड साहब के अन्दर अनेक गुण विद्यमान है। किस गुण के बारे मे लिखा जाए, यह विचारणीय प्रश्न है।

श्री दुगड साहब सहृदय, लम्बी सोच वाले उद्योगपति, दानवीर, भामाशाह, अच्छे गृहस्थ, जाबाज इसान है। जिस तरह खुले हाथो से आप अनेक सस्थाओ को प्रतिवर्ष दान देते है शायद भारतवर्ष मे इनके मुकाबले ऊगली पर गिन लो, इतने ही व्यक्ति होगे।

आप अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ बीकानेर के समता भवन निर्माण के अखिल भारतीय सयोजक है। आपके इस कार्यकाल मे देश मे अनेक जगहो पर आपके उदार सहयोग से समता भवन निर्माण ने गजब की गति प्राप्त की है तथा गाँव-गाँव मे समता भवनो का निर्माण चल रहा है। पहले मैंने दुगड साहब के बारे मे सुन रखा था तथा श्रमणोपासक से जानकारी मिलती थी।

आपके द्वारा नानेशनगर (दाता), नानेश ध्यान केन्द्र उदयपुर तथा अनेक शिक्षा सस्थाओ एव चिकित्सालयो मे उदार भाव से दान देने के बारे मे सुन रखा था।

आप जब नीमच पधारे प्रसग था श्री रामेश समता भवन के शिलान्यास समारोह का। आपसे प्रत्यक्ष मिलने का अवसर मिला तब पता चला कि आप तो सादा जीवन उच्च विचार वाले व्यक्तित्व के धनी है। आपकी सादगी एव सरलता देखकर लगता है कि ''लक्ष्मी अच्छे इन्सानो के यहाँ ही निवास करती है'', यह कहावत चरितार्थ होती है।

आपने श्री रामेश समता भवन हेतु पहले ५ लाख रुपये का मानस बना रखा है परन्तु रामेश समता भवन की निर्माण लागत १ करोड रुपये से ऊपर की देखकर आपने साधुमार्गी जैन सघ, नीमच के आग्रह पर यह राशि सहज भाव से ११ लाख रुपये कर दी।

ऐसे व्यक्तित्व के धनी को मै बार-बार साधुवाद ज्ञापित करता हूँ तथा भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि आप सदा स्वस्थ रहें एव दीर्घायु हो एव इसी तरह से मानव सेवा करते रहे।

अशोक जैन (रगवाला)
नीमच

बहुआयामी, कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्तित्व का यह अभिनन्दन है। ''मानव की पूजा कौन करे, मानवता पूजी जाती है'', ''जैसा नाम वैसा काम''।

इस भौतिक जगत मे शिक्षा, सस्कार-सस्कृति जैसी स्थाई पूजी का अस्तित्व बनाये रखना है, शाति-सात्वना को जीवित रखना है तो दानवीरो, आध्यात्मिको, राष्ट्रभक्तो का सम्मान, अभिनन्दन होना ही श्रेयष्कर है। यह पुनीत कार्य सेवाभावी, दूरदृष्टा श्री सरदारमलजी काकरिया के सयोजकत्त्व मे पूर्ण हो रहा है, यह और भी गौरव की बात है।

''अभिनन्दन समारोह'' की सफलता के लिए अनेकानेक शुभकामनाएँ। यह अभिनन्दन समारोह सबके जीवन का मार्गदर्शक बने।

मनोहरलाल जैन
पूर्व अध्यक्ष-जिला पचायत, मन्दसौर (म प्र)

शुभाशंसा

इस ससार म अधिकाश लोग अपने सुख और स्वार्थ के लिए यह अनमोल मानव जीवन व्यर्थ गवा देते है। कतिपय लोग इस ससार मे ऐसे आते है जो अपना जीवन निस्वार्थ भाव से परोपकार मे लगाकर महान वन जाते है।

मनुष्य जन्म से महान् नहीं होता है। जो स्वार्थ से ऊपर उठकर परार्थ और परमार्थ के क्षेत्र मे अपन जीवन का उत्सर्ग करते हैं तथा अपनी कर्मजा-शक्ति को मानवोद्धार जैसे महत् कार्यो मे सतत नियोजित करते हुए इस पुनीत लक्ष्य की अभिसिद्धि मे अपने जीवन को आहूत कर दत है वे जन-जन के लिए वन्दनीय बन जाते है। ऐसे इन्सानियत के मसीहा, परानुकम्पी श्री सुन्दरलाल दुगड की मानवीय खशवू समाज और राष्ट्र के बीच सदैव सुवासित होती रहेगी।

रत्नगर्भा देशनोक की माटी मे महापुरुषो को पैदा करने की शोहरता प्राप्त है। ज्ञात इतिहास क पन्ना पर दृष्टिपात करते हैं तो अनेक महापुरुषो ने आध्यात्मिक, धार्मिक एव सामाजिक जीवन मे अद्वितीय कीर्तिमान स्थापित कर यहाँ की मरुधरा को तीर्थ-स्थल का रूप प्रदान किया है। वर्तमान मे आचार्य श्री रामेश ने अपने व्यक्तित्व और कर्तव्य से न सिर्फ स्वय को प्रतिष्ठित किया वरन उनके अवतरण से समग्र मानवता धन्य हुई है। अनेक सत-सतियो ने इस महान पावन धरा पर जन्म लेकर आध्यात्मिक जगत मे अलख जगाई है। धर्म सघ के दो प्रमुख पद श्रमणो मे आचार्य एव श्रावको में सघ अध्यक्ष, ये दोनो पदो का गौरव इस माटी पर जन्मे महापुरुषो को प्राप्त हुआ है।

इस अविछिन्न जैसी शृखला मे आदर योग्य एक नाम परोपकारी, गरीवो के मसीहा, उदात्त हृदय श्री सुन्दरलाल दुगड का है।

रण वाकुरे मारवाड की धरती पर जिनका जन्म हुआ, रेगिस्तानी रेतीले टीलो के बीच जिनका वचपन बीता, वही शिक्षा प्राप्त की। लघुवय मे कलकत्ता को अपनी कर्मभूमि स्वीकारते हुए कपडे का व्यवसाय प्रारम्भ किया तत्पश्चात् भवन निर्माण कार्य मे सलग्न हुए। भवन निर्माण कार्य की ऊँचाइयो को छूते हुए अन्य व्यवसायो से जुडे और ख्याति प्राप्त की। साहस और धैर्य के अधिष्ठान श्री दुगड ने अनेक आपदाओ, विपदाओ को पार करते हुए अपनी कार्यकुशलता एव दूरदर्शिता के साथ लक्ष्मी का सदुपयोग समाज सेवा मे करते हुए जो कीर्ति और यश अर्जित किया है, वह अक्षुण्ण है। सरलता जिनका गहना है, सहजता जिनकी पूजी है एव अपनापन का अकूत भडार जिसके मन मे समाहित है। यही कारण है कि आज वे समाज के अविस्मरणीय निधि हो गये है।

अपने सतत क्रियाशील जीवन म श्री दुगड ने अनेक सस्थाओ के अस्तित्व को सार्थक बनाया है एव अवलम्ब प्रदान किया है। आपकी नि स्वार्थ सेवा-भावना एव लक्ष्य पूर्ति के लिए प्रतिबद्धता हम सभी के लिये एव विशेष रूप मे नयी पीढी के लिये अनुकरणीय है।

उदार एव उदात्त व्यक्तित्व के धनी माननीय दुगड सा वस्तुत कर्मवीर है। धार्मिक व बहुआयामी सेवा प्रकल्पो में अनुदान प्रदान कर उन्होने अनेक ऊँचाईयो को स्पर्श किया है।

ऐसे महान् परानुकम्पी श्री सुन्दरलाल दुगड सर्वदा सेवारत होकर समाज और राष्ट्र के उन्नयन मे अग्रणी बने रहे यह मगल कामना है। आपके दीर्घ जीवन की शुभाशसा के साथ –

इन्दरचन्द वैद

सम्पादक, समता सौरभ, सूरत

अहिंसा परिषद् द्वारा आयोजित समारोह में श्री दुगड़जी का अभिनंदन करते हुए श्री [illegible]

निर्मल जैन स्मृति पुस्तकालय

निर्मल जैन स्मृति पुस्तकालय में आयोजित समारोह में दुगड़जी श्री कांकरिया के साथ

ध्यान केन्द्र, उदयपुर में दुगड़जी का स्वागत

2005

श्री दुगड़जी का सांभर क्लब द्वारा अभिनंदन

श्री ज्ञानसिंह सोहनपाल एम.एल.ए के साथ खड़गपुर के कार्यक्रम में

नानेशनगर में दुगड़ विंग के निर्माण के लिए भूमि पूजन करते हुए

दुगड़जी के सम्मान में आयोजित सभा में

शुभाशंसा

श्री सुन्दरलालजी दुगड कुशल व्यवसायी एव धर्मनिष्ठ व्यक्तित्व के धनी होने के साथ-साथ सामाजिक, चिकित्सा एव शिक्षा सेवा एव जीवन के किसी भी मोड पर जहाँ पर कोई व्यक्ति असहाय लग रहा हो तो आप उसे सर्वतोभावेन बिना किसी प्रदर्शन, तन, मन व धन से सहयोग करने मे अग्रणी रहते है।

श्री दुगड श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ के समर्पित सदस्य/पदाधिकारी है, जिन्होने आचार्य श्री नानेश-रामेश के प्रति अपनी पूर्ण श्रद्धा, निष्ठा एव समर्पणा रखते हुए जैन समाज के उत्थान के लिए प्रत्येक क्षेत्र मे तन, मन, धन से पूर्ण सहयोग प्रदान कर समाज के श्रावको के मन मस्तिष्क मे अपना अविस्मरणीय स्थान बनाया है।

हमारे कलकत्ता प्रवास पर आपने अपनी व्यस्ततम दिनचर्या से समय निकाल कर जो आथित्य सेवा का अनुपम कार्य किया, वह अविस्मरणीय है। आपकी सरलता, सहजता व सादगी सभी के लिए प्रेरणास्पद है। आप लक्ष्मीपुत्र है पर लक्ष्मी के दास नहीं, आप दीन-दुखियो व जरुरतमद व्यक्तियो एव विभिन्न परोपकारी सामाजिक सस्थाओ को मुक्तहस्त से दान देते हैं। आप मे सबसे बडा गुण है कि हर समाज मे आप मुक्त हाथ से दान देते हैं परन्तु आपमे कभी भी अभिमान देखने मे नहीं आया।

आप जैसे सरल, उदारमन, सहयोगी-दानवीर व्यक्तित्व के प्रति हम कृतज्ञ हैं। वीर प्रभु से यही प्रार्थना है कि आपकी धर्मभावना, सेवा भावनाओ मे अभिवृद्धि होती रहे। आपका जीवन एक कोहिनूर हीरे की तरह समाज, प्रदेश, देश एव विदेश मे प्रख्यात हो, आप पूर्ण स्वस्थ जीवन के साथ शतायु प्राप्त करे, इन्ही शुभ मगलमय भावनाओ के साथ-

राजमल चोरडिया, जयपुर

श्री सुन्दरलालजी दुगड एक कुशल व्यवसायी होने के साथ-साथ श्रद्धावान श्रावक भी हैं। आचार्य श्री नानेश व रामेश के प्रति पूर्ण समर्पित है। आप यथा नाम तथा गुण वाली कहावत को चरितार्थ करते है। आपके जीवन मे अहकार नाम मात्र का भी नही है।

आप सामाजिक-धार्मिक-शिक्षा व चिकित्सा के क्षेत्र मे उदारमन से सहयोग करते हैं। आपकी भावना यही रहती है कि मै ज्यादा से ज्यादा सहयोग कर सकू। आपमे नाम मात्र का भी अभिमान नहीं है। आप मे करुणा दया की भावना कूट-कूट कर भरी है।

आपकी भावनानुसार दो बार विवाह के अवसर एव सघ की मीटिंग मे दो बार जाने का अवसर मिला। उस अवसर पर आपकी आत्मीयता मन को झकझोर गई। देशनोक मे हॉस्पीटल के शिलान्यास के अवसर पर भी जाने का अवसर मिला तव आपकी भावना देखने लायक थी।

आपके ऊपर लक्ष्मीजी की पूरी कृपा है। उसी अनुरूप आप जरुरतमदो को व सस्थाआ को दान देकर लक्ष्मी का सही उपयोग करके आत्मसतोष प्राप्त करते हैं। वीर प्रभु से यही प्रार्थना है कि आप शतायु होवे और ज्यादा से ज्यादा सघ व समाज की सेवा करते रहे।

चीडी चोच भर ले गई, नदी ना घटियो नीर।
दान दिये धन ना घटे, कह गये दास कवीरा।।

निर्मला चोरडिया, जयपुर
पूर्व अध्यक्ष, श्री अ भा सा जैन महिला समिति

मितभाषी, निरभिमानी, स्पष्टवक्ता, उदारमना श्री सुन्दरलाल दुगड किसी सम्प्रदाय या धर्म से बन्धे नहीं है। गत बीस वर्षो के सामाजिक जीवन मे मैंने उन्हे हर मच पर पाया है। जो भी उनसे एक बार मिलता है वह उन्हीं का बन जाता है। उनकी आत्मीयता उसे अपना बना लेती है। पूरे भारत के विभिन्न दानवीरों, उद्योगपतियो व सामाजिक कार्यकर्त्ताओ से सम्पर्क रहा है किन्तु श्री सुन्दरलाल दुगड की जोडी का दूसरा व्यक्ति देखने को नहीं मिला। ऐसे व्यक्ति का अभिनन्दन कर हम गौरवान्वित है। परमात्मा उन्हे शतायु करे और स्वस्थ रखे, यही शुभ कामना-

पदमचन्द नाहटा

इक्कीसवीं सदी के भारतव्यापी जैन महासघो की प्रधान शृखला मे सबके प्रिय सबके हितकारी, जिन शासन भक्त, जैन एव अजैन लोगो के सुख-दु ख मे सहभागी बनकर अपने अविकल सहयोग से अभावो एव सकटो से मुक्ति दिला स्नेह, प्रेम एव सौजन्य की अविरल धारा से अपनापन महसूस करने वाले श्री सुदरलालजी दुगड को भला कौन नही जानता ? बहुमुखी प्रतिभा के धनी एव बहुआयामी व्यक्तित्व से सम्पन्न श्री दुगड साहब का अन्त करण गगाजल सम पवित्र, पुष्प सम प्रफुल्लित एव चन्दन सम स्वय कष्ट सहन कर सौरभ समर्पण करने वाला है। आपके व्यक्तित्व मे सरलता, सौम्यता, विनम्रता, उदारता, वात्सल्यता, सवेदनशीलता, कर्मठता एव सहृदयता सदा दृष्टिगोचर होती है। समस्त बडो के प्रति आपका आदरभाव, सबके साथ सहज सम्मान, प्रेम के साथ मिलना-जुलना, सुरुचिमय धर्मनिष्ठता, दीन-दुखियो के प्रति आत्मीय भाव एव सामाजिक एव परोपकारी कार्यो मे पहल करने को तत्पर आपकी अनुकरणीय विशेषताएँ हैं।

आप समाज एव जैन धर्म की उत्तरोत्तर समृद्धि के लिए सर्वात्मना समर्पण से अपने को सहभागी बना समाज उन्नयन एव समाज विकास मे अभिवृद्धि कर रहे है। निष्काम सेवा-भावना एव बौद्धिक प्रतिभा के कारण आप अनेक सस्थाओ से किसी न किसी रूप से जुडकर रचनात्मक सहयोग प्रदान करने मे तत्पर बने हुए हैं। अनेक जैन एव जैनेत्तर कल्याणकारी सस्थाओ, शिक्षण सस्थाओ, स्वयसेवी सस्थाओ, ट्रस्टो इत्यादि को प्राण-पोषित कर शिक्षा, स्वास्थ्य एव जनहित के कार्यो मे अपनी उदात्त मनस्विता का परिचय देते हुए अविस्मरणीय योगदान कर रहे है। निर्धन, असहाय, जरुरतमद लोगो के प्रति आपके मन मे दया-भावना बडी प्रबलता लिए हुए है। आपके मन में सदैव इनके प्रति कुछ सहायता करते रहने की इच्छा रहती है और इस वर्ग को सहायता प्रदान कर समाज की स्थिति को सुदृढता प्रदान कर रहे है।

आप अपने पुरुषार्थ द्वारा उपार्जित लक्ष्मी का सदुपयोग विभिन्न धार्मिक एव सामाजिक कार्यो यथा शिक्षण सस्थानो, उपाश्रयों, विश्रान्तिगृहो, अस्पतालो एव विभन्न जनहितकारी अनुष्ठानो मे मुक्त हस्त से दान देकर जन-जन को लाभानवित कर रहे है। आप अपना प्रभूत धनदान करने के बावजूद अपने श्रीमुख से यह कहना कि-"देने वाला तो कोई और है जो दिन-रात देता है, मै तो मात्र उनके सेवक के रूप मे यत्किंचित ही दे पाता हूँ अत ये नयन ऊपर नही उठ पाते है"। इतने बडे दानशील व्यक्ति के लिए यह विनम्रता की पराकाष्ठा का परिचायक है।

ऋषभकुमार मुरडिया
कानोड (राज)
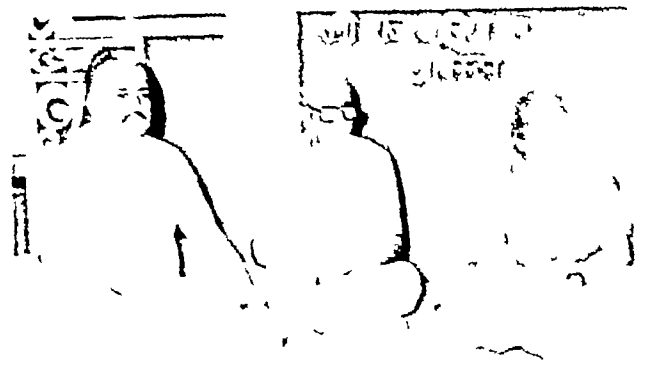
राजस्थानियों के अभिनंदन समारोह में मंचस्थ श्री दुगड़जी, श्रीमती मीना पुरोहित एवं श्री रामअवतार गुप्त, सम्पादक सन्मार्ग

श्री एस. एस. जैन सभा द्वारा आयोजित समारोह में श्री चंपालाल बच्छावत, श्री रतनचन्द नाहटा, श्री हरखचन्द कांकरिया, श्री सरदारमल कांकरिया एवं श्री सुरेन्द्रकुमार बोथिया के साथ

श्री सुरेशदादा जैन, एम.आइ.सी., महाराष्ट्र सरकार के साथ दीप प्रज्जवलित करते हुए श्री दुगड़जी एवं श्री कांकरियाजी

कोलकाता वस्त्र व्यवसायी समिति को होली-प्रीति सम्मेलन का दीप प्रज्वलित करते श्री सुन्दरलाल दुगड, श्री रामगोपाल चौधरी, अध्यक्ष

आगम अहिंसा समता शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य विमोचन के अवसर पर श्री सुन्दरलालजी को सम्मान पत्र भेंट करते हुए श्री सरदारमल कांकरिया

श्री प्रह्लादराय अग्रवाल, रुपा एण्ड कं. द्वारा सम्मान प्राप्त करते हुए श्री बिशुद्धानंद सरस्वती हस्पताल में आयोजित समारोह में

शुभाशंसा

राजस्थान की पावन धरा, मरुधर प्रान्त मे देशनोक शहर के श्रेष्ठीवर्य श्री मोतीलालजी सा दुगड के सुपुत्र श्री सुन्दरलालजी सा दुगड ने अपनी दानवीरता से सम्पूर्ण भारत मे विशेष ख्याति प्राप्त की है। देशनोक मे करणी माता का मन्दिर है जो बहुत विख्यात है। सेठ श्री सुन्दरलालजी दुगड मूल निवासी तो देशनोक के है परन्तु वर्तमान मे व्यवसाय के निमित्त भारत के महानगर कोलकाता मे निवास कर रहे है।

आप सभी क्षेत्रो मे, सभी धार्मिक समाज सेवी प्रवृत्तियो मे मुक्तहस्त से दान देते है। आपकी दान की प्रवृत्ति इतनी व्यापक है कि प्रतिवर्ष हजारो व्यक्ति एव सस्थाएँ लाभान्वित होती हैं। मैंने जब कभी भी किसी भी सस्था या व्यक्ति के लिये सहयोग हेतु निवेदन किया, आपने पूर्ण उदारता पूर्वक दान दिया है। मै सोचता हूँ कि सम्भवत एक भी व्यक्ति या सस्था आज तक आपके द्वार से खाली नहीं लौटी होगी।

समता भवन एव धर्म स्थान के लिए आप प्रतिवर्ष लाखो रुपया दान देते है। इसी प्रकार जैन, अजैन सभी मन्दिरो के निर्माण मे, गोशालाओ के लिए, विद्यालय भवनो, अस्पतालो के लिए, छात्र-छात्राओ के शिक्षण हेतु, असहाय-निर्धन परिवारो के भरण-पोषण हेतु एव ऐसे अनेक सेवा कार्यो के लिए आप सदैव तन, मन, धन से तत्पर रहते है। नि सन्देह आपकी उदारता अत्यन्त प्रशसनीय है। श्री अ भा साधु जैन सघ अनेक प्रवृत्तियो का सचालन करती है। उनमे समता प्रचार सघ भी एक है, जो पूर्ण आध्यात्मिक प्रवृत्ति है। आपकी समता प्रचार सघ के प्रति अच्छी श्रद्धा है। गत तीन वर्षो से निरन्तर आप समता प्रचार सघ के सेवा प्रदान करने वाले स्वाध्यायियो के लिए पुरस्कार स्वरूप उपहार प्रदान कर रहे है। वर्ष २००४ मे फोल्डिग बैग (अटेचीनुमा), वर्ष २००५ मे 'जिण धम्मो' पुस्तक एव २००६ मे सुन्दर बैग प्रदान किये है। वर्ष २००६ मे लगभग ५०० स्वाध्यायियों को पुरस्कृत किया गया।

इस वर्ष ग्रीष्मावकाश मे छात्र-छात्राओ के सस्कार निर्माण एव ज्ञान चेतना के अनेक शिविरो का आयोजन किया गया था। सभी शिविरो मे शिविरार्थियो को आपकी ओर से सुन्दर, उपयोगी बेग वितरित किये गये।

दान की इतनी उदारता के उपरान्त भी मन मे इनके अह भाव नही है। आप सरलता एव निरभिमानता की साक्षात् मूर्ति है। दानवीरता के साथ-साथ आपकी सरलता, आत्मीयता, अहकारशून्यता देखकर मुझे 'नवाब रहीम' की याद आ जाती है। नवाब रहीम दान देते समय बहुत लघुता मे रमण करते थे, नेत्र नीचे करते हुए बहुत सरल भाव से दान देते थे। ऐसा देखकर उनके मित्र कवि गग से नहीं रहा गया, पूछ ही लिया –

सीखे कहा नवाब जु देनी ऐसी दैन ।
ज्यो-ज्यो कर ऊँचो चढे त्यो-त्यो नीचे नैन ।।

नवाब रहीम ने उत्तर दिया –

देनहार कोऊ ओर है, देता है दिन रैन,
मानव भ्रम मुझ पे करे याते नीचे नैन ।

धन्य है ऐसे दानवीर को। सेठ दुगड सा दीर्घायु हो, शतायु हो, स्वस्थ जीवन जीएँ एव अधिक से अधिक दान प्रदान करे, मै ऐसी शुभकामना करता हूँ।

सज्जनसिह मेहता 'साथी'
वडीसादडी (राज)

प्रवृति से उदार, विचारो से सौम्य, विरोधियो के साथ भी सहिष्णु, धर्मप्रिय व्यक्तित्व के धनी, यथा नाम तथा गुण के धारक श्रीमान् सुन्दरलालजी दुगड करुणा के सागर है। लगभग ३ दशक से भी ज्यादा आप कलकत्ता मे व्यवसाय मे व्यस्त रहकर भी आप धार्मिक, आध्यात्मिक, शिक्षा का क्षेत्र हो या चिकित्सा का क्षेत्र हो, उसके उत्थान मे अपना योगदान करते आये हैं।

महानगर कोलकाता मे रहते हुए आपने राजनैतिक, व्यापारिक क्षेत्र मे अपनी नई पहचान बनाई है। इतना ही नही केन्द्रीय मत्रीमण्डल मे भी आपकी अच्छी पैठ है। दिल साफ और उदार होने के साथ ही आपका एक महत्वपूर्ण गुण है–मितभाषिता। आप अपने पुरुषार्थ से उपार्जित सम्पत्ति का उपयोग अपने उपभोग मे ही न कर जन कल्याणकारी कार्यों मे भी उदार दिल से करते हैं। आपने जैन-अजैन की भावना से ऊपर उठकर जन कल्याणकारी एव प्राणीमात्र के कल्याण के कार्यो में करोडो रुपये का दान कर एक महत्वपूर्ण कार्य किया है। सरलता, सहजता, मिलनसारिता, विनम्रता एव उदारता से भरपूर व्यक्तित्व के आप धनी हैं। प्रदर्शन, आडम्बर से आप कोसो दूर है। आपका जीवन सादगी, सेवा तथा उदारता का ज्वलत आदर्श है। आपका व्यक्तित्व किसी परिचय का मोहताज नहीं है। वह एक जीता जागता प्रकाश स्तम्भ है।

पी बी एम अस्पताल से आप लगभग १५ सालो से जुडे हुए है। आपने अनेक जन हितार्थ कार्य इस अस्पताल मे करवाये हैं। कार्डियोलॉजी डिपार्टमेन्ट को सुचारु रूप से चलाने हेतु उसकी व्यवस्था मे योगदान देने हेतु उसे गोद ले रखा है।

आज तक लाखो रुपयो का दान इस कार्य हेतु दिया गया है। केथलेब मे आपका अत्यधिक सहयाग रहा है। अनेक जरुरतमद रोगियो को आपने सहयोग देकर मृत्यु के मुँह से उन्हे बाहर निकाला है। आज तक यह सेवा सुचारु रूप से चल रही है जिससे बीकानेर और राजस्थान ही नही अपितु हरियाणा, पजाब के लोग भी फायदा उठा रहे है।

धन्य है आप और आपका परिवार। भविष्य मे भी आपकी सेवाएँ हमे मिलती रहेगी इन्ही आशाओ के साथ हम हैं आपके शुभेच्छु।

डॉ विनोद बिहाणी
अधीक्षक, पी बी एम हॉस्पीटल, बीकानेर

श्री सुन्दरलाल दुगड बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी है और इनका अमूल्य व अतुल्य सहयोग समाज के प्रत्येक वर्ग को मिला है, जो कि प्रेरणादायक है। मै श्री दुगड के कार्यो के लिए कहना चाहूगा कि–

जननी थू दोय जणै, का दाता का शूर।
नीतर रहजै वाझडी, मत गवाजै नूर।।

उक्त दोहे को श्री सुन्दरलाल दुगड ने सत्य रूप में चरितार्थ किया है। त्यागी, मनस्वी व मरुधरा के भामाशाह का अभिनन्दन करना अपने आप मे गौरवमय क्षण होगा। पुरुषार्थ की इस कड़ी मे प्रकाशित अभिनन्दन ग्रथ के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएँ व कोटि-कोटि अभिनन्दन।

देवीसिह भाटी
विधायक (कोलायत) एव पूर्व सिचाई मत्री, बीकानेर

राजस्थान ब्राह्मण संघ द्वारा आयोजित समारोह में

कानवन, जिला धार में समता भवन शिलान्यास

आ. श्री नानेश की दीक्षा स्थली पर समता युवा संघ एवं सर्वोदय विद्यालय के छात्र छात्राओं के साथ अपना जन्म दिवस मनाते हुए

श्री विशुद्धानंद सरस्वती हस्पताल में श्री दुगड़जी को सम्मानित करते हुए श्री पुखराज जैन
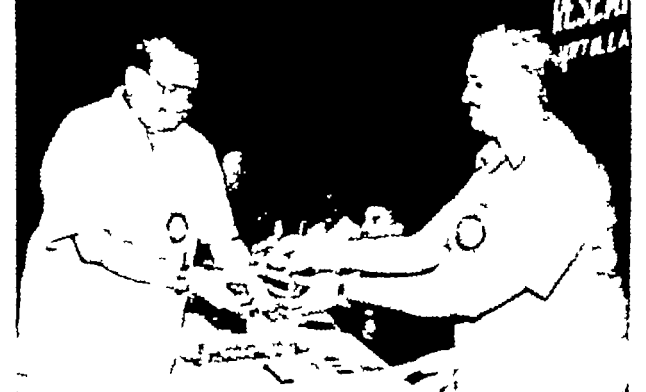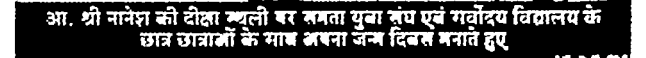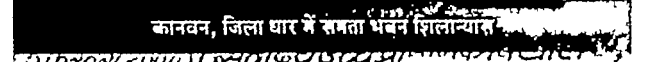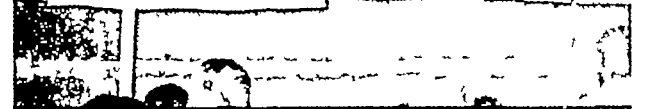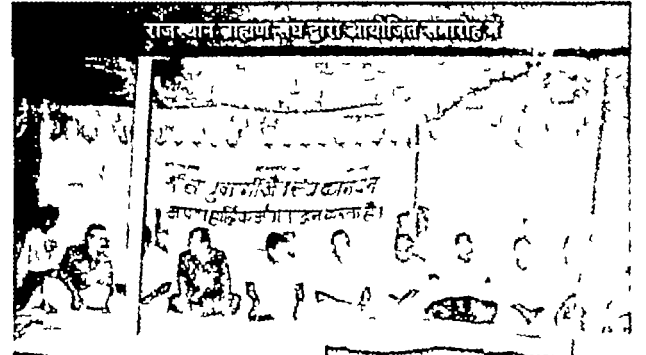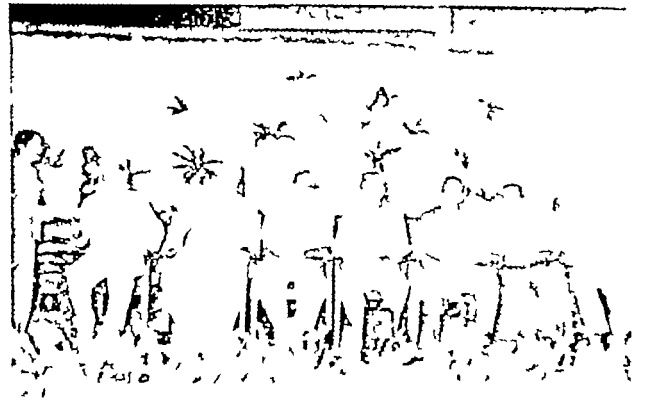
हॉस्पीटल कालोनी का शिलान्यास श्री दुगड़जी द्वारा, साथ में है श्री हमराबसिंह ओस्तवाल एवं श्रीचंदजी कृपलानी
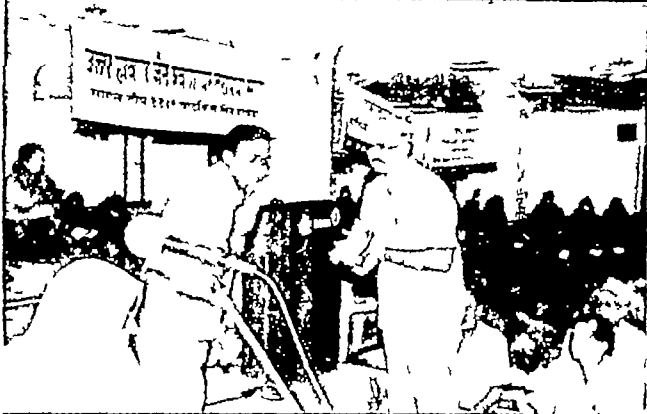
श्री दुगड़जी का अभिनंदन उत्तर हावड़ा जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा द्वारा

जैन विद्या प्राकृत विभाग द्वारा आयोजित व्याख्यान माला में डॉ सागरमल जैन, श्रीमती मीना पुरोहित, श्री सरदारमल कांकरिया एवं श्री प्रकाश चिंडालिया के साथ

शुभाशंसा

सुप्रसिद्ध समाजसेवी, दानवीर, धर्मवीर, मरुभूमि के भामाशाह, उदार हृदय के बादशाह, यथा नाम तथा गुण के धनी, करुणा के सागर श्रीमान् सुन्दरलालजी दुगड देशनोक निवासी एक ऐसा नररत्न है जो मन, वचन, काया से भी सुन्दर ही नही अति सुन्दर है। लक्ष्मीपति हजारों नहीं लाखा मिलेगे, तिजोरियाँ जिनकी हमेशा भरी मिलेंगी मगर उन तिजोरियो को जरुरतमदो के लिए खोलना सुन्दरलालजी दुगड जैसा नररत्न कोई-कोई ही होता है।

आपके पिताश्री से मेरा आत्मीय सम्बन्ध था। देशनोक मे अनेको बार, अनेको कार्यो से उनके साथ आना-जाना लगा रहता था। आपकी माताश्री धर्मपरायण महिला थी, जिन्होने अपने मनुष्य जीवन को १९ दिन के सथारे के साथ सम्पन्न किया और इस भारत भूमि पर महावीर के शासन को चमकाया। इस दौरान आप कलकत्ता से देशनोक पधारे थे। मेरा आना-जाना बराबर रहता था। पूरे परिवार के साथ-साथ आप भी माताश्री की सेवा मे हर समय तत्पर रहते थे। उनके छोटे-छोटे काम मे भी हमेशा श्रवण कुमार की तरह लगे रहते थे।

देशनोक मे अत्यधिक रहने से व्यापार एव कामकाज मे विपरीत असर आना स्वाभाविक ही था। उन्होंने मुझसे कहा जब तक माताजी स्वस्थ न हों जाय या सथारा सम्पूर्ण न हो जाय मैं यहाँ से नहीं जाऊँगा। कलकत्ते मे भले ही कितना ही नुकसान हो जाय मै माताजी की सेवा छोडकर नहीं जाऊँगा।

धन्य है ऐसी माँ जिनकी कुक्षी से ऐसे नररत्न हुए जो आज पूरे देश मे कहीं न कही सेवा के कार्य से चौबीसो घटे जुडे मिलेगे। सैकडो सस्थाओ से जुडे रहना, हजारो जगह रुपयो का सदुपयोग करना चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो या चिकित्सा का क्षेत्र, चाहे आध्यात्मिकता का क्षेत्र, जैन ही नही, अजैन सस्थाओ मे भी आपका हमेशा तन-मन-धन से सहयोग रहता है।

अनेक बार आपके साथ रहने का मौका मिला, अनेक बार आपसे निवेदन भी किया। आपने मेरे प्रस्ताव को हमेशा सराहा और हमेशा उदार भावो से उस कार्य को पूर्ण किया। चाहे अरिहत मार्गी जैन सघ का कार्य हो, चाहे साधुमार्गी जैन सघ का कार्य हो, यानी शिक्षा, चिकित्सा और आध्यात्मिक कार्यो मे आपने करोडो रुपयों का योगदान दिया है और दे रहे है। धन्य हैं आप, धन्य है आपका परिवार। कहा भी है "जननी जणे तो ऐसा जणे के दाता के शूर नहीं तो रहीजे वाझणी मत गमाइजे नूर" आज हमे आपकी माताजी, आपके पिताजी और आपके गाँव पर गर्व है। लिखने को तो बहुत-सी बाते है, सैकडो पेज भर जाएँगे। मुझे हमेशा कहते हैं सुखानीजी आर्थिक दृष्टि से कमजोर भाई-बहन, शिक्षा और चिकित्सा से वचित न रहे, इसका आप ध्यान रखे।

हमने अनेक भाई बहनो का इलाज कराकर उन्हे स्वस्थ कराकर उन्हे अपने यथा स्थान भेजा। इलाज का सारा खर्चा श्री सुन्दरलालजी दुगड की तरफ से मिला करता था। हमलोग सुगनीदेवी जैसराज वैद हॉस्पीटल को देखते है, उसमे भी मुझे कई बार कहा कि मेरे लायक कार्य हो तो बताये, जब भी आपका फोन आता है, हमेशा यही कहते हैं कामकाज बताओ।

खुशी की बात यह है कि जब भी कहा, जब भी बताया, बोले--ठीक है जर्मनी से मशीने मगवानी थी, आई आर सी लेजर किरणो से इलाज करने हेतु, खून की जाँच हेतु सेमीऑटो इन्हेलाइजर की बात की बोले, तुरत मगवाओ, ड्राफ्ट भेज रहा हूँ।

ऐसी उदारता आपके सुपुत्र विनोद बाबू भी रखते है। आखिर सस्कार जो आपके है। हम कभी-कभी सकोच कर लते है लेकिन आप हमारा सकोच तुरत तोड देते है, कहते हैं कि मेरे लायक और सेवा मुझे बताओ। धन्य है आप और आपकी लायकी-- शब्दो मे नम्रता, बोली मे मिठास, मान-सम्मान के साथ आप हमेशा औरो से बात करते है। आप युग-युग जीओ और माता-पिता, जाति गोत्र, गाँव और गुरु का नाम रोशन करो और ज्यादा सेवा करो। आप द्वारा आई आर सी मशीन द्वारा केम्प लगाकर सैकडो मरीजो को राहत दिलाई है।

इन्हीं शुभकामनाओ के साथ-

जयचन्दलाल सुखाणी

उपाध्यक्ष, सुगनीदेवी जैसराज वैद अस्पताल एव रिसर्च सेन्टर, बीकानेर

शुभाशंसा

विरले व्यक्तित्त्व ऐसे होते हैं जिनके ससर्ग के क्षण जीवन को आल्हादित करते है। जिनके साथ गुजारा गया समय कुछ करने व कुछ उनसे करवाने की प्रेरणा देता है जिनकी सहजता, सरलता, मृदुता व निस्पृह जीवन जीने की प्रेरणा देता है। असहाय, जरुरतमद लोगो के सहारे व समाज विकास के प्रतीक व्यक्तित्त्व का नाम है श्री सुदरलालजी दुगड।

लंबे अरसे स उनके साथ सघ प्रवासो, बैठको व अधिवेशनों मे सान्निध्य पाने का अवसर मिलता रहा है। गुरुचरणो मे आध्यात्मिक आल्हाद के भावो के साथ भामाशाह जैसे दानवीरो की स्मृति, स्मृति पटल पर आपके सपर्क मे होती रही है।

विशष प्रसग रहा भगवान महावीर समता वृद्धाश्रम राजनादगाव का लोकार्पण समारोह। समारोह के अध्यक्ष की आसदी को सुशोभित कर आपने लोकार्पण समारोह को अद्वितीय बना दिया। २९ जून २००५ को आयोजित समारोह के मुख्य अतिथि प्रदेश के यशस्वी मुख्यमत्री डॉ रमन सिह थे। जबकि लोकनिर्माण मत्री श्री राजेश मुणत, उच्चशिक्षा मत्री श्री अजय चद्राकर, महिला व बालविकास मत्री सुश्री लता उसेंडी व श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ बीकानेर के तत्कालीन अध्यक्ष श्री उमरावसिहजी ओस्तवाल की विशेष उपस्थिति म छत्तीसगढ, महाराष्ट्र व मध्यप्रदेश मे नये अदाज व भरपूर सुविधाओ से सुसज्जित भगवान महावीर समता वृद्धाश्रम का लोकार्पण जहाँ सेवा की मिसाल बन गया, वहीं श्री दुगडजी द्वारा ५ लाख रुपये का स्तुत्य दान समता मच राजनादगाव के पृष्ठो को स्वर्णांकित कर गया। इस समारोह मे श्री देव आनद जैन शिक्षण सघ के बच्चो द्वारा अहिंसा व जीवदया पर आधारित नृत्य नाटिका ने आपको अभिभूत किया तथा आपने सस्कार युक्त शिक्षा के उन्नयन हेतु १ लाख रुपये सघ को प्रदान किया।

दूसरा विशेष प्रसग रहा कि श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ के इदौर अधिवेशन का। अधिवेशन समारोह मे आपने सभा मे जिस दृढता से अपनी कमजोरी का उल्लेख किया और अपनी कमजोरी पर खेद व्यक्त करते हुए इसे दूर करने की दिशा मे प्रयासरत रहने की बात कही और साथ मे कहा कि यह सघ मेरा प्राण है, दायित्व ग्रहण करू या नही इसकी सेवा मे सदैव तत्पर रहूँगा। आपकी इस अभिव्यक्ति ने समारोह मे उपस्थित सभी श्रोताओ को आपका बना दिया।

जिस व्यक्तित्व की जन्मभूमि व प्रारभिक शिक्षा का स्थान अपने आराध्य देव गुरुदेव के साथ ही अथवा एक हो वह व्यक्ति स्वय ही धन्य हो जाता है। देशनोक की पावन माटी जिसने परमागम रहस्य ज्ञाता, तपोपूत, कठोर साधक, नानेश पट्टधर आचार्य श्री रामेश को दिया उसी ने भामाशाह, सहज सरल व्यक्तित्व की प्रतिमूर्ति श्री सुदरलाल दुगड को दिया, वह माटी धन्य हुई।

पुरानी स्मृतियो के पटल पर आपश्री के पिता मोतीलालजी दुगड से मेरा निकटता का परिचय था। उनका आशीर्वाद पाने का मुझे भी सौभाग्य मिला। वीर प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि आपका सान्निध्य हमे लबे समय तक मिलता रहे व आपके सान्निध्य व सहयोग से हम भी कुछ कर गुजरने मे कामयाब हो। सघ नायक, शासनेश हम सबकी आस्था के केन्द्र, हुक्मसघ के नवम नक्षत्र, नानेश पट्टधर आचार्य श्री रामेश की सद्शिक्षाएँ व उनका आशीष हमारे सबके जीवन को मगलपथ का राही बनाये, यही मगल कामना है।

गौतम पारख

राजनादगाव (छ ग)

श्री गणेश जैन छात्रावास ... श्री दुगडजी को सम्मानित करते हुए पदाधिकारी

नानेश रामेश व्यसन मुक्ति केन्द्र का उद्घाटन करते हुए

श्री कन्हैयालालजी सेठिया के सम्मान के अवसर पर
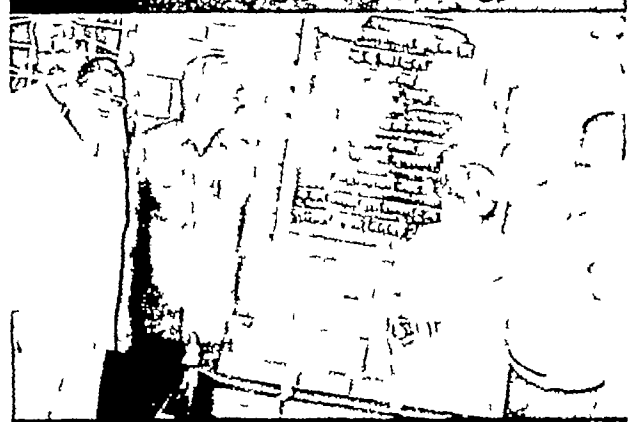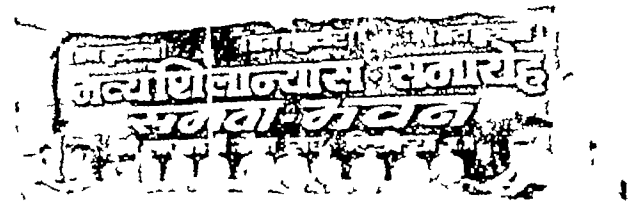
समता भवन द्वारा आयोजित समारोह में मंचस्थ दुगडजी

आगम अहिंसा प्राकृत संस्थान उदयपुर में दुगड़जी का अभिनंदन करते वरिष्ठ पदाधिकारी

आपको एवार्ड देते हुए भू. लो॰ स॰ स्पीकर खीजरु, प्रशस्ति पत्र देते हुए महा॰ वि॰ अध्यक्ष श्री मधुकर राव चौधरी, कर्नाटक के उ॰ मंत्री श्री नजीर अहमद, श्री कुलबीर सिंह
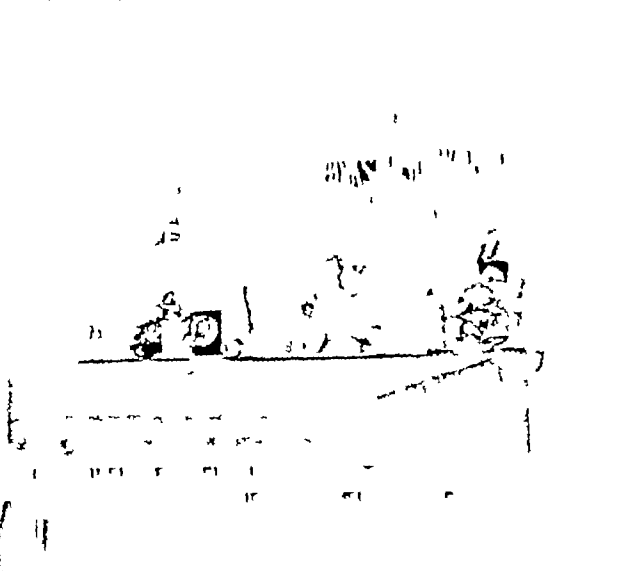
श्री सुदरलालजी दुगड का व्यक्तित्व एव कृतित्व सरलता, सहजता, विनम्रता, त्याग एव सेवा भावनाओं से ओत-प्रोत है। आप जैसे धर्मनिष्ठ एव भामाशाह दानवीर शासन एव सघ सेवा के लिए तन-मन-धन से समर्पित ऐसे आदर्श श्रावक रत्न का सम्मान एव अभिनन्दन निश्चय ही होना चाहिए जिससे बहुत से लोगो को प्रेरणा मिलती है। श्रीमान् दुगड साहव समस्त जैन समाज के लिए महान प्रकाश स्तभ है। आप हमेशा समाज को नई चेतना, नई दिशा देने के लिए तत्पर रहते है तथा समाज के प्रत्येक वर्ग के उत्थान के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। आप अपने जीवनकाल में अनेक सामाजिक सस्थाओ और शिक्षा सस्थान में अपना पूरा सहयोग प्रदान करते हुए आ रहे है। निर्धन व्यक्तियो, धार्मिक कार्यो, रोगियो तथा विद्यार्थियों के लिए हमेशा पूर्ण सहयोग प्रदान करते हैं। वास्तव मे यह आपकी निस्वार्थ रूप से की जाने वाली समाज सेवा एव सामाजिक क्षेत्रो मे दिए गए उल्लेखनीय अतुल अर्थ योगदान का ही प्रतिफल है कि आप दानवीर एव भामाशाह आदि पदों से अलकृत किए गए हैं।

श्री सुदरलालजी दुगड जैन समाज के एक ऐसे विरले एव वरिष्ठ सुश्रावक हैं जिनकी दृढ श्रद्धा, निष्ठा, धार्मिकता और दानशीलता सभी के लिए प्रेरणादायी है। आपश्री ने त्याग, सेवा, उदारता और दानवीरता की जो मिसाल कायम की है वह समाज के लिए अनुकरणीय है। आपके सहयोग से भारत मे कई सस्थाएँ पोषित और पल्लवित हो रही हैं। उदार हृदय से दान देना आपकी सहज प्रकृति है। घर आए कोई भी व्यक्ति आपके यहाँ से खाली हाथ नहीं लौटता है।

अत मे मै आपके यशस्वी एव दीर्घ जीवन की मगल कामना करता हूँ।

पारसमल साखला

वरिष्ठ स्वाध्यायी, समता प्रचार सघ एव

पूर्व मत्री, साधुमार्गी जैन श्री सघ, नीमच (म प्र)

माँ करणी की भूमि देशनोक मे जन्म लेने वाले श्री सुन्दलालजी दुगड को इस शताब्दी के जैन समाज के अग्रणी, दानवीर, धर्म प्रेमी, समतामय, देदीप्यमान सितारे कहूँ तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। आपको बचपन से ही आचार्य नानेश से धर्म के सस्कार मिले जिनको उन्होंने जीवन मे प्रतिसात किया। आप मानव मात्र की सेवा मे अग्रणी रहते है। साधुमार्गी सघ ही नहीं सम्पूर्ण जैन समाज की सेवा या सहयोग का मौका आप कभी नहीं चुकते। आप तो मानव मात्र की सेवा करते रहे है, कर रहे है और आगे भी करेगे। आपने सैकडो सस्थाओ को मुक्त हाथो से सहयोग दिया है। इनके यहाँ से कोई व्यक्ति खाली नहीं लौटता। आपने अनेक समता भवन, स्थानक भवन, धर्मशाला, स्कूल, हॉस्पीटल, कॉलेज आदि मे दिल से सहयोग दिया है। आचार्य नानेश ध्यान केन्द्र उदयपुर, जैन हॉस्पीटल हावडा वनाने मे आपका वहुत वडा सहयोग रहा है। आप कभी नाम के पीछे नहीं भागे। जैन समाज के लिए गर्व की वात है कि आपकी धर्मपत्नी, पुत्र, पुत्री व दामाद शुभ कार्यो मे कधे से कधा मिलाकर सहयोग कर रहे है। आप नवगठित जैन समाज की अग्रणी सस्था जीतो (JITO) के भी फाउन्डर चीफ पेट्रोन मेम्वर है। आपकी उम्र सौ वर्षो की हो, ऐसी मेरी कामना है।

सुरेन्द्र दस्सानी

अध्यक्ष, श्री साधुमार्गी जैन सघ मुवई

कुछ व्यक्ति स्वनामधन्य होते हैं। यथा नाम तथा काम। श्री सुन्दरलालजी दुगड यथार्थ मे ऐसे ही व्यक्तित्व के पर्याय हैं। उनके व्यक्तित्व पर दृष्टिपात करता हूँ तो देखता हूँ–

सुन्दर नाम, सुन्दर काम,
नाम सग 'लाल', हृदय विशाल,
अल्पभाषी पर मिष्टभाषी,
सादा लिबास, 'मानव सेवा देवी' का परम दास,
कर्म से उद्यमी पर, उच्च विचारो का धनी,
स्मित मुख मुद्रा, विनम्र भाव सदा,
बेजोड मिलनसारिता, सजोए उदारता की सरिता,
सतत मौन सेवा, नही चाह मिले मेवा,
न नाम की भूख, न पद पिपासा,
न माल्यार्पण की चाह, न मच अभिलाषा,
पर पीर से दु खी, कर सहयोग सुखी ।

न जाने ऐसे कितने ही गुण-अलकार उनके आदर्श व्यक्तित्व के साथ जोडे जा सकते है। लगता है सुन्दरलालजी ने एकदम आत्मसात कर लिया है कि जब–

'पानी बाढे नाव मे, घर मे बाढे दाम,
दोनों हाथो उलीचिये, यही सयानो काम ।'

दखते हैं उनमे महात्मा गाँधी के ट्रस्टीशीप सिद्धान्त का अनुसरण करने वाला मानस। पूज्य गुरुदव तुलसी के शब्दो मे 'जीवन उसी का धन्य है जो अगरबत्ती जैसे महकता है और मामवत्ती जैसे प्रकाश विखेरता है।' श्री सुन्दरलालजी दुगड का जीवन हूबहू ऐसा ही है।

जहाँ आज के उपभोक्तावाद और भौतिकवाद की चकाचौध एव दिन-रात दौडती दुनिया मे लोगो के पास जिन्दगी के लिए भी वक्त नही, गैरो की क्या बात कहे, अपने लिए भी वक्त नहीं, वहाँ दूसरो के दु ख-दर्द को सुनने का ही नहीं, उनके दु ख-दर्द मे शरीक होने का पूरा समय निकालने वाले सुन्दरलालजी का यथोचित सम्मान एव अभिनदन आज के युग मे अति उपयुक्त है क्योंकि इन तमाम होते जीवन के लम्हो को उनकी तरह जो सार्थक कर लेता है, वह शख्स इतिहास की धरोहर बन जाता है, अनुकरणीय-अनुमोदनीय एव अविस्मरणीय गौरवगाथा का प्रणेता बन जाता है, सामाजिकता की दरो-दिवार पर अपना अमिट निशान बना लेता है।

मै श्री सुन्दरलालजी दुगड के निरामय दीर्घायु एव मगलमय भावी जीवन की कामना करता हुआ इश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि उनका यह 'सादा जीवन उच्च विचार एव सेवा भाव' वर्धमान होता रहे।

अन्त मे श्री सुन्दरलालजी के बारे मे उस चारण के शब्दो मे ही कहना चाहूँगा जिससे महाराणा प्रताप के लिए कुछ ऐसा ही कहा था–

जननी जणे तो ऐडा जण, के दाता के सूर ।
नही तो रही जे वाझडी मति गमाईजे नूर ।।

बनेचन्द मालू
कोलकाता

प.बं. क्षत्रीय समाज द्वारा आयोजित सभा में दुगडजी कांकरियाजी के साथ

श्री गणेश जैन छात्रावास में श्री सुन्दरलालजी के अर्थ सहयोग से निर्मित ... सामाजिक हॉल के उद्घाटन के अवसर पर मंचासीन अतिथिगण

दांता में श्रीमती सूरजीदेवी दुगड़ व्यसन मुक्ति भवन के उद्घाटन के अवसर पर अतिथियों के साथ

कलकत्ता पंजाब बिरादरी के दशहरा महोत्सव में मुख्य अतिथि के रूप में, साथ में श्री सुभाष चक्रवर्ती

गणेश जैन छात्रावास द्वारा आयोजित समारोह में

समता भवन खिरकिया शिलान्यास समारोह के अवसर पर संबोधन

कृष्णगोपाल सिन्हा के पुत्र को पटना में आशीर्वाद देते हुए श्री आनन्दमोहन सिंह (एम.पी.), अखलाक अहमद (एम.एल.ए) के साथ

शुभाशंसा
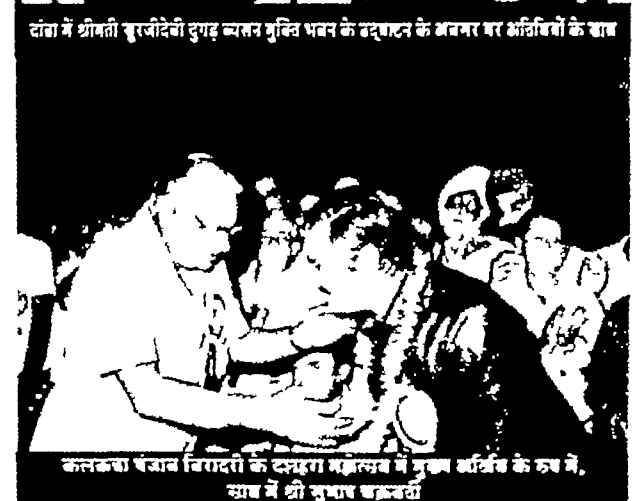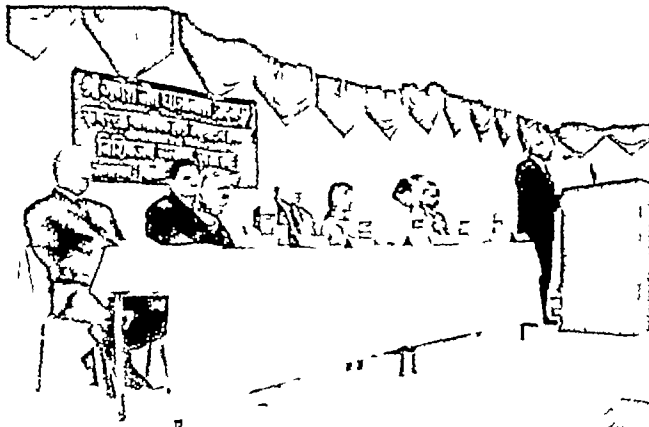
सुन्दरलालजी दुगड एक साधारण व्यक्ति नही बल्कि एक विशाल सामाजिक सस्था है, ऐसा कहूँ तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

प्राणीमात्र की रक्षा, शिक्षा का प्रसार, जिनवाणी व जैन धर्म के प्रचार के लिए आपने उदार हृदय से दान देकर पूरे भारत मे एक मिशाल कायम की है। उसी के साथ-साथ आपने अपनी सरलता का परिचय भी दिया है।

आपकी मृदुभाषिता, सरलता व विनम्रता से सम्पर्क में आने वाला हर व्यक्ति प्रभावित हुए बिना नही रह सकता।

जिनशासन व अ भा साधुमार्गी जैन सघ व विशेषकर आचार्य श्री नानालालजी म सा व वर्तमान आचार्य श्री रामलालजी म सा के प्रति आपकी प्रगाढ श्रद्धा है। सघ की हर गतिविधि मे आपने दिल खोल कर सहयोग दिया है तथा समता भवन निर्माण मे अग्रणी बन कर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। वास्तव मे दानवीर हो तो आप जैसा।

आप व आपका परिवार खूब फले फूले, आप शतायु हो तथा प्राणीमात्र व जिनशासन की इसी प्रकार सेवा करके पुण्यार्जन करते रहे, इन्ही शुभकामनाओ व मगल भावनाओ के साथ–

सायरचन्द छल्लाणी
गुडगाँव, हरियाणा

श्री सुन्दरलालजी दुगड का जीवन सरलता, सादगी, सतोष, करुणा, कोमलता, सहजता से परिपूर्ण है। ससार सागर से तिरने वाले प्राणी की गुणवत्ता, योग्यता आपमे झलकती है। जैन दर्शन के मूल सिद्धात 'अपरिग्रह' आपके जीवन मे परिलक्षित हैं। पुण्ययायी से प्राप्त अकूट धन सपदा होते हुए भी आप सम्मान, सत्कार मे भी सहज निर्लेप रहते है, उस पर आसक्ति कही से नहीं झलकती है।

आपके जीवन मे देव, गुरु, धर्म के प्रति अगाध स्नेह रहा है। आपका परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य प्रवरजी म सा के प्रति समर्पण, भक्ति, सेवा भावना अनेको युवाओ के लिए आदर्श है। जिन शासन की प्रभावना के लिए आपने तन-मन-धन से अपार सेवा की है तथा कर रहे है।

जैन समाज की अनेको सस्थाओ से जुडकर उनको आगे वढाया एव उनको लक्ष्य तक पहुँचाया है। अनेक धार्मिक भवनो, गौशालाओ, अस्पतालो, शिक्षण सस्थाओ मे आपका सहयोग नीव के पत्थर साबित हुए है। धार्मिक शिविरो एव अनुष्ठानो मे आपके सहयोग ने अनेक आत्माओ मे सुसस्कार जागृत किये है।

समाज के हर वर्ग से आपका मुखर सपर्क रहा है। श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा सघ का प्रधान कार्यालय आपके सहयोग एव आशीर्वाद से निर्मित एव सुचारु रूप से कार्यरत है। आपके प्रेम स्नेह से सस्था का हर सदस्य अपना मनोवल वढाता है। समता युवा सघ आपके दीर्घ आयुष्य, उज्ज्वल भविष्य, स्वस्थ जीवन की कामना करता है।

सजय वैद
राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्री अ भा मा जैन समता युवा सघ, रतलाम

शुभाशंसा

जीवन की इस यात्रा मे अनेक व्यक्तित्वो का सान्निध्य सत्कार व स्नेह पाया। एक ओर जहाँ समता दर्शन प्रणेता आचार्य श्री नानेश की आध्यात्मिक स्नेहिल प्यार भरी शिक्षाये, वर्तमान आचार्य श्री रामेश की साधना, सयम, उपासनाविशुद्धि की दिशाओ ने जीवन को धन्य वनाया। वहीं दूसरी ओर श्रावक सघ के अनेक रत्नो, दिग्गजो ने मेरे मानस को स्नेह, आशीष एव प्रेरणा से सींचकर मेरा मनोवल बढाया। अनेकानेक महानुभावो की ऊर्जा ने मेरे जीवन को प्रशस्त वनाया जिससे मेरी अलग पहचान बन सकी। उन्ही महानुभावो मे एक सुदर नाम है सुदरलालजी दुगड, कोलकाता।

सहजता व सरलता की प्रतिमूर्ति, सामान्यजनो की आशाओ के प्रतिबिब श्री दुगडजी के साथ भारत के अनक स्थानो पर धार्मिक कार्यक्रमो, सामाजिक प्रवासो और सेवा कार्यो मे जाने का सौभाग्य मिला। अनेक समता-भवनो, धर्मस्थानको, शिक्षण सस्थाओ, चिकित्सा प्रकल्पो, सेवाभावी सस्थाओ और साधुमार्गी सघ से जुडी विभिन्न प्रवृत्तियो के उन्नयन व नव निर्माण म आपकी सहभागिता सघ-समाज के स्वर्णिम पृष्ठो मे लिखी जायेगी। जरुरतमद छात्र छात्राओ को उच्च शिक्षा हेतु सहयोग देकर आपने स्वधर्मी वात्सल्य की मिसाल पेश की।

मैने जव भी, जहाँ भी आपश्री से पधारने का अनुरोध किया आपने एक बार मे ही हाँ कर दी। साथ ही किसी भी धार्मिक अनुष्ठान या सामाजिक कार्यो मे अथवा परमार्थ के कार्यो और परमार्थी सस्थाओ को सौजन्य-सहयोग हेतु उनकी बिना अनुमति के मैने घोषणा कर दी तो उन्होंने तत्काल उदारतापूर्वक उसे पूरा भी किया, यह मेरे लिए प्रमोद व सौभाग्य का विषय है, कितनी सहजता व अपनापन "महेश वावू! आप तो आदेश किया करो।" यह वाक्य जव कर्णगोचर होता तो मुझे ऐसा लगता मानो मेरा उनका कोई पूर्व जन्म का नाता है। अर्थ के सदुपयोग के लिए ऐसा लगाव, ऐसा समर्पण अन्यत्र दुर्लभ ही है।

गत वर्ष से पूरे देश मे जहाँ भी धार्मिक शिविर लगा वहाँ आपकी तरफ से प्रत्येक शिविरार्थी का प्रोत्साहित करते हुए प्राइज बाँटे गये। आपकी इस सौजन्यवृत्ति ने नई मिसाल कायम की और शिविरो को नई गति प्रदान की। यह सेवा-सत्कार सभी के लिए प्रेरणास्पद है। इसी तारतम्य मे स्वाध्यायियो के प्रशिक्षण से लेकर उन्हे प्रोत्साहित करने मे आपकी अहम् भूमिका रही। अनेक भवनो व सस्थाओ की नीव से लेकर कलश तक आपका सहयोग चिरस्मरणीय रहा है। ऐसे दानवीर भामाशाह को पाकर मै ही नही पूरा सघ, समाज गौरवान्वित हुआ है।

आपकी श्रद्धा निष्ठा वेजोड है। वीर प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि हम जैसे कार्यकर्त्ताओ के सिर पर आपकी छत्र-छाया बनी रहे। हम अपने लक्ष्य को निस्पृह भाव से आध्यात्मिक जागरण व मानव सेवा के पथ पर पूरा करने मे सदैव कटिवद्ध रहे।

"कुछ लोग ऐसे होते है जो सुख मे फूल जाया करते है
कुछ लोग ऐसे होते है जो दु ख मे घवडा जाया करते है
लेकिन कुछ ऐसे होते है जो सुख-दुख की परवाह किये विना
बस अच्छे कामो मे अपना जीवन विताया करते है।"

सुदीर्घ जीवन की मगल कामना के साथ-

महेश नाहटा, नगरी
(छत्तीसगढ)

कवि का सम्मान करते हुए, मंचस्थ हैं आचार्य लोढ़ाजी
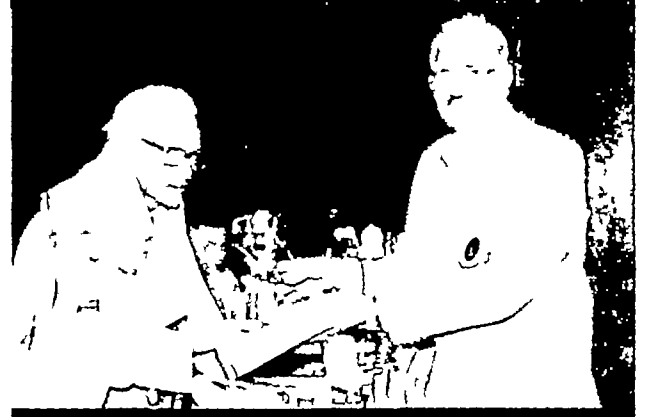
विचार मंच द्वारा आयोजित कार्यक्रम में डॉ. कृष्ण बिहारी मिश्र का अभिनंदन करते हुए

क्षत्रिय कुंड में हॉस्पीटल के उद्घाटन के अवसर पर दुगड़जी का सम्मान

करची सामुदायिक चिकित्सा केन्द्र भूमि पूजन समारोह श्री दुगड़जी द्वारा

शुभाशंसा

मारवाड़ी रीलिफ सोसायटी के कार्यक्रम में श्री प्रियरंजन दास मुंशी का स्वागत करते हुए

श्री दुगड़जी का अभिनंदन करते हुए मेयर श्री सुब्रत मुखर्जी
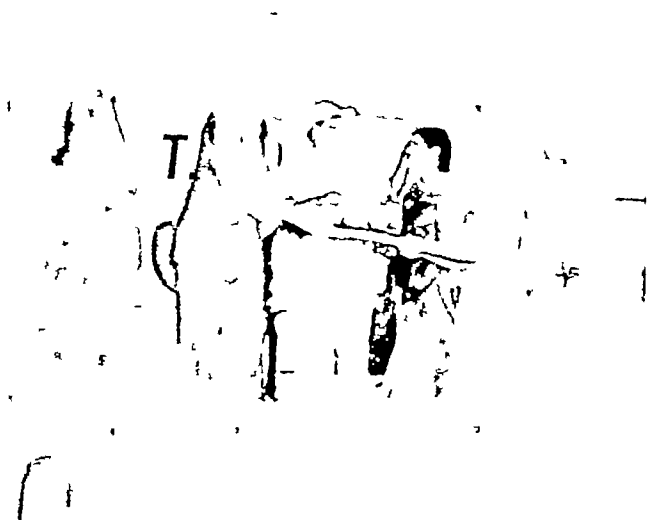
जीवन जीना एक कला है। अधिकतर लोग यह नहीं जानते कि हम क्यो जीते है ? कैसे जी रहे है ? परन्तु कुछ लोग ऐसे होते है जो अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित कर जीते है। वे जानते है कि यह दुर्लभ मनुष्य जीवन बार-बार नही मिलता, अत धर्म, सस्कृति एव समाज की सेवा बन पडे उसे पूरी सामर्थ्य एव श्रद्धा के साथ की जाये, इसी मे मनुष्य जन्म की सार्थकता है। किसी कवि ने ठीक ही कहा है कि–

जीवन उन्ही का धन्य है, जो पर-हित मे कुछ कर गये,
वरना बिताई जिन्दगी मौत आई मर गये।।

श्रीमान् सुन्दरलालजी सा दुगड उन श्रेष्ठ पुरुषो मे से हैं जो परोपकार के द्वारा अपने जीवन को सार्थक कर रहे है। एक धर्मनिष्ठ, शिक्षा एव समाजसेवी के रूप मे आपने अपनी पहचान बनाई है। कोई भी दीन-दु खी आपके पास आता है, आप उसे निराश नही करते।

श्रीमान् सुन्दरलालजी सा दुगड से मै पहली बार १९९१ मे तब मिला जब मैं श्री जवाहर जैन शिक्षण सस्था, उदयपुर के भवन निर्माण के लिए धन एकत्रित करने कोलकाता गया। श्रीमान् सरदारमलजी सा काकरिया ने आपसे मेरा परिचय कराया। मुझे अधिक कुछ कहने की आवश्यकता नही पडी। आपने २५,०००/- (पच्चीस हजार रुपये) का चेक दिया और कहा कि – अभी यह ले जाये, मै कुछ समय बाद उदयपुर आऊँगा तब और जो भी बन पडेगा, सहयोग करूँगा। हमारे अनुरोध पर कुछ समय पश्चात् आप उदयपुर पधारे और स्कूल को एक सुसज्जित कम्प्यूटर लैब बनाने के लिए एक लाख रुपयो की सहायता प्रदान की, साथ ही यह भी कहा कि और कोई प्रोजेक्ट हो तो बताना, जो भी सहयोग बन पडेगा, करूँगा।

कितनी सहजता एव सरलता ? मैने यह पाया कि इतनी उदारतापूर्वक सहयोग करने के बावजूद आपमे तनिक भी अभिमान एव प्रदर्शन नही। आपसे मिलकर ऐसा लगा जैसे किसी चिरपरिचित आत्मीयजन से मिल रहा हूँ। हमारी तरह ही आपने कई और सस्थाओ को उदारतापूर्वक सहयोग देकर उन्हे सम्बल प्रदान किया है व कर रहे है। हमारी आनेवाली पीढी सस्कारित हो इसलिए जहाँ भी बालक-बालिकाओ के सस्कार शिविर लगते हैं, आप दिल खोलकर सहयोग प्रदान करते है। इसमे कोई अतिशयोक्ति नही है कि श्रीमान् दुगड साहब सही माने मे अपरिग्रही है व समाज के भामाशाह है।

ऐसे धर्मनिष्ठ समाजसेवी एव दानवीर श्रीमान् सुन्दरलालजी सा दुगड का अभिनन्दन वास्तव मे व्यक्ति का अभिनन्दन नही है, अपितु कृतज्ञ समाज द्वारा अपने बीच के ही एक व्यक्ति के विशिष्ट गुणो के प्रति श्रद्धा का ज्ञापन है।

सग्राम सिह हिरन
आई एफ एस (सेवानिवृत)
उदयपुर

आदरणीय श्री सुन्दरलाल दुगड देश के उन बिरले व्यक्तियो मे से है जिन्होने सदैव नि स्वार्थ भाव से राष्ट्र और समाज की सेवा की, किन्तु आत्म-प्रशसा से कोसो दूर रहे। समाज सेवा के क्षेत्र मे, विद्या के क्षेत्र मे उन्होने आजतक जो सेवा साधना की है, वह वास्तव मे अनुकरणीय है। श्री दुगड का अभिनन्दन करते हुए हम अपने आप को धन्य समझते है। इस पावन अवसर पर यही अभिलाषा है कि श्री दुगड शतायु हो, जिससे वे अपने लक्ष्य तक और आगे बढ सक और समाज-सेवा का उनका मार्ग अधिकाधिक प्रशस्त हो।

श्यामसुन्दर केजरीवाल, कोलकाता

ससार म जितने भी सफल व्यक्ति हुए है, वे इसलिए महान् नही बने कि वे अलौकिक प्रतिभा क धनी थे अथवा साधन सम्पन्न थे। वे इसलिए महान् बने क्योंकि वे अलौकिक व्यक्तित्व के स्वामी है। उन्होने अनपे व्यक्तित्व का विकास कर जीवन को अनुशासित किया व समाज का नइ दिशा व गति प्रदान करके वे अपने लक्ष्य पर पहुँचने मे सफल हुए। असली विजेता वह है जिसने एक सार्थक जीवन जीने की कला सीखकर स्थायी सफलता हासिल की, इसका ज्वलत उदाहरण है आदरणीय श्री सुन्दरलालजी दुगड।

मानव सेवा के प्रति प्रतिपल समर्पित, दानवीर, श्रद्धानिष्ठ, व्यवहार मे शालीनता, सेवा मे परोपकारिता, रिश्तो मे परस्पर एकता, सबके प्रति सवेदनशीलता, गुणो के प्रति अनुरागता, सौम्य व्यक्तित्व, यथा नाम तथा गुण के अनुरूप है सुन्दरलालजी दुगड। आपने अपने यशस्वी जीवन मे धर्म एव कर्म की खुशबू से समाज को नई दिशा प्रदान की, जीवन का कोई भी क्षेत्र आपसे अछूता नही है, चाहे वह धर्म का क्षेत्र हो, शिक्षा जगत का हो, सेवा क्षेत्र हो या अन्य साधनास्थली हो। ऐसे श्रावक रत्न को पाकर हम अत्यन्त गौरवान्वित है।

मानव सेवा है सभी बातो का सार।
बना रहे सभी का आपसी प्रेम व्यवहार ।।

हम आपके लिए सुख, शाति और दीर्घायु की कामना करते है, त्याग, दया, धर्म, दान और सेवा भावना की राह पर आप निरन्तर आगे बढते जाएँ, यही शुभकामना।

"जिसने अपनी जीवन धरा पर
परोपकार की फसल उगाई।
उसने निश्चित ही मोक्ष धाम मे
अपने लिए जगह बनाई।।"

श्रीमती रँजना सूर्या
श्री अ भा जैन महिला समिति की उपाध्यक्ष, इन्दौर

[illegible] सुन्दरलालजी दुगड व्यक्ति ही नही अपने आप मे एक सस्था है। वे धर्म एव समाज के [illegible] मे सतत तत्पर है। यह अति प्रसन्नता का विषय है कि उनके कृतित्व एव व्यक्तित्व का अभिनन्दन हो रहा है। इस महत् कार्य के लिए स्वय श्री जैन सभा अभिनन्दनीय है। ईश्वर [illegible] कामना करता हूँ श्री सुन्दरलालजी दुगड सेवा कार्यो मे रत रहते हुए स्वन्धता के साथ [illegible]।

हीरालाल वोहरा
सह-सचिव, वीरायतन कलकत्ता

श्री जैन विद्यालय, हावड़ा के वार्षिक खेल कूद प्रतियोगिता में पुरस्कार वितरण करते हुए
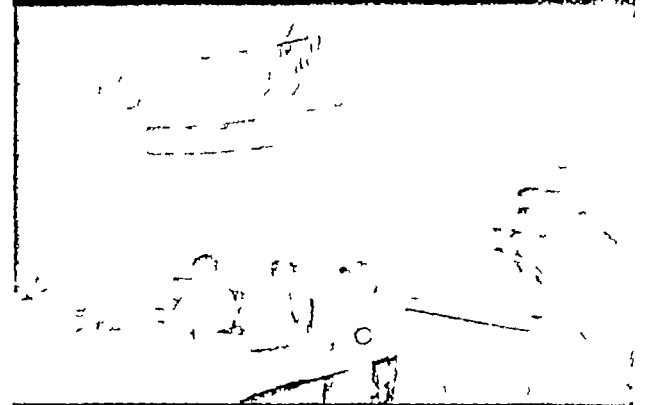
सीकर नागरिक परिषद के होली प्रीति सम्मेलन २००६ को सम्बोधित करते हुए
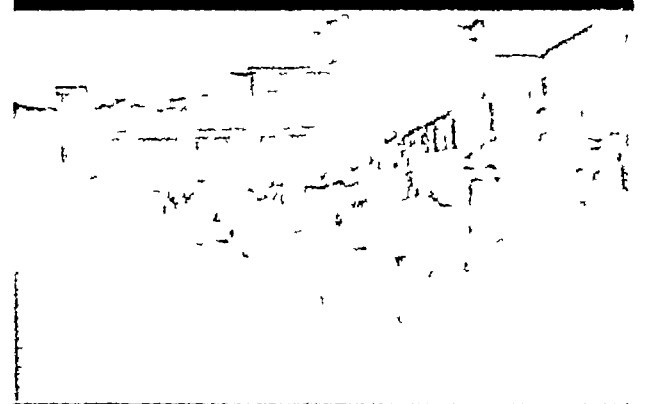
श्री दुगड़ जी द्वारा निर्मित आचार्य श्री [illegible]

श्री प्रियरंजन दास मुंशी के साथ वार्तालाप करते हुए

श्री सुन्दरलालजी दुगड के शिक्षा प्रेम, परोपकारी भावना एव निष्काम कर्म के बारे मे अनेक लोगो से सुना था। एक दो समारोहो मे भेट भी हुई थी पर प्रत्यक्ष या व्यक्तिगत रूप से मिलने का सुअवसर नही मिला था और जब तक प्रत्यक्ष रूप से भेट या जानकारी न हो तब तक उतना प्रभाव नही पडता है।

ऐसी ही एक प्रेरक घटना है। मेरे मन मे उनसे मिलने की इच्छा हुई। मैंने श्री दुगडजी को फोन कर उनसे मिलने की इच्छा प्रकट की। उन्होने अत्यन्त विनम्र भाव से कहा– "आप न आएँ, मै हॉस्पिटल मे स्वय आकर मिल लूगा।" मै उनकी सरलता एव विनम्रता से बहुत प्रभावित हुआ। इतना सम्पन्न और इतनी सरलता। कहा भी गया है कि फलदार वृक्ष ही झुकते है।

उनसे मिलने का अर्थ सहज ही समझा जा सकता है। एक साधन सम्पन्न व्यक्ति के पास जाने का अर्थ होता है – कुछ आर्थिक सहयोग या अवदान पाने की अभिलाषा और यह कहा जाता है कि प्यासा कुएँ के पास जाता है, कुआ प्यासे के पास नही जाता पर यहाँ तो ठीक उल्टा हो गया। यहाँ तो कुआ ही प्यासे के पास आ गया।

दूसरे दिन श्री दुगडजी श्री कृष्णगोपाल सिन्हा के साथ हॉस्पिटल आ गए। हॉस्पिटल की विविध गतिविधियो की उन्हे जानकारी कराई गई। मैंने ८ नम्बर आडी बासतल्ला स्थित भवन के निचले तल्ले पर स्पेशलिस्ट डॉक्टर क्लीनिक के निर्माण से सम्बन्धित योजना की रूपरेखा सम्बन्धी एक कागज उनकी ओर बढा दिया। उन्होने उसे देखा और तत्काल साढे आठ लाख (८,५०,०००/-) रुपये के उदारता पूर्ण सहयोग की स्वीकृति प्रदान कर दी। उनके विषय मे कहा जाता है कि हर जरुरतमद के लिए उनका हाथ 'जगन्नाथ' की तरह आगे बढ जाता है, उसका यह एक जीवन्त प्रमाण है। कही भी सहयोग करने मे न तो उनमे अहम् भाव जाग्रत होता है और न प्रचार या विज्ञापन की लालसा। उनके सहयोग मे एक विनम्र आत्मभाव रहता है और यही हृदय का सबसे अमूल्य आभूषण है।

वस्तुत श्री सुन्दरलालजी दुगड का जीवन इन्ही मानवीय गुणो से प्रकाशित है। वह प्रशसनीय ही नही अपितु अनुकरणीय है। उनकी उदारता, विनम्रता, मूक उदार सहयोग एव करुणा प्रेरणा के अजस्र स्रोत है। मै उनके स्वस्थ जीवन की कामना करता हुआ अपनी हार्दिक भावना व्यक्त करता हूँ–

जीवेम शरद शतम्।

पुष्करलाल केडिया
प्रधान सचिव, श्री विशुद्धानन्द हॉस्पिटल एड रिसर्ड इन्स्टीच्यूट
कोलकाता

विशेष व्यक्तियो का विशिष्ट कार्यो के लिए अभिनन्दन तो होता आया है और होना भी चाहिए। किन्तु श्री सुन्दरलालजी दुगड का अभिनन्दन कई बातो मे भिन्न और विशेष है।

श्री दुगड सेवा एव दानवीरता के पर्यायवाची है। जीवन का कोई क्षेत्र ऐसा नही है जहाँ दुगडजी की सहयोग एव उदारता की मुहर नही लगी हो। केवल जैन सस्थाएँ ही नहीं अपितु अजैन सस्थाएँ भी उनके उदारतापूर्ण सहयोग से लाभान्वित हो रही है। पीडितो की सेवा को उन्होने अपना सहज धर्म मान लिया है एव मनोयोग पूर्वक इसका निर्वाह करते है। जन्म स्थान देशनोक ही नही बीकानेर, कोलकाता, मेवाड, मालवा चतुर्दिक इनकी उदारता की सुगध व्याप्त है। भारत भर के समता भवनो के तो आप सयोजक है।

आपको अपनी सुपुत्री रूपरेखा अत्यन्त लाडली और प्रिय लगती है। आपने अपना व्यवसाय भी इसी लाडली बेटी के नाम से किया है। यह लडकी आपके लिए अत्यन्त भाग्यशाली रही है। सुपुत्र विनोद दुगड भी 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' की तरह प्रतिभावान एव मेधावी है। आपके प्रत्येक कार्य को विनोदजी खूब अच्छी तरह सभाल रहे हैं। आप कई बार तो गुप्त सहयोग देते रहते है। जन-जन के आशीर्वाद एव शुभकामनाओ का ही प्रतिफल है कि आप जिस काम मे हाथ डालते है, वहाँ की मिट्टी भी सोना उगलने लगती है। उनकी सबसे बडी विशेषता है सहयोग दूकर भूल जाना। कहावत है 'नेकी कर कुएँ मे डाल'। यह उनके लिए सौ फीसदी सही है। किसी पर कोई अहसान नही। सरलता एव सादगी पूर्ण जीवन है इनका। सबसे प्रमपूर्वक मिलते हैं। अहकार तो उनको छूता भी नहीं है। प्रदर्शन एव पाखड से कोसों दूर।

विगत पच्चीस वर्षो से अधिक का इनका हमारा साथ है। ऐसा व्यक्ति होना अत्यन्त दुलभ है। प्रभु से यही प्रार्थना है स्वस्थ रहे एव शतायु हो तथा अधिकाधिक समाज की सेवा करते रहे।

बच्छराज अभानी

पूर्व अध्यक्ष, श्री श्वे स्थानकवासी जैन सभा, कोलकाता

श्री दुगड का विविधआयामी व्यक्तित्व प्रत्येक व्यवसायी के लिए प्रेरणास्पद है कि किस प्रकार एक व्यक्ति जीवन के विभिन्न पक्षों यथा शिक्षा, चिकित्सा, सेवा, धर्म मे तन, मन व धन से योगदान करते हुए देश की उन्नति मे भागीदारी कर सकता है। अपने सद्प्रयासो से राष्ट्र व समाज के विकास मे अविस्मरणीय योगदान के फलस्वरूप श्री सुन्दरलाल दुगड आधुनिक भामाशाह स्वरूप है।

मैं सदैव आशा करता हूँ कि ऐसे व्यक्तित्व देश के विकास मे निरतर योगदान देते रहे जिससे भारत को उत्तरोत्तर प्रगति हो सके। इनके शुभ व कल्याण की शुभकामनाओ सहित-

आलोक गुप्ता

कलक्टर एव जिला मजिस्ट्रेट, बीकानेर

उदारमना श्री सुन्दरलालजी दुगड के बारे मे कुछ भी कहना सूरज को दीपक दिखाने के समान है। उनकी दान एव सामाजिक कार्यो मे सहयोग की भावना से शायद ही कोई अनजान है। श्री दुगडजी का कार्य क्षेत्र इतना विस्तृत है कि इसकी जानकारी शायद ही कोई एक व्यक्ति सूचीबद्ध कर सके। कई बार इनके साथ काम करने का अवसर प्राप्त हुआ है और उनके सम्पर्क मे आने पर उनके चितन से लाभान्वित हुए बिना नही रहा जा सकता है।

गतवर्ष जनवरी, २००६ मे उनके प्रसिद्ध स्कूल 'आर्यन' मे श्री जैन हॉस्पीटल की ओर से एक कार्यशाला और कैम्प का आयोजन किया गया था। स्कूल पहुँचने पर ज्ञात हुआ कि लगभग २५०० से ज्यादा लोगो ने चेकअप के लिए रजिस्ट्रेशन कराया था। सारा कार्यक्रम पूर्व नियोजित व्यवस्था के अनुसार समुचित ढग से किया गया। स्कूल का सारा स्टाफ, शिक्षक-शिक्षिकाएँ मुस्कुराते हुए रोगियो के साथ कार्य कर रहे थे। जब तक कैम्प चला तब तक सभी ने भरपूर सहयोग दिया। जब रोगियो को ऑपरेशन के लिए अस्पताल ले जाया गया, तब भी 'आर्यन' के स्टाफ ने हँसते हुए सारी जिम्मेदारी को बखुबी निभाया। यह श्री दुगडजी के चितन और उनकी सेवा भावना के प्रभाव का ही प्रमाण है, जिससे उनके कार्यकर्त्ता भी उनसे काफी प्रभावित है।

मैंने अनेक कैम्प किये है लेकिन ऐसा सुव्यवस्थित कैम्प मुझे इससे पहले देखने को नही मिला। यह मेरे लिए एक यादगार कैम्प रहेगा।

सुभाष बच्छावत

सयोजक-बुक बैंक, सह-सयुक्त मन्त्री-श्री जैन हॉस्पीटल एड रिसर्च सेन्टर
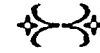
श्री सुन्दरलाल दुगड मेरे छोटे भाई के समान है। उन्होंने दानवीरता मे भामाशाह और कर्ण की तरह नाम कमाया है। शिक्षा, धर्म, चिकित्सा, साधना-जीवन का ऐसा कोई क्षेत्र नही है जिसमे भाई सुन्दरलाल ने उदारतापूर्वक खुले हाथो से सहोयग नही किया।

उच्च अध्ययन के लिए तो निर्धन छात्रो के अवलम्ब ही है। प्रत्येक वर्ष लाखो रुपये की छात्रवृत्ति देकर प्रतिभा सम्पन्न बालकों के भविष्य को बनाना इनका सहज स्वभाव बन गया है। इतना कुछ करने पर भी कोई अहकार नहीं। पाखड, दिखावा एव प्रदर्शन से कोसो दूर भाई दुगड विनम्रता, सरलता एव सहजता की प्रतिमूर्ति है। भाई दुगड से मेरे घनिष्ठ सम्बन्ध रहे है और उनके बहुआयामी व्यक्तित्व को मैंने अत्यन्त निकटता से देखा है, जिसका वर्णन अत्यन्त कठिन है। इनका जीवन भावी पीढी के लिए प्रेरणादायक है। मैं इतना ही कह सकता हूँ-

देखो कैसा है ये अपना लाल,
सुन्दर है दुगड सुन्दरलाल।।
आप भी कुछ ऐसा कर दिखलाओ।
याद करेगी दुनिया जब यहाँ से जाओ।।

मै पूरे विश्वास से कह सकता हूँ कि इतिहास पुन पुन दोहराया जायेगा। दीर्घायु हों स्वस्थ हों, यही कामना है।

पारसमल भुगट

राष्ट्रपिता महात्मा गाधी अपनी प्रार्थना सभा को 'वैष्णवजन तो तेणे कहिये जे पीड पराई जाणे रे' गीत से प्रारभ करते थे। यह गीत उनको सर्वथा प्रिय था। भाई श्री सुन्दरलालजी दुगड भी सच्चे अर्थों मे 'वैष्णव जन' है। वे पीडा क्या होती है, इसको भलीभाति समझते है क्योंकि वे स्वय उन पीडाओ, कष्टो एवे कठिनाइयो से गुजर चुके है अत पीडित, दुखी असहाय और जरूरत मदो की पीडा, कष्ट और दुख को दूर करने के लिए सदैव तत्पर रहते है।

श्री दुगड स्वनिर्मित व्यक्ति है, स्वावलम्बी एक दृढनिश्यली एव सकल्प के धनी है। देना उनका स्वभाव है, विनम्रता और उदारता उनका आभूषण और अलकार है। देने से वे सहजता और सरलता का अनुभव करते है। उनका देना न तो दिखावा है, न आडम्बर और न प्रदर्शन ही। देकर कभी उसकी ओर नही देखते। 'नेकी कर कुए मे डाल' उनकी चरित्रगत विशेषता है। अर्जन उनकी अभीप्सा और अभिप्रेत नही है अपितु विसर्जन और वितरण को अपना कर्म मानते है। 'कर्मण्यावाधिकारेस्तु माफलेषु कदाचन' कर्म को वे अधिकार मानते है लेकिन फल की इच्छा नही रखते। श्री दुगड को उनकी सौम्यता, सहिष्णुता, मितभाषिता एव मृदुता ने अत्यन्त लोकप्रिय बनाया है। उनके पास गया कभी कोई खाली हाथ नही लौटता है उनकी विनम्रता से रहीम की यह पक्ति याद आती है कि

देनहार कोइ और है, देवत है दिन रैन।, लोग भरम मोपै करे, ताते नीचे नैन।।

श्री दुगड शतायु हों, स्वस्थ हों और अपने कर्तव्य पथ पर अविचलित रहे, यही कामना है, अभिलाषा है।

पन्नालाल कोचर

अनन्त पुण्योदय से प्राप्त चितामणि रत्न के समान अनमोल यह मनुष्य जन्म प्राप्त कर विरले व्यक्ति ही इस भव को सार्थक करते है और सच्चे अर्थो मे अभिनन्दनीय हो जाते है। श्री सुन्दरलालजी दुगड ऐसे ही विराट और यशस्वी व्यक्तित्व के धनी है जिनके सात्विक, सादगीपूर्ण और समतामय सस्कारयुक्त जीवन ने मुझे बहुत प्रभावित किया। जब-जव भी आपसे मिलने का प्रसग आया आपकी अहकार रहित सहज आत्मीयता ने मन मोह लिया। पदलिप्सा से दूर रहकर धार्मिक, सामाजिक कर्तव्यो का समाज सेवक के रूप मे निस्पृहता के साथ पालन करना आपके व्यक्तित्व का सवसे वडा गुण है। जैन समाज के गौरव, दानवीर, सरल स्वभावी, उदारहृदयी श्री दुगडजी कर्मशूर होने के साथ धर्मशूर भी है। भाग्योदय से प्राप्त लक्ष्मी का उपयोग शुभकार्यो मे सेवा एव त्याग के रूप मे कर रहे है। आपका अनुकरणीय और प्रेरणास्पद उल्लेखनीय योगदान वास्तव मे अभिनन्दनीय है।

मानवता की सेवा मे तन-मन-धन से सक्रिय रह कर सपूर्ण जैन समाज को उच्च शिखर पर प्रतिष्ठित करने का सत्कर्म आपकी ख्याति मे चार चाँद लगा रहा है। नई पीढी सुसस्कारित और शिक्षित वने इस हेतु आप सदैव प्रयत्नशील रहते है। कोई भी जरुरतमद व्यक्ति आपके द्वार से खाली नही लौटता है।

मै आपके दीर्घायु एव आरोग्यवान जीवन की प्रतिपल कामना करता हूँ और शामनदेव से यही प्रार्थना करता हूँ कि आपके सुखद, नेक और पुनीत कार्यो मे सव व समाज लाभान्वित होता रहे।

तिलकराज महलोत, निम्वाहेडा

बचपन से अनाथ बच्चो की सेवा करने वाली मदर टेरेसा का नाम सुनते आ रहे है किन्तु श्री सुन्दरलालजी दुगड तो दीन-दुखियो के लिए मसीहा है।

कोई भी दीन, अनाथ, असहाय, अपाहिज, जरुरतमद उनके दरवाजे से खाली हाथ नही लौटता। रोता हुआ जाता है एव उनके यहाँ से हँसता हुआ आता है। उनका विश्वास रहीम की तरह है। ये मानते है–

रहीमन वे नर मर चुके जो कहुँ भाजन जाहिं।
उनते पहले वे भए जिन मुख निकलत नाहिं।।

सुन्दरलालजी के शब्दकोष मे 'न' शब्द तो है ही नही। उन्होने देना सीखा है, इन्कार करना नही। कठिन से कठिन परिस्थितियो मे भी दानवीर कर्ण की तरह सकट झेलते हुए सहयोग का हाथ आगे बढाया है। उनके हाथ जगन्नाथ की तरह है जो सदैव देना जानते है।

शिक्षा, धर्म, चिकित्सा, सेवा, साधना कोई भी क्षेत्र ऐसा नही है जो उनके अनुदान से पल्लवित पुष्पित नही हो रहा है। असहाय, अपाहिज, विकलाग, मनोरोगी सबको ये आगे बढकर सहयोग देते है। उसे अपनाते है एव अपने सहयोग की अनवरत वर्षा से उसे परिपल्लवित करते है।

सेवा, सहयोग मे सहजता है, सरलता है, दिखावे एव प्रदर्शन से रहित। प्रेम, विनम्रता, अपनत्व जैसे गुणो से भरपूर श्री दुगड आने वाले भविष्य मे और अधिक सेरा कार्यो से जुडे, यही कामना है, प्रार्थना है, भावना है। स्वस्थ रहते हुए शतायु हो एव अपने सहयोग सद्भाव से सबको उपकृत करते रहे।

अशोक बोथरा
सह-सचिव, श्री श्वे स्थानकवासी जैन सभा, कोलकाता

नाम "सुन्दर", सद्भाव "सुन्दर सत्कार्य "सुन्दर", मन-वचन-काया से "सुन्दर", ऐसे जनप्रिय "श्री सुन्दरलालजी दुगड" के जन-अभिनन्दन का आयोजन करना यह कार्य भी "सुन्दर" अत "श्री जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी सभा" बधाई की पात्र है। अस्तु!

विद्या जितनी खर्च करे, उतनी वढती जाती है और धन खरच करने पर घटता है, ऐसी प्राचीन कहावत है परन्तु "श्री सुन्दरलालजी दुगड" इसके अपवाद है। वे मानव-सेवा के परम पुनीत कार्यो हेतु अपार धन-राशि प्रदान करते हुए, अपने मनुष्य-जीवन को सार्थक कर रहे है, देवी लक्ष्मी की कृपा-वृष्टि भी अनवरत हो रही है, यह वात प्रेरणादायी है, अनुकरणीय है।

माँ सरस्वती के वरद पुत्र "श्री भूपराजजी जैन" का उनके अभिनन्दन समारोह पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका का सपादन होना लक्ष्मी व सरस्वती का एक साथ विराजना है। श्री भूपराजजी जैन को वहुत साधुवाद।

लक्ष्मीपुत्र– श्री सुन्दरलालजी दुगड एव सरस्वती पुत्र– श्री भूपराजजी जैन स्वास्थ्य एव दीर्घायु हो, प्रभु से प्रार्थना है।

चन्द्रप्रकाश सुराणा
रजना टेक्सटाईल, कालकाता

Simplicity, Great Philosopher and Great Donor and My Closest Friend Mr S L Dugar

Born about 54 years ago at a small village of Rajasthan, by name DESHNOKE, in Bikaner Dist and also the Birth place of MA KARNIMATA and World famous Temple of Rats

Initially he has taken primary education at Deshnoke and in his very young age he left for Calcutta in West Bengal for seeking a Job or to do Business In those days he suffered quite a lot and started a small business of cloth and ready made garments in Howrah His father Sri Motilal Ji Dugar, was also a very simple and religious person and very famous in our society His mother was also a very religious woman and trained her children in religious way Both of them were Pakka Bhakta of Late Acharya Sri Nanalalji Maharaj and present Acharya Sri Ramlal Ji Maharaj Deshnoke is also a birth place of Acharya Sri Ramlal Ji Maharaj

Mr Dugar has got all the religious things from his parents Mr Dugar also took his younger brothers to West Bengal, Orissa and Delhi and helped them to start their business Later around 1980-85 he started construction of apartments and Real Estate Developments and became a leading constructer His ambition was very high and he became very close to several ministers and bureaucrats and then he has taken over a Cigarette factory by name "New Tobacco Company which was sick and almost closed, but he did hard work and put his efforts and re-started the factory In 1995 he has started taking over very big sick units and made them credit worthiness and developed the same

I came in close contacts with Mr Dugar in 1991-92 at Bangalore and since then we became very close friends I never thought that such a simple and honest and so religious man will reach the sky in namewise wealthwise and one day he will become the leading donor not only to our Society or our Samaj, but started donating all over India to weaker section of the society His name became very famous not only in West Bengal but other places of our country and people started calling him as a 'SOHAN' Lal Dugar of Kolkata

Last Year I forced him like anything to become the President of Akhil Bharatiya Sadhu Margi Jain Sangha as offered by the leading and reputed personalities of our sangh but as a great man he refused to become the President and said 'I do not want any Post but serve the sangh any time without any post Hence I am proud to be a very close friend of such a type of person and pray God to bless him and his family Happy and Prospetous life and be happiness through out his life'

His only Son Mr Vinod Dugar who is just like my son is very brilliant boy and one day or the other day he will "ROSHAN" his father's name

Bangalore

Dhanraj Daga

श्री सुन्दरलालजी दुगड से मेरा परिचय कई वर्षो से है। श्री दुगडजी एक सहृदय और मिलनसार व्यक्ति है।

एक वार मैने उन्हे श्री विशुद्धानन्द हॉस्पिटल मे आने का अनुरोध किया। उन्होने इसे सहर्ष स्वीकार कर लिया और दूसरे दिन ही सुवह हॉस्पिटल आ गये। मेरे साथ हॉस्पिटल के प्रधान सचिव श्री पुष्करलालजी केडिया भी थे। हमलोगो ने हॉस्पिटल के विकास योजनाओ की उन्हे जानकारी कराई व ८ नवम्वर आडी वासतल्ला गली मे विशेषज्ञ

भारतवर्ष धर्म प्रधान देश है और सेवा इसका उद्देश्य रहा है। सेवा धर्म को अत्यन्त गहन कहा गया है। सच्ची सेवा का निर्वाह वहुत कठिन और कष्ट साध्य है। आज तो सेवा के नाम पर प्रदर्शन, दिखावा अत्यधिक हो रहा है और कही-कही तो पाखड और छद्म का रूप भी वन गई है। किन्तु श्री सुन्दरलाल दुगड उसके सर्वथा अपवाद है। मानव ही नही प्राणिमात्र की सेवा मे इनका जीवन समर्पित है। धन कमाना सरल है किन्तु सद्कार्यो मे लगाना कठिन ही नही वहुत दुष्कर है। कुछ लोग कमाकर लाखो-करोडो की सम्पत्ति अर्जित कर अपने पर खर्च करने मे गर्व का अनुभव करते है और आत्मप्रशसा के कसीदे न केवल स्वय पढते है दूसरा से भी पढवाते है। किन्तु श्री दुगडजी इन सवसे सर्वथा भिन्न है। जिस विनय, नम्रता, शालीनता से सामने वाले की स्वाभिमान की रक्षा करते हुए देते है, वह अनुपमय है, इसका कोई सानी नही है।

श्री दुगडजी से मै काफी वर्षो मे परिचित हूँ, जव भी मिलते है, अत्यन्त आत्मीयता से एव प्रेमपूर्वक। अहकार और अभिमान से कोसा दूर सहज, सरल और सादगीपूर्ण जीवन के धनी श्री दुगडजी समाज के ऐसे दुर्लभ रत्न है, जा युगो वाद जन्म लेते है और अपने सेवा भाव की महक से जन-जन का सुवासित कर देते है। न मालूम कितने असहाय, अभावग्रस्त और जरुरतमद उनकी उदारता, स्नेह और प्रेम पूर्ण व्यवहार से अपने एव अपने परिवार क जीवन का सवारने म सफल हुए है। वेरोजगारा को रोजगार प्रदान कर समाजविरोधी कार्यो मे उन्हे विरत करने म उनके यागदान को कोई भूला नही सकता है। श्री दुगडजी उस कल्पवृक्ष क समान है जो विना किसी भेदभाव के मनचाही मुराद पूरी करत है। उनका सम्मान उन गुणा का सम्मान है जिनकी आज समाज और राष्ट्र का महती आवश्यकता है। श्री दुगडजी का पाकर समाज धन्य है। व दीर्घायु हा और तन-मन-धन स प्राणिमात्र की सेवा मे सलग्न रहे, यही कामना है।

माणकचन्द सेठिया

[illegible]

[illegible]

कहते हैं कि "सुन्दरता" देखनेवाले की आँखो मे होती है। यदि हम किसी भी व्यक्ति या विषय के सम्बन्ध मे नकारात्मक दृष्टि से देखते हैं तो मात्र नकारात्मकता ही दिखाई देगी और सकारात्मक दृष्टि से देखने पर सिर्फ सकारात्मकता ही दिखाई पडती है। अत यह बात अत्यन्त ही सार्थक है कि सुन्दरता देखनेवाले की आँखो मे होती है।

अपनी आँखो से विगत कई वर्षो से मै श्री सुन्दरलालजी दुगड के सद्कर्मो को देख रहा हूँ, यह मेरा सौभाग्य है कि सकारात्मकता के इस अकूत खजाने का मुझे प्रतिदिन अभिवादन करने का अवसर मिलता है। आज समाज के द्वारा उनके अभिनन्दन समारोह के शुभावसर पर, प्रतिष्ठान के सभी कर्मचारियो की ओर से, मै अत्यन्त ही अधिकारपूर्वक यह रेखाकित कर रहा हूँ कि श्री सुन्दरलालजी दुगड का जीवन, सुन्दर से सुन्दरतर व सुन्दरतम की ओर अग्रसर है। उनके स्वस्थ व दीर्घायु जीवन हेतु प्रभु से प्रार्थना करता हूँ।

सुशील बाँठिया
आर डी बी इण्डस्ट्रीज लि , कोलकाता

It is not very long, I know Shri Dugarji It is only few years before when I came in touch with Shri Sunderlalji when he visited Nanesh Nagar, Danta, the holy place where our great saint Acharya Shri Nanesh was born

I found Shri Dugarji, a very humble person, always ready to assist financially in any activity for the benefit of the mankind, irrespective of religion or sampradai Shri Sunderlalji is donating liberally with no pride or beating the drum He is pleasant and available to everybody and anybody who would like his support financially or otherwise He is 'Bhama Shah' of today's time for giving helping hand to all those institutions / individuals who want his financial support

Personally Shri Dugarji is unassuming, simple, straight forward and loving personality He is a real friend of all those who are economically weak, either poor students or poor patients and those who are unemployed and looking to make two ends meet I admire his patience, humblicity and liberal attitude towards entire community

I send my heartiest congratulations to Shri Sunderlalji on this occasion and pray God to give him long life to serve the society for all the times to come

H S RANKA, Bombay

सहज, सरल, मृदुभाषी, हसमुख और मिलनसार स्वभाव के धनी श्री सुन्दरलालजी दुगड जैन समाज के बहुमूल्य रत्न हैं। इनकी प्रशसा शब्दो मे नही की जा सकती, एक मुक्तक के द्वारा उनका अभिनन्दन कर रहे है–

जिसने ककरीले पथरीले बीहड पथ पर सुमन खिलाए।
जीवन के समरागण मे जो फूल बनकर सदा मुस्काए।।
श्रम की बूदो से सीचकर बनाया जिन्होने यह गुलशन,
अरूप रूप की गूजती है, उसकी दिशा पर गौरव गाथाएँ।

हमारी सस्था के सेवा कार्य मे श्री सुन्दरलालजी दुगड का विशेष सहयोग रहा है। समय-समय पर तन-मन-धन से पूर्ण सहयोग किया है। इसके लिए श्री जैन सघ के सभी सदस्य हार्दिक धन्यवाद प्रदान करते है एव आप शतायु हो, यही शुभकामना करते है।

सजय रामपुरिया, अध्यक्ष
श्री जैन सघ, कोलकाता

श्री सुन्दरलालजी दुगड ऐसे व्यक्तित्व का नाम है जो अपने आदर्श विचारो, उदारमना सहयोगी स्वभाव के लिये जैन सभा के साथ-साथ समूचे भारत के जैन समाज मे सर्वदा गर्व का विषय रहा है। अभावग्रस्त लोगो के सहयोग के लिये वे हमेशा तत्पर रहते है। शिक्षा, चिकित्सा एव साधना के हर क्षेत्र मे उनका व्यक्तित्व सहयोग के लिये अविकल आकाक्षित रहता है। यदि कोई भी अर्थाभाव से पीडित उचित इलाज कराने मे असमर्थ हो तो उनके हाथ सहयोग के लिए तुरन्त आगे बढजाते है।

उनका जीवन अहकार, आडम्बर आदि से कोसो दूर है। अपनी सरल स्वभावी जीवनशैली के कारण वे समाज के लिए आदर्श है। उनका हर क्षेत्र मे नि स्वार्थ सहयोग जैन समाज के लिये अविस्मरणीय है।

इस अवसर पर मै उनके प्रति कोटि-कोटि हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

मोहनलाल भसाली
पूर्व अध्यक्ष, श्री जैन विद्यालय, कलकत्ता

नहीं हुआ प्रत्यक्ष परिचय, समाज से जुडे तो जाना,
तुम्हारा कर्म तुम्हारा परिचय, लोगो ने तुम्हे पहचाना।
आत्मीयता की मूरत, नाम भी सुन्दर, मन भी सुन्दर,
सजी रहे ये आत्म प्रखरता करुणा निर्झर वहे निरतर।
करती तुम्हारे गुणो का वदन, स्वीकारो हमारा भी अभिनन्दन।

गायत्री कल्याण काकरिया, औरगाबाद

मानव सवा क लिए ममर्पित एक जीवत व्यक्तित्व के सार्वजनिक अभिनन्दन से ममाज मे सेवा-मूल्यो की प्रतिस्थापना होती है। समाज के मूर्धन्य मनीषियो एव शुभचिन्तका क श्रीमुख से एक अनुकरणीय व्यक्तित्व के प्रेरणादायी जीवन प्रसगो का श्रवण और उम महान व्यक्तित्व के क्षणिक साहचर्य मे समाज के सेवा-कर्मियो का जो अजस्र-उर्जा प्राप्त होती है, उसकी महिमा वर्णनातीत है।

सार्थक सेवा-परियोजनाओ को सार्थक वनाने मे श्री सुन्दरलाल दुगड के सार्थक प्रयासा की जितनी सराहना की जाए कम है। श्री आदीश्वर मण्डल, कोलकाता ने जव-जव उनक सहयोग की कामना की तव-तव हमने उन्हे उदात्त भाव से इस हेतु प्रस्तुत पाया है। कोलकाता मे मण्डल के निजी कार्यालय हेतु आर्थिक अवदान, सम्मेद शिखरजी मे मण्डल के दातव्य चिकित्सालय म औषधि वितरण हेतु वार्षिक अनुदान और मण्डल द्वारा अनुमोदित जरुरतमद लोगो को चिकित्सा हेतु आर्थिक सहायता देने मे श्री सुन्दरलाल दुगड ने जिस सहज स्वाभाविक दानशीलता एव मानव-प्रेम का प्रदर्शन किया है, उसे मण्डल के कार्यकर्त्ता कभी भुला नही सकते। अपितु उनसे प्रेरणा ग्रहण कर हम दुगुने उत्साह के साथ स्वय को मानव-मात्र की सेवा के लिए तत्पर पाते है।

एस वन्दनीय व्यक्तित्व को हमारा हार्दिक अभिनन्दन। ईश्वर उन्हे दीर्घायु एव यशस्वी वनावे। वे मानव-सेवा के अपने व्रत मे अनवरत रूप से अग्रगामी हो, यही उनके प्रति हमारी मगलकामना है।

तिलोकचन्द वोथरा, अध्यक्ष
श्री आदीश्वर मण्डल, कोलकाता

नाम सुन्दर, काम सुन्दर, जीवन सुन्दर।
सव कुछ सुन्दर, छलक रहे है वनके समदर।।

सवका कल्याण हो, सवका विकास हो, इस भावना को मूर्त्त रूप देने वाले आदरणीय श्री सुन्दरलालजी दुगड समाज का जीवन है, मानवता का दर्पण है, दायित्व की प्रतिष्ठा है। सेवा की गगा है। परोपकार की सरिता है। आत्मीयता और अनुराग की अनुभूति है। आप कर्त्तव्यो के प्रति सजग रहकर--

शीतल झरने ज्यो समाज की गहरी प्यास वुझाते है,
अपने खून पसीने से सघ और समाज सजाते है।
व्यक्ति-व्यक्ति के हृदय स्थल मे आप दीप जलाते है,
छिपी हुई प्रतिभाओ को दुनियाँ के सन्मुख लाते है।

सवके प्यारे, सवके प्यार, धर्मवीर, दानवीर श्री दुगड सा के अभिनन्दन मे जितना भी लिखा जाये कम है, मै तो यही कामना करती हूँ कि आपकी यश कीर्ति सदा वनी रहे तथा धर्म समाज एव हम वच्चे आपके सुकार्यो की रोशनी मे प्रगति दिशा की ओर वढते रहे इसी मगल मनीषा के साथ।

कुमारी निधि जैन, निम्वाहेडा

In the fag end of my carrier I was posted to Directorate General of Anti Evasion some time in the year 1997 after completion of my tenure at National Academy of Customs Excise and Narcotics as Faculty officer I was not in touch with Central Excise job since 1970 As such none of the manufactures were known to me I was holding the charge of Administration and as Drawing and Disbursement Officer Suddenly one day a tall gentleman entered in my chamber wished me and introduced himself as Mr Sundar Lal Dugar and said that he heard lot about me which prompted him to meet me After exchanging some good words he left and on query from other officer I came to know that he runs New Tobacco Company along with other Businesses as well

Thereafter be it on Vijaya Dashami Diwali or New Year Day he will greet me over telephone I was charmed by his decency and style of maintaining good relationship particularly when it is a fact that I was in no way attached to his business transaction

But a big surprise was waiting for me, when he again visited our office on 30th April 2001 the day of my retirement to wish me and my family a prosperous life I was delighted When a king is dead, they say that " the king is dead, long live the king" and in case of a retired Govt officer, they just go in the oblivion But Mr Dugar made me forget that proverb and as usual he would greet me on the special days of the year

After retirement I devoted my life towards organizing construction of a Govt aided School which had only two unfinished room by accepting donation from some trusts One fine morning Mr Dugar reached me over phone and said that he has come to know my activities after retirement and asked if he could come to any sort of help to the Development of the School Now the School had no fans - immediately I told him if he could provide the school with some fans it will be of great help The very next day twelve fans were delivered to the school I offered my sincere thanks when he told me that in case of any need for the school I should not hesitate at all By grace of the Almighty the school was completed and inauguration ceremony was graced by the Hon'ble State Education Minister I cordially invited Mr Dugar as the special guest but he was unable to attend the said occasion as he was out of station

After the ceremony was over Mr Dugar gave me a phone call and informed me that he had heard about the ceremony as flashed in the news papers and again asked if there is any further need for the school I told him that the newly-joined enthusiastic Headmaster is requesting for a laboratory Then Mr Dugar told me that he holds tremendous respect for me

and further said - "Dada, I know you had been conferred with Presidential Award - Citation from Holy Father John Pope Paul - II and have earned name, fame, award, reward from the department, love and respect from your colleagues and officers of highest order but I consider the school you built up for the poorest of poorer section is your highest achievement " No need to say I was delighted by his remark The very next day one A/C Payee Cheque in the name of school reached by special messenger and the same was handed over to the Headmaster to his great bewilderment In a resolution it has been decided that the laboratory will be named after the name of his respected mother since demised

In my feelings Mr Dugar is not only a successful business tycoon but he is amiable, sensible, witty as well as pleasant and he takes living interest in everything noble His behaviour towards a lesser mortal like me, who has retired long back, speaks volume of him Yes, he is a Good Samaritan I wish him and his family members a happy and prosperous life

Amal Kanti Bhattacharya
Superintendent Central Excise, Customs (Retd)
Secretary, Kalpana Basu Boys Academy, Baidyabati,
Hooghly

As far as, I am concerned I can tell you that I have been acquainted myself with Sri S L Dugar as back as in 1994 when he had undertaken to take over the management of the factory entitled M/s National Tobacco Co Ltd employing about 1500 workmen then on liquidation and decided to run the same on lease to save the workmen and their families from starvation At that time, I along with other leaders of the trade unions operating in the factory supported his move and now, I can tell you that he has been successful in that move and ultimately he has proved himself as a well known industrialist

During this period I found him to be a very renowned social thinker and philanthropist through his social activities for the cause of the poor and indigent people of the country and for their health care development and progress in all possible ways I remember him one day in the year 2006 when I myself along with Sri Samir kumar hazra Head master of Sagar Lal Dutta free H E School (H S) Kamarhati went to his office and as the president of the centenary celebration committee of the school approached him (Dugarji) with a request to grant handsome donation to the committee for construction of the centenary building of the school, He without any hesitation whatsoever agreed to donate a portion of the said building duly constructed by him, value of which is almost 14 lakhs along with fitting and furnitures This is Sundar Lalji Furthermore I have found him very much energetic in organizing periodical camps for providing medical facilities to the ailing poor persons of the locality Hence I thank you and your organization for this invitation

Thus, I share with your views in felicitating Sri S L Dugarji considering him as a greal beautiful human being having beautiful heart, mind and words I also congratulate him on this occasion and thank you and your organization for organizing this felicitation ceremony in honor of S L Dugar jee

Nanda Dulal Srimani
Chairman
Sagore Dutta Free H E School (H S)
Centenary Celebration Committee Kamarhati

We have since procured 15 Computers (including two Printers) from the financial support given by Sri Dugarji (and another donor) for this purpose These computers (except one kept for use by the Society) have been given to the School and put in place We, in consultation / collaboration with the School, have also drawn a programme to make use of the same infrastructure in the spare time (Saturday after-noon, Sunday or other holidays) of the School for use by other (non-students) persons of the locality willing to learn computer at a very nominal fee commensurate with the running cost of the Scheme This will ensure the optimum utilization of and benefit from the computers

We write this letter to you to place on record our sincere thanks and gratitude to you for 'our kind support and praise-worth gesture But for your help, it would not have been possible for us to implement such ambitious, though very useful, Scheme as this We are also particularly thankful to you for having spared your valuable time to come to our village, visit our Society and grace the Inaugural Function at the School on Saturday last, the 1st September 2007 we feel honored and privileged for that

We hope that we will continue to get your active and sympathetic support in the same or better way in future in our endeavour to implement Projects like this in the own humble way of the small NGO of ours

Tarani Kanta Maity

जन्म और जीवन प्रकृति की ये दो शाश्वत सपदाये है। जीव जब जन्म लेता है तो कुछ विशिष्ट दाता को वह अपने साथ लिए होता है किन्तु जब ये विशिष्ट बात उसके जीवन म घटित होती हे या यू कहे अभिव्यक्त होती है तब उसके जीवन की सार्थकता सिद्ध होती है।

श्री दुगडजी का जीवन इसी सार्थकता को लिए हुए है। यही कारण है कि वे आज समाज का गौरव बने हुए है। जीवन के निर्माण एव बहुविध विकास के लिए जिन विषयो का अध्ययन आवश्यक है, उसमे मनुष्यो के जीवन मे समाज सेवा का अध्ययन भी मुख्य विषय है। श्री दुगडजी ने इस अध्याय को अपने जीवन मे प्रमुख स्थान देत हुए गहनता से आत्मसात् किया फलस्वरूप आप समाजसेवा के पर्याय क रूप मे विख्यात हैं।

आपक व्यक्तित्व को निश्चित ही बहुआयामी कहा जा सकता है। चाहे व्यवसाय हो या पारिवारिक दायित्व, सामाजिक कार्य हो अथवा सघ सेवा, आप हमेशा अग्रणी होकर अपने कर्त्तव्यो का पूर्णत निर्वहन करते है।

लक्ष्मी का वरण अपने पुरुषार्थ आदि के माध्यम से हरएक व्यक्ति कर सकता है किन्तु उसका सम्यक् उपयोग हरएक के वश की बात नही है। श्री दुगडजी ने अपनी सपदा का उपयोग सिर्फ अपने लिए नही बल्कि समाज के लिए किया है। आप सच्चे अर्थो म 'परहित-चिन्तक' के रूप मे उभर कर सामने आये है।

आप सिर्फ दान देने मे ही नही बल्कि उसके सदुपयोग के लिए भी कटिबद्ध है। आपने अपने जीवन मे "णाणस्स णणस्स सारो"—अर्थात् ज्ञान जीवन का सार है, को हृदयगम करते हुए शिक्षा, स्वाध्याय एव साहित्य के क्षेत्र मे प्रभूत योगदान दिया जो आपके शिक्षा प्रेम का परिचायक है। वर्तमान मे श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ द्वारा आयोजित सस्कार शिविरो मे हजारो शिविरार्थियो को आप द्वारा पुरस्कार प्रदान किये गये। "परोपकारार्थमिद शरीर" यानि ससार के समस्त जड पदार्थ अपने लिए न होकर औरो के कल्याण-मगल के लिए है। श्री दुगडजी ने भी इस उक्ति को चरितार्थ करते हुए स्थान-स्थान पर गौशालाओ, विद्यालयो, कॉलेजो, वृद्धाश्रमो आदि का निर्माण कराने मे अपनी महती भूमिका निभाई।

धर्म आराधना मे सहायक स्थानको के निर्माण मे भी आप प्रमुख रूप से उभर कर सामने आये। देश में स्थान-स्थान पर समता भवनो का निर्माण करवाकर आपने इन्हे धर्म आराधना हेतु सघ, समाज को सुपुर्द किया।

अपनी विपुल धनराशि के सदुपयोग के साथ-साथ आपकी सोच भी अत्यधिक विकसित है। देव, गुरु एव धर्म के प्रति आपकी श्रद्धा-निष्ठा वास्तव म सराहनीय एव अनुकरणीय है। स्वधर्मी वात्सल्य भी आपके जीवन का अभिन्न अग है।

श्री सुन्दरलालजी दुगड जैसे व्यक्तित्व का जीवन गुलाब के फूल क समान है जो अपनी सुरभि से, अपनी महक से आस-पास के वातावरण को सुरभित करते हुए स्वय के जीवन का भी सेवा क गुणो से महका रहे है।

हेमन्तकुमार सिंघी

गोलछा चौक, बीकानेर (राज)

श्री सुन्दरलालजी दुगड से मेरे बहुत पुराने सबध है। उनसे अनेक कार्यो मे एव कोलकाता प्रवास पर मिलना होता रहा है। परम श्रद्धेय परम उपकारी परम पूज्य १००८ स्व आचार्य श्री नानालालजी म सा एव आचार्य श्री रामलालजी म सा के चातुर्मास के अवसर पर एव श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ, बीकानेर के अधिवेशन एव कार्यकारिणी मीटिंग मे मिलने का अवसर प्राप्त होता रहा। उनकी सरलता एव स्नेह का मै कायल हूँ जिसे मैं कभी भूल नही सकता।

ऐसा इसान मैने कभी नहीं देखा जो बगैर पदो पर रहे और बडे से बडे सघ के अध्यक्ष पद देने क प्रस्ताव को भी वे अपनी भावना से अवगत कराकर उसे भी नही लेते और दूसरो को पद दिलाकर वे उन्हे उतना ही उत्साह से दान मे सहयोग एव अपनत्व देते जितना वे स्वय कार्य करना चाहते है उससे भी कही ज्यादा। यह सब मैने व सघ के लोगो ने एव जनमानस ने स्वय ने देखा है और देख रहे है।

ऐसे व्यक्तित्व के धनी का यह "अभिनन्दन समारोह" कर श्री जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सभा कोलकाता ने बहुत ही सुन्दर प्रयास किया है। उन्हे मेरा बहुत-बहुत साधुवाद एव इस अवसर पर श्री सुन्दरलालजी दुगड को मेरी बहुत-बहुत बधाई।

अशोक सुराणा

रायपुर (छ ग)

समाज की समृद्धि का सही मूल्याकन इस तथ्य से होता है कि शिक्षा, स्वास्थ्य और समुचित पोषण की उपलब्धि कितनी व्यापक है और इन सुविधाओं का क्या स्तर है ? प्रजातान्त्रिक शासन व्यवस्था म राज्य के वित्तीय ससाधनो की अपनी सीमा होती है।

इतिहास गवाह है कि राजस्थान मे भामाशाहो की गौरवपूर्ण परम्परा रही है। इस कडी म श्री सुन्दरलालजी दुगड का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

श्री दुगड इस आयुर्विज्ञान महाविद्यालय मे सम्बद्ध चिकित्सालयो क विकास म सतत योगदान कर रह हैं, जिसम भवन निर्माण एव कार्डियोलाजी विभाग क गरीब मरीजो की आर्थिक सहायता उल्लेखनीय है।

हम विश्वास है कि भविष्य म श्री दुगड क सहयोग का दायरा और भी व्यापक होगा। मै श्री दुगड के स्वस्थ, सुदीर्घ और सम्पन्न जीवन की कामना करता हूँ।

डॉ टी पी पुनिया

प्राचार्य एव नियन्त्रक

सरदार पटेल मेडिकल कॉलेज बीकानेर

भाई श्री सुन्दरलाल दुगड से मेरा दीर्घ काल से सम्पर्क रहा है। अपने कर्त्तव्य के प्रति इतनी अधिक निष्ठा रखने वाले व्यक्ति विरल है। सेवा-भावना इनमे कूटकूट कर भरी है, जो कि इनके जीवन के प्रारम्भ से ही प्रबल है। किसी भी समय किसी भी कार्य के लिए इनके पास जो जाता है वह पूरी तरह सन्तुष्ट होकर ही लौटता है।

परोपकार के प्रबल पक्षधर इस व्यक्ति मे प्राणीमात्र के लिए दया का भाव मौजूद है। अपने व्यवसाय मे नुकसान की परवाह न करते हुए इन्होने अपने रुग्ण माता-पिता की सेवा की। अपनी माताजी की पूरे तन-मन-धन से की गई सेवा को देखकर मैंने यह अनुभव किया कि कलिकाल मे श्रवणकुमार का अवतार है। इसी प्रकार नाना गुरु का चातुर्मास जब देशनोक मे हुआ था तो ये प्राण-प्रण से उसमे समर्पित भाव से जुड गए और चातुर्मास की व्यवस्था का भार सँभाला।

इनमे प्रबध क्षमता भी गजब की है। सामान्य पढे-लिखे होकर भी अपने व्यापारिक साम्राज्य को कुशलतापूर्वक सचालन करते हुए उसे शिखर पर पहुँचाने मे जुटे हुए है। व्यावहारिक भी बहुत है। अपने कर्मचारियो के प्रति भी पूर्ण वात्सल्य भाव रखते है।

इतनी सब विशेषताओ के बावजूद अहकार इनमे लेशमात्र भी नहीं है। इनके गुणो और उपलब्धियो का विस्तृत वर्णन करे तो एक पूरा ग्रथ तैयार हो जाएगा। जिस सस्था से ये जुडे उसे शिखर पर पहुँचाने मे कामयाब हुए।

इन्हे 'देशाणे का लाल' कहने मे कोई अतिशयोक्ति नही होगी। ऐसे पुत्र को जन्म देकर माता की कोख भी धन्य हो गई। ईश्वर से मेरी यही प्रार्थना है कि ये इसी प्रकार दीन-दुखियो की सेवा करते हुए दीर्घ जीवन जीये और समाज के नवयुवको के लिए प्रेरणा स्रोत बने रहे।

झँवरलाल आँचलिया, कोलकाता

श्रेष्ठीवर्य श्री सुन्दरलालजी सा दुगड जैन समाज के एक ऐसे विरले सुश्रावक, परम गुरुभक्त है, जिनकी दृढ्श्रद्धा और दृढधर्मिता सभी के लिए प्रेरणादायी है। आपने अनेको समता भवनो के निर्माण मे खुले हाथो से आर्थिक सहयोग प्रदान कर जिनशासन की अपूर्व सेवा की है तथा कर रहे है। छात्रो के अध्ययन एव उज्ज्वल भविष्य के लिए उदारतापूर्वक प्रदान की गई छात्रवृत्तियाँ, आर्थिक सहयोग श्रीमान् दुगड सा के निस्पृह एव निर्लेप भाव के परिचायक है।

आपने धार्मिक, सामाजिक एव शिक्षा के क्षेत्र मे सेवा एव सहयोग के जो कीर्तिमान स्थापित किये है, वे सदैव अविस्मरणीय रहेगे। आपश्री का जीवन मगलमय व सुखी हो।

अभयसिह जारोली
अध्यक्ष, श्री साधुमार्गी जैन सभा, चित्तौडगढ

श्री सुन्दरलाल दुगड से मेरा परिचय लगभग १५ वर्ष पहले बीकानेर मे ही हुआ था जो समय के साथ घनिष्ठ सबध मे बदल गया। मै उनके सरल सहज व विनम्र स्वभाव से काफी प्रभावित हुआ। व्यापारिक क्षेत्र मे अपने कौशल से उपार्जित धन का शिक्षा व चिकित्सा के क्षेत्र मे सही सदुपयोग करके आपने जो सतत् समाज सेवा की है व निरन्तर किये जा रहे हैं, यह आपके सादा जीवन व उच्च विचार को दर्शाता है।

आपने बीकानेर के पी बी एम चिकित्सालय मे जन हितार्थ निरन्तर पिछले १५ वर्ष से सहयोग किया है। इस समयावधि मे प्रति माह आप द्वारा कार्डियोलोजी विभाग मे आये गरीब रोगियो की सहायतार्थ आवश्यक खर्च वहन किया जा रहा है तथा साथ ही विभाग की व्यवस्था को सुचारु रूप से सचालन करने मे आप द्वारा किया गया योगदान, जनहित मे किये जाने वाले कार्य का ज्वलत उदाहरण है।

मेरे विचार आलेख के रूप मे छपने से समाज को इनके उदार हृदयता व पीडित रोगियो की नि स्वार्थ सेवा मे योगदान का सदेश जायेगा जो युवा पीढी मे एक सेवा के प्रति उमग की भावना पैदा करेगी।

आशा है श्री दुगड की सेवाये पी बी एम चिकित्सालय को मिलती रहेगी।

विनोद बिहाणी
अधीक्षक, पी बी एम चिकित्सालय, बीकानेर

श्री सुदरलालजी दुगड एक प्रसन्नचित्त व्यक्ति है एव समाज के हर कार्य मे अग्रसर रहते है। श्री जिनेश्वर सूरि भवन मे भी आपका हमेशा सहयोग रहा।श्री जिनेश्वर सूरि भवन का ट्रस्ट मडल श्री दुगडजी के प्रति हार्दिक शुभकामनाये एव उनके दीर्घायु होने की कामना करता है।

विजयमल लोढा

श्रेष्ठिवर्य, दानवीर, वहुआयामी व्यक्तित्व से सम्पन्न श्रीमान् सुन्दरलालजी दुगड जैन समाज के ऐसे विरले एव वरिष्ठ दानवीर सुश्रावक है जिनकी दृढ्श्रद्धा, दृढनिष्ठा और दृढधर्मिता सभी के लिये प्रेरणादायी है। हमेशा उनके व्यक्तित्व एव कृतित्व मे एकरूपता है। ऐसे व्यक्तित्व को नमन।

सोहनलाल जैन
सलाहकार, आ श्री नानेश समता वि ट्रस्ट
नानेशनगर (दाता), कपासन

मरुभूमि का सूरज पूरे भारतवर्ष मे अपने नि स्वार्थ सेवाभाव से, अर्थाभाव से पीडित, अभाव ग्रस्तता से कुठित, सामाजिक-पारिवारिक या क्षेत्रीय असमानताओ से प्रभावित सस्था, समाज, परिवार या व्यक्ति विशेष को अपने सत्याग का 'प्रकाश' प्रदान करनेवाला यह आत्मनिर्मित व्यक्तित्व का धनी और कोई नही, वह केवल और केवल 'श्री सुन्दरलालजी दुगड' ही है। विनम्र, सरल, सहज, हसमुख, अपनत्व, उदारमना महादानी श्री सुन्दरलालजी दुगड ने अपनी सेवाओ व कृतित्व मे अपने वश का नाम इतिहास मे स्वर्णाक्षरो मे लिखवा दिया है। व्यवसाय तथा कर्मक्षेत्र म आपने अथक परिश्रम व सूझबूझ तथा मार्गदर्शन से भारत के उद्योगपतियो मे अपनी अमिट छाप छोडी है। आप आज अग्रणी पक्ति के उद्योगपति है। सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक तथा चिकित्सा-सेवा कोई भी क्षेत्र ऐसा नही है, जिसमे श्री दुगडजी ने मुक्त-हस्त से अनुदान प्रदान नही किया हो। उत्तर से दक्षिण व पूर्व से पश्चिम पूरे भारत मे आपके द्वारा प्रदत्त अनुदानो से अनेक स्थाई जनोपयोगी निर्माण व सेवा प्रकल्प आपकी गौरव गाथा का गुणगान कर रहे है और हर वर्ग, जाति, धर्म व समुदाय उनका पूरा लाभ उठा रहे है। आपके अनुदान व सत्याग से समाज की मूलभूत आवश्यकताओ की पूर्ति हुई है। उन सब प्रकल्पो – अनुदानो का सम्पूर्ण विवरण का उल्लेख करने के लिए एक और ग्रथ लिखने की आवश्यकता पडेगी और लेखनी भी थक जायेगी।

साभर लेक, राजस्थान के निवासी व प्रवासी तो आपके उपकार से अति आभारी व उपकृत है। आपने साभर की राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय मे ४००० वर्ग फीट का 'स्व मोतीलाल दुगड सूरज देवी दुगड' स्मृति हॉल का निर्माण करवा कर छात्राओ की मूलभूत आवश्यकता की पूर्ति की है, जो सदैव वन्दनीय है।

आपकी धर्मपत्नी श्रीमती कुसुमजी त्याग-तपस्या की, साधना-उपासना की, मृदुलता-कोमलता की, विनम्र-विनम्रता की तथा स्नेह-सौजन्य की प्रतिमा है। आप परम्परा और प्रगतिशीलता का उज्ज्वल रूप है। आप दुगड वश की गौरव गरिमा है और श्री सुन्दरलालजी की सुन्दरतम प्रेरणा है।

हमारी लेखनी ऐसे विशाल सागर सदृश श्री दुगडजी के व्यक्तित्व की गहराई, उनके जीवन के विभिन्न आयामो को समेटने व उपमाओ को तलाशने मे असक्षम है। व मानव मात्र के प्रेरणास्रोत है।

परमात्मा श्री दुगडजी को और क्षमता प्रदान करे। ये चिर-यौवन बने रहे और समाज इनसे सदैव उपकृत होता रहे।

कोलकाता ओमप्रकाश जोपट, ट्रस्टी, सभार क्लब

श्रीमान् सुन्दरलालजी दुगड जैन समाज के अग्रणी विरले एव वरिष्ठ उदारमना श्रावक है। आपकी धर्म के प्रति श्रद्धा और निष्ठा हम सभी के लिये प्रेरणादायी बने। आपके आदर्श जीवन पर सघ और समाज को गौरव है। ऐसे व्यक्तित्व को नमन।

मनोहरलाल चण्डालिया

कपासन जिला चित्तौडगढ(राज) पूर्व अध्यक्ष, साधुमार्गी जैन श्रावक सघ

असीमित धन सम्पदा के स्वामी अनेक होते है, परन्तु सचित सम्पदा को सार्वजनिक, सामाजिक कार्यो में समर्पित करते हुए दीन दुखियो, प्रतिभावान, निर्धन व्यक्तियो, छात्र-छात्राओ के भविष्य को सवारनेवाले विरले ही होते है। बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी श्री सुन्दरलाल दुगड का नाम इस श्रेणी मे सदैव ही सम्मान व श्रद्धा के साथ लिया जायेगा।

बीकानेर जिले की तपोभूमि देशनोक मे जन्मे श्री सुन्दरलाल दुगड को विरासत मे ही उदारता का गुण मिला। सफल व्यवसायी, अनेक सामाजिक व सार्वजनिक सस्थाओ के सस्थापक, अध्यक्ष श्री दुगड ने राजस्थान ही नही मध्यप्रदेश, पश्चिम बगाल के विभिन्न जिलो, नगरो, गाँवो मे अनेक जनहितार्थ कार्यो मे अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। शिक्षा एव चिकित्सा क्षेत्र म विशेष कार्य करते हुए विद्यालय भवनो, चिकित्सालय भवनो का निर्माण व विस्तार तथा इनम मूलभूत सुविधाएँ उपलब्ध करवाने का उल्लेखनीय कार्य भी श्री दुगड के द्वारा ही सम्पन्न हुए है। अपनी जन्मभूमि देशनोक मे देशनोक नागरिक सघ सहभागिता योजना के अन्तर्गत ३ करोड रुपये की लागत से चिकित्सा भवन का निर्माण मे प्रमुख भूमिका और बीकानेर म सहभागिता योजना के अन्तर्गत ही ८० लाख रुपये की लागत से मिड डे मिल रसोई घर का निर्माण करवाकर राष्ट्र निर्माण की महत्ती भूमिका का निर्वाह किया है। अपनी कर्मभूमि कोलकाता के अनेक चैरिटेबल ट्रस्टो, सार्वजनिक व सामाजिक सस्थाओ के विकास का कार्य किया है।

धर्मपरायण, आस्तिक, उदारमना, सहृदयी, यशस्वी व्यक्ति श्री सुन्दरलाल दुगड भविष्य मे भी अधिकाधिक सार्वजनिक, सामाजिक उत्थान के कार्यो म अपना योगदान करते रहे, यही हमारी शुभकामनाएँ-मगलकामनाएँ है।

हाजी मकसूद अहमद

सभापति, नगर परिषद, बीकानेर

Illambazar Balai Krishna Roy Smriti Balika Vidyalaya established in 2000 - is the only girls school in the block of Illambazar This educational institution caters to the long - felt demands of the local residents and takes an important role in spreading girls education There are some noble personalities who have spontaneously extended their helping hands in completing this mammoth task Shri Sunderlal Dugar is one of them He stands by this institution with both moral support and financial aid whenever we need them Men like him are rare in this materialistic self centric and so called progressive society Now the time has come to recognise and felicitate these personalities

We wish Shri Dugar a healthy and happy life

Illambazar Bala Krishna Roy
Smriti Balika Vidyalaya Illambazar

मेरा श्री सुन्दरलाल दुगड से पहिले इतना घनिष्ठ परिचय नही था। मै जयपुर मे रहता था तथा वे कोलकाता रहते थे। इनके सार्वजनिक सेवा कार्यो के बारे मे सुनता रहता था। मेरे भाईसा स्व गोकुलचन्दजी कासट गौशाला देशनोक का कार्य देखते थे। उनके स्वर्गवास के बाद जब मै गौशाला का कार्य देखने लगा, तब उनसे पहली बार कलकत्ता मे नवम्बर २००३ मे श्री करणी गौशाला के विषय मे मिला, कारण इस साल देशनोक मे महा अकाल पड गया था तथा चारे घास के अभाव मे गायो को बचाना काफी मुश्किल काम था। लेकिन यह व्यक्ति पहली मुलाकात मे खुले मन से उदार होकर दान देने के लिए आगे आये तथा अपने मित्रो एव मिलनेवालो को प्रेरित करके हमे अच्छी राशि उपलब्ध करवायी। उसके बाद मै जब भी कलकत्ता जाता, बराबर इनसे मुलाकात जरुर करता। इनका हमेशा से ही देशनोक गाँव के उत्थान के लिये चिन्तन करना मुझे काफी प्रभावित करता था। इसी सन्दर्भ मे देशनोक सामुदायिक स्वास्थ्य चिकित्सा केन्द्र के भवन निर्माण मे इनकी विशेष रुचि को देखते हुए मै भी इस कार्य मे बराबर सहयोग करता आ रहा हूँ तथा आशा करता हूँ कि आगे भी इनके साथ पुनीत कार्यो के लिये मै भी सहयोगी बनू।

श्रीचद कासट, देशनोक

आज हम दानवीर कर्ण, भामाशाह, पीथर शाहा व धन्नासेठ जैसे दानवीरो का नाम उदाहरण स्वरूप बार-बार क्यो लेते है क्योंकि उन्होने अपने धन का सदुपयोग सदैव अच्छे कार्यो मे नि स्वार्थ किया। आने वाला युग आपश्री के कार्यों को ठीक इसी तरह याद करेगा और आप उनके प्रेरणास्त्रोत बनेगे।

आप हमारे ट्रस्ट **"श्री आत्म वल्लभ जन कल्याण ट्रस्ट"** के उपाध्यक्ष है। परम श्रद्धेय आचार्य भगवत श्रीमद् विजयनित्यानन्द सूरीश्वरजी म सा ने अपने कोलकाता चातुर्मास के बाद जब भगवान महावीर की जन्म स्थली क्षत्रिय कुण्ड (लछवाड) की स्पर्शणा की तो वहाँ उन्होने देखा कि इस क्षेत्र मे चिकित्सा का कोई भी साधन नहीं है, लोग इस अभाव मे कष्टो को सह रहे है। पूज्य गुरूदेव ने श्री सुन्दरलालजी दुगड से कहा कि भाई अपने जन्म स्थान को तो हर कोई देखता है, उसे सवारता है लेकिन वर्तमान शासनपति भगवान महावीर की जन्म स्थली का यह हाल देखकर मुझे बडा दु ख होता है। आप इस क्षेत्र मे हॉस्पीटल का निर्माण करवाये। आपने तुरत हाँ भी कर दी। आपकी अगवानी मे वहाँ हॉस्पीटल का निर्माण पूरा हुआ। आप आगे न आते तो शायद यह कार्य पूर्ण होना बहुत ही मुश्किल था। सर्वप्रथम आपने ही अनुदान राशि दी व नीव का पत्थर बने। बने हुए मकान पर तो कलश चढाने व ध्वजा फहराने कोई भी आ जाता है लेकिन कार्य की प्राथमिकता के लिए नीव का पत्थर बनना बडा कठिन है। आपके द्वारा किये गये इस कार्य से मात्र १८ माह की अल्प अवधि मे वहाँ १०,००० (दस हजार) से भी ज्यादा रोगियो के उपचार की सेवा प्रदान की जा चुकी है।

आपके द्वारा कितने ही ऐसे कार्य किये गये है जिनकी पूर्ण व्याख्या करना असभव है क्योंकि आपने गुप्त रूप से हजारों की सहायता की है, कइयों के घर बसाये है।

हम सदैव परमपिता से यही प्रार्थना करते है कि आप अपने शुभ कार्यो मे निरन्तर अग्रसर हो। कोई भी बाधा आपके सामने न आवे, इसी शुभ कामना के साथ–

महेन्द्र डागा, सचिव
श्री आत्मवल्लभ जन कल्याण ट्रस्ट, (लछवाड) कोलकाता

श्री सुन्दरलालजी दुगड जैन समाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता, धर्मप्रेमी, निरभिमानी, हसमुख, श्रमशील एव कर्तव्यपरायण व्यक्ति है। अपने कार्यो मे व्यस्त रहते हुए भी आप जिस तत्परता एव कर्मठता से सम्प्रदायातीत होकर सामाजिक एव धार्मिक कार्यों मे अपना योगदान देते है तथा जैन कल्याण सघ की प्रगति के लिये सदैव प्रयत्नशील रहते है, वह प्रशसनीय है।

श्री दुगड अर्थाभाव से, उचित चिकित्सा के अभाव मे अथवा अन्य किसी कारणवश असहाय व्यक्ति की सहायता के लिये सदा तत्पर रहते है। आपकी उच्च मानसिकता एव उदारवादी दृष्टिकोण सभी के लिये प्रेरणादायी एव अनुकरणीय है।

मजुला जैन
सचिव, जैन कल्याण सघ, कोलकाता

आपके सहयोग से शिखरजी मे मानव सेवा का कार्य चल रहा है। टी बी का इलाज, हेल्थ चेकअप कैम्प, आँख का ऑपरेशन एव मलेरिया की दवाई नि शुल्क दी जाती है। भगवान ने आप जैसे आदमी को धरती पर भेजकर मानव सेवा का कार्य करने का अच्छा मौका दिया है। समाज आपको कभी भी भूलेगा नही। आप का व्यवहार और प्रेम बहुत कम लोगो को मिलता है। आगे भी आपका प्रेम मिलता रहे, आप जैसे कर्मठ कार्यकर्त्ता की समाज को बहुत जरुरत है।

अलोकचन्द दुगड, सरक्षक
मधुवन मडल, गिरिडीह

I have known Mr Sunder Lal Dugar for about last 18 years The first time I saw him he was at the threshold of a promising and bright career ahead

In course of the innumerable meetings and exchanges that I have with Mr Dugar what struck me most about him is his uncanny ability to evaluate and solve tricky situations facing all odd situations with smile and courage He is blessed with some God gifted abilities, to solve problems with his intellect

The other remarkable feature about him is his tremendous memory He can with pin point accuracy go back to the past

and relate to incidents and facts as if it was just yesterday

I have had the occasions to deal with his staff members whom I have found to be very dedicated and respectful to him

A man of principles Mr Dugar has always kept his word and commitments without failure, which has definitely been one of the deciding factors in his spectacular growth It is believed that if Mr Dugar gives an assurance he will stick to it at any cost

I should appreciate his understanding in legal matters There has been occasions when in complicated and intricate issues his suggestions has been crucial and to the point

His behavior with young and elders alike is that of love and respect I am happy to be a part of the felicitation to him which he fully deserves

I wish him a long and healthy life with bountiful happiness

Dipayan Choudhury, Kolkata

It gives us immense pleasure that Sri Sunder Lal ji Dugar is being felicitated by the committee We met him way back in 1987 when he was in the process of acquiring land at Nager Bazar At that time we were members of the adjoining club and we were young and not having any source of income at that point of time We demanded some donation from him on behalf of our club But Dugarji told us that I want to give you more than what you have demanded so come to my office and meet me

We 5/6 boys then went to Babu s office he said that I will not give you any thing but you have to work hard and earn, which you should enjoy and your next generation shall also benefit from it We took the road as advised by Babu and began our career by first doing some brokerage work in property deals Then Babu arranged some material supply contracts and we continued our lives on the path shown by Babu Then we started some Building and apartment construction work by acquiring small plots of land and we gradually established ourselves

We all respect Babu for his deeds and he is a God for us For him today our children are studying in good schools and today we have everything including our own residential houses and our own office vehicles and respect in the social circle Had Babu not guided us we would not have attained success and prosperity in life? Several unemployed youths like us are well settled in life with the help and guidance of Babu

We are thankful to the members of the committee for felicitating such a great human being We wish Babu a long life and he shall always be our guiding light and continue to guide other people like us

Madan Gopal Saha
Susanta Sarkar
Braja Kundu
Kolkata

I have been very fortunate over the years to be employed by Sri Sunder Lal ji Dugar There are several remarkable features about him which ordinary human beings can only aspire to have However I shall try to share my experience with him that I had

Right from the early years of my association with him I have found that he is a man of few words but always of the right words He has a remarkable quality of getting to the root of things without much explanation It is common knowledge that "men possessed with superior wisdom are men of few words"

His human side is one of the unique feature that deserves special mention Right from the early days his natural tendency towards charity and donation have been significant It is immaterial to him whether the person is known to him or not when the news of any one being in despair reaches his ears, he is ready with open arms

Dugar ji s unique trade of understanding the complex with ease and simplicity requires special mention I have been witness to various occasions when tough situations were solved by him before the blink of an eyelid

The entrepreneur in Dugar ji has reached a stage where others can follow his foot steps in pursuit of excellence He is providing bread and butter to many persons whose blessings are always there with him He is a friend philosopher and guide to his staff and employees who always treat him with respect and honour He is very affectionate and caring for all his employees and always ready to extend help in any manner in the times of their needs Having such large employee strength in his organization there is no union which shows the reciprocal feelings of his employees towards him His selfless attitude has found a special place in the hearts of all the customers who have come across him

Sundar Lal ji is a devout and a pious human being with tremendous respect and tolerance for all religions What gives me immense pride is that his admirers praise about him in his absence rather than in his presence as he is averse to any propaganda He always has a tremendous impact on all persons who are known to him and his personality has a positive influence on all around him

I pray for his good health and happiness

M S CHOB

श्रीमान सुन्दरलालजी दुगड जैन समाज के उन बहुमूल्य नगीनो मे से एक है जिन्होने जैन एव अन्य समाजो को भी उदारता एव सहृदयता पूर्वक शिक्षा, स्वास्थ्य एव धार्मिक क्षेत्रो मे काफी सहयोग किया है।

उनके व्यक्तित्व मे विनम्रता, मधुरभाषिता व हृदय मे सात्त्विक भाव है। श्री महावीर जैन मडल को समय-समय पर अपने विचारो एव सहयोग से आशीर्वाद प्रदान किया है इसके लिए मडल के सभी सदस्यो की तरफ से हार्दिक धन्यवाद।

आप चिरायु हो, यही हमारी शुभकामनाएँ है।

मोतीचन्द दुगड, अध्यक्ष
श्री महावीर जैन मडल, हावडा

प्रकृति ने जिन-जिन वस्तुओ का निर्माण किया है वे सभी सत्य एव सुन्दर है। इन्हीं वस्तुओ से चुनकर उसी प्रकृति ने हम सब के मानव रूप मे एक फरिश्ता दे डाला, जिसमे सभी गुण विद्यमान है तथा नाम दे डाला 'श्री सुन्दरलाल दुगड'।

सुन्दरता के साथ-साथ उनके चेहरे की लालिमा बयान करती है कि उनमे वे सारे गुण उपलब्ध है जो कि अक्सर फरिश्तो मे ही पये गये है। इस महत्त्वाकाक्षी योग्य पुरुष ने हर क्षेत्र मे अपने अमिट प्रभाव तथा अस्तित्व की बदौलत आकाश की बुलन्दियो तक को छू लिया। यह दैविक तथा प्राकृतिक वरदान नही तो और क्या है ? समाज, शिक्षा एव धार्मिक निष्ठा मे इनका परम सहयोग सदैव से रहा है। सवेदना की आकाक्षा मे यदि कोई पीडित मानव श्री सुन्दरलालजी के पास कभी आया तो वह कभी भी मायूस नही लौटा। इनके अन्दर पाखण्ड, दिखावा एव अहकार का लेशमात्र नाम नही। हर परिस्थिति का मुकाबला केवलमात्र एक मधुर मुस्कान से कर लेना इनकी खूबी है। प्रेम तथा विनय इनमे कूट-कूट कर भरा पडा है।

अपने इन्ही गुणो की वदौलत वे श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सभा के अलावा भी कई अन्य सामाजिक एव धार्मिक सस्थाओ के सामान्य सदस्य ही नही, अपितु अभिन्न अग बन चुके है। आपके इन्ही गुणो को ध्यान मे रखते हुए श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सभा ने उनके अभिनन्दन की योजना बनाई है। आइए, हम सब मिलकर ''श्री सुन्दरलालजी दुगड अभिनन्दन समारोह'' को साकार रूप देते हुए उनके गुणो का अनुसरण करे।

अशोक मिन्नी, कोलकाता

माननीय श्री सुन्दरलालजी दुगड के वारे मे मै क्या लिखूँ, वस इन्होने हमारे दानवीर सेठ स्व सोहनलालजी दुगड की क्षतिपूर्ति कर दी है। वे हमेशा वस एक दोहा कहते थे–

जननी जणे तो ऐडा जण के दाता के सूर ।
नहीं तो रही जे वाझडी मति गवाजे नूर ।।

इनका अति सरल व्यक्तित्व सवको मोहनेवाला है। व्यक्ति के दु ख दर्द मे काम आने वाले व मुक्त हस्त मे दान देने वाले ऐसे मानव को हमारा वारम्वार नमन।

चन्द्रप्रकाश डागा

विनम्रता, विनय, प्रेम एव वत्सलता के प्रतिमूर्ति श्री सुन्दरलालजी दुगड के चारित्रिक सौन्दर्य का सान्निध्य मुझे मिला है। अत मै स्वय को भी गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ। बहुआयामी व्यक्तित्व से सम्पन्न श्री दुगड से जो अपनत्व समय-समय पर मुझे मिला है, उसका वर्णन शब्दो मे नही हो सकता। समाजसेवा का कोई भी अवसर वे किसी भी हालत मे गँवाना नही चाहते। हमारी सस्था 'नानू सती सेवा समिति' एव 'लायन मेघा सिटी' के लिए उन्होने जो भी उदारता दिखाई है, वह अकथनीय है। मै श्री 'नानू सती सेवा समिति' एव 'लायन मेघा सिटी' की तरफ से उनके सुखद जीवन की कामना करता हूँ।

तन-मन-वचन एव कर्म से सुन्दर श्री सुन्दरलाल दुगड की सुन्दरता से सुपरिचित उनके निकट सम्पर्कियो को यह बात भली-भाँति मालूम है कि उनके जीवन की समस्त उपलब्धियाँ मानवमात्र के कल्याण के लिए है। उनके महान व्यक्तित्व की उत्कृष्टता तब दृष्टिगोचर होती है जब कोई पीडित उनके पास पहुँच जाता है। हर प्रकार की सहायता के उपरान्त भी लगता है उन्होने कुछ नही किया। स्वय को कर्त्ता नहीं मानते। महानता के चरमोत्कर्ष पर विराजमान सुन्दर मानव जीवन जीने की सुन्दर शैली के प्रस्तुतकर्त्ता श्री सुन्दरलाल दुगड को कोटि-कोटि नमन।

नरेश डालमिया, उपाध्यक्ष
नानू सती सेवा समिति एरा लायन मेघा सिटी, कोलकाता

जय माताजी का नाम सुनते ही सभी राजस्थानी प्रवासियो के मन मे अपने आप विश्व विख्यात देशनोक की माँ करणी मन पटल पर आ जाती है। रेगिस्तान की इसी माटी के देशनोक मे जन्मे श्री सुन्दरलालजी दुगड का नाम अपने आप मे गौरवशाली है तथा शब्दकोष मे ऐसा कोई शब्द नही रह गया है जिनसे इनको अलकृत नही किया गया हो। ऐसे भामाशाह श्री सुन्दरलालजी दुगड को देशनोक प्रवासी, निवासी एव देशनोक नागरिक सघ कोलकाता अपने अध्यक्ष के रूप मे पाकर गौरवान्वित है।

देशनोक मे श्मशान भूमि की चार दिवारी, करणी अस्पताल मे स्टाफ क्वार्टर, कन्या विद्यालय मे हॉल, जैन जवाहर मण्डल मे हॉल, श्री भोमियाजी के मन्दिर मे कमरे का निर्माण, श्री करणी गौशाला मे निर्माण व अकाल मे गोग्रास के लिये सहयोग, श्री करणी औषधालय, आदर्श विद्यामन्दिर तथा सुवोध विद्यालय जैसी अनेक सस्था को आपका अर्थ सहयोग व मार्ग दर्शन मिलता है।

अभी देशनोक मे श्री करणी अस्पताल को रेफरल अस्पताल का दर्जा मिलने के वाद अस्पताल भवन के निर्माण मे विशेष सहयोग आपका रहा तथा एक सार्वजनिक भवन निर्माण की भी योजना है। देशनोकवासियो के प्रत्येक कार्य म आप सहयोगी रहते है व कोई भी व्यक्ति आपके यहाँ से निराश होकर नही जाता है। माँ के चरणो मे शत्-शत् प्रणाम करते हुए मै अपनी और सस्था एव समस्त देशनोक प्रवासियो की तरफ से उनके तथा उनके पूरे परिवार के लिय मगलकामना करता हूँ।

जयचन्दलाल मरोटी
मचिव, देशनाक नागरिक मघ, कालकाता

मर जीवनकाल मे भी एक ऐसा समय आया था जब पारिवारिक तथा आर्थिक अवस्था की वजह से मुझे घर छोडना पडा तथा हमारे परिवार के साथ रहने का कोई स्थान तथा पैसा पास म नही था। ऐसे बुरे समय म मै श्री सुन्दरलालजी दुगड से प्रथम बार बिना जान-पहचान के मिला तथा उन्होने पहले ही दिन मेरी बात पर बिना किसी रकम के भुगतान के एक नये तीन शयनागार फ्लैट की चाबी द दी तथा कहा कि कमा कर आराम मे दे देना। यह मेरे लिये अविश्वसनीय परिस्थिति थी।फ्लैट के साथ उन्होंने मेरे को अपना काम करने के लिये भी एक कम्पनी मे डायरेक्टर बना कर ऑफिस मे बैठा दिया था।

आज उन्हीं के आशीर्वाद तथा शुभकामना से मैं मेरे परिवार के साथ अच्छी पोजीशन पर हूँ। यह विश्वास करने योग्य बात नहीं है पर सच्चाई है और इसे मैं समाज के सामने गर्व के साथ रखना चाहता हूँ। उनकी महानता तथा उदारता का कोई जोड मैंने अपने जीवनकाल मे अभी तक नही देखा। आज इन बातो को करीब २० साल हो गये है परन्तु मैंने उनकी करनी तथा सोच मे कोई परिवर्तन नहीं पाया। मै ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि उनको तथा उनके परिवार को सुख, समृद्धि मिले तथा यश कमाये।

रमेशचन्द्र टेकडीवाल, कोलकाता

सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्री सुन्दरलालजी दुगड अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष इन चार स्तम्भो के आधार पर अपने जीवन-यापन का सकल्प लेकर अपने नाम के अनुरूप दिल से भी उतने ही सुन्दर उज्ज्वल सोच वाले पूर्वी भारत मे अनूठे व्यक्तित्व वाले दानवीर एक महान व्यक्ति है।

कलकत्ता महानगर की प्रमुख सस्थाओ मे से एक कलकत्ता वस्त्र व्यवसायी सेवा समिति राष्ट्रीय, प्रादेशिक, सामाजिक, सास्कृतिक एव सार्वजनिक उत्थान मे अग्रसर समिति का सिर्फ एक ही ध्येय है वह मानवसेवा का। समिति द्वारा चलायी गई सेवा कार्यो मे होमियोपैथिक दवाखाना, विकलाग शिविर, हृदयशल्य चिकित्सा, स्कूली छात्र-छात्राओ को पाठ्य सामग्री, चक्षुशल्य चिकित्सा एव समय-समय पर बाढ, चक्रवात, भूकम्प, सुनामी पर प बगाल के साथ-साथ मालदा, मुर्शिदाबाद, आन्ध्रप्रदेश, लातुर, अण्डमान निकोबार, समिति कार्यकर्त्ता स्वय जाकर नि शुल्क सेवा करते है। इन सभी सेवाओ को सुचारु रूप मे करने के लिए श्री सुन्दरलालजी दुगड़ अपने तन, मन, धन से जो सहयोग हमारी समिति को देते आए है हमारी समिति के इतिहास के पन्ने हमे श्री सुन्दरलालजी दुगड को सदा याद दिलाते रहेंगे।

इतना ही नहीं भारतवर्ष की तपोभूमि गगासागर स्थित समिति धर्मशाला भवन के जिर्णोद्धारीकरण मे आपका आर्थिक सहयोग बहुमूल्य साबित हुआ है। पूर्वी भारत ही नहीं पूरे देश मे आपकी सहृदयता एव दानशीलता से कोई अपरिचित नही है। सबकी मुराद यथासम्भव पूरी करने के लिए आप सदेव तत्पर है।

भगवान आपके यश को पूरे ससार मे फैलाएं, यही हमारी शुभकामना है।

नन्दकिशोर भूतडा
सचिव, कलकत्ता वस्त्र व्यवसायी सेवा समिति

दरिद्रभावाद् विननीति पापम्।
पाप ही कृत्वानरक प्रयाति,
पुनर्दरिद्र पुनरेव पापी।'

अर्थात् साधन सम्पन्न होने पर भी जो दान नही देता, वह दूसरे जन्म मे दरिद्र बनता है और दरिद्रता के प्रभाव से अनेक पाप करता है तथा पाप करने से नरक मे जाता है, तथा पुन दरिद्रता पाता है। इस प्रकार दान न देने वाला बार-बार दरिद्रता के चक्र मे घूमता है।

उपरोक्त सिद्धान्तानुसार आप मुक्त हस्त से धर्म कार्य मे धन खरचने से पीछे नही रहते। आपने शायद यह अपने जीवन का उद्देश्य ही बना लिया है कि धन धर्मार्थ खरच करने से कम नही होता, बल्कि पुण्य की कमी से कम हो जाता है। दान मे धन खरच करना तो धन का सदुपयोग ही है।

एक प्रसग – सम्वत् २०४८ को बीकानेर जैन हाईस्कूल मे अ भा सा जैन सघ की कार्यकारिणी की बैठक हुई थी उसमे आप श्री से बिना पूछे ही मैंने उनके नाम से ५१ हजार रुपया लिखवा दिया था, उन्होने खुशी-खुशी सिर्फ स्वीकार ही नही किया बल्कि यह भी कहा अगर आप ५ लाख भी लिखवा देते तो मै अस्वीकार नही करता। कितनी उदारता उस समय मैंने उनमे देखी। उनकी दानवीरता के कारण ही श्री अ भा सा जैन सघ के पदाधिकारियो ने उन्हे 'भामाशाह' की पदवी दी। जैसा नाम सुन्दर है वैसे तन मन से भी सुन्दर है।

सम्पतलाल सिपानी
अध्यक्ष, श्री सा मार्गी जैन सघ पूर्वाचल

आज व्यक्ति चरित्र-सकट के एक ऐसे सक्रमण काल से गुजर रहा है जिसमे हृदय और मस्तिष्क का अर्तद्वद अपनी चरम सीमा पर है। ऐसी स्थिति मे सामाजिक कार्यकर्त्ता पर विशेष दायित्व आ गया है। उसे समाज के विभिन्न क्षेत्रो म सामजस्य स्थापित कर समाज की नव रचना का अपेक्षित दिशा-बोध देना है। कुछ भी होने से पहले मनुष्य को सहज सार्थक मनुष्य बनना होगा। जीवन की समग्रता से अनुभूत किये बिना सत्य से साक्षात्कार करना सभव नही है। पहले इकाई का, अपने स्वरूप को, समझना होगा फिर उसी के आधार पर समूह की समस्याओ का समाधान खोजना होगा।

इस व्यावहारिक पक्ष को श्री दुगडजी ने अपने जीवन मे सदेव धारण कर समाज को दिशा प्रदान की है। ऐसे सामाजिक कार्यकर्त्ता का अभिनदन सर्वथा प्रासंगिक है।

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी श्री सुन्दरलालजी दुगड दीर्घायु हो और पूर्ण स्वस्थता के साथ शिक्षा, सेवा, साधना व धर्म का सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् का सदा सवाहक बनाते रहे, यह मेरी हार्दिक शुभकामना है।

शान्तिलाल जैन
सचिव, पूर्वांचल [illegible]
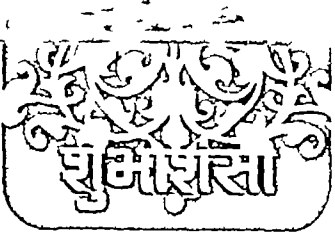
मै श्री सुन्दरलालजी से बहुत समय से परिचित हूँ। अनेक बार निजी रूप से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। अनेक बार सस्थाओ के प्रतिनिधि के रूप मे आपसे सन्मुख वार्तालाप हुआ। ऐसे ही एक अवसर पर हम **तुलसी सेवा सस्थान**, जो कि मानव सेवा के लिए समर्पित सस्था है एवम् श्री डूगरगढ(राजस्थान) मे पूर्ण सेवा भाव से **'तुलसी मेडिकल एव रिसर्च सेन्टर'** के नाम से अस्पताल का सचालन पिछले १५ वर्षो से निरन्तर कर रहा है, के अन्य पदाधिकारियो के साथ आपके कार्यालय मे जाना हुआ। आपने पूर्ण धैर्य के साथ हमारी बाते सुनी एव अत्यन्त विनम्रता के साथ अस्पताल के नव निर्माणाधीन भवन हेतु अनुदान के रूप मे ११,००,०००/- (ग्यारह लाख) रुपयो की स्वीकृति प्रदान कर हम सभी को अभिभूत कर दिया। दानवीर के रूप मे आपकी ख्याति की खुशबू चहु ओर व्याप्त है। व्यक्ति, समाज एव सस्थाओ के प्रति आपकी सेवा भावना एव सवेदनशीलता ने आपके व्यक्तित्व को और तराशा है। ऐसे ही अगरपाडा की एक स्कूल के कार्यक्रम मे मेरा सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जहाँ आपने अनेक कमरे एव विशाल सभागार का निर्माण करवाया। उस दिन उद्घाटन कार्यक्रम मे जहाँ उपस्थित जनसाधारण आपको मानवता के मसीहा के रूप मे देख रहा था वही आप अत्यन्त सरलता एव विनम्रभाव से सबसे मिल रहे थे। ऐसा लग रहा था कि आपके चेहरे पर किचित मात्र भी गर्व एव अहम् की भावना नही झलक रही थी। इन्ही सब विशेषताओ ने आपको एक उच्चता प्रदान की है। आपके बारे मे कुछ भी कहूँ, वह कम होगा।

मै अभिनन्दन के इस अवसर पर **तुलसी सेवा सस्थान** की तरफ से श्री *सुन्दरलालजी दुगड* के दीर्घायु एव पूर्ण स्वस्थता की कामना करता हूँ एवम् परम दयालु परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि आपको इतनी शक्ति एवम् सम्पन्नता प्रदान करे कि आपके हाथो जरुरतमदो, सभा-सस्थाओ एव मानवता का उपकार दिन दूना, रात चौगुना होता रहे।

भीखम चद पुगलिया
मत्री, तुलसी सेवा सस्थान, कोलकाता

माननीय दुगडजी बहुत उदारमना, सरल स्वभावी, दानवीर और जीवदया प्रेमी है। आप आदरणीय भाभीजी के साथ कानोड स्थित हमारी गोशाला पधारे एव आपने मूक प्राणियो के प्रति दया और करुणाभाव दर्शाते हुए, जिस उदारता से हमे घास, पानी हेतु अर्थ सहयोग किया है, उसके लिये उनको "प्राणी मित्र" की उपाधि देवे तो भी कम होगी।

भारत सरकार ने हमारी गोशाला की गोमाताओ की परिचर्या एव चिकित्सा के लिए एम्बुलेस हेतु अनुदान दिया था। उसमे भी आपने प्रभूत राशि दी है।

भगवान आदरणीय दुगड सा को दीर्घजीवी बनावे एव इन मूक प्राणियो को इसी प्रकार उनका सहयोग मिलता रहे।

शान्तिलाल नलवाया, सस्थापक सयोजक
श्री आदिनाथ पशु रक्षा संस्थान, कानोड

I felicitate you, I adore you, I wonder who had christened you "Sunder" Likely it is your parents, may be your grandma Who ever it is, I salute them I am sure it is only with their blessings that you have grown up and am confident you will develop your future more handsomely doing justice to your name "Sunder" Here I would like to quote Shakespeare "Good name in man or woman is the *immediate jewel of their souls*"

I know, you are very religious minded, but it is more gratifying for you to stand by the neediest of any colour then spending lavishly in needless rituals as you believe to serve man is to serve God and you seldom let anyone know your benevolent activities In this contest I would like to quote Nehru "The person who talks most of his own virtues is often the least virtuous"

Your charming attitude to anyone senior, equal or junior deserves praise Sometimes I wonder why you call me Mamaji with such love and respect ! I wouldn't mind if you would have called me Nikhil Babu or simply Mr Roy Usually we fondly call our maternal uncle Mamaji So I feel proud and must pay pronam to the immortal soul of your mother resting in peace in the abode of God

From sources I have heard some work of your charity in the form donation to Blind school, Hostel at Rajarhat, to School building at B T Road, Dunlop, to a Hospital in Rajasthan, to B Dev J K Samiti at Dum Dum a few I know and I also know that your gracious hands have extended to several other philanthropic causes and institutions Besides, I heard of your generous help to the needy students for their education, poor parents for their daughter's marriage as well as towards medical treatment of many deserving people Indeed you have followed the words of Shakespeare by heart, "Talkers are not good doers"

Now to remind you I am acquainted with you since 1986 As Mamaji I will always shower my blessings on you and will pray to Almighty to grant you a long, prosperous life I conclude with the words of the bard of Stat ford Be great in Act, as you have been in thought-Suit the Action to the word and word to action

Nikhil Ranjan Roy
Mamaji

उदारमना समाज सेवी दानवीर, मरुधरा के भामाशाह, यथा नाम तथा गुण के धनी, करुणा के सागर सुन्दरलालजी दुगड देशनोक निवासी महान व्यक्तित्व के धनी है। आप कलकत्ता म व्यवसाय म व्यस्त रहते हुए भी धार्मिक, आध्यात्मिक, चिकित्सा एव शिक्षा के क्षेत्र म तथा जरुरतमदा एव पीडित मानव के सहयोग के लिए सदेव तत्पर रहते है, चाहे वह जैन हो या अजैन। आपकी तो एक ही भावना है कि मरे को सहयाग करना है। धन्य है एस महामानव का जिसने निस्वार्थ भाव से लाखो करोडो रुपये का दान किया है एव कर रहे है। फिर भी आपके जीवन म किसी तरह का अहकार एव प्रदर्शन नही है।

आपकी माताजी धर्मपरायण महिला थी। उनको १९ दिन तक सथारा चला तव आप पूरे परिवार के साथ तन-मन से माताजी की सेवा म लगे रहे एव आचार्य श्री नानश रामेश शासन का गौरवान्वित किया।

आपकी आचार्य श्री नानेश रामेश के प्रति अपार श्रद्धा है। सघ की विभिन्न प्रवृत्तियो म आप तन-मन-धन से सहयाग कर रहे है।

किशनलाल काकरिया
अध्यक्ष, महावीर इण्टरनेशनल, नोखा

ससार अनक समृद्ध या कहे धनाढ्य लोगो से भरा पडा है पर इस तरह के आयोजन उन्ही लोगो के लिए आयोजित किये जाते है जो समाज के लिये सोचते है। गीता मे भगवान कृष्ण कहते है– 'हे अर्जुन! अपने परिवार, अपने बच्चो के लिये तो सभी सोचते है लेकिन जो समाज के लिए सोचता है, वही श्रेष्ठ है।'

सुन्दरलालजी चन्द उन्ही लोगो मे से एक है जो अपने धन को समाज की प्रगति के लिए समर्पित करते है। निरन्तर मुस्कराते रहना उनका स्वभाव है। अत्यन्त विनम्र, सरल, निरभिमानी एव मृदुभाषी व्यक्तित्व के धनी सुन्दरलालजी जन-जन के प्रिय है। समाज की अनगिनत सस्थाओ के विभिन्न महत्वपूर्ण पदो को सुशोभित करते हुए आपने समाज की अपूर्व सेवा की है। वहुत कम उम्र मे जहाँ आपने अपनी दक्षता, सूझ-वूझ और परिश्रम से अपने व्यवसाय को वढाया उसके साथ-साथ सामाजिक सस्थाओ को अपने आर्थिक यागदान से आप्लावित कर दिया। सम्पूर्ण देश म और विशेष कर राजस्थान तथा कोलकाता मे सैकडो सस्थागत योजनाओ को पूरा करने मे आपका महत्वपूण योगदान रहा है।

[illegible] नवयुवक समिति से आप वर्षो से जुडे हुए है और सस्था की प्रगति मे [illegible] महत्वपूण योगदान रहा है।

[illegible] समाज के ऐसे अमूल्य रत्न के दीर्घ जीवन एव सुन्दर स्वास्थ्य की कामना करते है।

[illegible]लाल सुराणा
वास्ते- आसवाल नवयुवक समिति, कालकाता

वैसे तो श्री सुन्दरलाल दुगड का व्यक्तित्व वहुआयामी है क्योंकि शिक्षा, समाजसेवा, चिकित्सा, अध्यात्म प्रभृति जीवन के सभी क्षेत्रो म उनका महत्वपूर्ण योगदान है परन्तु इतना सव करते हुए भी 'अहकार' जैसी कोई वात उन्हे छू तक नही गयी है। व समाज के सभी लोगो स विनीत भाव से मिलते है एव सहयोग करते है। इतना ही नही वे विभिन्न क्षत्रो की सार्वजनिक सस्थाओ म सक्रिय होकर काम मे हाथ वँटाते है और उन सस्थाओ को अपने-अपन क्षेत्र मे कैसे आगे वढाया जाए, इसकी चिन्ता भी करते है – यह सबसे वडी खासियत है उनकी।

कालकाता मे प्रवासी राजस्थानियो की प्रमुख सस्था 'राजस्थान परिषद' के वे माननीय उपाध्यक्ष है एव कोलकाता महानगर के वीर-शिरोमणि महाराणा प्रताप की चेतक पर वैठी २० फुट ऊँची प्रतिमा की स्थापना हेतु उनका भरपूर सहयोग रहा है। 'गोरक्षा' एव 'गोसवर्द्धन' के क्षेत्र की अग्रणी सस्था 'कलकत्ता पिजरापाल सोसाइटी' के आप सम्माननीय ट्रस्टी है। वीकानेर एव देशनोक म चिकित्सा सहित कोई भी ऐसा सार्वजनिक सेवा का क्षेत्र नही है, जहाँ उनकी प्रमुखता मे सहभागिता न हो। जैन समाज की विविध सस्थाओ से वे सम्पूर्ण भारतवर्ष म अभिन्न रूप से जुडे हुए है।

वास्तव मे उनका अभिनन्दन तो प्राणी-मात्र की सेवा का ही अभिनन्दन है। प्रभु उनको स्वस्थ रखे एव शतायु करे।

अरुण प्रकाश मल्लावत
महामत्री, राजस्थान परिषद, कालकाता
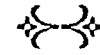
श्री सुन्दरलाल दुगड एक ऐसी शख्सियत का नाम है जो सूझवूझ, मधुरता, इन्सानियत और पारदर्शिता की मिशाल है। हर क्षत्र म उन्होने विकास की राह को अपनाया, पर उस राह पर सिर्फ खुद न चलते हुए दूसरो को भी साथी वनाया। [illegible] को उन्नति की राह पर अग्रसर करने के लिए उन्होंने [illegible] गाँवो म स्कूल व कॉलेजो मे अपना सहयोग दिया। हॉस्पिटल व गौशालाओ को खूब आगे वढाया। धार्मिक सस्थाओ मे भी वखूवी जिम्मेदारी निभाई न सिर्फ आर्थिक रूप म [illegible] मन से सेवा करते है। अपनी व्यस्त दिनचर्या म स समय निकालकर अपने [illegible] की खूव सेवा की जव उन्होने सथारा लिया था। आज उनका [illegible] अनगिनत नेक कर्मो की दुआओ का असर है कि वो जहाँ है वहाँ है। [illegible] उनको सादगी देखते ही वनते है। [illegible] के लिए व एक [illegible]।

कन्हैयालाल [illegible]

सिर्फ कोलकाता ही नही देशभर मे दानवीरता के नाम का परचम फहराने वाले हर दिल अजीज भाई श्री सुन्दरलालजी दुगड के बारे मे जितना भी लिखा जाये, कम ही प्रतीत होता है। आप जैन समाज के विरले प्रकाश-पुँज है। छोटी-सी उम्र मे ही माँ लक्ष्मी ने आपको अपार तरक्की प्रदान की और आप भी इतने प्रबल दानवीर प्रवृत्ति के इन्सान निकले कि शायद स्वय माँ लक्ष्मी भी गद्‌गद्‌ हो गई। शिक्षा और स्वास्थ्य जगत के अलावा समाजसेवा मे भी आपने मुक्त हस्त से अनगिनत दानवीरता की निरतरता की जो मिसाल स्थापित की है, वह बेजोड है। आपकी इसी दानवीरता से प्रभावित होकर हमारे अखबार 'देश और व्यापार' ने गत दिनो देशनोक (बीकानेर) मे एक रगारग कार्यक्रम मे आपश्री को 'शेरे मारवाडी अवार्ड' से भी नवाजा था, यह भी हमारा सौभाग्य ही रहा। दानवीर भामाशाह भाई श्री सुन्दरलालजी दुगड का भविष्य और भी अधिक उज्ज्वल हो, भगवान् आपको असीम तरक्की प्रदान करे। इसी शुभकामना के साथ–

प्रकाश पुगलिया

प्रधान सम्पादक, देश और व्यापार

'मेरी क्या लागे तेरा तुझको अर्पण' भावना से ओतप्रोत श्री सुन्दरलालजी दुगड श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन समाज के ऐसे देदीप्यमान हीरे है जिन्होने अपनी ऊर्जा एव रोशनी से अधकार मे प्रकाश विकीर्ण किया है। चाहे वह चिकित्सा का क्षेत्र हो या शिक्षा का क्षेत्र हो या धार्मिक अथवा सहिष्णुता का क्षेत्र हो। लक्ष्मी एव सरस्वती का वरदहस्त एव विशाल हृदय विरलो को ही मिलता है। श्री दुगडजी का एक ऐसा सरल एव सादगीपूर्ण व्यक्तित्व है कि आपमे प्रदर्शन, दिखावा, अभिमान, पदलोलुपता आदि किचित मात्र भी नही झलकती है। असहायो की सेवा करना आपका मूल मत्र है। क्या मेवाड और मारवाड तथा क्या मालवा अनेको स्थानो पर आपकी दानवीरता एव भामाशाही से शिक्षा एव चिकित्सा सस्थानो का जन्म हुआ एव वे फल-फूल रहे है। स्थानीय आचार्य नानेश होम्योपेथिक चिकित्सा परिसर वडीमादडी मे भी आपका प्रशसनीय योगदान कभी भुलाया नही जा सकता है। आपकी सहृदयता से हमारा मनोबल बढा है। सदकार्यो मे आपकी रुचि प्रशसनीय, श्लाघनीय एव अनुकरणीय है। आपके सुखी, समृद्ध, दीर्घायु एव यशस्वी जीवन की मगलकामना करते है।

डॉ हरीशकुमार महात्मा

सस्थापक सचालक, आचार्य नानेश हॉम्योपेथिक

चिकित्सा सस्थान, मातृधाम हॉनिमेन परिसर, वडीमादडा

श्री दुगडजी का व्यक्तित्व का बहुमुखी और बहुआयामी रहा है। अपनी प्रबन्ध पटुता और व्यवसाय कुशलता से आपने भौतिक समृद्ध भी भरपूर प्राप्त की है तो दूसरी तरफ लक्ष्मी का उपयोग भी स्वधर्मी बन्धुओ के लिए आपने बहुत किया है। श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सभा कलकत्ता, श्री अ०भा० साधुमार्गी जैन सघ एव देश के विभिन्न कल्याणकारी सस्थाओ से जुडकर विभिन्न पदो पर रह कर अपनी सेवाएँ तन-मन-धन से देकर आपने उसे प्रगति के पथ पर अग्रसर किया है। आपने श्री अ०भ० साधुमार्गी जैन सघ मे सक्रिय रहकर स्वधर्मी बन्धु-बहनो के लिए विभिन्न सेवा कार्य करने की प्रेरणा और प्रोत्साहन दिया है।

श्री दुगडजी का जन्म देशनोक मे हुआ और अपनी कर्मस्थली बनाया आपने कोलकत्ता को। आप प्रभु महावीर के अपरिग्रह के सिद्धान्त को जीवन मे अपनाते हुए अर्जन और विसर्जन मे निष्णात है। आप कुशल उद्योगपति, व्यवसायी, बिल्डर, शिक्षा एव समाज सेवी है। आपका सार्वजनिक जीवन अत्यन्त प्रेरणादायक है। नेकी कर भूल जाओ, यही आपकी सेवा भावना का मूल मत्र है। दीन-दुखियो की सेवा करना, कलाकारो, साहित्यकारो, पत्रकारो, बुद्धिजीवियो का सम्मान करना आपके सार्वजनिक जीवन का अभिन्न अग है। आपके अपने अधीनस्थो से मातृभाव रखते है। आप अनेकानेक लोककल्याणकारी व शिक्षा सस्थाओ से पदाधिकारी के रूप मे जुडे हुए है। आप हावडा जैन विद्यालय के अध्यक्ष के रूप मे अपनी सेवाये एव अर्थ सहयोग देकर आपने उसे प्रगति के पथ पर बढाया है।

श्री सुन्दरलालजी दुगड के निवास स्थान देशनोक मे प्रो० सतीश मेहता एव जैन दर्शन के विद्वान साहित्य मनीषी श्री भूपराजजी जैन, डा० नरेन्द्र भानवत, डॉ० शान्ता भानावत एव उद्योगपति श्री सरदारमलजी काकारिया के साथ मिलने का अवसर मिला। आपकी माता स्व० श्री सूरजदेवी जी, पिताश्री स्व० मोतीलालजी दुगड एव भाई श्री कौशलजी एव भाभीजी कुसुमदेवी जी से भी मिलना हुआ। अवसर था आचार्य श्री नानालालजी म०सा० के चातुर्मास का। आप चातुर्मास समिति के सयोजक थे। हमे जो स्नेहपूर्ण अतिथि सत्कार दिया उसकी मधुर स्मृतिया आज भी मन मस्तिक को भाव-विभोर किये रहती है।

सरलता का गुण श्री दुगड परिवार को विरासत मे मिला है। इतने वडे व्यक्ति होकर भी आप हर व्यक्ति से वडे स्नेह, सौम्य और प्रसन्न भाव से मिलते है। सामान्य रूप से धनवान व्यक्ति धनवान से मिलने मे ही आनन्द की अनुभूति करता है पर श्री दुगडजी लक्ष्मी पुत्रो से मिलकर जितने आनन्द की अनुभूति करते है उतनी सरस्वती पुत्रा से मिल कर भी करते है। प्रो० सतीशजी मेहता के प्रति तो उनका इतना स्नेह और आत्मीय भाव है कि उन भावो को जड शब्दो के माध्यम से अभिव्यक्ति करना मुश्किल है।

श्री दुगडजी समाजसेवा, शिक्षा, चिकित्सा सद्‌साहित्य प्रकाशन के कार्यो मे

सत्क्रियरूप म अर्थ सहयोग प्रदान कर दानवीर भामाशाह है जो सदैव स्मरणीय रहेंगे।

आप व्यवसाय के सामाजिक उत्तरदायित्व को साकार रूप दे रहे है। राष्ट्र एव समाज के विकास मे आप मील का पत्थर साबित होगे।

श्री दुगडजी सुख समृद्धिमय सुदीर्घ जीवन जीते हुए सघ, समाज और राष्ट्र की निरन्तर सेवा करते रहे।

परम पूज्य गुरुदेव श्री अमर मुनि जी ने एक बार कहा था कि सत्कर्म निश्चित रूप मे वन्दनीय है अत उसके कर्ता का अभिनन्दन सत्कार व वन्दन होना ही चाहिये। समाज का यह कर्तव्य ही नही दायित्व है, वह ऐसे कर्मवीरो का अभिनन्दन करे।

—डा० कविता मेहता

वैदो का चौक, बीकानेर (राज०)

धनवीर कई होते है, समाज वीर बहुत कम। समाजवीर होते है उनकी पहचान अधिक लम्बी और फैलाव लिये होती है। लोकमान उन्ही का होता है जो धन-भूषण के साथ-साथ उतने ही समाजभूषण होते हैं।

जैन समाज मे ऐसे वीरो की कमी नही रही जिन्होने लोक-कल्याण एव लोकहितकारिणी प्रवृत्तिया मे अपना अधिककाश समय समर्पित कर दिया। युद्धवीर महाराणा प्रताप के साथ दानवीर भामाशाह सोने म सुगध की तरह आज भी याद किये जाते है।

ऐसी ही वीर भूमि राजस्थान के सपूत एव माँ करणी की पुण्यधरा मे जन्मे देशाणा के लाल समाज सेवी, शिक्षा प्रेमी, धर्म प्रेमी, भामाशाह एव उद्योगपति श्री सुन्दरलाल दुगड है। बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी श्री दुगड एक योग्य उद्योगपति, अग्रगामी व्यवसायी और समाज सेवी है। आपका आदर्श बहुआयामी व्यक्तित्व है। अपनी प्रतिभा और योग्यता के बल पर व जन-जन को देश सेवा की प्रेरणा देने मे समर्थ है। समाज व देश इस भारतीय व्यक्ति से सर्वोत्तम रूप म लाभान्वित हो यही कामना है।

शान्ता भानावत के साथ मिलना हुआ। सान्निध्य था आचार्य श्री नानालालजी म०सा० का। श्री दुगड चातुर्मास समिति के सयोजक थे। आपके पिता सेठ स्व० श्री मोती लालजी दुगड के साथ आपके निवास पर ठहरने का भी अवसर मिला। तब आपसे अधिक निकटता स वार्तालाप एव विचार विमर्श सघ के सम्बन्धो एव सेवा, शिक्षा और विभिन्न आयामो पर हुआ। इस अवसर पर श्री कौशल दुगड आपके छोटे भाई से भी सम्पर्क हुआ एव विभिन्न अवसरो पर देशनोक जाना होता तो आपके घर पर भी जाने का अवसर मिलता। श्री सुन्दरलाल दुगड का नाम भी सुन्दर है और कार्य भी सुन्दर है। सुन्दर भाषा, वाणी, आकृति सभी पसन्द करते है ठीक उसी तरह भाई श्री सुन्दरलाल जी दुगड की सेवा परायणता को सभी पसन्द कर रहे है। मै पिछले २५ वर्षो स अ०भा० साधुमार्गी जैन सघ की विभिन्न गतिविधियो एव प्रवृतियो मे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष जुडा रहा हूँ। परन्तु सेवा भावी, समाज गौरव श्री सुन्दरलाल जी दुगड ने शिक्षा, चिकित्सा हेतु अर्थ सहायता उपलब्ध कराकर देश म एक मिशाल कायम की है, जिस पर मुझे गर्व है। राष्ट्र एव समाज मे लोक कल्याण के कार्यो मे अर्थ सहयोग प्रदान कर जन जन मे पहचान स्थापित की है श्री दुगडजी ने।

जैन समाज, जैनेतर समाज हो श्री दुगड जहा भी जाते है वहा पर विभिन्न प्रवृत्तिया म अर्थ सहयोग का आह्वान करना कभी नही भूलते। बीकानेर हो या देशनोक-नोखा हो या मेवाड-मारवाड, मालवा हो या कलकत्ता एव गोहाटी सभी जगह दुगड जी ने शिक्षा, चिकित्सा, धर्म, गौ सेवा, पशु कल्याण, स्कूल कॉलेज, अस्पताल हेतु अर्थ सहयोग प्रदान कर जो सेवा की है वह वास्तव मे एक कीर्ति स्तम्भ है। वे अपनी बहुमुखी, चहुमुखी, सर्वतोमुखी उर्जा, क्षमता के साथ कइयो को साथ लिये चलते है। आप प्रेरक व्यक्तित्व के धनी एव श्रेष्ठ समाज सेवी, शिक्षा एव चिकित्सा प्रेमी है। श्री दुगडजी उस तरह के दानी नही है जिनके यहाँ दान लेने वालो की पक्ति लगी रहती है। वे गुपचुप अपनी बधी मुट्ठी दूसरो की हथेली म खोल देते है। वे हर समर्थ व्यक्ति को जहा समाज हित म अच्छा करने की सामर्थ्य देते वहा अर्थ की कमी की सपूर्ति के लिए कर्मशील दृष्टि प्रदान और उसके सरक्षक बन उसे पूर्णता दिलाते है। ऐसे सब तरह के कार्य इन्होंने अर्थ प्रदान कर सम्पन्न करवाये जिनसे सभी लोग लाभान्वित हो रहे है। स्कूल वाचनालय, पुस्तकालय सन्तालय का प्रकाशन

जैन समाज भामाशाहो का समाज है, श्रेष्ठीवर्य श्री सुन्दरलालजी दुगड के बारे मे पढ सुनकर यह बात फिर से पुष्ट और सिद्ध हो जाती है। उनके बारे मे मै अधिक नहीं जानता हूँ, अभिनन्दन ग्रथ के माध्यम से अब मुझे और कई लोगो को काफी जानने को मिलेगा। ऐसे उदारमना व्यक्ति के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाशित होने वाले ग्रन्थ के सम्पादन का सौभाग्य आपको मिला, यह हर्ष व गर्व की बात है। श्री दुगडजी के अभिनन्दन के लिए श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सभा और सभी सदस्य धन्यवाद के पात्र है। शिक्षा, सेवा और साधना के स्वर्णिम आठ दशक के बारे मे जानकर भी मेरा मन प्रमुदित हो गया। भारतीय सस्कृति और मानवता के विकास मे जैन धर्म और श्रमण सस्कृति का अप्रतिम योगदान है। परन्तु राष्ट्रीय स्तर पर उसका यथेष्ट मूल्याकन नही हुआ। मै कामना करता हूँ कि हमारे कार्यों का व्यापक स्तर मान-मूल्याकन हो। आपके द्वारा प्रकाशित होने वाले ग्रन्थ इस दिशा मे एक श्रेष्ठ प्रयास है।

डॉ दिलीप धींग

श्री दुगड का नाम शहर के विशिष्ट उद्योगपतियो मे तो शामिल है ही, सामाजिक क्षेत्र मे उनका जो अवदान है, वह उनकी उदारता का परिचायक है। न सिर्फ कोलकाता महानगर बल्कि समूचे भारतवर्ष मे उन्होने सैकडो सस्थाओ को अपने सहयोग से सिचित किया है। शिक्षा, चिकित्सा, अध्यात्म जगत की हर छोटी-बडी सस्था मे दुगडजी का अवदान है। वे किसी भी जाति या धर्म को देखकर नही, बल्कि सस्था के सेवा कार्यो को देखकर सहयोग करते है। यह अपने आप मे बडी बात है।

मुझे कोलकाता महानगर के साथ-साथ राजस्थान के मारवाड-उदयपुर अचल मे उनके सेवाकार्यो को करीब से देखने का अवसर मिला है। पाँच दिनो के उदयपुर प्रवास के दौरान मैंने अनुभव किया कि वे दोनो हाथो से सस्थाओ को सहयोग करते है। स्कूल और अस्पताल के क्षेत्र मे उनका विशिष्ट योगदान है। अपने गुरु के प्रति वे कितने समर्पित है, यह भी किसी से छिपा नही है। अपनी मातृभूमि देशनोक और बीकानेर अचल मे भी उन्होने बडे सेवा कार्य किए है। निश्चय ही श्री दुगड का सार्वजनिक क्षेत्रो को दिया गया अनुदान वन्दनीय है, अभिनन्दनीय है। मै परमपिता से प्रार्थना करती हूँ कि वे सुदीर्घ काल तक स्वस्थ रहे, सक्रिय रहे और समाज के हर कार्य मे अपनी सहभागिता जारी रखे। मै विशेष तौर पर उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कुसुमदेवी दुगड तथा उनके पुत्र विनोद व पुत्री रेखा को भी बधाई देना चाहती हूँ कि वे श्री दुगड को सामाजिक कार्यो के लिए सदैव प्रेरित करते हैं। सुन्दरलालजी की लाडली रेखा के नाम पर राजस्थान मे वनायी गयी विशाल गौशाला सचमुच प्रशसनीय है।

मीना पुरोहित, पूर्व उपमेयर, कोलकाता
पार्षद, कोलकाता नगर निगम

किसी विद्वान से पूछा गया कि अनेकानेक पशु-पक्षियो के होते हुए भी, धन-समृद्धि की देवी ''लक्ष्मीजी'' ने अपना वाहन ''उल्लू'' का चुनाव क्यो किया ? विद्वान ने उत्तर मे कहा कि लक्ष्मीजी ने उल्लू का चुनाव करके यह स्पष्ट सकेत दिया है कि मात्र अपने स्वार्थ के लिये जो व्यक्ति धन-सग्रह या खरच करेगा, उसकी स्थिति उल्लू जैसी होगी और जो भी अपने द्वारा उपार्जित धन का स्वय के साथ-साथ अन्य जरुरतमद के लिए भी खरच करेगा, वह सदुपयोग करेगा तो वह ''लक्ष्मी-पुत्र'' होगा। लक्ष्मी की कृपा से धन-वृष्टि मे वह सदैव सराबोर होकर सर्व का ''सुन्दर'' होगा।

उत्तर सारगर्भित है। मात्र अपने स्वार्थ व जरुरत के लिए धन-उपार्जन की इस उल्लू के अधे युग मे ''श्री सुन्दरलाल दुगड'' जैसे दानवीर बिरले ही होते है। एक तरफ धन का अर्जन व साथ-साथ मानव-सेवा-कार्यो के लिये धन का विसर्जन निरतर करते रहना, यह बात प्रशसनीय है व अनुमोदनीय है। धन पर अपनी मालकियत का न होना–सही अर्थो मे उनके ''अपरिग्रही'' होने का सूचक है। गृहस्थ-सत श्री सुन्दरलालजी दुगड के सद्गुणो के वैशिष्ट्य का अभिनदन करना, यह अन्य लोगो के लिये भी प्रेरणादायी होगा, अत श्री स्थानकवासी जैन सभा धन्यवाद की पात्र है।

लक्ष्मी-पुत्र श्री सुन्दरलालजी दुगड के विषय मे मै आज तक मात्र सुनता था। वर्तमान मे उनके सान्निध्य मे कार्यरत होकर मैंने यह अनुभव किया–यथा नाम तथा गुण। उनका प्रतिदिन का अधिकाश समय समाज में गठित विभिन्न सस्थाओ के माध्यम से मानव-सेवा के विभिन्न आयामो के कार्यो मे व्यतीत होता है। मन व धन के साथ सेवा कार्यो हेतु स्वय का जाना और समय प्रदान करना, यह बात उल्लेखनीय है कि वे इतना सब कैसे निपुणता से कर लेते है ? उपरोक्त उनके सभी सद्कार्यो मे उनके परिवार का पूर्णत सहयोग प्राप्त होता है अत उनके परिवार व उनके सुपुत्र ''श्री विनोद दुगड'' का अतुलनीय सहयोग को भी ''सभा'' रेखाकित करे।

आयु के वेद की समस्त ऋचाये, उन पर सदैव बरसती रहें, वे स्वस्थ एव दीर्घायु होकर समाज व राष्ट्र की सेवा करते रहे, इसी अनुमोदना के भावो के साथ प्रभु को प्रणाम।

पूनमचन्द जैन (नाहटा)
हावडा

सुन्दरलाल दुगड एक युग का नाम है। नैतिकता, मर्यादा, धर्म-सस्कृति क मारे मानक यदि किसी व्यक्ति मे साकार हुए हो तो वह नाम सुन्दरलाल दुगड है। आप हृदय से उदार एव दयावान हैं। अस्पताल, मन्दिरो एव जरुरतमदो म आपका उदार अनुदान मुक्त हस्त से वितरण होता है।

लक्ष्मी के परम कृपा पात्र दुगडजी क्षणभर के लिए भी अपने मन म इस पात्रता क अलकार को अकुरित नहीव होने दिया। उन्होंने लक्ष्मी की अनुकपा को जनमेवा का निर्देश माना और उनसे प्राप्त वरदान को वे निरतर दया, करुणा परापकार और समाज सेवा के स्पर्श से कातिवान वनाते रहे।

ईश्वर उन्हे पूर्णत स्वास्थ्य और दीर्घजीवी करे, यही कामना है

सुरजमल बाग्ड
देशनोक युवा मच, मरक्षक मभापति, कालकाता
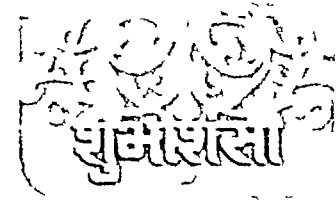
दान वही श्रेष्ठ एव फलदायी होता है जो 'सम्यक् विभाजनम् इति दानम्' की श्रेणी मे आता है। श्री दुगडजी उसी कोटि के दानवीर है।

कहते है जब साधनहीन महाराणा प्रताप मुगल सेना के सतत् पीछा करने से व्यथित होकर मेवाड-मेदपाट से अलविदा लेकर ऐसे स्थान पर जा रहे थे, जहाँ मुगल सेना उन्हे और अधिक परेशान न कर सके। यह बात पूर्व दीवान भामाशाह को मालूम हुई तो स्वय द्वारा एव पूर्वजो द्वारा अर्जित धनराशि लेकर महाराणा प्रताप के पास पहुँचे एव निवेदन किया कि यह समस्त राशि आपके श्रीचरणो मे अर्पित है। आप इससे पच्चीस हजार सैनिको का बीस वर्ष तक खर्च चला सकते है। इस पर समग्र मेवाड का अधिकार है एव प्रताप ने अपनी बिखरी सैन्य शक्ति को एकत्रित कर छापामार युद्ध द्वारा मुगल सेना के दात खट्टे करना शुरू कर दिये एव अपने खोये हुए बत्तीस मे से तीस किलो पर मेवाड की पताका फहरा दी। भामाशाह की दानवीरता और देशभक्ति की गौरव गाथाएँ आज भी बडे गर्व से स्मरण की जाती है एव ऐसे ही सब कुछ उत्सर्ग करने वाले दानवीरो को दानवीर भामाशाह की उपाधि से विभूषित किया जाता है। ऐसी ही दानवीरो मे श्री सोहनलालजी दुगड का नाम भी अविस्मरणीय है।

सम्प्रति श्री सुन्दरलाल दुगड ने शिक्षा, समाज, धर्म, चिकित्सा तथा मानव ही नही प्राणिमात्र की सेवा मे स्व अर्जित धन को मुक्त हस्त से प्रदान कर रहे है। यह अपने आप मे बेजोड, अद्वितीय और लासानी है। श्री दुगडजी की सबसे बडी विशेषता है विनय एव प्रेमपूर्वक देना। उनकी एक और विशेषता है कि नेकी कर कुए मे डाल और दुगडजी जितना कुछ देते है, वह सामने वाले के स्वाभिमान की रक्षा करते हुए देते है। कवि का कथन है–

जौ जल बाढै नाव मे, घर मे बाढै दाम।
दोनो हाथ उलीचिजे, यही सजानो काम।।

अर्जन से विसर्जन की कला कोई श्री सुन्दरलालजी दुगड से सीखे। सुन्दरलालजी सबके प्रिय है और श्री दुगडजी भी सबसे प्रेम करते है बिना किसी भेदभाव के, छोटे-बडे और ऊँच-नीच के।

श्री दुगडजी दीर्घायु बनकर इसी तरह मानव सेवा मे सलग्न रहे, यही कामना और प्रार्थना है।

महेन्द्रकुमार कर्णावट
उपाध्यक्ष–श्री जैन विद्यालय हवडा
(बालिका विभाग)

From the beginning of the year 1990 I got in touch with this great and noble man of R D Group but since 1994 I have been in close association with Mr S L Dugar a man of excellent and multiplex qualities who played a remarkable role of a Saviour of hundreds of distress and wretched factory workers of a defunct Company - New Tobacco Co of Agarpara situated in the vicinity of my residence and extended his helping hand and unstinted support to those labourers facing stringent pecuniary situation and hard days for their livelihood

I feel much pleasure and proud to say that no sooner I become closer and closer to him I came to understand giving me an indelible impression on my mind that Mr Dugar is not only an able and ingenious Industrialist but also ingenuous to social cultural and educational activities and devoted to human services His personal attachment to social and cultural activities devotion to religious and educational work and philanthropical attitude towards the needy and suffering people of the society - all these multifarious qualities are really praiseworthy Thus it will not be an exaggeration to announce that his magnanimity excellency and humanity goes to suggest that he is emanated angle and blessed by the Almighty Father to act as a Saviour of the trodden distressed and needy people of the Society of all walks of life

I hope and trust that Mr Dugar shall reach to the highest rung of the ladder of dignity and prosperity

Nirmal Ghosh
Former Member West Bengal Legislative Assembly &
Veteran Trade Union Leader

श्री सुन्दरलालजी दुगड का जीवन त्याग, उदारता, सेवा और विसर्जन की ऐसी प्रज्ज्वलित मिसाल है, जो भावी पीढी को सतत् सेवा और समर्पण का पाठ तो पढायगी ही सरल सादा और सात्विक जीवन जीने की [illegible] भी सिखायगी।

बालब्रह्मचारी आचार्य नानेश एव आचार्य रामेश के प्रति श्री दुगडजी की [illegible] श्रद्धा है। उनकी धार्मिक सहिष्णुता, अनाग्रह भाव और [illegible] ने उनको जैन-अजैन समाज का [illegible] बना दिया है।

उनका अभिनन्दन त्याग, सेवा [illegible] अभिनन्दन है। [illegible]

श्री दुगडजी का जीवन [illegible]

[illegible]

[illegible]

Sri S L Dugar had taken over the management of the NTC factory in 1994 when it was declared a sick unit Sri Dugar, through his towering courage, unflinching commitment, and personal love and care, has been able to rejuvenate this age old factory in a matter of just a few months The lost hopes of the workers were found, the emaciated structure of the factory and its people both were palpably reanimated In short, the workmen regained their faith in the management (new) and got their most needed sustenance regularly through their job

The story of NTC with Sri Dugar is a story of miraculous success and is an inimitable example of the commitment of an industrialist

Sri S L Dugar is also known for his generous acts of benevolence and his committed responsibility towards the society in general Through Sri S L Duagr Charitable Trust, he has reached out to the downtrodden in more ways than one He has also founded The Aryans School in Agarpara, a school that has opened new and affordable opportunity for education for the masses He has been contributing in the fields of social service by regularly organizing large medical camps, blood donation camps, thalassaemia screening camps, hernia operation, free spectacles distribution, free treatment in hospital, free polio calipers distribution and assistance to poor meritorious students in the form of books and scholarships

I strongly feel that your decision of felicitating Sri S L Dugar will set an example for others to emulate so that such great souls receive due acknowledgement and accolade for their noble deeds

Gopal Krishna Bhattacharya
MLA, Panihati

मेरे अनुज भ्राता श्री सुन्दरलाल दुगड की भामाशाही दानवीरता जीवन के प्रत्येक क्षेत्र – सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक मे दिखाई देती है, यह जग जाहिर है। चिकित्सा, छात्रवृत्ति एव अन्य सेवा कार्यो मे खुले हाथो से देना सुन्दरलाल दुगड की विशेषता है विना किसी मान-अभिमान के। कोई दिखावा नही, प्रदर्शन पाखड से दूर अत्यन्त नम्रतापूर्वक विना किसी भेदभाव के सबसे मिलना एव सहयोग करना भाई दुगड का सहज स्वभाव है। सरलता, विनय एव सादगी ही उनके आभूषण है और 'नेकी कर कुएँ मे डाल' की कहावत इन पर शत-प्रतिशत चरितार्थ होती है।

भगवान उन्हे दीर्घायु प्रदान करे ताकि और अधिक सेवा कर सकें।

भँवरलाल दम्माणी

मरुधर की रत्नगर्भित वसुन्धरा ने अनेक रत्नो व दानवीरो को जन्म दिया है। श्री भामाशाह, श्री अमरचन्द्र बाँठिया, श्री अमरचन्द सुराना, श्री करमचन्द बच्छावत एव श्री सोहनलाल दुगड इसी परम्परा के सर्वज्ञात उदाहरण है। इसी शृखला मे २१वी शताब्दी मे श्री सुन्दरलालजी दुगड का नाम जोड दिया जाये तो यह अतिशयोक्ति नही होगी।

राजस्थान के देशनोक प्रदेश मे आपका गौरवशाली दुगड परिवार मे जन्म हुआ। बचपन की शिक्षा-दीक्षा देशनोक मे ही हुई। युवा होते ही किशोर अवस्था मे जीवन मे कुछ बनने की दृढलालसा व सकल्प करके कलकत्ता चले आये। अपनी स्वय की सूझ-बूझ से व्यापार व उद्योगो की स्थापना की तथा सफलता के अनेक आयाम स्थापित किये।

भगवान महावीर के जैन धर्म के अपरिग्रह सिद्धान्त को उन्होने जीवन मे उतारा। छोटी-सी उम्र मे ही दानवीरो की "भामाशाह" श्रेणी मे पहुँच गये। शिक्षा, चिकित्सा, धर्म प्रचार व जनकल्याण मे वह मुक्तहस्त से दान देते है। अहकार उनके जीवन को छू तक नही गया है। सादा जीवन व उच्च विचार के वह स्वय समाज के आदर्श है।

उनके जीवन की महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि अपने धर्म गुरुओ के प्रति अगाध श्रद्धा रखते हुए वे साम्प्रदायिकता से कोसो दूर रहते है। बिना किसी भेदभाव से सभी धर्मगुरुओ का अनन्त आशीर्वाद उन्हे प्राप्त है। आपने अपनी जन्मभूमि राजस्थान व कर्मभूमि कोलकाता के सर्वागीण विकास मे अपूर्व सहयोग प्रदान किया है। श्री जैन विद्यालय, श्री जैन चिकित्सालय, श्री सुन्दरलाल दुगड डेन्टल कॉलेज-कोलकाता, देशनोक हॉस्पीटल इसके ज्वलत उदाहरण है। श्री दुगडजी अपने आप मे एक सस्था है।

जैन समाज उनको सम्मानित करके अपने आपको गौरवान्वित महसूस कर रहा है। शायर की निम्नलिखित पक्तियाँ उनकी प्रतिभा का सही रेखाकन करती है–

हजारो वर्ष नरगिस,, अपनी बेनूरी पे रोती है।
वडी मुश्किल से होता है, वतन मे दीदावर पैदा।

परम पिता परमात्मा से यही प्रार्थना है कि वह उनको दीर्घ जीवन प्रदान कर तथा समाज पर उनकी अनुकम्पा व वरद हस्त हमेशा वना रहे।

तनमुखराज डागा
सचिव, वीरायतन

शिक्षानुरागी श्री सुंदरलालजी ने कलकत्ता की विद्या-विलासिनी भूमि पर प्रतिष्ठा और प्रतिभा प्रकाश के नित-नूतन कीर्तिमान स्थापित किये है।

समाज का कोई भी क्षेत्र श्री दुगडजी की सेवाओ से वंचित नही है। इन्होंने उद्योग, शिक्षा, कला, संस्कृति, साहित्य, स्वास्थ्य, मानव सेवा तथा जनहित के महान् अनुष्ठानो द्वारा जो सेवाये समाज को समर्पित की है, उसमे इनके प्रबल पुरुषार्थ के पुण्य-प्रताप की सौरभ-सुगंध चहुँ ओर रच बस गयी है। श्री सुंदरलालजी दुगड आत्मश्लाघा, आडम्बर और लोकेष्णा से निस्पृह रहते हुए सदैव एक तपस्वी की भाँति समाज-सेवा पथ पर अग्रसर रहकर धर्म-व्यवहार और मर्यादाओ का पोषण करते हुए समाज मे अपना विशिष्ट स्थान बना चुके है। नाम के अनुरूप आपका मन भी इतना सुन्दर है कि, जो भी व्यक्ति एक बार आपके संसर्ग मे आता है, आप हमेशा के लिये उसके हृदयस्थ हो जाते है।

लोकोपकार की उत्कृष्ट भावना एव उनकी स्वाभाविक प्रवृत्ति व परम्परा को देखते हुए श्री दुगडजी को कलियुग का ''कर्ण'' कहना सर्वथा उपयुक्त होगा।

अर्थ प्रधान इस युग म जन सेवा के माध्यम से श्री दुगडजी ने अपने चारो ओर ऐसा आभा-मंडल विकसित कर लिया है कि उसके प्रभाव से समाज की प्रत्येक इकाई इनके सत्कर्मो की अनुशंसा कर रही है। अमरत्व प्राप्त समाज के इस आलोक स्तम्भ की कीर्ति से नव पीढी का मार्ग प्रकाशित होता रहे, मै यही कामना करता हूँ।

समाज सेवा के इस शलाका पुरुष को सम्मानित करने हेतु श्रम-स्वेद से सिंचित यह अभिनन्दन ग्रथ श्री दुगडजी के गुणो को इतिहास मे जीवन्त रखेगा, ऐसी धारणा अत्युक्ति नही है।

पुखराज बेताला, कोलकाता

बहुआयामी व्यक्तित्व श्री सुन्दरलालजी दुगड का जीवन प्रेरणादायक है। दीन-दुखियो की सेवा, कलाकारो, साहित्यकारो, पत्रकारो, बुद्धिजीवियो का सम्मान करना श्री दुगडजी के जीवन का अभिन्न अग है। विनम्रता, विनय, प्रेम और [illegible] इनकी विशेषता रही है। कोइ अर्थाभाव से पीडित हो, सहयोग के अभाव [illegible] किसी की प्रगति कुंठित हो रही हो, उचित शिक्षा के अभाव म कोई असहाय [illegible] ऐसे व्यक्तियो की सहायता के लिए श्री दुगडजी सदैव तत्पर रहते है और [illegible] अविरल सहयोग से उस उन अभावो, संकटो एव कष्ट कठिनाइयों से [illegible] नहीं [illegible], वरन् अपने स्नेह प्रेम एव अविकल सौजन्य से उसे सदा के [illegible] अपना बना लेते है। श्री सुन्दरलालजी दुगड तन से ही नही अपितु मन, वचन [illegible] से भी सुन्दर है, लासानी और बेजोड है।

विष्णु मोदी, पूर्व सांसद

[illegible] अन्तर्राष्ट्रीय जल विवाद प्रकोष्ठ [illegible]

भारतीय संस्कृति के अनुसार नैतिक अवधारणाए ही मनुष्य के जीवन की विशिष्टता है और यही कारण है कि सदाचार और चरित्र एक दूसरे के पूरक है। हम तो ऋषियों ने यही बताया "आचार प्रभवो धर्म" और इसलिए "सर्वागमानामाचार प्रथम परिकल्पते" अर्थात आचार ही मनुष्य के व्यक्तित्व को सदाचारी बनाता है और वही व्यक्ति लोक में सम्मान प्राप्त करता है। मै यह निस्संकोच व सप्रमाण कह सकता हुँ आपके व्यक्तित्व की इन्हीं विशेषताओं विवेकपूर्ण दृष्टि, नैतिक सन्तुलन, लोकमान्य प्रवृति, सहयोग, सहानुभूति एव मिथ्या अहकार से रहित आचरण ने मुझे आपके प्रति सदैव आकृष्ट किया है। आप म न स्पर्धा है और न आरोपित अहम् भाव। मैने इसीलिय आपके प्रति इन मांगलिक प्रवृतियों का महत्व देकर आपके जीवन को आदर्श के नैतिक प्रत्ययों की क्रियान्विति माना।

श्री कृष्णने श्री गीता में मानवीय आचरण और नैतिक मूल्यों को सर्वाधिक महत्व दिया और यही जीवन की महत्ता का प्रमाण है। मैंने स्वय आपके व्यक्तिगत जीवन में जहाँ नियमितता देखी, वहाँ सामाजिक जीवन में सहिष्णुता, दान और आर्जव पाया। यही सत्कर्म है और मनुष्य के जीवन की परमता, सरसता, सौमनस्य की आधार भूमि। मैंने आपके जीवन मे अनेक बार यही आदर्श प्रत्यक्ष पाया। किसी की असुविधा को दूर करने का आपका प्रयास आपकी जागरुकता का प्रमाण है। यह जागरुकता आपके व्यक्तित्व को सर्वभूताय, सर्वहिताय बनाती है। आज जब चारों और सत्ता, संपत्ति और स्वार्थ का अभिशाप मनुष्य धर्म का अपकृष्ट कर रहा है। ऐसे व्यक्ति विरल हैं जिनमें यह दोष नहीं है। आपके व्यक्तित्व की यह पारमिता है और पारदर्शिता भी। यही कारण है कि प्रत्येक व्यक्ति के मन में आपकी सरसता, सहृदयता और सदाशयता के प्रति अत्यन्त स्नेह और सम्मान है।

यह सम्मान आपके व्यक्तित्व का वास्तविक और प्रकृत अभिनन्दन है न कि मिथ्या प्रदर्शन। मैं जानता हूँ जीवन में आपने भी अनेक संघर्षों का सामना किया और प्रतिकूल अवस्था और विवशता पर विजय प्राप्त कर समाज में प्रतिष्ठा अर्जित की, यह आपकी आन्तरिक शक्ति का प्रमाण है। ऐसे के लिए प्रकृति स्वय कह देती है कि यह मेरा (मनुष्य) है- मेरा पुत्र। वैदिक ऋषि के अनुसार "मनुर्भव" का आदर्श। आप स्वस्थ रहकर शतायु हो जिससे समाज को आपका [illegible] अधिकाधिक मिले और प्रेरणा स्रोत भी।

प्रो. [illegible]

मेरा मिलन करीब पिछले दो साल से हुआ है। [illegible] उनकी जीवनशैली पर [illegible] लिखता हूं। लेकिन खाली इतना कह सकता हूँ -

१) वे बहुत सरल स्वभाव के पुरुष है।

२) [illegible] से उठा कर जीवन को काफी ऊँचाइयों तक पहुँचाया है। [illegible] भगवत् कृपा है तथा कर्म की अद्भुत शक्ति भी है।

३) मैंने देखा अपने मित्र के लिए [illegible] भगवत' कृपा [illegible] है।

४) [illegible] की कृपा होने [illegible] है और [illegible] है।

उनके [illegible]

[illegible]

सुन्दरलाल दुगड एक नया युवा साहसी तेजी से बढता हुआ बिल्डर व व्यापारी शहर मे उभर कर आ रहा है–यह सन् ८० के दशक से मैं सुनने लगा। इच्छा हुई उनसे मिलने की तो परिचितो से चर्चा की और पता लगा वे भी इच्छुक है मुझसे मिलने को। पहली ही मुलाकात मे लगा कि मन के तार मिल गये है। परिचय मित्रता मे बदल गया।

हर आदमी के जीवन मे ईश्वर उन्नति के मौके देता है। कुछ ही साहसी उस अवसर को पहचान कर कार्यान्वित कर पाते है और नई ऊँचाइयाँ प्राप्त करते है। सुन्दरलालजी दुगड उनमे से है जिन्होने एक नही कई ऐसे मौको का सही समय पर सही उपयोग किया।

बन्द एन टी सी जिसके ६००० मजदूर बेरोजगार होकर भयकर मुसीबते झेल रहे थे, जिसको छूने का कोई सोचता भी नही था, उसे दुगडजी ने लेकर कारखाना चलाया, मजदूरो को बचाया और कलकत्ते के औद्योगिक जगत को नई रोशनी दिखाई। यह बात उस समय की है जब मेरी समझ मे आर्थिक रूप से उनके लिये एक बडा दुस्साहस था। इसके बाद तो पश्चिम बगाल सरकार व मजदूर यूनियने इनको बन्द कारखानो को चलाने का मसीहा मानने लगे। किसी भी बद कारखाने के नेतागण मजदूरो को कहते सुन्दरलाल दुगड ले रहे है तो उनमे नई आशा और उत्साह सचारित हो जाते। एक के बाद एक, मुझे तो पता भी नही है कितने प्रदेश मे ही नही प्रदेश के बाहर भी बन्द कल-कारखानो को इन्होने पुनर्जीवन दिया। अपने देश, धर्म व समाज मे दूसरो की सहायता करना धार्मिक कार्य माना जाता है और किसी को स्वावलम्बी बना कर रोजगार का अवसर देना ही सबसे बडी सहायता व धर्म है और इसका सुन्दरलाल दुगड से बढकर दूसरा उदाहरण अभी नजदीकी इतिहास मे कलकत्ते मे तो मेरी नजर मे नही आ रहा है।

श्री सुन्दरलालजी ने व्यापारिक व औद्योगिक क्षेत्र मे तो नाम कमाया पर वे उन्हे कभी नही भूले जिनके साथ वे थे। उन्होने सभी की मदद की। इतना ही नही, अनेकानेक सस्थाएँ, स्कूल, अस्पताल उनके सहयोग से काफी आगे बढे।

सफलता मिलने पर भी बाधाएँ आती है–कुछ व्यापारिक, पारिवारिक, आर्थिक आदि। इन भयकर विपत्तियो व बाधाओ मे सुन्दरलालजी ने कभी धैर्य नही खोया। साहस से काम लिया व इन सबको पार किया। उन्हे मै नजदीक से जानता हूँ और यह कह सकता हूँ कि उन्होने जैसी हर रकम की बाधा और विपत्ति झेली है, औसत आदमी पागल हो जाय।

आज मै गर्व से कहता हूँ मै भाग्यशाली हूँ कि श्री सुन्दरलाल दुगड मेरे मित्र है।

आई पी टाटिया, कोलकाता

विरल व्यक्तित्व, बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री सुन्दरलालजी दुगड से मेरा परिचय वर्ष १९८७ के दिसम्बर माह मे हुआ, उस समय उन्होने भवन निर्माण के क्षेत्र मे प्रवेश ही किया था व उनका व्यवसाय शैशवास्था मे था। परिचय के साथ ही मै उनके साथ एक सहयोगी के रूप मे उनके व्यवसाय से जुड गया, परन्तु मुझे लिखते हुए अत्यन्त गर्व हो रहा है कि पहले ही दिन से उन्होने मुझे सहयोग कम एक अनुज के रूप मे देखा, बस मै भी पूर्ण तन्मयता के साथ उनके व्यवसाय मे उनके सहयोगी के रूप मे जुड गया एव इस क्रम मे मुझे उनके साथ काफी समय साथ रहने का अवसर मिला, इस कारण मैने उन्हे अत्यन्त नजदीक से देखा, समझा व परखा और आज मै पूर्ण विश्वास के साथ यह कह सकता हूँ कि श्री दुगडजी जैसा व्यक्तित्व एव कृतित्व समाज मे अँगुलियो पर गिना जा सकता है। मैने सदैव उनमे अग्रज का भाव पाया। जब कभी किसी भी प्रकार के मार्गदर्शन अथवा सहयोग की आवश्यकता हुई उन्होने तुरन्त मेरी ओर अपना हाथ बढाया। उनकी व्यावसायिक दक्षता एव व्यवहार कुशलता से शनै शनै उनका व्यवसाय नित नयी ऊँचाइयो को छुने लगा एव वे एक-एक करके नित नये व्यवसाय व उद्योग मे अपने पाँव पसारने लगे। प्रभु की असीम कृपा, पूर्वजो का आशीर्वाद एव सभी सहयोगियो की शुभकामना का ही प्रतिफल है कि आज उनका उद्योग-व्यवसाय आर डी बी, ग्रुप ऑफ इण्डस्ट्रीज के नाम से लब्ध प्रतिष्ठित है। इतना सब कुछ हासिल होने के पश्चात् भी उनमे लेशमात्र भी अभिमानता आज तक प्रवेश नही कर पायी, आज भी वही व्यवहारिकता व मिलने आने वालो के साथ वही प्रेम एव सौहार्द की भावना उनमे विद्यमान है। वर्तमान मे श्री दुगडजी ने अपने व्यवसाय-उद्योग को अपने एकमात्र सुपुत्र विनोद दुगड के सुरक्षित हाथो मे सौपकर अपने आपको पूर्णतया सामाजिक एव सेवा कार्यों मे समर्पित कर दिया है। सुपुत्र विनोद दुगड भी पिता द्वारा विरासत मे प्राप्त दक्षता एव व्यवहार कुशलता से अपने औद्योगिक साम्राज्य मे नित नये विस्तार एव तकनीकियो को सफलता पूर्वक अजाम दे रहे है। सामाजिक क्षेत्र मे सेवा भाव की प्रेरणा उन्हे अपनी धर्मपत्नी श्रीमती कुसुमदेवी दुगड एव एकमात्र सुपुत्री रूपरेखा से प्राप्त हुई। अब तक उनके द्वारा किये गये अनगिनत परोपकारी कार्यो–प्रकल्पो को शब्दो अथवा अन्य किसी भी प्रकार की सीमा मे चित्रित नहीं किया जा सकता। जिस व्यक्ति ने भी उनसे किसी भी प्रकार के सहयोग की अपेक्षा की उन्होने उसे अपने यहाँ से निराश नही लौटाया।

जो भी परिवार-समाज एव राष्ट्र ऐसे व्यक्तित्व को सम्मानित करने का निर्णय लेता है उस परिवार-समाज एव राष्ट्र के समग्र विकास की गति को कोई रोक नही सकता, ऐसा मेरा विश्वास है। अस्तु धन्य है ओसवाल समाज के वो रत्न जिन्होने श्री दुगडजी का नागरिक अभिनन्दन करने का निर्णय लिया, निश्चित रूप से यह उनके कृतित्व का अभिनन्दन है। भगवान महावीर सदैव उन्हे स्वस्थ रख एव दीर्घायु प्रदान कर ताकि वे इसी प्रकार निरन्तर सामाजिक सेवा कार्यो के प्रति समर्पित रहे, यही प्रार्थना है।

ऐस विरल व्यक्तित्व एव कृतित्व को सादर नमन।

सम्पत मानधन्या, कोलकाता

मुझे उनके इस कार्य से महादानी कर्ण की एक घटना याद आ गई। महाराज कर्ण सुबह उठकर तेल मालिश कर रहे थे। उनके बाये हाथ मे सोने की कटोरी थी और दाहिने हाथ मे तेल लगा रहे थे।

अचानक एक याचक जिसने उनके दान की प्रशंसा सुनी थी, सुबह-सुबह ही महल मे आ गया। उसने अपनी पुत्री के विवाह के लिए सहयोग की उनसे याचना की। कर्ण ने झट से अपना बाया हाथ सोने की कटोरी देने के लिए आगे बढा दिया और कटोरी याचक के हाथ मे रख दी। याचक हतप्रभित हुआ। उसने कर्ण से कहा महाराज दान दाहिने हाथ से देना चाहिए। कर्ण का जवाब था– भाई! मै यह कटोरी बाये हाथ से उठाकर दाहिने हाथ मे लूँगा। इतने मे पता नही क्या मन बदल जाय। याचक को बात समझ मे आ गई। दाता जब कहता है – कल आना – सोचकर बताऊँगा – भाई से पूछूँगा तब समझ लेना चाहिए दाता अपने मन के विचार पर स्थिर नही है।

तब से मेरे मन मे दुगडजी के प्रति श्रद्धा है। मै उन्हे नमन करता हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ – उनके मन मे सहयोग के सद् विचार इसी प्रकार बने रहे।

पूनमचन्द जैन
इण्डोर सक्रेटरी, श्री विशुद्धानन्द हॉस्पिटल एड रिसर्च सेन्टर
कोलकाता

राजस्थान के मरुधर प्रान्त के श्री मोहनलाल दुगड दानवीर भामाशाह के नाम से जाने जाते थे। वे बडे मानी एव बडे व्यवहार के समर्थक थे। वे जो कुछ घोषणा करते थे, उसे तत्काल पूरे दान मे विश्वास करते थे।

सम्प्रति श्री सुन्दरलाल दुगड का नाम सर्वाधिक चर्चित और लोकप्रियता के शिखर पर है। श्री दुगडजी से मेरा वर्षो से परिचय है और मै यह जानता हूँ कि जिस उदात्तता और [illegible] अभावग्रस्त जरूरतमन्द एव पीडितो की सहायता कर रहे है वह अनुकरणीय एव सराहनीय है। अगुठ भाव से सेवा सहयोग और स्नेह प्रदान करना उनका स्वभाव [illegible] चारित्रिक विशेषता है।

उदारमना सुन्दरलालजी दुगड का जीवन एक खुली किताब है। अपने अथक परिश्रम, लगन एव दूरदर्शिता से उन्होने क्रमश उन्नति के सोपानो को तय किया। उन्होने अपने पैतृक व्यवसाय मनिहारी मे कार्यारम्भ किया किन्तु कोई सफलता नही मिली। रेडीमेड वस्त्र का कार्य भी छोटे भाई को सौप दिया। राह कठिन थी, किसी का सहयोग या अवलम्ब नही अपने ही पैरो पर खडा होना था और रात के घुप्प अधकार को चीर कर प्रात काल का प्रकाश सर्वत्र आलोक विकीर्ण करता है वैसे ही दुगडजी ने कष्ट-कठिनाइयो से गुजरते हुए भवन निर्माण मे कदम रखा और यही कदम वामन से विराट बनने की कथा अपने मे समाहित किये है। उन्होने जहाँ चाह है वहाँ राह है की लोकोक्ति को चरितार्थ किया है। अपने अध्यवसाय से उपार्जित धन का सदुपयोग भी वे अच्छी तरह से कर रहे है। वस्तुत उनकी बहुमुखी और बहुदेशीय सेवाये पश्चिम बगाल मे ही नही पूरे भारतवर्ष मे लाभ पहुँचा रही है। उन्होने **Services to mankind is services to god'** को अपने जीवन का उद्देश्य बनाया। अस्पतालो, विद्यालयो, छात्रावासो और धार्मिक स्थलो का निर्माण करवा कर अपनी परोपकारी प्रवृत्तियो को पुष्पित और पल्लवित किया।

आपने जरूरतमद छात्रो की उच्चशिक्षा मे सहायता, असहाय रोगियो की चिकित्सा एव दवा की व्यवस्था, विपन्न परिवारो की आर्थिक सहायता गरीब परिवार की पुत्रियो के विवाह का खर्च तथा बहुत से बेरोजगार लोगो को काम करवा कर उनके जीवन को स्वावलम्बी बनाया।

दुगडजी का निरभिमानी एव विनयी व्यक्तित्व हम सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत है। वे गर्व से कोसो दूर, सुख-दुख दोनो मे समभाव पूर्वक सभी से मिलते है। दुगडजी परछिद्रान्वेषी नही है, वे दूसरो के गुणो का आदर करते है, छोटे-बडे सभी से समान बर्ताव करना उनकी चारित्रिक विशेषता है। उन्होने जीने की सही कला जानी है 'जीना तो है उसी का जो औरो के काम आए'।

आज समाज के लोग जिन्हे दानवीर, भामाशाह, कर्ण एव शिवि की उपाधि से सम्मानित करते है वही सुन्दरलालजी कभी भी अपनी दानशीलता, सहृदयता और परोपकारिता का प्रदर्शन या गर्व नही करते। वे दूसरो की सहायता भी बडी विनम्रता से करते है। सहज दानशीलता एव विनय का साकार विग्रह को यह
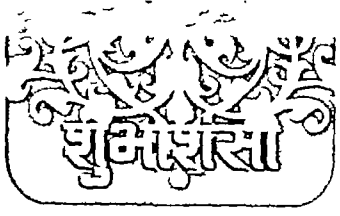
बात १९८५ के आसपास की है। जैन समाज के घर हावडा मे शनै -शनै बढ रहे थे। कलकत्ता आने जाने वाले पूज्य मुनि भगवत एव साध्वीजी हावडा होकर ही आते-जाते थे किन्तु हावडा मे धार्मिक कार्यों के लिये कोई भवन नही था। हावडा सघ ने बहुत चेष्टा की किन्तु उपयुक्त जगह नही मिली। श्रीमान् सुन्दरलालजी दुगड उस समय हावडा मे ही रहते थे। उनका भवन निर्माण का ही व्यवसाय था। हावडा सघ श्री दुगडजी से मिला। श्री दुगडजी ने अपने व्यवसाय (भवन निर्माण) के लिये मल्लिक फाटक के पास खरीदी हुई जगह लागत दाम मे श्रीसघ हावडा को देने की स्वीकृति दे दी तथा भवन निर्माण मे तन-मन-धन से पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया। उसी स्थान पर महावीर भवन का निर्माण हुआ। इसी भवन मे श्री शखेश्वर पार्श्वनाथ मन्दिर, प्रवचन हॉल तथा पूज्य मुनि भगवन्तो के चातुर्मास प्रवास के लिये पूर्ण रूप से स्थान की व्यवस्था है। जहाँ साधर्मी वात्सल्य, धार्मिक अनुष्ठान, ज्ञान शिविर आदि समाज कार्य सुन्दर रूप से सम्पन्न हो सकते है। महावीर भवन का प्रथम मजिल का हॉल तो श्री दुगडजी ने सघ द्वारा निर्धारित नकरा प्रदान कर सघ को भेट कर दिया जो आज "श्री अमोलकचद दुगड हॉल" के नाम से विख्यात है। महावीर भवन के हर कार्य के लिये श्रीमान् दुगडजी हमेशा तत्पर रहे। महावीर भवन हावडा के लिये तो श्रीमान् दुगडजी नीव के पत्थर है।

महावीर भवन तो एक उदाहरण है। चाहे मन्दिर हो, धार्मिक भवन हो, स्कूल हो अथवा अस्पताल हो, सघ एव समाज के हर कार्य मे श्री दुगडजी ने हमेशा उदारतापूर्वक सहयोग दिया है। साहित्य प्रकाशन, ज्ञान शिविर, धार्मिक अनुष्ठान तथा सामाजिक समारोह – हर कार्य मे तो श्री दुगडजी अग्रसर रहे। बेसहारा एव दुखी व्यक्ति की जो उनके पास गया, ध्यान पूर्वक उसकी बात को श्री दुगडजी ने सुना एव उसके कष्ट को दूर करने मे पूर्ण सहयोग दिया।

लक्ष्मीजी की उन पर कृपा रही किन्तु श्री दुगडजी ने अपने द्वारा उपार्जित लक्ष्मी का उपयोग जितना अपने लिए किया उससे बहुत ज्यादा सघ एव समाज के लिये किया। ऐसे महान् व्यक्तित्व के धनी श्री सुन्दरलालजी दुगड का आज अभिनन्दन करते हुए हम अपने आप को गौरवशाली अनुभव करते है।

ज्ञानचद लूनावत

उपाध्यक्ष, महावीर भवन

श्री सुन्दरलालजी दुगड के बारे मे कुछ लिखना सूर्य को दीपक दिखना है खास कर मेरे जैसे साधारण समाज सेवक के लिए।

म०प्र० साधुमार्गी जैन सघ ने मुझे मध्य प्रदेश से अनेक स्थानो पर धार्म्कि शिविर आयोजित करने का मुझे दायित्व सौपा। मध्य प्रदेश के १९ (उन्नीस) स्थानो पर इन शिविरो का आयोजन किया। इनमे लगभग २७०० शिविरर्थियो ने धार्मिक शिक्षण के साथ व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त किया। श्री दुगड सा० की ओर से उन शिविरर्थियो को प्रोत्साहन स्वरूप एक बडा बेडा किया गया। इससे शिविरार्थियो का न केवल मनोबल बढा अपितु धर्म के प्रति भी इनके मन मे गह रुचि जागृत हुई।

मैं श्री दुगड सा० की अत्यन्त आभारी हूँ कि नीमच श्री सघ के निवेदन पर आज आचार्य रामेश समताभवन के शिलान्यास हेतु अपनी सुपुत्री श्रीमती रूप रेखा झाबक के साहस दिनाक ८ फरवरी २००७ को नीमच पधारे एव दिनाक ५ फरवरी को प्रात काल अपने एव आपकी सुपुत्री ने शिलान्यास अपने कर कमलो से किया एव समता भवन के निर्माण हेतु ११ लाख रुपये प्रदान करने की घोषणा कर नीमच सघ को कृत कृत्य किया। ५ फरवरी को ही आपका जन्म दिन भी था। इस शुभ अवसर पर यह कार्य सम्पन्न होना नीमच सघ के लिए सौभाग्य का अवसर था।

शिविरो मे साप्ताहिक पाठशाला का भी निर्णय लिया गया एव बहुओ के लिए भी अलग शिविर आयोजित करने का निश्चय किया गया, यह श्री दुगडजी की प्रेरणा का ही प्रतिफल है।

आप स्वस्थ एव दीर्घायु हो, यही कामना है।

शौकीन लाल मुणोत

उपाध्यक्ष- सा० जैन सघ म०प्र० ईकाइ

श्री सुन्दरलालजी दुगड ने शुरवीरो की मरुभूमि मे अपूर्व दानवीर की भूमिका निभाकर इस पावन धरती का गौरव दिग-दिगन्त मे विस्तारित किया है। आज श्री दुगडजी के प्रशस्त अर्थ रहे सेवाकार्यो पर एक नजर डालने से ही स्पष्ट हो जाता है कि दान के क्षेत्र मे आपने सम्पूर्ण भारत को अपनी कर्मभूमि माना है।

श्री दुगडजी के निर्मल यश की पताका आज भारत के गगनमडल मे लहर-लहर कर फहरा रही है। श्री जैन पाठशाला सभा को भी दुगडजी का सामयिक अर्थ सहयोग प्राप्त हुआ है, हमे गर्व है। मै स्वय, मेरी तथा श्री जैन पाठशाला सभा की ओर से श्री दुगडजी के शतायु होन और इसी प्रकार लोक सेवा को समर्पित रह्न हेतु प्रभु से मगल प्रार्थना करता हूँ।

हनुमानदास सिपाणी

अध्यक्ष, श्री जैन पाठशाला सभा, बीकानेर

मसूरी
23.3.91

श्रावकवर्य श्री सुन्दरलाल जी दुगड़,

धर्मलाभ।

यहाँ कुशलता है। आशा है, आप स्वस्थ-प्रसन्न होंगे।

जैन म्यूजियम का उद्घाटन-कार्यक्रम शानदार ढंग से सम्पन्न हुआ। हम आपकी उल्लेखनीय सेवा एवं सक्रियता की सराहना करते हैं।

म्यूजियम निर्माण-कार्य के आप सक्रिय सजग रहे हैं। म्यूजियम में आपका सहयोग अपेक्षित है। हमारी तो यही भावना है कि म्यूजियम के दानदाताओं में आपका नाम सर्वोपरि रहे। यदि आप अपनी राशि किश्तों में भी देना चाहें, तो दे सकते हैं, किन्तु आपका नाम एवं राशि दानदाता-सूची में खुदाने की स्वीकृति फाउंडेशन के प्रबन्धक न्यासी को दे दें। आप अपनी ओर से जो राशि देना चाहें, उसकी सूचना दिरावें।

हमें आशा है, फाउंडेशन को आपका सक्रिय सहयोग प्राप्त होता रहेगा। फाउंडेशन आपका है, हम तो हिमालय में साधनारत हैं। म्यूजियम के शेष कार्य को पूरा करने का दायित्व आपके कन्धों पर है।

उज्ज्वल भविष्य के लिए मंगल कामना।

[illegible]

जय धरणेन्द्र ॐ ह्री पार्श्वनाथाय नम जय पद्मावती

रजि न 1/2000

साध्वी चन्दन प्रभा जन कल्याण ट्रस्ट

पजीकृत कार्यालय चन्दन पार्श्व पद्मावती धाम, चन्दन वाटिका,
रावतनगर, सालावास रोड़, जोधपुर (राज)

क्रमाक दिनाक 15/5/07

श्री युत्त सुन्दर लाल जी दूगड
समाज सेवी
कोलकाता
मान्यवर

जय मॉं पद्मे ।

आशा है आप मा पदमावती की असीम अनुकम्पा से कुशल मगल होंगे । अत्र विराजित साध्वी श्री चदनप्रभा जी आदि ठाणा 3 सुखसाता पूर्वक धर्मोपासना मे सलग्न है । साध्वी श्री जी के देशनोक प्रवास के दौरान आपके कुशल व्यक्तित्व व सहयोगात्मक जीवन के बारे मे जानने का श्री सुरेन्द्र जी मरोटी से सुअवसर प्राप्त हुआ । आपने ना केवल जैन समाज अपितु हर मानव प्राणी के दिल म आपने सहयोगात्मक रवैये से दिलों म अपना स्थान अर्जित करवाया है । जिससे आपकी अमिट छाप बनी है । आपकी समाजोत्थान मे अहम् भूमिका है । विस्तार एव विकास की परिकमा मानवीय परोपकार का अहम् स्थान होता है । हजारो किलोमीटर दूर रहकर भी आपने अपनी जन्म भूमि के विकास के लिए असख्य कार्य किए हैं । आप साधुवाद के पात्र है । जो व्यकित इतनी बडी इच्छा रखते है वे निश्चित ही भगवान के नजदीक भक्त माने जाते है । मॉं पद्मावती आपको हमेशा नित नई शक्ति प्रदान करे आपकी समृद्धि का भण्डार भरे ताकि आप मानव कल्याण कारी कार्यो म निरन्तर सलग्न रह सके ।

चदन पार्श्व पद्मावती धाम की अधिशाष्ठता गुरुमैया साध्वी चदन प्रभा जी गत 25 वर्षो से सयम धर्म का पालन कर रही है। घोर तपस्विनी साध्वी चदन प्रभा जी म सा ने सन् 1989 में गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी के सान्निध्य मे दीक्षित हुई । उनकी शिक्षाओ को उन्होने अमल करते हुए धर्म सघ की सेवा साधना म निरन्तर लगी रही। कुछ वर्षो बाद आप असाध्य बिमारी से ग्रसित हो गई । आपने मॉं पदमावती की साधना कर उस बिमारी पर विजय पा ली । तत्पश्चात आपने मॉं की परम् उपासिका बनकर तप साधना मे लीन होकर सिद्धि प्राप्त की । 1999 मे आप जनकल्याणकारी कार्यो में अपने आपको लगाया असहायो के लिए मसीहा बनकर आपने सेवाए की है । साध्वी श्री जी स्वय ज्योतिष एव वास्तु की विशेष ज्ञाता भी है । आपकी अनूठी सेवा को देखकर साध्वी श्री जी ने आपकी भूरि-भूरि प्रशसा की है । साध्वी श्री जी ने आपके बारे म फरमाया कि आपके समाजोत्थान के सहयोग को देखकर लगता है कि ऐसे समाज रत्नो के माध्यम से ही धर्म प्रभावना विकासोन्मुख बनती है ।

चदन पार्श्व पदमावती धाम द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका म हम आपका परिचय मय छाया चित्र प्रकाशित करना चाहते है । आप अपना परिचय एव एक छाया चित्र सहित भिजवाने की महती कृपा कराव । हमारा चितन है कि आपश्री को चदन पार्श्व पद्मावती धाम की गतिविधिया का सार्थक साक्षी बनाया जाए । आपका अमुल्य सहयोग एव सुझाव निश्चित ही चदन पार्श्व पद्मावती धाम को नया परचम लहरान म सहयोगी साबित होगा ।

इति श्री ।।

आपका
सुरेन्द्र कुमार डागा
राष्ट्रीय महामंत्री

फोन 0291-2695752 3256272 फैक्स 0291-2696438 मो 94141-29437
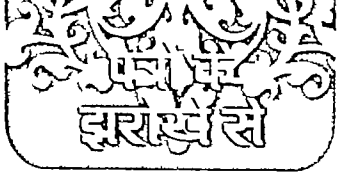
Ch. Raja Ram Jakhar
Memorial Public Charitable Trust (Regd.)

11 Race Course Road
New Delhi-110011

Dated

BAL RAM JAKHAR
Chairman

Ref No

Dear Shri Dugar,

My father late Ch Raja Ram Jakhar was a person with high ideals and philanthropic outlook. A staunch believer of the philosophy of "Vasudhaiv Kutumbkam", he was always ready to help the needy. He felt pleasure and happiness in helping the hapless and helpless.

In order to perpetuate his ideals we have set up a duly registered Trust, namely "Ch Raja Ram Jakhar Memorial Public Charitable Trust" keeping in view his interest, the Trust has wide spectrum of economic, social, cultural, educational, medical areas for its work. The basic approach is to alleviate poverty, remove social and educational backwardness and make available medical facilities in the rural areas. To achieve the above objectives, the Trust will undertake diversified activities, such as opening/assisting schools and colleges, Sanskrit Vidyalayas, scholarships to the deserving students, subscriptions and donations to hospitals/dispensaries, promotion of agriculture, assistance to widows and orphans, establishment/support of libraries and museums. The Trust will assist people of all castes, creed, communities, etc. without distinction.

To have a worth-while programme, the Trust needs financial resources and support. I appeal to you kindly to extend your cooperation to the Trust by way of giving donation/contribution generously. Your support will be duly acknowledged and recognised. Your kind gesture will go a long way in achieving the objectives of the Trust.

It may be mentioned that the Trust has income tax exemption under Section 80G of the Income Tax Act.

All remittances are to be made through crossed cheque/demand drafts in the name of "Ch. Raja Ram Jakhar Memorial Public Charitable Trust" at the address given above with a certificate that the donation has been given as Corpus of the Trust.

Thanking you,

Yours sincerely,

(BAL RAM JAKHAR)

Shri Sunder Lal Dugar,
CALCUTTA

मूलदान देपावत
3, सब्जीमंडी कोटगेट
बीकानेर - 334005
दि 13 जून, 1996.

प्रिय सुन्दर

ईश्वरीय अनुकम्पा से स्वाति बूंद से बने मोती की सुन्दर आभा मे सलोने विनोद का अनुपम उपहार पाकर सभी अभिभूत है। सत्यं, शिव, सुंदरम् - जो सत्य है वह शिव है और जो कल्याणकारी शिव है वही सुन्दर है। हमारा सुन्दर भी अति सुन्दर है - आचरण मे, सद्व्यवहार मे, शालीनता मे और समृद्धि मे।

सुदर्शन सुन्दर! विनम्रता तुम्हारा आभूषण है, चतुर्दिक् शोभा ने तुम्हारे कीर्ति किरीट मे चार चाँद लगा दिए है और तुम्हारा यशकलश उदारता के अमृत से छलक छलक जाता है। जाज्वल्यमान नक्षत्र की तरह तुमने परिवार, समाज और गाँव को गौरवान्वित किया है, हमे तुम पर नाज है। आत्मीयतावश 'तुम' संबोधन ही सहज बन पड़ा है, आप की औपचारिकता में वह 'अपनत्व' नहीं है। अन्यथा न ले।

सामाजिक समारोहों मे संकोची स्वभाव के कारण मैं कम ही जाता हूँ, अगर जाता भी हूँ तो औपचारिकता निर्वहन हेतु नहीं अपितु व्यक्तिगत सम्बन्धों के कारण ही जा पाता हूँ। ऐसे मे आपके आग्रहपूर्वक आमंत्रण पर कलकत्ता जाना सार्थक मानता हूँ। राजस्थानी साहित्य के महामनीषी श्री कन्हैयालालजी (सेठिया) आदि अनेक शुभचिंतकों, मित्रों, गाँववासियों से मिलने का सुयोग आपके कारण बना। आपके शिखर व्यक्तित्व, औद्योगिक उपलब्धियां और सम्बन्धों की श्रेष्ठता देखने-परखने का अवसर मिला एतदर्थ हम हृदय से आभारी हैं। हमारे ठहराव मे मिले आत्मीयतापूर्ण आतिथ्य के लिए पुनः धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

विशेष क्या लिखूं। परिवार मे सभी को यथायोग्य, विशेषकर बेटे, बहू और बिटिया को शुभआशिष सहित, आपका ही -

पत्र की पहुँच लिखें।

मूलदान देपावत

The Largest Circulated Hindi Evening Daily

कोलकाता
07 फरवरी 2004

श्रीमान सुन्दरलाल जी सा. दुगड़
चेयरमैन आर्गेनिक इन्डस्ट्रीज लि
जीवनदीप बिल्डिंग
कोलकाता 1

आदरणीय भाईजी
सादर

[illegible]
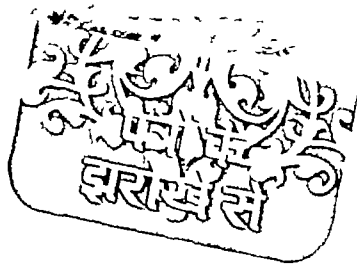
NIRANJAN ARYA
IAS
Collector & Distt Magistrate

Phone 61194, 520314 (O)
545495, 545306 (R)
Fax 0151-522006
BIKANER-334 001 (Raj)

D O Letter No 1289
Dated 1.6.99

श्री सुन्दर लाल दुग्गड

अल्प बचत मे विनियोजन हेतु बीकानेर जिले के अधिकारियो के दल द्वारा कलकत्ता मे मार्च,99 मे आपसे सम्पर्क किया गया था । इस दल के कलकत्ता प्रवास के दौरान आप द्वारा जो सहयोग प्रदान किया गया उसके लिए मै जिला प्रशासन बीकानेर की ओर से आपका आभार व्यक्त करते हुए आपको अवगत कराना चाहूँगा कि बीकानेर जिले द्वारा अल्प बचत के वार्षिक लक्ष्य 69 करोड रूपये के मुकाबले 74 करोड रूपये की उपलिब्ध अर्जित की गई । अल्प बचत योजनाओ मे आपके सहयोग से बीकानेर जिले के बेहतर विकास की सभावनाऐ प्रबल हुई है ।

अत आपको पुन धन्यवाद ज्ञापित करते हुए मे आशा करूगा कि भविष्य मे भी बीकानेर जिले के विकास मे आप सकिय भागीदारी दर्ज करायेगे ।

शुभकामनाओ सहित ।

भवनिष्ठ,

(निरजन आर्य)

श्री सुन्दर लाल दुग्गड,
आर डी बी इन्डस्ट्रीज लि.,
बीकानेर बिल्डिंग,
8/1 लाल बाजार स्ट्रीट,
कलकत्ता

आदरणीय प्रभु (सुंदरलाल जी दुगड़)
मैं आपके परिवार के, बारेमें कुछ
नहीं जानता। आपको कितने
सुपुत्र है। और कितनी बहु बेटी है।
मैं उनसे नमस्कार करता हूं।
और एक प्रार्थना उनसे सूचीत करता हूं।
आपके माता पिता सर्व सामान्य व्यक्ती
नहीं है वो भगवान के सुंदर लाल है।
आपको मंदीर में जानेकी जरूरत नहीं है।
आप उनकी बहोत सेवा करे। साधारण व्यक्ती
नहीं है रतन उनका कार्य का गित गा रहे हैं
एक स्वाध्वी लक्ष्मी बहन नहीं मिलती तो मेरा
भी अंत हो जाता। आप माता पिता समजके
सेवा तो करे। उसे भगवान का रूपमें देखो।
और मुझे शिघ्रही उनकी फोटो प्रतीमा भेजने
कि व्यवस्था करे। भगवान सामने नहीं होते।
फोटो और मुर्ती मे होते हैं मैं तो खुद्दार
किसान हूं उनके दर्शनसे मेरा उत्साह जिवीत
रहेगा। आपको अल्प मतीसे लेख रहा हूं।
ये कहाणी नहीं है सच आखों देखी
हकीकत है इस हकीकत को झूठ ना
समजे। यही प्रार्थना आपके चरणो करता हूं।
आपको भगवान सुखी आपका स्वास्थ ठिक
रहे यही प्रार्थना प्रभु के पास करता हूं
साक्षात प्रभु आपके ही घरमे है यह
हकीकत सूर्य नारायण जैसी सच है
स्वाध्वी मा मिलने से ही मेरा रामायण
तयार हो गया। और प्रभु के पवा सो
यहा पर हे प्रभु हकीकत पूर्ण विराम
देता हूं आपको साथ से
प्रणाम करता हूं
प्रभु आपका कृपा अभिलाषी
[signature]

[illegible]

नाम	सुन्दरलाल दुगड
जन्म	५ फरवरी १९५४
पिताजी	श्री मोतीलालजी दुगड (स्व)
माताजी	श्रीमती सूरजदेवी दुगड (स्व)
दादाजी	श्री अमोलकचन्दजी दुगड (स्व)
दादीजी	श्रीमती नादूदेवी दुगड (स्व)
शिक्षा	श्री करणी उच्चमाध्यमिक विद्यालय, दशनोक हायर सेकण्डरी, १९८१
कलकत्ता आगमन	सन् १९७१
विवाह	१३ जुलाई १९७२ श्रीमती कुसुमदेवी सुपुत्री श्री केवलचन्दजी सेठिया बीकानेर तेजपुर (असम)
पारिवारिक व्यापार	मनिहारी स्टेशनरी – १९८३, १९८ रेडी वस्त्र विक्रय, मन्युफेक्चरिंग १९७५, विनोद गारमेण्ट
पुत्र जन्म	विनोद कुमार – जनवरी १९८४
सुपुत्री जन्म	रूपरेखा – नवम्बर १९७७, सौभाग्यशाली, सामाजिक एव अन्य सेवा कार्यो म सं‍ल‍ग्न
रिटेल वस्त्र विक्रय	आनन्दमयी – १९८८ – छोटे भाई र‍ा म‍ा प‍ा
भवन निर्माण कार्य प्रारम्भ	१९८१
आर टी बिल्डर्स	प्रोप्राइटरशिप – १९८८
आर टी बी इण्डस्ट्रीज	स्थापना १९९०

न्यू टोन्का (सिगरेट) कम्पनी का क्रय इत्यादि म सहयोग स –

NAME OF COMPANY	NATURE OF BUSINESS
1 **RDB Industries Ltd**	Real estate Development in Kolkata & other growing cities in West Bengal Surat Guwahati, Kharagpur, Burdwan, Asansol, Haldia This Company took over the "New Tobacco Company" in the Year 1995 and since running it sucessfully
2 **Electrical Manufacturing Co Ltd**	Extra high voltage Transmission Line Engineering, also Indias first ISO certified Company for design, manufacture & installation o transmission lines
3 **EMC Hardware Ltd**	A Transmission towers manufacturing & Installation Unit of EMC Ltd
4 **RDB Rasayans Ltd**	The Manufacturing unit for Flexible Intermediate Bulk Containers (FIBC) & polysack bags, a downstream project of Haldia Pertochemicals Mainly an export oriented company

	NAME OF THE COMPANY	*OFFICE HELD*
	Public Limited Companies	
1	RDB Industries Ltd	Chairman & Managing Director
2	Electrical Mfg Co Ltd	Director & Chairman
3	EMC Hardware Ltd	Director
4	RDB Rasayans Ltd	Director
	Subsidiaries of RDB Industries Ltd	
1	Bhagwati Builders and Development Pvt Ltd	Director
2	Ambalika Vanijya Pvt Ltd	Director
3	Gurukul Advisory Services Pvt Ltd	Director
4	Infield Traders Pvt Ltd	Director
5	Mansama Consultants Pvt Ltd	Director
6	Martel Vanijya Pvt Ltd	Director
	Private Limited Companies	
1	MKN Investment Pvt. Ltd	Director
2	Metalind Pvt Ltd	Director
3	John Towers Pvt Ltd	Director
4	Loka Properties Pvt Ltd	Director
5	Ankur Constructions Pvt Ltd	Director
6	Regent Auto Trade Pvt Ltd	Director
7	Sidelha P5IDL Township Pvt Ltd	Director

दुगड़ जाति का उद्भव एवं इतिहास

दूगड, सूगड

मेवाड के आघाट गाँव का खीची शासक सूरदेव था। उसके दूगड, सूगड दो पुत्र थे। ये दोनो बडे वीर और कुशल प्रशासक थे। उन दिनो इस क्षेत्र मे मेरों और भीलो का बडा आतंक था। चोरी, डकैती, हत्या इनके प्रतिदिन के सामान्य कार्य थे। इन दोनो भाइयो ने इन लोगो को दबा कर इस क्षेत्र मे शान्ति स्थापित की।

इसी आघाट गाँव मे नाहरसिंह का प्राचीन देवल था। इसको गाँव के लोगो ने किसी कारण से तुडवा दिया। इससे यह नाहरसिंह गाँव के लोगो को भारी दु ख देने लगा। मंत्र-तंत्र आदि उपाय करने के बावजूद गाँव मे शान्ति नही हुई। इस अशान्त स्थिति से यहाँ के लोग बडे परेशान थे।

सं १२१७ मे विहार करते हुए खरतरगच्छाचार्य मणिधारी जिनचन्द्रसूरि आघाट गाँव मे पधारे। दूगड-सूगड दोनो भाई गुरु महाराज के पास दर्शनार्थ गए। उन्होने सारे गाँव की दुखद गाथा सुनाई। गुरु महाराज ने 'उपसर्गहर स्तोत्रम्' का स्मरण देकर उपद्रव शान्त किया। इस चमत्कार से गाँव के लोग गुरुदेव से बडे प्रभावित हुए। दूगड-सूगड गुरुदेव से प्रतिबोध पाकर जैन श्रावक बन गए।

दूगड-सूगड के नाम से इनका गोत्र दूगड-सूगड प्रसिद्ध हुआ।

खेता नामक व्यक्ति के वंशज खेताणी कहलाए।

दूगड-सूगड़ के परिवार मे कोठार का काम करने से इनमे आगे जाकर एक शाखा कोठारी हो गई।

श्री सुखसंपतराजजी भंडारी 'ओसवाल जाति का इतिहास' पुस्तक मे दुगड-सुगड गोत्र की उत्पत्ति के सम्बन्ध मे लिखते है कि दुगड गोत्र की उत्पत्ति राजपूत चौहान वंश से है। यह राजवंश पहले सिद्धमौर, फिर अजमेर के पास तीसलपुर मे राज्य करता था। इस राजवंश मे राजा माणिकदेव हुए। इनके पिता राजा महिपाल ने खरतरगच्छाचार्य जिनवल्लभसूरि से जैनधर्म स्वीकार किया। आपकी दो तीन पीढी के बाद दुगड व सुगड दो भाई हुए। इन्ही के नाम से दुगड गोत्र चला।

दूगड और सुगड की कई पीढी बाद सं १७१९ मे सुखजी हुए। ये बादशाह शाहजहाँ के यहाँ पाँच हजार सेना पर अधिपति थे। आप राजा की पदवी से अलंकृत थे। आगे चलकर इसी वंश मे राजा प्रतापसिंह, राय लक्ष्मीपतसिंह बहादुर, रायधनपतसिंह बहादुर आदि कई नामांकित व्यक्ति हुए है। मुर्शिदाबाद (बंगाल) निवासी इस परिवार का धार्मिक क्षेत्र मे बडा ही प्रशंसनीय एवं उल्लेखनीय योगदान रहा है। राय धनपतसिंह बहादुर ने ही सर्वप्रथम जैन आगम ग्रंथो को मुद्रित करवा कर बिना मूल्य [illegible] करवाया। इसके अतिरिक्त आपने सम्मेतशिखर, भागलपुर, अजीमगंज, बालूचर, गिरिडीह, लछवाड, काकंडी, राजगिरी, पावापुरी, गुणिया, चम्पापुरी, बनारस, आबू, पालीताणा, तलाजा, गिरनार, बम्बई, किशनगढ आदि अनेक तीर्थ-स्थानो पर मन्दिर और धर्मशालाओ का निर्माण करवाया। शत्रुंजय की तलहटी का [illegible] मन्दिर विशेष उल्लेखनीय है। आपने कई संघ भी निकाले।

मेजर जनरल रायबहादुर बिसनदास दुगड भी जम्मू काश्मीर मे प्रसिद्ध हो गए है। ये कई वर्षो तक काश्मीर राज्य के दीवान रहे। [illegible] वर्षो पूर्व इनके पूर्वज [illegible] जम्मू जाकर बस गए थे।

[illegible] १८८५ मे बालूचर (बंगाल) निवासी दुगडगोत्रीय [illegible] ने शत्रुंजय तीर्थ पर पुण्डरीक टोक [illegible] की ओर [illegible] करवाया [illegible] खरतरगच्छ [illegible] जिन[illegible]सूरि ने सं १८८५ मे करवाई।

[illegible] १८८५ मे [illegible] दुगड ने शत्रुंजय का विशाल संघ खरतर[illegible] श्री जिनमहेन्द्रसूरि के सान्निध्य मे निकाला।

NAME OF COMPANY	NATURE OF BUSINESS
1 **RDB Industries Ltd**	Real estate Development in Kolkata & other growing cities in West Bengal, Surat, Guwahati, Kharagpur, Burdwan, Asansol, Haldia Ths Company took over the "New Tobacco Company" in the Year 1995 and since running it sucessfully
2 **Electrical Manufacturing Co Ltd**	Extra high voltage Transmission Line Engineering, also Indias first ISO certified Company for design, manufacture & installation o transmission lines
3 **EMC Hardware Ltd**	A Transmission towers manufacturing & Installation Unit of EMC Ltd
4 **RDB Rasayans Ltd**	The Manufacturing unit for Flexible Intermediate Bulk Containers (FIBC) & polysack bags, a downstream project of Haldia Pertochemicals Mainly an export oriented company

	NAME OF THE COMPANY	*OFFICE HELD*
	Public Limited Companies	
1	RDB Industries Ltd	Chairman & Managing Director
2	Electrical Mfg Co Ltd	Director & Chairman
3	EMC Hardware Ltd	Director
4	RDB Rasayans Ltd	Director
	Subsidiaries of RDB Industries Ltd	
1	Bhagwati Builders and Development Pvt Ltd	Director
2	Ambalika Vanijya Pvt Ltd	Director
3	Gurukul Advisory Services Pvt Ltd	Director
4	Infield Traders Pvt Ltd	Director
5	Mansama Consultants Pvt Ltd	Director
6	Martel Vanijya Pvt Ltd	Director
	Private Limited Companies	
1	MKN Investment Pvt. Ltd	Director
2	Metalind Pvt Ltd	Director
3	John Towers Pvt Ltd	Director
4	Loka Properties Pvt Ltd	Director
5	Ankur Constructions Pvt Ltd	Director
6	Regent Auto Trade Pvt Ltd	Director
7	Sidelha P5IDL Township Pvt Ltd	Director

दुगड़ जाति का उद्भव एवं इतिहास

दूगट, सूगड

मवाड के आघाट गाँव का खीची शासक सूरदेव था। उसके दूगड, सूगड दो पुत्र थे। ये दोनो वडे वीर और कुशल प्रशासक थे। उन दिनो इस क्षेत्र मे मेणो और भील
आतक था। चोरी, डकैती, हत्या इनके प्रतिदिन के सामान्य कार्य थे। इन दोनो भाइयो ने इन लोगो को दवा कर इस क्षेत्र मे शान्ति स्थापित की।

इसी आघाट गाँव मे नाहरसिह का प्राचीन देवल था। इसको गाँव के लोगो ने किसी कारण मे तुडवा दिया। इससे यह नाहरसिह गाँव के लोगो को भारी दु ख देने लग
आदि उपाय करन के वावजूद गाँव मे शान्ति नही हुई। इस अशान्त स्थिति से यहाँ के लोग वडे परेशान थे।

स १२१७ म विहार करते हुए खरतरगच्छाचार्य मणिधारी जिनचन्द्रसूरि आघाट गाँव मे पधारे। दूगड-सूगड दोनो भाई गुरु महाराज के पास दर्शनार्थ गए। उन्हों
की दुखद गाथा सुनाई। गुरु महाराज ने 'उपसर्गहर स्तोत्रम्' का स्मरण देकर उपद्रव शान्त किया। इस चमत्कार से गाँव के लोग गुरुदेव से वडे प्रभावित हुए। दु
गुरुदव से प्रतिवोध पाकर जैन श्रावक वन गए।

दुगड-सुगड के नाम से इनका गोत्र दुगड-सुगड प्रसिद्ध हुआ।

खता नामक व्यक्ति के वशज खताणी कहलाए।

दुगड-सुगड के परिवार मे कोठार का काम करने से इनमे आगे जाकर एक शाखा कोठारी हो गई।

श्री सुखसपतराजजी भडारी 'ओसवाल जाति का इतिहास' पुस्तक मे दुगड-सुगड गोत्र की उत्पत्ति के सम्बन्ध मे लिखते है कि दुगड गोत्र की उत्पत्ति राजपूत चौ
है। यह राजवश पहले सिद्धमौर, फिर अजमेर के पास तीसलपुर मे राज्य करता था। इस राजवश मे राजा माणिकदेव हुए। इनके पिता राजा महिपाल ने खरतर
जिनवल्लभसूरि से जैनधर्म स्वीकार किया। आपकी दो तीन पीढी के वाद दुगड व सुगड दो भाई हुए। इन्ही के नाम से दुगड गोत्र चला।

दुगड ओर सुगड की कई पीढी बाद स १७१९ मे सुखजी हुए। ये वादशाह शाहजहाँ के यहाँ पाँच हजार सेना पर अधिपति थे। आप राजा की पदवी से अलकृ
चलकर इसी वश मे राजा प्रतापसिह, राम लक्ष्मीपतसिह वहादुर, रायधनपतसिह वहादुर आदि कई नामाकित व्यक्ति हुए है। मुर्शिदावाद (वगाल) निवासी इस
धार्मिक क्षेत्र म वडा ही प्रशसनीय एव उल्लेखनीय योगदान रहा है। राय धनपतसिह वहादुर ने ही सर्वप्रथम जैन आगम ग्रथो को मुद्रित करवा कर विना मूल
करवाया। इसक अतिरिक्त आपने सम्मेतशिखर, भागलपुर, अजीमगज, वालूचर, गिरिडीह, लछवाड, काकडी, राजगिरी, पावापुरी, गुनिया, चम्पापुरी, वना
पालीताणा, तलाजा, गिरनार, बम्बई, किशनगढ आदि अनेक तीर्थ-स्थानो पर मन्दिर और धर्मशालाओ का निर्माण कराया। शत्रुजय का तलहटी का विशाल म
उल्लेखनीय है। आपने कई सघ भी निकाले।

मेजर जनरल रायवहादुर बिसनदास दुगड भी जम्मू काश्मीर मे प्रसिद्ध हो गए है। ये कई वर्षो तक काश्मीर राज्य के दीवान रहे। सैकडो वर्षो पूर्व इनके पूर्व
[illegible]कर जम्मू जाकर वस गए थे।

स १८८५ मे वालूचर (बगाल) निवासी दुगडगोत्रीय हर्षचन्द्रजी ने शत्रुजय तीर्थ पर पुण्डरीक देवालय से दक्षिण की ओर चन्द्रप्रभ स्वामी का देवालय वनवा
प्रतिष्ठा खरतरगच्छाचार्य जिनहर्षसूरि ने स १८८५ म करवाई।

स १८८५ मे प्रतापसिहजी दुगड ने शत्रुजय का विशाल सघ खरतरगच्छाचार्य श्री जिनमहेन्द्रसूरि के सानिध्य मे निकाला।

परिवार वट
श्री मोजीरामजी दुगड़
फतेहपुर (राज) से देशनोक (राज) तीन सदी पूर्व
श्री सौभागमलजी
श्री दानमलजी
श्री टीकमचदजी
श्री तेजकरणजी
श्री अमोलकचदजी
श्री तोलारामजी
श्री घेवरचदजी
श्रीमती प्रेमबाई
श्रीमती किशनी बाई
श्री माणकचदजी
श्री मोतीलालजी
श्री जयचदलालजी
श्री भीकमचदजी
श्री जतनलालजी
श्रीमती सोनाबाई
श्रीमती मैनाबाई
श्री सुन्दरलाल
श्री सोहनलाल
श्री पूनमचद
श्री कौशलकुमार
श्री विनोद
श्रीमती रूपरेखा झाबक
कु यशस्वी
कु मनस्वी
दौहित्र जीत झाबक

...न स्वरूप प्राप्त स्मृति चिन्ह
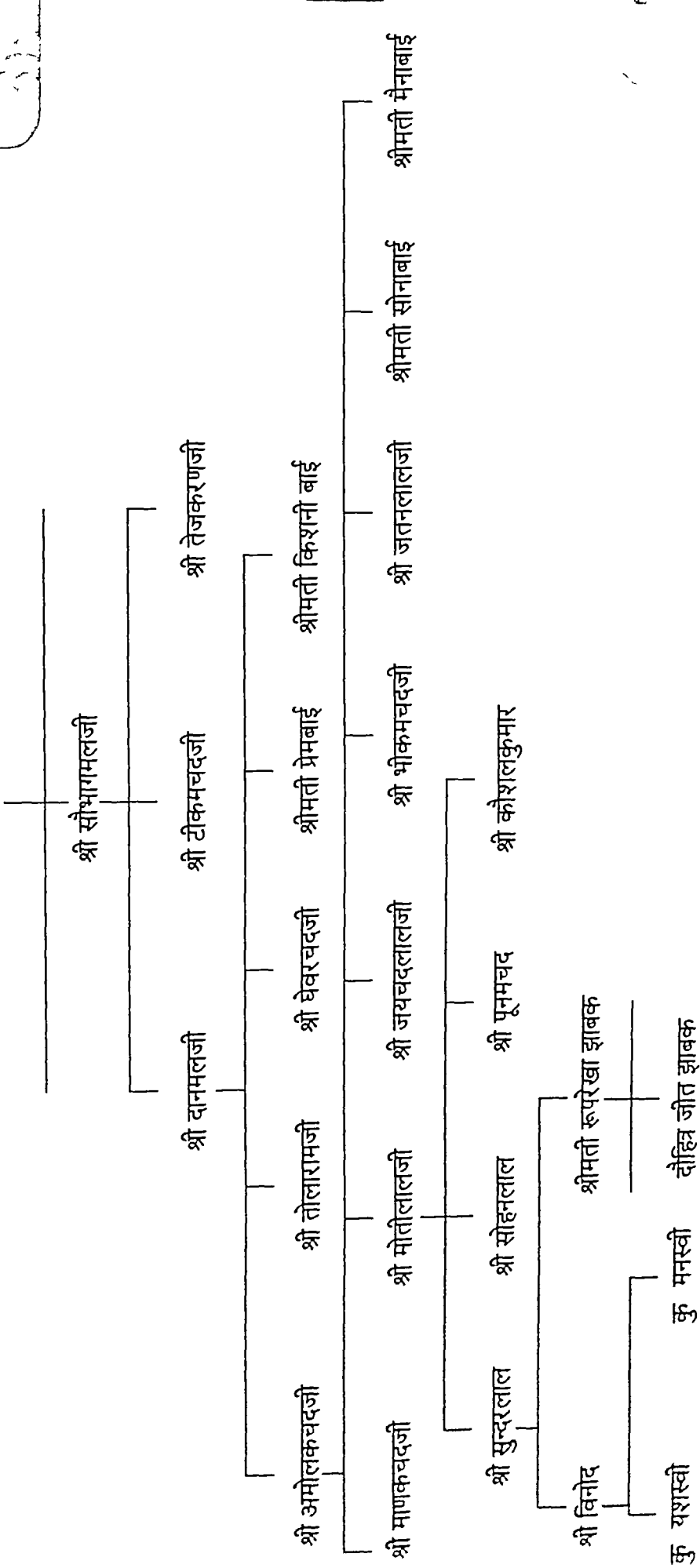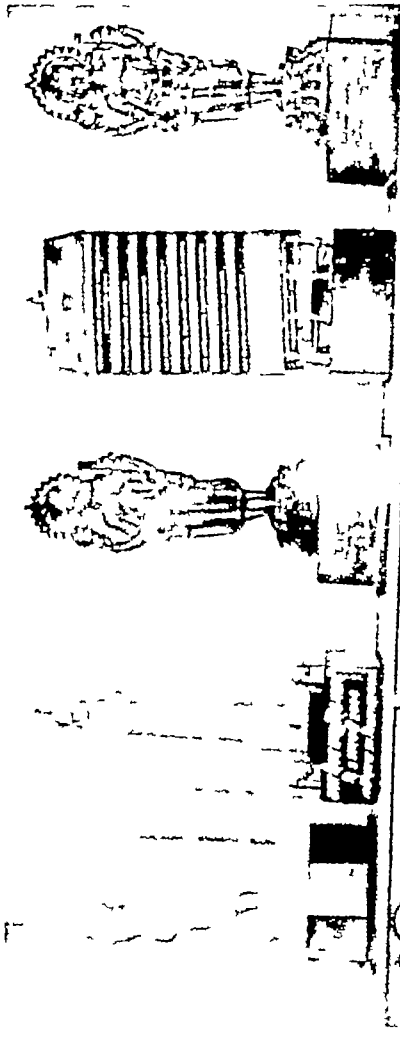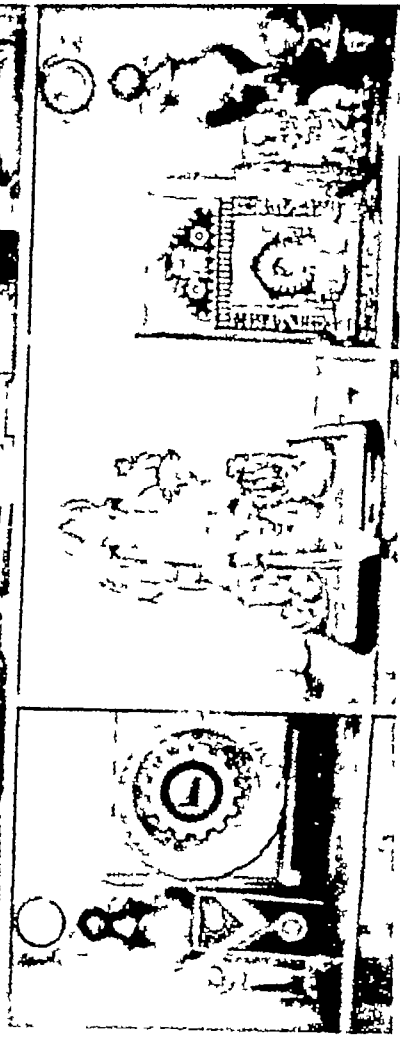
पूर्व राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैल सिंह का स्वागत करते हुए

प. ब. के निवर्तमान राज्यपाल श्री वीरेन जे शाह के साथ

पूर्व प्रधानमत्री श्री चन्द्रशेखर के साथ

श्री जैन विद्यालय के कार्यक्रम में श्री टी एन शेषन का सम्मान करते हुए

प० बगाल के मुख्यमत्रि श्री बुद्धदेव भट्टाचार्य के साथ

माता-पिता

स्व. कॅवलचन्दजी सेठिया

स्व कमलादेवी मेठिया

एक धार्मिक यात्रा पर
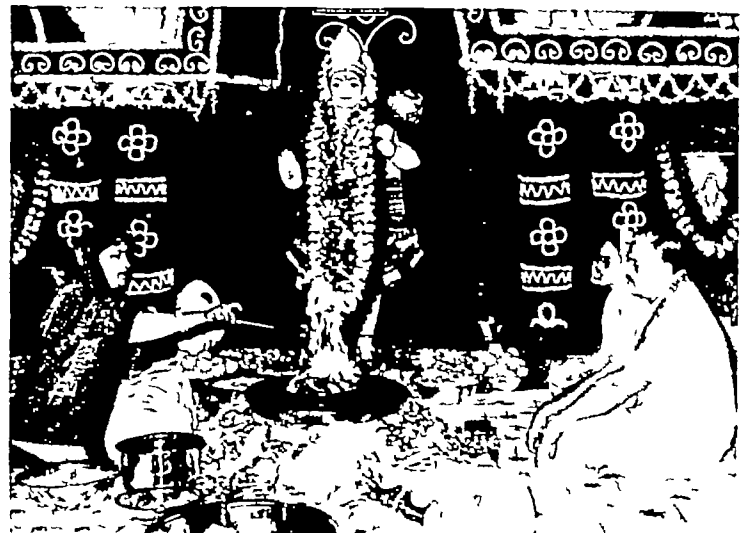
एक धार्मिक अनुष्ठान पर

एक दूसरे का मुह मीठा कराते हुए

सिगापुर में
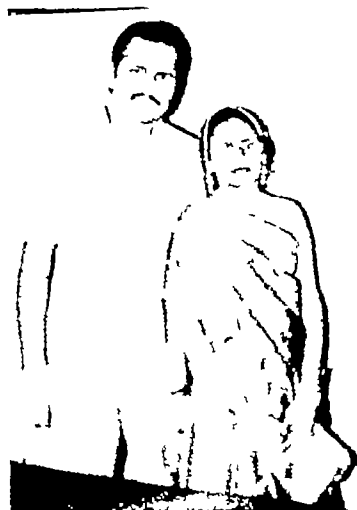
अपने निवास में

जयपुर चोखी ढाणी में

अपन निवास म

एक पर्यटन स्थल पर
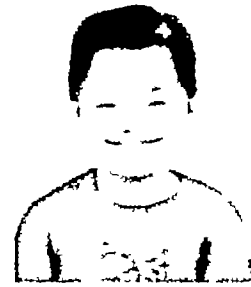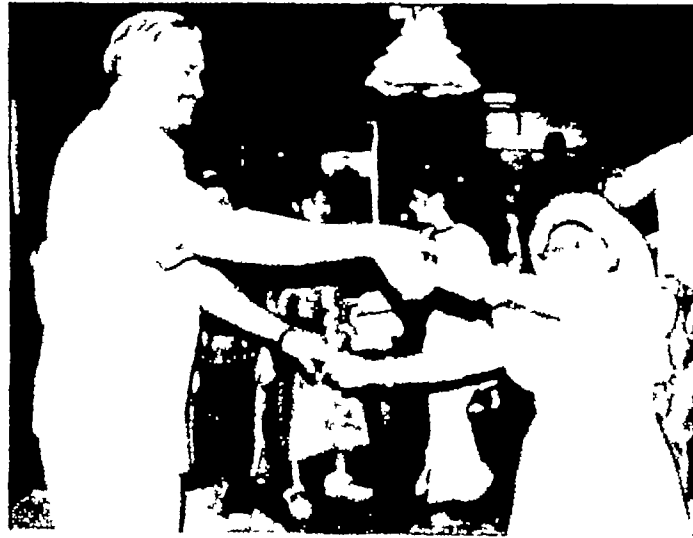
बीकानेर रेल दादाबाडी जिर्णोद्धार के अवसर पर श्री मोतीलालजी दुगड
का अभिनन्दन कर रहे हैं श्री किशनलालजी बोथरा

श्री धर्मेन्द्र के साथ श्री विनोद दुगड़

श्री जैन हॉस्पीटल में मोतीलाल दुगड स्ट्रेट टेस्ट मशीन
का उद्घाटन रुपरेखा दुगड द्वारा, साथ में है
श्री भवरलालजी करनावट, श्री मानिकचन्द दुगड,
श्री भीखमचन्द दुगड, श्री भवरलाल दुगड़,
श्री सुन्दरलाल विनोद दुगड़

आचार्य श्री नानेश की दीक्षा स्थली कपासन
में श्री दुगडजी के पुज्य पिताजी
स्व मोतीलालजी दुगड का स्वागत
करते हुए सघ के स्थानीय अध्यक्ष
श्री मीठुलालजी बाघमार

प्रवर्तिनी चन्द्रप्रभाश्रीजी महाराज के साथ
श्रीमति कुसुमदेवी दुगड एव अन्यान्य
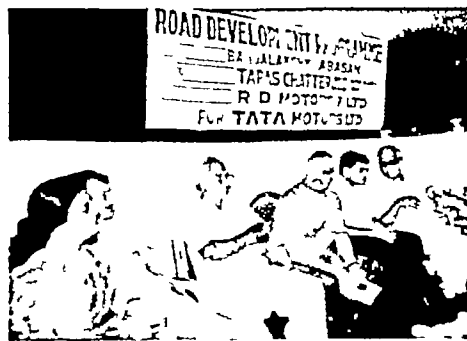
बगलक्ष्मी आवासन द्वारा आयोजित रोड डवलपमन्ट प्रोग्राम म

दुगड चरिटबल ट्रस्ट द्वारा फ्री आई ऑपरशन कम्प में
श्रीमति कुसुमदवी दुगड का सम्मान करत हुए श्रीमती फूलकुमारी कार्वारिया

पुत्री विवाह

श्री देवीसिंह भाटी, सिंचाई मंत्री राजस्थान

रुपरेखा-आलोक झाबक के साथ पूर्व प्रधानमंत्री चन्द्रशेखरजी, श्री प्रबोधचन्द्र सिन्हा राज्य मंत्री प. ब.
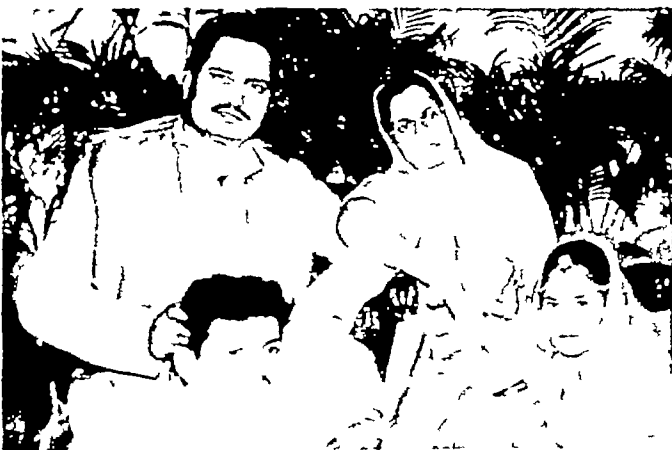
श्री सोमेन मित्रा, विधायक व श्री दुगड़जी का आशीर्वाद

पुत्री रुपरेखा व आलोक झाबक को आशीर्वाद-श्री बादल बोस, विधायक, श्री सुरेन्द्र, श्री सरदारमलजी कांकरिया, श्री अरिन्दम बोस, श्री देवकान्तलाल (पार्षद, हावड़ा)

पुत्री रुपरेखा व श्री आलोक झाबक को आशीर्वाद देते हुए श्री सुभाष चक्रवर्ती, मंत्री प. ब.

श्री शान्तीलाल जैन व श्री जुगलकिशोर जैथलिया के साथ

पुत्री रुपरेखा को आशीर्वाद-श्री सत्यनारायण बजाज, विधायक, श्री राजेश सिन्हा, श्री विनोद दुगड एवं श्री तिलोकचन्द डागा

श्री बी के साह, भू पू पुलिस कमिश्नर के साथ

श्री लगनदेव सिंह विधायक के साथ

यादें
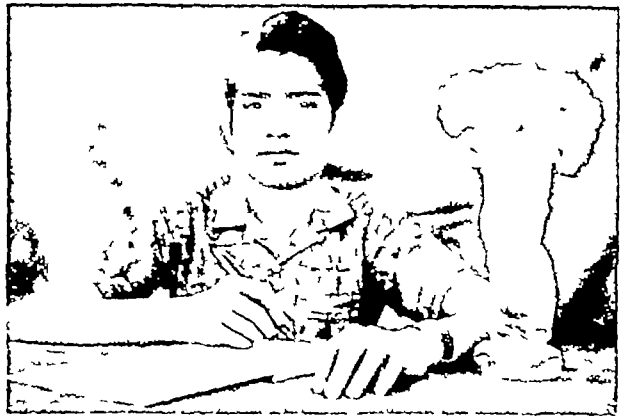
कक्षा दशवीं के समय का चित्र
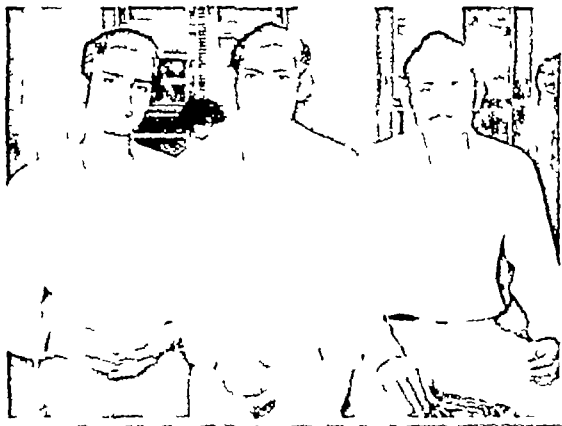
श्री सुन्दरलाल दुगड, श्री कमलचन्द सेठिया, श्री नेमचन्द सिपानी

सुपुत्र विनोद के जन्म के उपलक्ष मे दादाजी अमोलकचन्दजी दुगड एव दादीजी स्वर्ण सोपान आरोहण

देशनोक गाव का घर

श्री सुन्दरलाल दुगड़

Shri Sunderlal Dugar – an epitome of benevolence

Subhash Chakravorty
Minister for Youth Welfare and Sprots West Bengal

The Bard of Avon has rightly remarked--

some are born great some achieve greatness
some have greatness thrust upon him

The man of the moment and the man in the reckoning Shri Sunderlalji Dugar belongs to the second category It means that Shri Dugarji is undoubtebly, a great man in the true sense and he has achieved greatness by din't of his tireless striving, benevolent nature and helping attitude

I am acquainted with him for more than two decades By profession he is an industrialist and builder but what I have spotted in him is his endless love for the general mankind Even in his business he gets the buildings constructed properly but sells on very reasonable rate It is his supreme quality that he has strong hold over industries At the same time frankly speaking I have nothing to do with Dugarji as a businessman and a builder I know him as a man of wisdom and generosity Again I am proud of having a good friend like him He is not a fair-weathered friend but he is 'a friend in need is a friend indeed' Being a politician I have to take care of the needs and amenities of all kinds of people and I have seen that Shri Dugarji is always enthusiastic in providing all possible helps to the needy people We the human beings, are destined to suffer from the different kinds of natural calamities also Particularly a certain part of our state has to face the fury of flood every year and at such horrendous hours, Shri Sunderlal Dugar has always emerged as the first among equals and really a good samaritan' as far as to help the flood-victims with both kind and cash is concerned

I have got the opportunity of travelling with him several times and I have been amazed to see his long association with several schools hospitals NGOs and charitable societies even outside West Bengal His compassion and helping attitude knows no geographical boundaries

Without any hesitation and prejudice I regard Shri Dugarji as a true philanthropist and a man of substance He really deserves [illegible] and if he is being honoured by Shri S S Jain Sabha it is [illegible] for me Our society badly needs such a [illegible] person whose devotion to service to mankind [illegible] May [illegible] bless [illegible] long and healthy life so [illegible] to serve the [illegible]

मनुजों में सुन्दर ही सुन्दर

डॉ० महेन्द्र भानावत
पूर्व निदेशक भारतीय लोककला मण्डल, उदयपुर

सृष्टि मे मुनष्य सबसे सुन्दर जीव है। पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वायुकाय और वनस्पतिकाय, इन सबमे पृथ्वीकाय पर जितने भी जीव विचरण करते है उन सबमे और अन्यो मे मनुष्य सुन्दरतम है। जैन दर्शन का यह सत्य कथन निर्विवाद है। अन्य ने भी यही माना है लेकिन सारे मनुष्यो मे श्रेष्ठ कौन है ? सारे फूलो मे श्रेष्ठ फूल कौन-सा है ? ऐसे ही चराचर जगत मे जिस-जिस की भी सत्ता है उनमे कौन श्रेष्ठत्व लिये है। स्पष्ट है सभी सुन्दर नहीं होते। दिनकर ने कहा था भुजग के सदर्भ मे–

क्षमा सोहती उस भुजग को जिसके पास गरल हो।
उसको क्या जो दन्त हीन विषहीन विनीत सरल हो।।

लोक साहित्य मे फूलो के लिए कथन आता है–कौन-सा है श्रेष्ठ फूल ? अधिकाश गुलाब के पक्ष मे जायेगे पर वह लोक जीवन है जो अपने ढग से सोचता, समझता और चितन करता है। वहा समूह का हित चितन है। परमार्थ का सोचन है। अच्छा दिखने, लगने या कि खुशबू म नहाने का नही। इसलिए श्रेष्ठ फूल कपास का कहा जो आदमी का तन ढकता है। नगी दुनिया को वस्त्र से ढकने का कार्य कही भी श्रेष्ठ से कम नही है। द्रौपदी की भरी सभा मे उतारी जा रही इज्जत की रक्षा वस्त्र ने ही की थी। लाज बचानेवाला बडा होता है इसीलिए कहावत चल पडी– लाज बचाई लाखो पाये।'

आदमियो मे दानी बडा है। इसके लिए कहा गया– 'दानी बडे तिहु लोकन मे।' दानी वह जो दान दे पर बदले मे ले कुछ नही। कोई अपेक्षा नही रखे और किसी की अपेक्षा भी नही कर। दान करते वक्त यह न सोचे कि वह पात्र है या नहीं। छलिया तो नही है, ठगी तो नही है। यह दूसरा पक्ष हो जायेगा जिसकी तह मे जाने के लिए अन्य माध्यमो का सहारा लेना पडेगा तब मन मे कई प्रकार की उलझने, विसगतिया, अच्छे-बुरे भाव पैदा होगे। जो दानी है, महादानी है, आघडदानी है उसका काम देना है, देना ही देना है–न किसी अपेक्षा भाव से और न किसी उपेक्षा भाव से बल्कि मन की शुद्धि से, आत्मा के सतोष से, मन की तुष्टि से।

उदाहरण बहुत है बीते काल के। जो देता है, वह पाता है। दशामाता की कई कहानिया म वर्णन मिल जायेगा। हमारा ही मन छोटा होता है कि जब दे देगे तो हमारे पास क्या रह जाएगा ? बूद-बूद भी जाती है तो कहते है, पूरा समदर खाली हो जाता है पर दनवाल स पूछिये तो कहेगा, समदर कभी खाली होता ही नही, वह तो भरता ही रहता है बल्कि जिस दिन देना बद कर दिया जायेगा, समदर खाली होता जायेगा।

मैंने कई प्रातो के कई तीर्थो का भ्रमण किया है। सब तीर्थो की लीलाएँ देखी। वे लीलाएँ अदृश्य है पर दृश्यवान भी है। गुजरात के वीरपुर मे सत जलाराम हुए। कहते है, उस सत के पास जो भी जाता, खाली यानी भूखा नहीं लौटता, एक बार जलाराम के पास कुछ नहीं था और सत पहुँच गये, वे भूखे लौटे। जलाराम ने प्रण किया कि यदि मै साधु-सता का भाजन नही करा सकूगा तो जीवित ही प्राण त्याग दूगा, भूखा ही देह विसर्जित कर दूगा। भक्त की ऐसी कठोर प्रतिज्ञा से कृष्ण द्रवित हुए। उन्होने लक्ष्मीजी से जला को दो रोटिया देने की आज्ञा की। लक्ष्मी बोली "अपन दोनो चलते है। मै थाली बन जाऊँगी।" कृष्ण बोले "मै भील वेश धारणकर लूगा।" भील बन कृष्ण ने हाथो म थाली धारण कर ली। जला को कहा, इसमे दो रोटी तुम खाओ, एक सतो को दे दो।" दानी को वही तो देना है जिसे कोई अन्य दे रहा है किन्तु वह समझ बैठता है कि देनेवाला वह खुद है।

जलाराम अन्तर्ज्ञानी था। उसे थाली की बजाय लक्ष्मी ही दिखाई दी और भीलवेश म कृष्ण।

दुगड़ विंग के उद्घाटन पर उपस्थित अतिथियों के साथ श्री दुगड़जी

नानेश रूपरेखा छात्रावास के दूसरी मंजिल के उद्घाटन समारोह पर श्री दुगड़जी, श्री सरदारमलजी अन्यान्य पदाधिकारीयों के साथ

निर्माण श्रृंखला में एक और वृद्धि, उद्घाटन करते हुए श्री दुगड़जी, श्री कांकरियाजी एवं अन्यान्य

विशुद्धानन्द हॉस्पीटल में कृष्णादेवी दुगड़ [illegible] क्लिनिक के उद्घाटन पर श्री दुगड़जी, साथ [illegible] और [illegible]

मैंने दुगड वश को रोशन करनेवाले सोहनलालजी दुगड के बारे मे बहुत कुछ सुना और उदयपुर मे उनकी निस्पृह सादगी से परिपूर्ण सहजमना उदार छवि को देखा तो देखता ही रह गया। कही भी नहीं लगा कि उदारमना सोहनलालजी सुदानी हैं, श्रीवर है, सेवाधीश है। जलाराम की झोली की तरह ही उन्हें मालूम रहता कि उनके पास कितनी राशि है। वे उतना सब कुछ दे देते और फिरभी लेनेवाली की पगत बनी रहती तो वे कह देते आज का खाता खत्म। कल देखा जायेगा। निराश कोई नही होता। उनके साथ लगे लोग उन्हे कहते भी कि जो माग ले गया है वह अभाव ग्रस्त नही था इस पर दुगड कहते, मेरे पास तो वह अभाव ग्रस्त बनकर आया सो वह अभाव ग्रस्त ही था बाकी उसकी वह जाने।

यह कलियुग है। अब वैसी भावना नही मिलती। देनेवाला अपना हित-चितन अधिक देखने लग गया है। जितना देगा उतना उसे मान-सम्मान, आदर-अभिनदन मिलेगा या नही, इसे तोल, झोखकर ही वह देता है। शिलापट्ट पर स्थायी रूप से नामाकन के लिए लोग अधिक पैसा निकालने लग गये है। वे पीढियो तक अपना नाम अमर देखना चाहते है। ऐसे लोग भी देखे गये जो होडा-होडी मे एक दूसरे को नीचा दिखाने के लिए बढ--चढकर घोषणाएँ कर वाहवाही लूट लेते है, पर बोली रकम नही देते है। दान देनेवाले उनके सम्मान मे होनेवाले समारोह, जन-भागीदारी, सम्मान का तौर तरीका आदि की बारीक जानकारी प्राप्त कर ही उसके अनुकूल दान-राशि देते है लेकिन जो असली दानदाता होते हे वे न किसी को भटकाते है और न स्वय ही भटकी खाते है।

ऐसे मे सुन्दरलालजी दुगड का श्रेष्ठत्व यह है कि वे उन उत्कृष्ट और श्रेष्ठ दानवीरो की कोटि लिये है जो देने पर भी कुछ नही देखते है और लेने पर मात्र शुभकाक्षा के अभिलाषी रहते है ताकि वे अपनी देय भावनाओ मे निरन्तरता बनाये रख सके। उनमे कभी कोई टूटत यानि अवरोधक न आने पाये।

किसी भी व्यक्ति का महत्वपूर्ण पहलू यही है कि वह अपनी शक्ति और सामर्थ्य को पहचानकर तदनुकूल आचरण करे। वह जाने कि उसे जो कुछ मिला है वह केवल उसी के लिए नही है, अन्यो की भी उसमे भागीदारी है, जिसे वह सुनिश्चित करे। मान्य श्रीवर दुगड़ ने वह सब सुनिश्चित कर रखा है और उन्हे उस परम शक्ति पर पूरा विश्वास है। वह जितना जो कुछ उन्हे दे रही है, वे मात्र माध्यम बनकर उसे एक स्थान से दूसरे स्थान हैडओवर कर रहे है। डाक पडी हुई है जो डाकिये की नही है। उसकी नौकरी ही यह है कि जिसके नाम की जो डाक है वह उसके पास पहुँचाये पर सभी एक से नही होते। कुछ परायो का अपना बना लेते हैं। कुछ परायो का पढ लेते है तो कुछ परायो का न स्वय रख पाते है न उनके पास ही पहुँचने देते है।

मै इसीलिए मनुष्यो मे निरन्तर श्रेष्ठ मनुष्य को ढूढता रहता हूँ। कई अच्छे कहे जानेवाले की शरण मे जाकर भी मै उनमे अच्छत्व नही प्राप्त कर सका इसीलिए लिखा भी--

रद्दी तो अखबार की भी काम की
आदमी रद्दी हुआ किस काम का

मै ईशवादी, आत्म परमात्मवादी हूँ। धरती खाली नहीं है। अनेक रहस्या से भरी हुई है। सुन्दरलालजी जैसे मनुज श्रेष्ठ और भी हो ताकि उनकी पात-पगत बढती रहे। ऐसी धरती की कोख स जो भी पैदा होगा वह सुन्दरलाल होकर निखरेगा। उनके पास जलाराम की झोली और नरमी की जो बैठक है वह सदैव रहस्यमय बनी रहकर सबका सलामत रख। कहना चाहूगा--

सुन्दर है सृष्टि, वृष्टि सुन्दर है।
मनुजो म सुन्दर ही सुन्दर।।

उड़ान

रचयिता–कवि युगराज जैन, मुवई

औग को सुधा वाँटकर जो, जी लेते स्वय गरल पीकर,
नरता उपकृत होती उनसे, वह शिवस्वरूप होते सुन्दर।
वो सुन्दरलालजी दुगड जैन जगत के भूषण है,
पर-व्यथा व्यथा निज की समझे, मानवता के आभूषण है।
सन् चोवन की एक सुवह का, दिनकर जव मुस्काता उदित हुआ,
श्री मोतीलालजी के आगन मे, वह तेज पुज अवतरित हुआ।
कुछ पूर्व जन्म के पुण्य फले, यह देवलोक का रत्न मिला,
कुछ पुण्य प्रवल था नरता का जो मानवता का पुष्प खिला।
दशनोक गाँव का यह अकुर, खुद भाग्य विधाता अपना है,
त्याग दिया निज सुख को जिसने, परहित जिसका सपना है।
हिम सा धवल उज्ज्वल मन है, व्यक्तित्व अद्भुत और खास,
अपनी कर्मठता से रचते, नित-नित नव-नूतन इतिहास।
प्रलम्व वाहु, मस्तिष्क प्रखर, ओज, अनोखा अनुपम है,
गुण, शील, विनय, विद्या उर मे, नाम रूप का सगम है।
विपदाओ से घिरा हुआ, कोई गर तेरे दर आता,
भर जाती है झोली उसकी, रिक्त नही वह नर जाता।
प्रेरक तेरा यह मूल मत्र, 'नेकी कर दरिया मे डाल',
'जैन जगत की धरा पर', तुम एक अनोखे वेमिसाल।
दमक रहा है तेज तुम्हारा, चमक रहा निष्काम कर्म,
नयन निरखते छवि तेरी, मानो तुझमे साक्षात धर्म।
सुन्दर! सौरभमय हुए आप, जव कुसुम कली एक मुस्कायी,
खिल उठा चमन चहके विहग, वनकर वहार जव वो छायी।
सुन्दर-कुसुम, कुसुम-सुन्दर, तुम एक दुजे के पूरक हो,
[illegible] दु खित, दलित पीडित नर के तुम दोनो एक जरुरत हो।
अपनापन देते हो विखेर, सान्निध्य, स्नेह, अद्भुत अनत,
आश्रय पाते है सरक्षण कवि, कलाकार, विद्वान, सत।
सतयुग के गौरव थे दधीचि, थे हरिश्चन्द्र त्रेतायुग के,
द्वापर के कर्ण महादानी, सुन्दर दुगड इस कलियुग के।
शिक्षा चिकित्सा, सेवा के, कई प्रकल्प सचालित है,
[illegible]शाला, [illegible] सघ, मदिर कई आपसे पालित है।
[illegible] सस्था हो या फिर अस्पताल, विद्यालय हो,
[illegible] तुमसे गौरव पाते है तुम ऐसा एक हिमालय हो।
[illegible] को तेरा, पर शब्द चित्र अर्पित मै करता,
[illegible] सत्य है मै करता।
[illegible] इस युग के दानवीर।
[illegible] कर्मवीर।

नानेश नगर दांता में आचार्य नानेश महाविद्यालय के उद्घाटन समारोह में उपस्थित श्री दुगड़जी

श्री बद्रीलाल जाट, एम.एल.ए के साथ उद्घाटन के अवसर पर श्रीमती एवं श्री सुन्दरलाल दुगड़

दांता में भूमि पूजन करते हुए दुगड़जी

दुगड़ विंग के उद्घाटन पर उपस्थित अतिथियों के साथ श्री दुगड़जी

नानेश रुपरेखा छात्रावास के दूसरी मंजिल के उद्घाटन समारोह पर श्री दुगड़जी, श्री सरदारमलजी अन्यान्य पदाधिकारीयों के साथ

निर्माण श्रृखला मे एक और वृद्धि, उद्घाटन करते हुए श्री दुगड़जी श्री कांकरियाजी एवं अन्यान्य

मैने दुगड वश को रोशन करनेवाले सोहनलालजी दुगड के बारे मे बहुत कुछ सुना और उदयपुर मे उनकी निस्पृह सादगी से परिपूर्ण सहजमना उदार छवि को देखा तो देखता ही रह गया। कहीं भी नहीं लगा कि उदारमना सोहनलालजी सुदानी हैं, श्रीवर हैं, सेवाधीश है। जलाराम की झोली की तरह ही उन्हे मालूम रहता कि उनके पास कितनी राशि है। वे उतना सब कुछ दे देते और फिरभी लेनेवाली की पगत बनी रहती तो वे कह देते आज का खाता खत्म। कल देखा जायेगा। निराश कोई नही होता। उनके साथ लगे लोग उन्हे कहते भी कि जो माग ले गया है वह अभाव ग्रस्त नही था इस पर दुगड कहते, मेरे पास तो वह अभाव ग्रस्त बनकर आया सो वह अभाव ग्रस्त ही था बाकी उसकी वह जाने।

यह कलियुग है। अब वैसी भावना नहीं मिलती। देनेवाला अपना हित-चितन अधिक देखने लग गया है। जितना देगा उतना उसे मान-सम्मान, आदर-अभिनदन मिलेगा या नहीं, इसे तोल, झोखकर ही वह देता है। शिलापट्ट पर स्थायी रूप से नामाकन के लिए लोग अधिक पैसा निकालने लग गये है। वे पीढियो तक अपना नाम अमर देखना चाहते हैं। ऐसे लोग भी देखे गये जो होडा-होडी मे एक दूसरे को नीचा दिखाने के लिए बढ–चढकर घोषणाएँ कर वाहवाही लूट लेते है, पर बोली रकम नहीं देते है। दान देनेवाले उनके सम्मान मे होनेवाले समारोह, जन-भागीदारी, सम्मान का तौर तरीका आदि की बारीक जानकारी प्राप्त कर ही उसके अनुकूल दान-राशि देते है लेकिन जो असली दानदाता होते हे वे न किसी को भटकाते है और न स्वय ही भटकी खाते है।

ऐसे मे सुन्दरलालजी दुगड का श्रेष्ठत्व यह है कि वे उन उत्कृष्ट और श्रेष्ठ दानवीरो की कोटि लिये है जो देने पर भी कुछ नही देखते है और लेने पर मात्र शुभकाक्षा के अभिलाषी रहते है ताकि वे अपनी देय भावनाओ मे निरन्तरता बनाये रख सके। उनमे कभी कोई टूटत यानि अवरोधक न आने पाये।

किसी भी व्यक्ति का महत्वपूर्ण पहलू यही है कि वह अपनी शक्ति और सामर्थ्य को पहचानकर तद्नुकूल आचरण करे। वह जाने कि उसे जो कुछ मिला है वह केवल उसी के लिए नही है, अन्यो की भी उसमे भागीदारी है, जिसे वह सुनिश्चित करे। मान्य श्रीवर दुगड ने वह सब सुनिश्चित कर रखा है और उन्हे उस परम शक्ति पर पूरा विश्वास है। वह जितना जो कुछ उन्हे दे रही है, वे मात्र माध्यम बनकर उसे एक स्थान से दूसरे स्थान हैडओवर कर रहे है। डाक पडी हुई है जो डाकिये की नही है। उसकी नौकरी ही यह है कि जिसके नाम की जो डाक है वह उसके पास पहुँचाये पर सभी एक से नही होते। कुछ परायो का अपना बना लेते है। कुछ परायो का पढ लेते है तो कुछ परायो का न स्वय रख पाते है न उनके पास ही पहुँचने देते हैं।

मैं इसीलिए मनुष्यो मे निरन्तर श्रेष्ठ मनुष्य को ढूढता रहता हूँ। कई अच्छे कहे जानेवाले की शरण मे जाकर भी मै उनमे अच्छत्व नही प्राप्त कर सका इसीलिए लिखा भी–

रद्दी तो अखबार की भी काम की
आदमी रद्दी हुआ किस कम का

मै ईशवादी, आत्म परमात्मवादी हूँ। धरती खाली नहीं है। अनेक रहस्यो से भरी हुई है। सुन्दरलालजी जैसे मनुज श्रेष्ठ और भी हो ताकि उनकी पात-पगत बढती रहे। ऐसी धरती की कोख से जो भी पैदा होगा वह सुन्दरलाल होकर निखरेगा। उनके पास जलाराम की झोली और नरसी की जो वैठक है वह सदैव रहस्यमय वनी रहकर सवको सलामत रख। कहना चाहूगा–

सुन्दर है सृष्टि, वृष्टि सुन्दर है।
मनुजो मे सुन्दर ही सुन्दर।।

उड़ान

रचयिता–कवि युगराज जैन, मुबई

औरों को सुधा बाँटकर जो, जी लेते स्वय गरल पीकर,
नरता उपकृत होती उनसे, वह शिवस्वरूप होते सुन्दर।
वो सुन्दरलालजी दुगड जैन जगत के भूषण है,
पर-व्यथा व्यथा निज की समझे, मानवता के आभूषण है।
सन् चौवन की एक सुवह का, दिनकर जव मुस्काता उदित हुआ,
श्री मोतीलालजी के आगन मे, वह तेज पुज अवतरित हुआ।
कुछ पूर्व जन्म के पुण्य फले, यह देवलोक का रत्न मिला,
कुछ पुण्य प्रवल था नरता का जो मानवता का पुष्प खिला।
देशनोक गाँव का यह अकुर, खुद भाग्य विधाता अपना है,
त्याग दिया निज सुख को जिसने, परहित जिसका सपना है।
हिम सा धवल उज्ज्वल मन है, व्यक्तित्व अद्भुत और खास,
अपनी कर्मठता से रचते, नित-नित नव-नूतन इतिहास।
प्रलम्ब वाहु, मस्तिष्क प्रखर, ओज, अनोखा अनुपम है,
गुण, शील, विनय, विद्या उर मे, नाम रूप का सगम है।
विपदाओ से घिरा हुआ, कोई गर तेरे दर आता,
भर जाती है झोली उसकी, रिक्त नही वह नर जाता।
प्रेरक तेरा यह मूल मत्र, 'नेकी कर दरिया मे डाल',
'जैन जगत की धरा पर', तुम एक अनोखे वेमिसाल।
दमक रहा है तेज तुम्हारा, चमक रहा निष्काम कर्म,
नयन निरखते छवि तेरी, मानो तुझमे साक्षात धर्म।
सुन्दर! सौरभमय हुए आप, जव कुसुम कली एक मुस्कायी,
खिल उठा चमन चहके विहग, बनकर वहार जब वो छायी।
सुन्दर-कुसुम, कुसुम-सुन्दर, तुम एक दुजे के पूरक हो,
हर दु खित, दलित पीडित नर के तुम दोनो एक जरुरत हो।
अपनापन देते हो विखेर, सान्निध्य, स्नेह, अद्भुत अनत,
आश्रय पाते हैं सरक्षण कवि, कलाकार, विद्वान, सत।
सतयुग के गौरव थे दधीचि, थे हरिश्चन्द्र त्रेतायुग के,
द्वापर के कर्ण महादानी, सुन्दर दुगड इस कलियुग के।
शिक्षा, चिकित्सा, सेवा के, कई प्रकल्प सचालित हैं,
गौशाला, नागरिक सघ, मदिर कई आपसे पालित है।
सामाजिक सस्था हो या फिर अस्पताल, विद्यालय हो,
सब तुमसे गौरव पाते है तुम ऐसा एक हिमालय हो।
अभिनन्दन करने को तेरा, यह शब्द चित्र अर्पित मै करता,
सुन्दर, सुन्दरतर से सुन्दरतम यह अटल सत्य है मै कहता।
युगराज नमन कर रहा आज, हे इस युग के दानवीर!
स्नेह रसो की वर्षा करा, हे कर्मयोग के कर्मवीर।
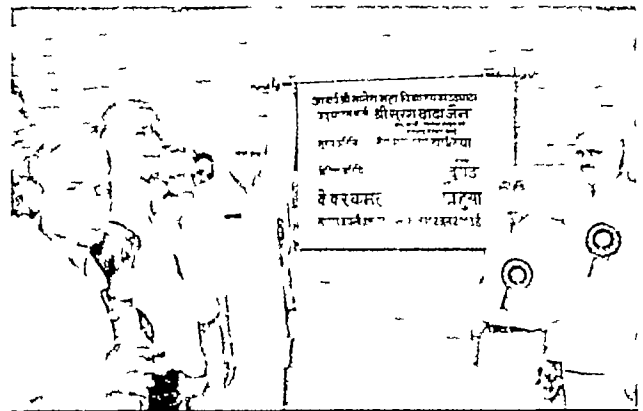
नानेश नगर दांता में आचार्य नानेश महाविद्यालय के उद्घाटन समारोह में उपस्थित श्री दुगड़जी

श्री बद्रीलाल जाट, एम.एल.ए के साथ उद्घाटन के अवसर पर श्रीमती एवं श्री सुन्दरलाल दुगड़

दांता में भूमि पूजन करते हुए दुगड़जी
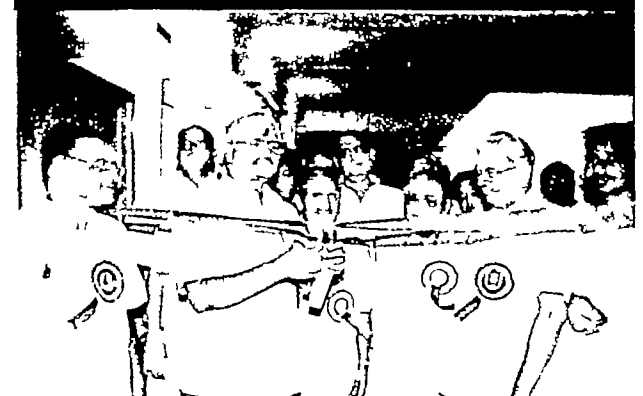
लछवाड़ के उद्घाटन पर श्री दुगड़जी के साथ श्री माणकचंदजी सेठिया

कानबन में समता भवन का शिलान्यास करते हुए

निर्माण शृंखला में दुगड़जी द्वारा निर्मित चितौड़गढ़में रुपरेखा हॉल

निर्माण शृंखला में दुगड़जी द्वारा निर्मित कानबन में समता भवन का शिलान्यास

श्री जैन हॉस्पीटल में आई.टी.यु कार्य का उद्घाटन

कर्म कौशल के धनी : सुन्दरलाल दुगड़

डॉ आदर्श सक्सेना
बीकानेर

कुछ वस्तुएँ होती है जो अल्प मे भी प्रभूत, स्पर्श मे भी प्रभावी और सम्पर्क मे भी घनिष्ठ होती है। अमृत अल्प मे भी प्रभूत, पारस स्पर्श मे भी प्रभावी और अनल सम्पर्क मे भी घनिष्ठ है। चन्दन की सुवास, रवि के ताप और जल की तरलता मे क्या अल्प और क्या दीर्घ ? मेरा सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री सुन्दरलालजी दुगड से कुछ ऐसा ही परिचय है।

जब १९९३ के आचार्य श्री नानेश के देशनोक चातुर्मास के दौरान उनसे प्रथम परिचय का सौभाग्य मुझे मिला था तब मैं अवाक् रह गया था। इतना बडा नाम और इतना छोटा दर्शन।। न कही कोई तडक-भडक न कोई अहकार भाव। एक अत्यत प्रतिष्ठित, अत्यत श्रीसम्पन्न पुरुषार्थी नरपुगव की ऐसी सरल छवि। वह आदमी किसी भी रूप मे बड़ा लगता ही नहीं था। मै अभिभूत था, विश्वास करना कठिन हो रहा था पर अनुभव के सत्य को नकारा भी तो नहीं जा सकता था। उस अल्प मे विराट् के दर्शन तो मुझे शनै शनै ही हुए थे।

चातुर्मास आचार्य श्री नानेश का था तो स्वत ही उनकी सरलता, सादगी, निस्पृहता और गुणगरिमा की ओर ध्यान चला गया था। वह आचार्यश्री से सम्पर्क का भी मेरा प्रथम अनुभव था। तब देखी थी एक ओर साधुत्व की चमत्कारिक महिमा और दूसरी ओर सम्पन्नता की निस्सगता। साधुता के चरणो मे समर्पित सम्पन्नता धन्य हो रही थी।

आखिर सम्पन्नता है क्या ? "जिनको कछू न चाहिये, वे शाहन के शाह।" या जो सब कुछ देता रहे फिर भी सकोचपूर्वक स्वय को सेवक के पद पर आसीन कर कहे–

देनहार कोऊ और है, देवत सो दिन रैन ।
लोग भरम हम पै करै, तासो नीचे नैन ।।

सकोच मे कितना विस्तार हो सकता है यह मैंने श्री सुन्दरलाल दुगड से सम्पर्क मे आने के बाद जाना। जिनमे मैंने चाह को दान और दान को चाह मे वदल देने की अनोखी निपुणता देखी। उस लघुत्तम छवि मे छिपे वडप्पन को तव मैंने पहचाना। बडा कौन होता है ? बड़ा वह नही होता जो आपको अनुभव कराये कि वह कितना महत्त्वपूर्ण अथवा बड़ा है। बडा वह होता है जो आपको अनुभव कराये कि आप कितने महत्त्वपूर्ण एव वडे है। वडप्पन तो लाग देते है, उसका दावा नही किया जा सकता। वह तो भावनाओ द्वारा उडेला जाता है, वैभव क प्रदर्शन द्वारा आयोजित नहीं किया जा सकता।

राजस्थान वीर धरा है, धर्म धरा है। यहाँ की जननी से अपेक्षा की जाती है–

जननी जणे तो पूत जण, कै दाता कै शूर।
नातर रहिजे बाँझडी, मती गँवावे नूर।।

प्रताप की परम्परा और भामाशाह की परम्परा, दोनो यहाँ चल रही है। भामाशाह की परम्परा को आगे बढ़ाने का काम जिन दानवीरो ने किया है उनमे श्री सुन्दरलाल दुगड गौरव के साथ स्थापित है। देश के पश्चिमी कोने का एक दाता धुर पूर्व कालकाता के रहीम की इस कामना को सार्थक कर रहा है–

तब लगि ही जीवो भलो, दीवो परै न धीम ।
बिन दीवो जीवो जगत, मोहि न रुचै रहीम ।।

यह प्रवृत्ति ही श्री सुन्दरलाल दुगड को निष्काम कर्म का कर्ता वनाती है। इस प्रवृत्ति का उत्स भी उसी निस्पृहता मे छिपा हुआ है जो कर्म को अकर्म बना कर, उसका परिष्कार कर उसे त्याग की कोटि मे पहुँचा देती है। गीता मे ऐसे कर्म की मीमासा करते हुए भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन के समक्ष इसी कर्म तत्त्व की विवेचना की थी जो अशुभ से मुक्ति दिला कर शुभ मे परिचालित करती है। उन्होने कहा था–

नेहिभिक्रमना शोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते ।
स्वल्पमस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात ।।

गीता २/४०

कर्मयोगी के इस रूप के श्री सुन्दरलाल दुगड मे जो दर्शन होते है उसके प्रमाण वे सस्थान है जो शिक्षा-सेवा-साधना के विविध आयामो से सवधित है अथवा धर्म, देशना और प्रशिक्षण जैसी गतिविधियो से जुडे हुए है। निशक्तजनो, दरिद्रजनो, अभावग्रस्त लोगो तथा लाचार और रुग्ण लोगो की विविध रूपो मे निस्पृह भाव से सेवा करना, प्रमाद से मुक्त रहकर सेवा करना, प्रचार-प्रसार या मान-सम्मान की कामना से रहित होकर सेवा करना, मनुष्य का कर्त्तव्य है–धर्म है। जो ऐसा धर्म करते हैं उनके लिये धार्मिक क्रियाओ और आचारो की अलग से पालन की आवश्यकता नही रहती क्योंकि धर्म आचार मे समाया होता है, व्यवहार मे प्रकट होता है और चित्तवृत्ति से उत्पन्न होता है – शेष तो धर्म का पाखण्ड होता है। श्री सुन्दरलाल दुगड की चित्तवृत्ति मे समाया यह धर्म गुरु-सेवा, सघ-सेवा, स्वधर्मी सेवा, धर्म स्थापना और धर्म उन्नयन जैसे कार्यो मे प्रकट होते देखा जा सकता है। मै समझ नही पा रहा हूँ कि धर्म के इस प्रकार कर्म मे रूपान्तरण के कितने और कितनी प्रकार के उदाहरण प्रस्तुत करूँ। स्मृति मे ऐसी घटनाएँ भी कौध रही है जो मानवमात्र के प्रति प्रेम के उन रूपो का दिग्दर्शन कराती हैं जो कोई महामानव ही अपने आचरण द्वारा प्रकट कर सकता है।

श्री दुगड महामानव हैं, यह मैं नही कहूँगा–यह कहना उन्हे अपने आपसे और अपनो से दूर कर देना होगा क्योंकि महामानव सामान्य मानवो की पकड की परिधि से वाहर होते है और इस कारण कई वार उनके लिये प्रेरणास्रोत नही वन पाते। परन्तु श्री दुगड मानवो मे महान् होते हुए भी सवके सबधो की परिधि का अतिक्रमण नही करते। सबके बीच, सबके जैसे बनकर रहते हुए भी अपनी उपस्थिति ऐसी रखते हैं जैसी गुथे हुए हार की मध्यमणि की होती है जो अपनी आभा से गुँथे हुए मोतियो की छवि को द्विगुणित कर देती है। ऐसा व्यक्तित्व किसी विरल मनुष्य का ही होता है और श्री सुन्दरलाल ऐसी विरलता से सम्पन्न है, उसकी रक्षा हेतु सजग हैं, उसमे सक्षम और सफल भी है। यह विरलता उनके व्यक्तित्व की पहिचान करा देती है।

तुलसी ने 'रामचरित मानस' मे लिखा है–

कीरति, भणिति, भूति भल सोई ।
सुरसरि सम सब कह हित होई ।।

श्री दुगड मे इस 'भलता' का सफल सयोग है। उनकी कीर्ति, उनकी यशगाथा और उनकी सम्पदा, सभी का इस रूप मे हित करने वाली है कि वे उन्हे सेवा के मार्ग का अनुसरण करने और लोक-हितकारी कार्य करने की सतत प्रेरणा देती है। मै उन कार्यो अथवा उन गतिविधियो के उदाहरण देना अपेक्षित नहीं समझता जो उनकी प्रेरणा, उनके मार्गदर्शन और उनके व्यक्तित्व के प्रभाव स्वरूप फलदायक बन कर समाज के हित का कारण बनी है।
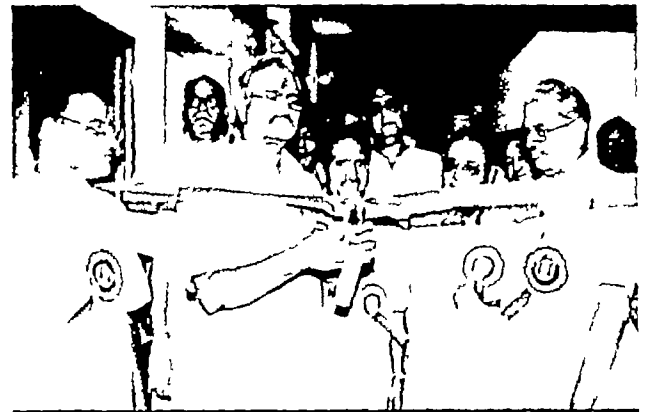
श्री दुगड़जी द्वारा निर्मित लछबाड़ में आत्मवल्लभ चिकित्सालय के OPD का उद्घाटन करते हुए

आचार्य नानेश सेवा संस्थान आदरणीय दुगड़जी के अर्थ सहयोग से स्थापित

बोधना होम में कुसुमदेवी दुगड़ ब्लॉक का निर्माण सुन्दरलालजी की अनुपम कृति

श्री दुगड़जी द्वारा निर्मित रूपरेखा हॉल कालोड़ का उद्घाटन
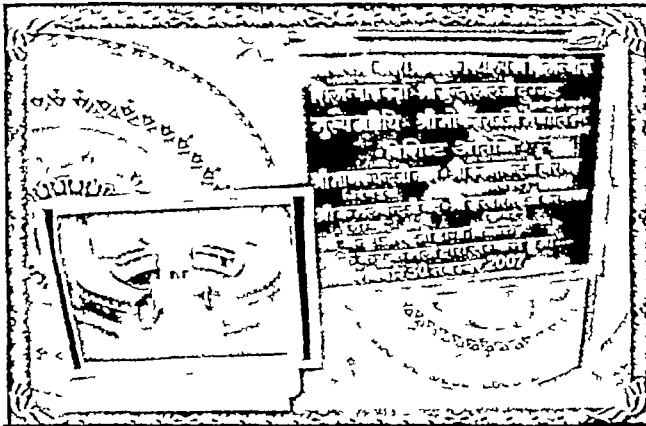
श्री सुन्दरलालजी दुगड़ द्वारा निर्मित आचार्य श्री नानेश प्राथमिक विद्यालय, दांता

कुसुमदेवी दुगड़ OPD हॉल
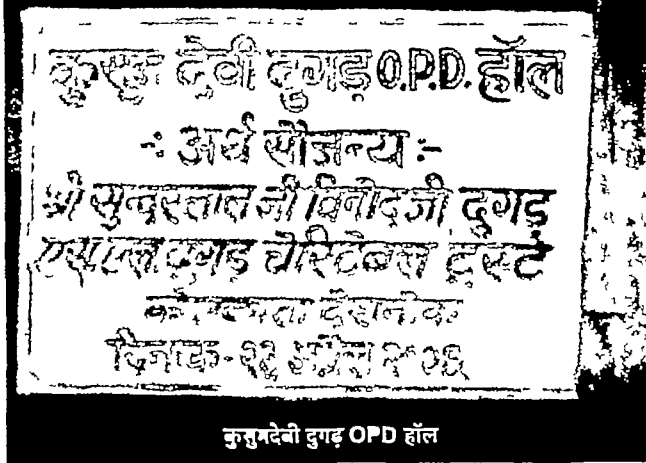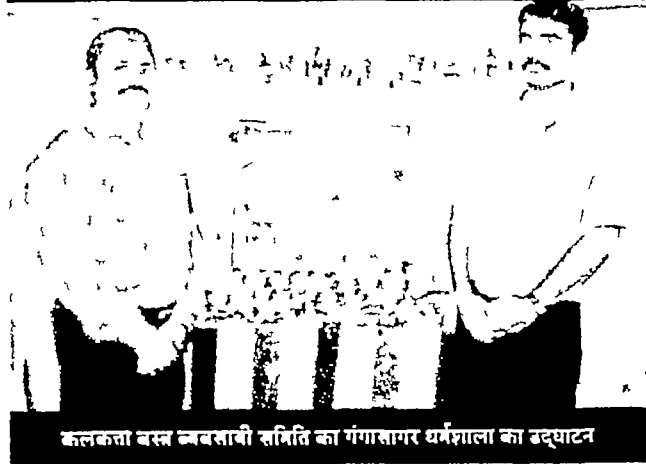
कलकत्ता वस्त्र व्यवसायी समिति का गंगासागर धर्मशाला का उद्‌घाटन
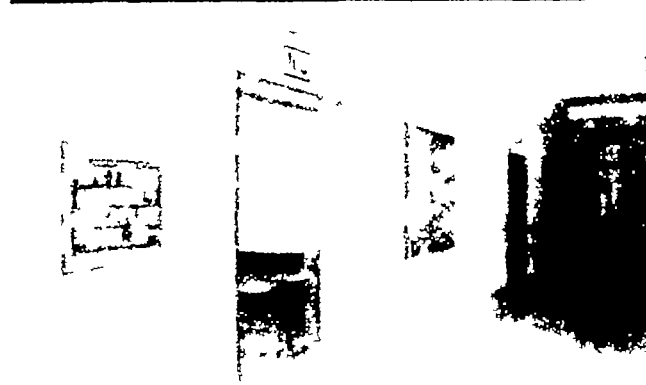
धर्म का आचरित रूप किसी के कार्यों मे प्रकट हो और वह उनसे दूर ऐसे खडा रहे जैसे कोई इन्द्रजालिक इन्द्रजाल के करतब दिखाता, निर्लिप्त बना खडा रहता है, यह बडी बात है। मै जितनी बार भी श्री दुगड से मिला उनकी इस इन्द्रजालिक छवि ने मुझे अभिभूत ही किया।

श्री सुन्दरलाल व्यवसायी है – मनुष्य को अस्तित्व-रक्षा के लिए कुछ करना तो पडता ही है, पर व्यवसाय साधु-वृत्ति से किया जाय, यह कठिन होता है। आज जब यह व्यवसाय नीति बन गई है कि व्यवसाय मे सब जायज है, व्यवसाय पर धर्म के मूल्य लागू नही होते, जब लाभ कमाना ही उद्देश्य होता है, तब कृत्य-अकृत्य की विवेचना कौन करेगा ? पर यही तो सच्चे व्यवसायी की पहिचान होती है। घर भर लेने का काम तो कोई भी व्यवसायी कर लेता है, व्यवसाय इसीलिये किये जाते है, व्यवसायी घर भरते भी है, देश मे इसीलिये करोडपतियो की गणना गणनीय नही रही है, पर ऐसे भी व्यवसायी होते है जो अपनी सम्पन्नता को बाँटते है, जो धन के 'ट्रस्टी' बनते है और 'ट्रस्ट' (विश्वास) की रक्षा करते हुए उसका सचालन करते है। श्री सुन्दरलाल दुगड ऐसे ही ट्रस्टी है और उनकी ट्रस्टो से कितने लोग और सस्थान लाभान्वित हो रहे हैं, कह पाना सभव नही है क्योंकि दान तो बोया गया दाना होता है कई गुना होकर अपना प्रभाव दिखाता है।

सुजन, आत्मप्रेरित व्यवसायी, धर्मनिष्ठ श्रावक तथा कोमल हदय सामाजिक के रूप मे श्री सुन्दरलाल की अपनी सुन्दर छवि है। ऐसी छवि वाले जितने लोग विषैली अर्थनीति और अर्थोपार्जन के हीन साधनो को त्यागे हुए इस मृत्युलोक को अपनी प्रखर चारित्रिक ऊर्जा से ऊर्जावान बनाए हुए हैं, उनमे निश्चय ही श्री सुन्दरलाल दुगड का अपना विशिष्ट स्थान है। सौभाग्य से ही ऐसे नरश्रेष्ठो से परिचय होता है जो हदय तक अपनी आत्मीयता की छाप उतार देते है। ऐसे पुरुष निश्चय ही स्पर्शमणि होते है, प्रज्ज्वलित दीप होते है, पुण्य की सुवास होते हैं और शीतल चन्द्र कौमुदी होते है। अपनी चुम्बकीय शक्ति से अपने प्रभाव क्षेत्र को आकर्षित करने की वे क्षमता रखते है। ऐसे निस्पृह व्यक्ति सच्चे कर्मयोगी होते है। कर्म के ऐसे ही स्वरूप को स्पष्ट करते हुए भगवान कृष्ण ने अर्जुन से कहा था–

कर्मण्यकर्म य पश्चेदकर्माणि च कर्म य ।
स बुद्धिमान्मनुष्येषु स युक्त कृतसन्न कर्म कृत् ।।

श्रीमद्‌भागवद् गीता ४/१८

जो पुरुष कर्म मे अर्थात् अहकार रहित की हुई सम्पूर्ण चेष्टाओ मे अकर्म अर्थात् वास्तव म उनका न होनापना देखे और जो पुरुष अकर्म मे अर्थात् अज्ञानी पुरुष द्वारा की हुई सम्पूर्ण क्रियाओ के त्याग मे भी, कर्म को अर्थात् त्यागरूप क्रिया को देखे, वह पुरुष मनुष्या म वुद्धिमान है और वह योगी सम्पूर्ण कर्मो का करने वाला है।

कर्म-अकर्म, साधु-श्रावक, धनी-अकिचन, स्वामी-सेवक और दाता-याचक की सीमाओ मे आवद्ध न रहकर तथा उनका अतिक्रमण करके उनके बीच सामजस्य उत्पन्न करना समत्व योग द्वारा ही सभव है। समत्व वुद्धियुक्त पुरुष पुण्य-पाप दोनो मे लिप्तायमान नहीं होता और कर्म-वधन से छूटने का मार्ग प्रशस्त करता है–

वुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृत दुष्कृत ।
तस्माद्योगाय युज्यस्व योग कर्मसु कौशलम ।।

– श्रीमद् भगवद्‌गीता २/५०

कर्म कौशल के ऐसे ही धनी कृति की छवि मैंने दुगड श्री सुन्दरलाल मे देखी है।

माई एहड़ा पूत जण.....

डॉ (कर्नल) दलपतसिह बया 'श्रेयस'
ई-२६, भूपालपुरा, उदयपुर (राज)

दान की महिमा अनत है। जो दान निरभिमानता व विनम्रता से दिया जाता है, विना किसी लिप्सा के दिया जाता है, नाम की आकाक्षा के विना दिया जाता है उसकी महिमा अनतानत है।

भारतीय वाङ्मय मे निरभिमान दानशीलता के मूर्तिमत उदाहरण के रूप मे नवाव अब्दुर्रहीम खानखाना का उल्लेख मिलता है। कहा जाता है कि ऐसे ओढरदानी होते हुवे भी कि कभी कोई याचक उनके द्वार से निराश नही जाता था, उनकी यह विशेषता थी कि वे अत्यत मिष्टभाषी, विनम्र, निरभिमानी व लज्जालु स्वभाव के थे। दान देते हुवे भी उनकी निगाहे सदा नीची ही रहती थीं। वे कभी किसी याचक की ओर देखकर दान नही देते थे। उनकी इस आदत से विस्मित होकर टोडरमलजी ने इसका जिक्र गोस्वामी तुलसीदासजी से किया तथा पूछा कि इसका क्या कारण हो सकता है। गोस्वामीजी ने कहा कि इसका कारण तो खानखानाजी ही वता सकते है तथा उन्होने उन्हे एक दोहा लिखकर दिया और कहा कि वे उसे लेजाकर खानखानाजी को दे दे तो उन्हे अपना जवाव मिल जायेगा। वह दोहा था—

"सीखे कहाँ नवाव जू, ऐसी देनी दैन ?।
ज्यों-ज्यो कर उँचो चढै, त्यो-त्यो नीचे नैन।।"

जव टोडरमलजी ने यह इस दोहे वाला पत्र नवाव खानखाना को दिया तो उन्होने तुरत उसके जवाब में यह दोहा लिखकर दे दिया –

"देनहार कोऊ और है, देवत है दिन-रैन ।
लोग भरम मो पै करे, ताते नीचे नैन ।।"

कैसी विलक्षण विनम्रता, कैसी निराली निरभिमानता, कैसा भोला शर्मीलापन था उस दीनदयाल दातार में ?

प्रश्न है कि क्या आज के इस भौतिकवादी युग मे भी, जहाँ दान देने का भी व्यवसायीकरण हो गया लगता है, जहाँ दान को भी अपने प्रतिष्ठानो के प्रचार-प्रसार व विज्ञापन का साधन बना लिया गया है, जहाँ दान के साथ भव्यातिभव्य समारोहो का आयोजन जुड गया है, तथा जहाँ दान के साथ अपनी आगे-पीछे की सात पीढियो के नाम शिलापट्टो पर लगवाने की मानसिकता वनती जा रही है, ऐसे विनम्र व निरभिमानी दाता हो सकते है ?

इसे मेरा सौभाग्य ही कहना चाहिये कि ऐसे विकट कलिकाल मे भी मेरा परिचय एक ऐसे ही विनम्र, लज्जालु व निरभिमानी दानशील व्यक्तित्व से हो सका है जो प्रतिवर्ष लाखो-करोडो का दान ऐसी ही शैली मे करते है तथा अकड और अभिमान तो उन्हे छू भी नही गए है।

कलकत्ता के दानवीर श्रेष्ठिवर्य श्री सुन्दरलालजी दुगड एक ऐसा ही उदार दानी है जो सघ व

दांता में हॉस्पीटल कॉलोनी

एक श्री-प्रायमरी स्कूल, छोटे शिशुओं के जीवन का प्रारम्भ श्री दुगड़जी द्वारा निर्मित

श्री दुगड़जी द्वारा निर्मित मंगलवाड़ चौराहा जिला चितौड़गढ़में रूपरेखा प्रवचन हॉल
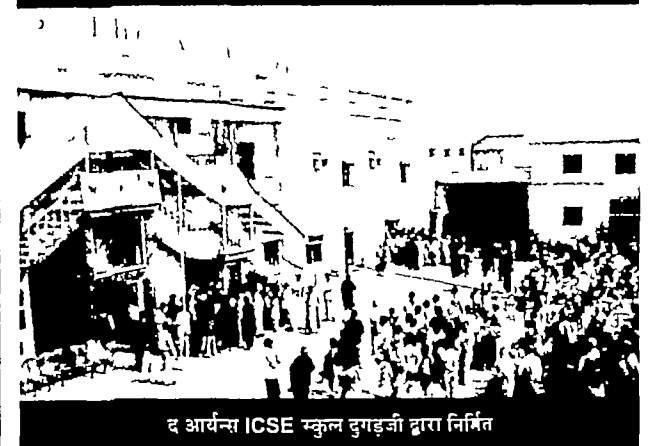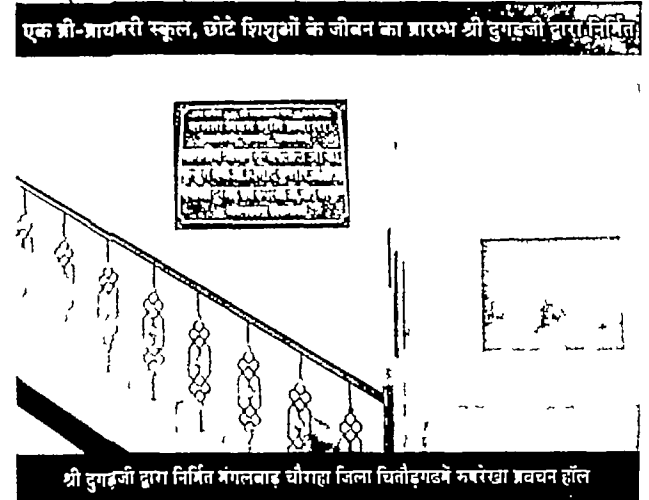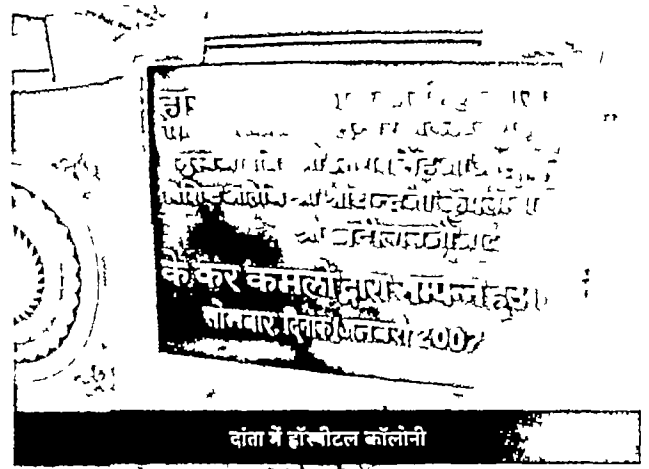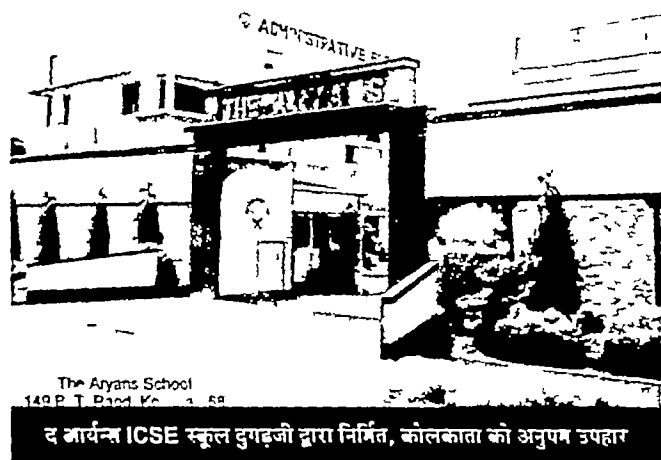
द आर्यन्स ICSE स्कूल दुगड़जी द्वारा निर्मित

द आर्यन्स ICSE स्कूल दुगड़जी द्वारा निर्मित, कोलकाता को अनुपम उपहार

दुगड़जी की अनोखी जीवनोपयोगी रचना, पुगल रोड बीकानेर में सरकारी सहभागिता योजना में २५००० स्कूल के बच्चों का मिड डे मिल बनाने का भोजनशाला का निर्माण
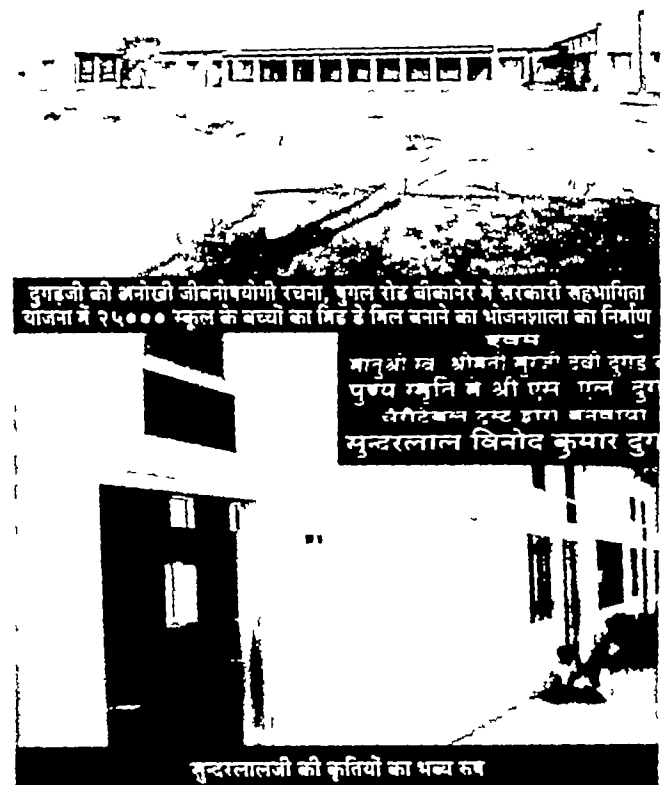
सुन्दरलालजी की कृतियों का भव्य रूप

[illegible] कन्या विद्यालय देशनोक मे दुगड़जी द्वारा निर्मित हॉल

समाज के अनेक उपक्रमो के निर्माण से लेकर सचालन तक के लिये तो दान देते ही है, अनेक असहाय जन-परिवार भी उनकी सहायता से ससम्मान अपना जीवनयापन करते है। अपनी युवावस्था मे ही 'युवा उद्योग-रत्न' जैसे प्रतिष्ठित सम्मान से सम्मानित श्री दुगड कलकत्ता के प्रमुख उद्योगपतियो मे अपना विशिष्ट स्थान रखते है तथा आज उनके उपक्रम भवन-निर्माण, जूट-मिलो आदि उद्योगो की अग्रिम पक्ति मे खडे है।

हुक्मगच्छ व श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ के सुदृढस्तम्भ श्री सुन्दरलालजी दुगड की उदार दानशीलता व सक्रिय सहयोग से सघ की 'समता शिक्षा-सेवा सस्थान', 'श्री राम गोशाला', 'आगम अहिंसा-समता व प्राकृत सस्थान' जैसी अनेक सस्थाएँ अपने कार्यो मे आशातीत प्रगति करते हुए आगे बढ रही है। यही नहीं, कलकत्ता व देश-विदेश के अन्य क्षेत्रो मे भी अनेक शैक्षणिक, चिकित्सकीय व सेवा-सहायता सस्थान उनके द्वारा प्रदत्त उदार सहयोग से सक्रिय व सेवारत है। इतना देते हुए भी वे नवाब अब्दुर रहीम खानखाना की भाँति ही विनम्रता, सौम्यता व मृदुभाषिता की प्रतिमूर्ति है। सबको स्नेह व सम्मान देना उनके व्यक्तित्व की विशेषता है। अपने उदार हृदय से वे समस्त जगत के प्रति आत्मभाव रखते हुए जैसे 'उदार चरिताना तु वसुधैव कुटुम्बकम्' को ही चरितार्थ करते प्रतीत होते है।

दया को श्रावक-धर्म का उत्कर्ष मानते हुए 'रयणसार' मे कहा गया है, ''दाण मुक्ख सावयधम्म।'' श्री सुन्दरलालजी दुगड अपनी उदारता से अपने सुश्रावक होने का यथेष्ठ परिचय देते है।

स्वामी कार्तिकिय भी दान की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए कहते हैं कि जो मानव अपनी वर्द्धमान लक्ष्मी को सदा धर्मकार्यो मे देता है, उसी का लक्ष्मीपुत्र होना सफल है तथा वही लोक मे यश का भागी होता है। यथा –

> ''जो वड्ढमाण-लच्छि अणवरय देदि धम्म-कज्जेसु ।
> सो पडिएहि थुव्वदि तस्स वि सफला हवे लच्छी ।।''
>
> – कार्तिकियानुप्रेक्षा, १९

किसी कवि ने ठीक ही कहा है –

> ''माई एहडा पूत जण, के दाता के शूर ।
> नहीं तो रहिजे बाझडी, मती गँवाजे नूर ।।''

इस दृष्टि से श्री दुगड के माता-पिता स्व श्रीमती सूरजदेवीजी तथा स्व श्री मोतीलालजी सा दुगड अपने दानशूर लाडले पर गर्व करते हुए स्वर्ग से भी उस अपने आशीष मे सिंचित करते होगे।

सघ, समाज और कलकत्ता को भी उन पर नाज है।

रत्नप्रभा का प्रमुख रत्न :
एक निरपेक्ष दृष्टि

कन्हैयालाल भूरा
वीरसघ धर्मप्रचारक व राष्ट्रीय सयोजक व्यसन मुक्ति, कुचविहार

भगवान महावीर ने फरमाया–''माणुस्स खु सुदुल्लह'' – मनुष्य जन्म मिलना अत्यन्त कठिन है। ससार मे आत्माएँ क्रमश विनाश को प्राप्त करते-करते मनुष्य भव को प्राप्त करती हैं। ''ते ओढाणई देवे पिहेज्जा माणुस्स भव। आरिएखेत्ते जम्म सुकुल पच्चायति'' देवता भी तीन वातो को चाहते है– मनुष्य जीवन, आर्य क्षेत्र मे जन्म और श्रेष्ठ कुल की प्राप्ति। श्री रामचरित मानस मे भी लिखा है–''वडे भाग्य मानुष तनु पाना। सुर दुर्लभ सद् ग्रन्थहिं गावा।।'' आगे और लिखा है–

''नर तन सम नहिं कवनिउ देही । जीव चराचर जायत तेही।।
नरक स्वर्ग अपवर्ग निसेनी । ग्यान विराग भगति सुभ देनी।।''

मनुष्य शरीर के समान कोई शरीर नही है। चर-अचर सभी जीव इसकी याचना करते है। यह मनुष्य शरीर नरक-स्वर्ग और मोक्ष की सीढी है तथा कल्याणकारी ज्ञान, वैराग्य और भक्ति को देनेवाली है।

ऐसे दुर्लभ मनुष्य जन्म को पानेवाले निश्चय ही सौभाग्यशाली होते है। पर इस मनुष्य भव को ''सुनिरुपित'' (अच्छी तरह निर्णय कर) ''सुनिश्चय'' (दृढनिश्चय) से ''सुधर्मी'' (धर्म परायण) वही वन सकता है जो ''सुजात'' (उत्तम कुल मे उत्पन्न) है। ऐसा ही सौभाग्य प्राप्तक है हमारा सुन्दर (श्रेष्ठ, वढिया, अच्छा, मनोहर) जो यथा नाम तथा गुण को चरितार्थ कर अपने आत्मवल से वन गया ''आज का–श्री सुन्दरलाल दुगड''।

जो ''सुदर्शन'' (सुदर) है, जिसका ''सुनाम'' (यश कीर्ति) ''सुदीप्त'' (अधिक प्रकाशवाली) है एव ''सुतार'' (अत्यन्त उज्ज्वल) है।

पिता मोती (मोतीलालजी दुगड) की आभा लिये माँ ''सूरज'' (सूरजदेवी दुगड) से मार्तण्ड की तेजस्विता व ओज लिये उनकी कुक्षि से जन्मे उस नन्हे वालक ने अपना नाम 'सुन्दर' सार्थक कर दिया।

अपने अध्यवसाय, अथक लगन व परिश्रम से ''पुरुषार्थ से भाग्यवश मे होता है'' वह सव कुछ कर दिखाया जो साधारणत सभव नही होता। जाज्वल्यमान नक्षत्र की तरह शुभ कर्मो के उदय से ''शालिभद्र'' की शास्त्रीय कहानी को चरितार्थ कर दिया।

शुभ के उदय से मनुष्य को जव लक्ष्मी (धन, सपत्ति, प्रेम) प्राप्ति होती है वह उससे पुण्य या पाप कोई एक का बन्ध अवश्य करता है क्योंकि ज्ञानियो ने कहा है– धन की गति तीन है–भोग, दान और नाश। अति प्रबल पुण्योदय से इन तीन गतियो मे सर्वोपरि गति ''दान'' को चयनित कर ''दानवीर'' – ''भामाशाह'' की पदवी जन-जन के मुँह से आपके लिये उच्चारित होती है। जिस व्यक्ति ने कभी ''ना'' कहना सीखा नहीं, उनके पास जो गया, उसे
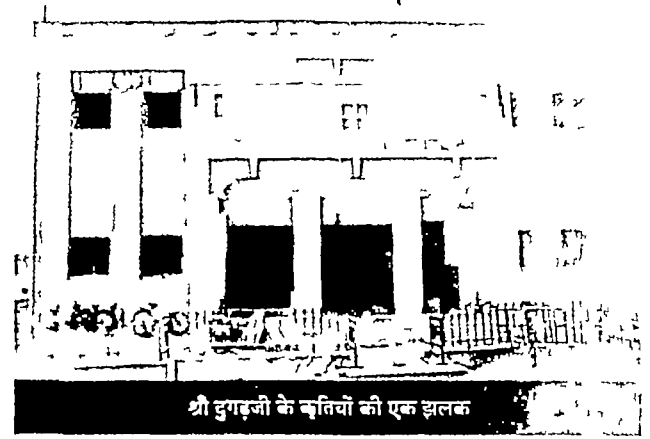
श्री दुगड़जी के कृतियों की एक झलक

एम.एल दुगड़ चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा भेंट, कम्प्यूटर कक्ष, आदर्श विद्या मंदिर स्कूल, गंगाशहर, बीकानेर
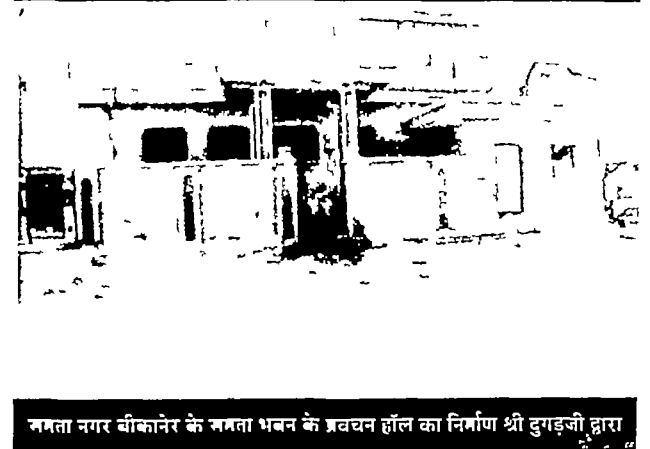
समता नगर बीकानेर के समता भवन के प्रवचन हॉल का निर्माण श्री दुगड़जी द्वारा
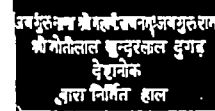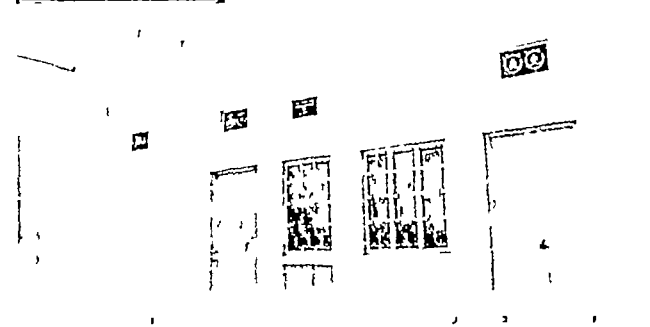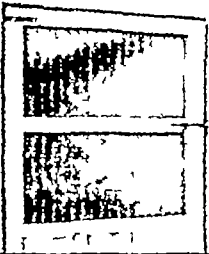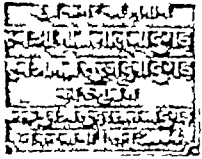
निवास कक्ष का निर्माण श्री दुगड़जी द्वारा

पी.बी.एम अस्पताल बीकानेर में ४ डाक्टर क्वाटर्स का निर्माण श्री सुन्दरलालजी द्वारा
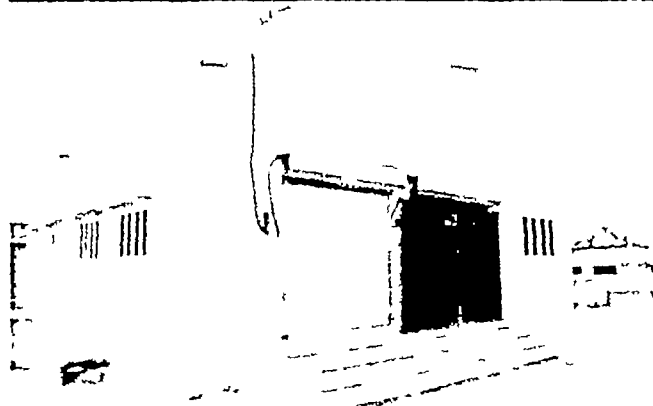
श्री सुन्दरलालजी द्वारा जैन पाठशाला बीकानेर में यु.को बैंक भवन बनाकर किराये पर दिया जिससे पाठशाला को नियमित आय होगी और विद्यालय का खर्च निरन्तर चलता रहेगा

श्री करणी राजकीय सामुदायिक चिकित्सालय देशनोक में डाक्टर्स व स्टाफ क्वार्टर का निर्माण श्री सुन्दरलालजी दुगड़ द्वारा

कभी खाली हाथ नही लौटाया। जो दान देने मे दिग्व्यापी है और जिसका नाम दिग् दिगन्त में दिनकत, उदियामणि (सूर्य) की तरह चमक रहा है। जिसका आभामण्डल-भावन (प्रिय) है जिसकी वाणी मे मिठास व मधुरता है जिसकी भाषा मे प्रियता व मधुरता है, जिसके व्यवहार मे विनय कूट-कूट कर भरा है। ऐसा नामी व्यक्तित्व है "श्री सुन्दरलाल दुगड"।

वीर सँघ धर्म प्रचारक के रूप मे सारे देश मे यत्र-तत्र आध्यात्मिक शिविर व व्यसन मुक्ति के कार्यक्रम लोगो को परमसाध्य आचार्य श्री का सन्देश – "व्यसन मुक्त हो सारा देश" सुनाते व प्रतिज्ञाबद्ध करते जब अपने कार्यालय पहुँचा तो मेरे बचपन के अति प्रिय अनन्य सहपाठी श्री भूपराजजी जैन (जिनका नाम आज विद्वद् जगत मे अति आदर के साथ लिया जाता है) का आह्वान मिला। ऐसे ग्रथ मे मुझे भी अपने उद्‌गार प्रकट करने है (वर्तनी के द्वारा) लेखनी चली। घटनाये (एक से एक महान) स्मृति मे है पर लम्बान के भय से मात्र एक घटना जिसने श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ के प्रत्येक सदस्य को ही नही जैन-अजैन, परिचित-अपरिचित सबके हृदयस्थल के उच्चतम व प्रियतम आसन पर विराजमान करा श्रद्धास्पद बना दिया–

घटना इन्दौर शहर की– गत वर्ष आश्विन शुक्ला द्वितीया को– सघ का अधिवेशन चल रहा था। चारो तरफ श्री सुन्दरलाल दुगड को राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाने की चर्चा जोरो पर थी। कानाफूसी यह भी थी कि वे स्वय जिम्मेदारी लेने को तैयार नहीं है लेकिन अतिम समय मे वरिष्ठजनों का अनुरोध मान लेगे– ऐसी आशा लोग लगाये बैठे थे। अधिवेशन आरभ हुआ। प्रारम्भ मे ही उनके नाम का विधिवत प्रस्ताव हुआ। वो धीर गम्भीर चाल से मच से उठकर माईक पर पधारे। अत्यन्त सहजता से सत्यवादी हरिश्चद्र की तरह व स्पष्टवक्ता बनकर भावातिरेक से अपना हृदय निर्भीकता से सयात (पहुँचा हुआ व्यक्ति) की तरह घोषणा की कि आपलोगो के प्रेम और वात्सल्य से मै गद्‌गद् हूँ। मै क्या हूँ, मेरे क्या उद्योग है, मेरा जीवन क्या है – एक खुली किताब की तरह है। आत्म-निरीक्षण करते हुए सबके प्रति आभार प्रकट करते घोषणा की कि मै अपनी आत्मा की साक्षी से स्वय को इस पद के योग्य नहीं समझता, अतएव पदभार ग्रहण करने मे मेरी अस्वीकृति है – मै क्षमा चाहता हूँ।

सारी श्रोतृ मण्डली स्तब्ध व अवाक् होकर एक अनूठी त्याग-परायणता, एक सतोगुणी सस्कारक की तरह समधुर भावो से सवृत (आच्छादित), सयमी (आत्म निग्रही), सत्कर्मी व सत्पात्र (श्रेष्ठ मनुष्य को) माईक छोडकर जाते मन मे श्रद्धा व आदर भाव लिये उस व्यक्ति श्री सुन्दरलाल दुगड जो गुणानुवाद से दूर स्फटिक (बिल्लौर, सूर्यकान्त मणि) की तरह दूर अति दूर जाते देख रही थी।

ऐसे धन्य व्यक्ति के बारे मे जो भी लिखूँ कम है– हे प्रभो, हे शासन देव उसे शतायु ही नहीं सहस्रायु करो। जन्म-जन्म तक (जब तक की मोक्ष न हो) पुन पुन इसी धरती पर इसी तरह और अभिवर्द्धित शुभ भावो सहित पुनर्जन्म हो।

देवता पुरुष श्री सुन्दरलालजी दुगड़

हिम्मतसिह डुँगरवाल, कानोड

राजस्थान के उदयपुर शहर से ७५ कि मी दूर दक्षिण-पूर्व की ओर आदिवासी पिछडे अचल के कानोड ग्राम मे अशिक्षा के अन्धकार को दूर कर सुसस्कारित नागरिक तैयार करने की दृष्टि से पूज्य बडे चान्दमलजी म सा की प्रेरणा से स्वतन्त्रता सेनानी, शिक्षाविद्, मेवाड मालवीय स्व प उदय जैन ने शिक्षा का दीप प्रज्ज्वलित किया। २४ अक्तूबर १९४० को विद्यालय एव १९४७ मे श्री जैन शिक्षण सघ के अन्तर्गत छात्रावास का शुभारम्भ किया। सन् १९५२ मे क्रान्तिकारी विचारो के धनी ज्योतिर्धर आचार्य १००८ श्री जवाहरलालजी म सा की पुण्य स्मृति मे सस्थानो का नामकरण जवाहर विद्यापीठ एव श्री जैन शिक्षण सघ के अन्तर्गत जवाहर जैन छात्रावास किया गया। साथ ही आदिवासियो के लिए आदिवासी छात्रावास का शुभारम्भ किया। आदिवासी ग्रामीण क्षेत्र के गरीब व पिछडे वर्ग के असहायो एव महिला शिक्षा के क्षेत्र मे समाज सेवा एव सस्कार निर्माण का जो कार्य किया गया है उसकी महक भारत के प्रत्येक प्रान्त मे ही नही वल्कि विदेशो मे भी फैली है। विद्यापीठ एव छात्रालय में प्रत्येक स्तर के विद्यार्थियो को प्रवेश दिये जाने के साथ ही आर्थिक रूप से पिछडे वालको को शुल्क मे रियायत ही नही दी जाती है बल्कि पाठ्य पुस्तके, पुस्तिकाएँ एव युनिफार्म की व्यवस्था भी श्रेष्ठीजनो एव सस्थानो से की जाती है ताकि अर्थाभाव के कारण कोई भी शिक्षा से वचित न रहे। विगत ६५ वर्षो से समाज सेवा मे कार्यरत इस सस्थान के अन्तर्गत वर्तमान मे ५ विद्यालयो, २ महाविद्यालयो एव ३ छात्रावासो का सचालन किया जा रहा है, जिनमे करीव ५०० ग्राम नगरो के लगभग ३००० एव जवाहर जैन छात्रालय मे ६०० छात्र-छात्राएँ सुसस्कारित हो रहे है। दोनो सस्थानो का वार्षिक व्यय ३ ५० करोड रुपयो से अधिक है।

सस्थान का सौभाग्य रहा है कि जव-जव सस्थान पर आर्थिक सकट गहराया, तव तव देवता पुरुषों के चरण-कमल सस्थान मे पडे और सस्थान को आर्थिक सकट से उवारा। सस्थान के अध्यक्ष पद परम श्रद्धेय श्रीमान् शातिलालजी साड, वैगलोर एव सस्थान के उपाध्यक्ष परम श्रद्धेय सघ सरदार श्रीमान् सरदारमलजी काकरिया के भगीरथ प्रयत्न से राजस्थान की मरुधरा मे जन्मे यशस्वी, सरल स्वभावी, उदारमना, मानवीय सहिष्णुता के उपासक, धर्म एव कर्मनिष्ठ व्यक्तित्व के धनी परम श्रद्धेय श्रीमान् सुन्दरलालजी दुगड, कोलकाता (सस्थान के उपाध्यक्ष) रूपी गगा को आदिवासी पिछडे क्षेत्र की सस्थान मे लाकर असहायो के तारणहार वने। कोलकाता प्रवास के दौरान दुगड सा तथा काकरिया सा मे परस्पर जो आत्मीय भाव देखा, उससे हम गद्‌गद् हो गये। शिक्षा, धर्म एव चिकित्सा के क्षेत्र मे काकरिया सा की सेवाएँ दूसरों के लिए अनुकरणीय है। वहुत कम श्रेष्ठीजनो का ध्यान आदिवासी पिछडे ग्रामीण क्षेत्र की सस्थाओ पर जाता है। आपने सदैव कार्यकत्ताओ का उत्साह वढाते हुए उनको अधिक उर्जावान वनाया है।

कुछ विरले पुरुष ही होते हैं जो दूसरो की सेवा के लिए जीते है। सहज स्वाभाव के धनी, मृदु एव मितभाषी, धर्मनिष्ठ, कर्मनिष्ठ मानवीय सवेदनाओ से ओत-प्रोत, असहायो के तारणहार देवता पुरुष परम श्रद्धेय सुन्दरलालजी दुगड का सान्निध्य पाकर सस्थान गौरवान्वित ही नही हुआ अपितु कार्यकर्त्ताओ मे नये उत्साह का सचार हुआ। परम श्रद्धेय दुगड सा के सौजन्य से समता विभूति आचार्य नानेश एव सुपुत्री श्रीमती रूपरेखा झावक के नाम से सचालित "नानेश रूपरेखा वी एड छात्रावास" कानोड मे सुविधा सम्पन्न २३ कमरो एव भव्य सभा भवन (द्वितीय मजिल) का निर्माण हुआ। छात्रावास को ससाधनो से सम्पन्न करने हेतु आपने अच्छी राशि प्रदान कर पिछडे आदिवासी क्षेत्र मे एक मिसाल कायम की। राजस्थान के प्रत्येक जिले से आये कुल १०० छात्राध्यापक छात्रावास मे निवास कर शिक्षित दीक्षित हो

समता भवन खाचरोद का उद्घाटन

श्री सुन्दरलालजी दुगड़ को शेरे मारवाड़ी अवार्ड देते हुए श्री माणकचन्द सुराणा (अध्यक्ष राज. वित्त आयोग) तथा वरिष्ठ पत्रकार श्री प्रकाश पुगलिया

बोधना होम फार मेन्टली रिटार्टेड में आयोजित समारोह को सम्बोधित करते हुए डॉ. प्रतापचन्द्र चन्द्र, श्री बिमान बोस, श्री सुन्दरलालजी व अन्यान्य गणमान्य

श्री दीपचन्दजी भूरा के अभिनन्दन समारोह के अवसर पर श्री दुगड़जी
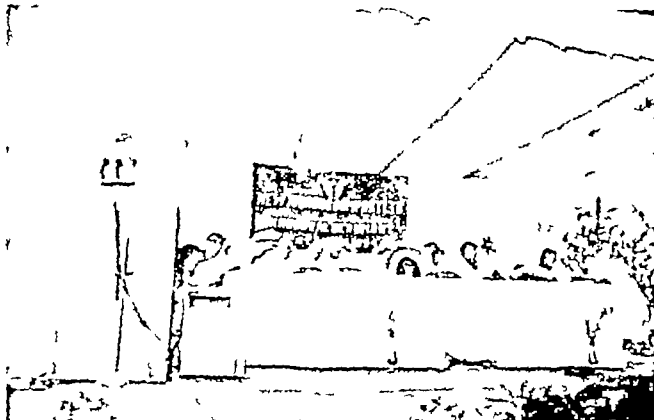
न्यु टुबेको कं. लिमिटेड के उद्घाटन के अवसर पर माननीय एम.पी. श्री सोमनाथ चटर्जी सम्बोधित करते हुए
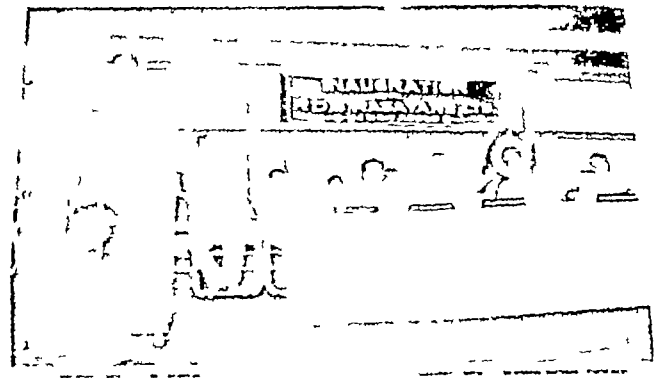
आर.डी.बी. रसायन के उद्घाटन के अवसर पर स्वागत भाषण एवं संक्षिप्त प्रकल्प प्रस्तुत करते हुए चि. बिनोद दुगड़
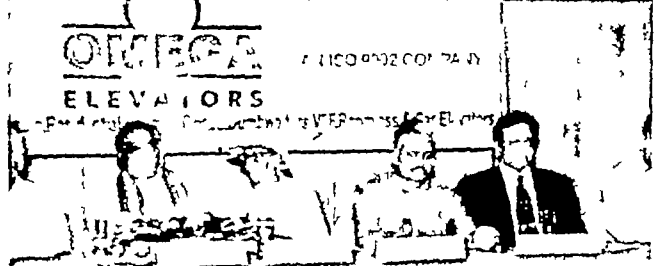
श्री तपन सिकदर-केन्द्रीय सूचना मंत्री, श्री सुभाष चक्रवर्ती-मान्य क्रीड़ा एवं परिवहन मंत्री, प.बं. एवं श्री प्रदीप चोपड़ा के साथ ओमेगा इलिवेटर्स द्वारा आयोजित समारोह में

[illegible], श्री [illegible], श्री [illegible], मंत्री प.बं. सरकार, श्री [illegible] से वार्तालाप करते हुए

रहे है। जिनके दिलो मे आपके प्रति आत्मीय भाव जागृत हुआ, उसकी खुशवू राजस्थान के प्रत्येक जिले मे पहुँचा कर गौरवान्वित होगे। दोनो महाविद्यालयो के निर्धन छात्रो को छात्रवृत्तियाँ प्रदान कर उनको विकास के पथ पर वढने की आपने हिम्मत दी है। आपके सौजन्य से सस्थान के जवाहर वाल मदिर के छोटे-छोटे वच्चो (२ ५ से ५ वर्ष) को विद्यालय लाने व लेजाने हेतु एक मारुति वैन की व्यवस्था हुई। वच्चे दुगड सा को याद करते हुए उनके प्रति मगल कामना करते है। आप श्रीमान् के सौजन्य से श्री जैन शिक्षण सघ (जवाहर जैन छात्रालय) मे अपने दोहिते श्री जीत झावक के नाम से ''जीत झाबक शिशु क्रीडा केन्द्र'' का निर्माण हुआ।

परम श्रद्धेय दुगड सा का मानना है कि जीवन-यापन के साथ-साथ मनुष्य धर्म के मर्म को समझते हुए अपने जीवन को सार्थक बनावे। इस हेतु कानोड ग्राम मे भव्य ''रूप रेखा साधना हॉल'' का निर्माण ही नही कराया अपितु भारत के छोटे-छोटे ग्रामो एव नगरो मे समता-साधना भवनो का निर्माण करा आत्म-कल्याण के भावो को मूर्त रूप प्रदान किया। जहाँ भी आपने पाया कि सामने वाला आर्थिक परेशानी मे है, आप कृष्ण की तरह सुदामा की सहायता करने दौड पडते है तथा सामने वाले के सामने ऐसे रहते है जैसे उन्होने कुछ किया ही नही। ऐसे व्यक्तित्व वाला व्यक्ति भगवान का ही रूप है।

मानवीयता के गुणो से परिपूर्ण श्रद्धेय श्री दुगड सा ने पशुओ के लिए गोशालाएँ, रोगियो के लिए अस्पताल, वालको को शिक्षित-दीक्षित करने हेतु विद्यालयो एव महाविद्यालयो के निर्माण मे सम्वल प्रदान करा, विधवाओ के आँसू पोछना, गरीबो को अनाज, कपडे एव निर्धन, अनाथ व मेघावी छात्र-छात्राओ के लिए छात्रवृत्तियाँ देकर मानव से देवता-पुरुप वन गये है। ऐसे देवता पुरुष का कोलकाता मे हमे जो प्रेम व स्नेह तथा आत्मीयता मिली, उसको याद कर गद्‌गद् हो जाते है। इतने दानी होते हुए भी आपके व्यवहार एव कार्यो मे कही भी अहम् की झलक नहीं मिलती है। सरलता व सहजता की खुशवू प्रत्येक क्षण विखेरते है। ऐसे देवता पुरुष के दर्शन मात्र से सामने वाला व्यक्ति उर्जावान होकर आपसे प्रेरणा लेकर समाज सेवी वन जाता है।

आपके सुपुत्र श्री विनोदकुमारजी दुगड एव सुपुत्री श्रीमती रूपरेखा झावक, आपके पदचिन्हो पर चल कर समाज एव देश की सेवा मे सलग्न है। आपके जवाई सा श्रीमान् आलोकजी झावक की सादगी व सरलता से हम वहुत प्रभावित हुए। वहिन रूपरेखाजी से हमे मुसीवता म भी हँसते हुए जीवन जीने की कला सीखने को मिली। रूपरेखाजी के व उनके परिजना क दर्शन करने की हमारी भावना को श्रद्धेय दुगड सा ने स्वय साथ चलकर मूर्त रूप प्रदान कराया। उसके लिए कोटिश धन्यवाद एव आभार व्यक्त करते हैं।

कोलकाता प्रवास के दौरान श्रीमान् सरदारमलजी काकरिया एव आपके द्वारा यह भावना व्यक्त की गई कि कानोड मे एक तकनीकी महाविद्यालय हो। सस्थान इस भावना को आप दोनो श्रेष्ठी प्रवर के मार्गदर्शन व आशीर्वाद मे शीघ्र ही मूर्त रूप प्रदान करेगा।

मानवीय गुणो से ओत-प्रात, दीन-दुखियो के सखा, देव पुरुष परम श्रद्धेय श्रीमान् सुन्दरलालजी सा दुगड के ५५वे जन्म दिवस पर उनके व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाशित किया जा रहा अभिनन्दन ग्रन्थ नि सदह भारत के लोग ही नही, विश्व क लोग भी मानव कल्याण के लिए माननीय दुगड सा द्वारा किये जा रहे कार्यो मे प्रेरणा लेकर मानव सेवा के कार्यो मे जुड कर अपना जीवन ही नहीं अपितु दूसरो के जीवन को भी धन्य वनायग। यह ग्रन्थ दूसरो के लिये जीने का प्रेरित कर समाज एव देश का गौरवान्वित करेगा। हमारा विनम्र अनुरोध है कि अभिनन्दन समारोह मे परम श्रद्धेय दुगड सा को ''राष्ट्रपति पुरस्कार'' स अलकृत किया जाय। इससे सामाजिक कार्यकर्ताओ को प्रेरणा प्राप्त होगी। ग्रन्थ प्रकाशन के लिए सस्थान एव पिछडे क्षेत्र की जनता की ओर स हार्दिक शुभकामनाएं व्यक्त करते है।

यज्ञमय जीवन : श्री सुन्दरलाल दुगड़

डॉ वसुमति डागा
रीडर एव हिन्दी विभागाध्यक्ष
वगवासी कॉलेज, कोलकाता

आर.डी मोटर्स के उद्घाटन के अवसर पर उपस्थित श्री सुभाष चक्रवर्ती-मान्य क्रीड़ा एवं परिवहन मंत्री प.बं. एवं टाटा मोटर्स के पदाधिकारी

आर.डी मोटर्स के शोरूम में श्री रतनजी टाटा अन्यान्य पदाधिकारियों एवं गणमान्य व्यक्तियों के साथ

एन.टी.सी फैक्टरी के उद्घाटन के अवसर पर श्री सोमनाथ चटर्जी, श्री सुभाष चक्रवर्ती, श्री पतित पावन पाठक, मंत्री प.बं सरकार, के साथ श्री दुगड़जी

राजस्थान की धरती का पवित्र स्वर है –

जननी जण जे दोय रतन, क्या दाता, क्या शूर
नहि तो रइजे बाँझडी, मति लजाए नूर ।।

जब-जब सुन्दरलालजी दुगड के व्यक्तित्व पर दृष्टि जाती है, तब-तब राजस्थान की धरती का यह स्वर उनमे मुखर दिखाई देता है। माता का नूर तब कई गुना बढजाता है जब उसकी सतान देश और समाज के लिए कर्त्तव्यनिष्ठ बनकर निरभिमानता के साथ सेवा का आदर्श कायम करती है। श्री दुगड इस अर्थ मे सचमुच जननी जन्मभूमि की गरिमा के अनुरूप उभर कर आते हैं तथा जन्मदायिनी माता एव पिता के गौरव को और प्रदीप्त करते है।

हमारे यहाँ श्रेय प्राप्ति के तीन मार्ग बताये गए है– ज्ञान या सन्यास मार्ग, भक्ति मार्ग एव कर्म मार्ग। तीनों मे से किसी भी एक पथ का अनुसरण करने वाला व्यक्ति श्रेय को प्राप्त करता है। गीता में कहा गया है–

साङ्ख्ययोगौ पृथग्बाला प्रवदन्ति न पण्डिता ।
एकमप्यास्थित सम्यगुभयोर्विन्दते फलम् ।।

अर्थात् सन्यास और कर्मयोग को मूर्ख लोग पृथक-पृथक (फल देने वाले) कहते है, पडितजन नहीं। क्योंकि दोनो मे से एक मे भी सम्यक् प्रकार से स्थित पुरुष दोनो के फल रूप (परमात्मा को) प्राप्त होता है। कर्मयोगी के लिए गीता कहती है–

अनाश्रित कर्मफल कार्यं कर्म करोति य ।
स सन्यासी च योगी च न निग्रिर्न चाक्रिय ।।

भाव यह है कि कर्म फल का आश्रय त्याग कर जो करणीय कर्म करता है वह कर्मयोगी है, सन्यासी के तुल्य है। देखा जाए तो विधाता ने सृष्टि की रचना ही यज्ञमय की है। सूर्य और चन्द्रमा सम्पूर्ण विश्व पर अपना प्रकाश लुटाते है, नदियाँ निरन्तर प्रवाहित होकर धरती, मनुष्य, पशु-पक्षी आदि सभी को तृप्त करती है तथा वृक्ष दूसरो के लिए फलते है और अपनी छाया बिखेरते है। इसी प्रकार जो मनुष्य केवल अपने लिये नही बल्कि देश और समाज की चिन्ता रखकर कार्य करता है उसका जीवन यज्ञमय कहलाता है। जो पुरुष केवल अपने या अपने परिवारजनो के भरण-पोषण के लिए ही उपार्जन नही करते बल्कि दान देकर अपने लिए स्वीकार करते है उनके लिए ही यह कहा जाता है कि वे यज्ञ से बचा हुआ खाते है और एसा आहार ही अमृत कहलाता है।

श्री जैन कल्याण संघ की एक्स.रे मशीन का उद्घाटन कर श्री दीपचन्दजी नाहटा के साथ

मातुश्री सूरजीदेवी दुगड़ व्यसन मुक्ति भवन का उद्घाटन करते हुए, नानेशनगर दांता

भामाशाह पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री दुगड़जी, मंचस्थ हैं श्री विमान बोस, श्री सत्यव्रत मुखर्जी-केन्द्रीय मंत्री व श्री सीताराम शर्मा

इ.एस.आई की [illegible] के अवसर पर मान्य मुख्यमंत्री श्री बुद्धदेव भट्टाचार्य का स्वागत करते हुए

यज्ञ की उक्त कसौटी पर दुगड का व्यक्तित्व शुद्ध कुन्दन बनकर हमारे सामने आता है। देश और समाज मे फैली अशिक्षा, भूखमरी, अभाव, दु ख-दर्द उनके अन्तर्मन को निश्चित रूप से मथते रहते है। इसीलिए अपने कर्मठ जीवन से प्रसूत धनराशि को वे सार्थक दिशाओ मे समर्पित करते है।

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य की आधारशिला है। इसी लिए श्री दुगड लाखो रुपये की राशि उच्च शिक्षा हेतु छात्रवृत्ति के रूप मे प्रदान करते है। उनके मन मे बहता करुणा का स्रोत उन्हे निरतर बाध्य करता रहता है कि वे समय-समय पर असाध्य रोगो से पीडित लोगो के स्वास्थ्य लाभ के लिए विशाल धनराशि प्रदान करे और असहाय लोगो की मदद करे।

श्री दुगड आर्थिक सहयोग द्वारा तो लोगो की मदद करते ही है पर वे व्यक्तिगत स्तर पर भी लोगो के दु ख-दर्द बाँटने और परेशानी मे फँसे लोगो की कठिनाइयो को दूर करने म भी तत्पर रहते है। मेरा स्वय का एक अनुभव है कि मैंने जब सॉल्ट लेक मे फ्लैट खरीदा, तब शुरू-शुरू मे मुझे असामाजिक तत्त्वो से परेशानी का सामना करना पडा। समझ मे नही आ रहा था कि क्या करू ? किससे कहूँ ? सहसा किसी ने सुझाव दिया कि मै दुगडजी से मिलूँ। जब मैंने उन्हे अपनी समस्या बताई तब वे स्वय आए और उन्होने इस समस्या के निदान हेतु जो भी कदम उठाना था, उठाया। उनकी यह सहृदयता मुझे सदैव स्मरण रहेगी।

श्री सुन्दरलालजी दुगड उस विचारधारा के विश्वासी है जो यह कहती है–

अपने मे सबकुछ भरकर, क्या व्यक्ति विकास करेगा,
यह एकान्त स्वार्थ भीषण है सबका नाश करेगा ।
औरो को हँसते देखो मनु, हँसो और सुख पाओ,
अपने सुख को विस्तृत कर लो, जग को सुखी बनाओ ।।

सुख का विस्तार तब होता है जब व्यक्ति का अन्तस्त ल नि स्वार्थ होकर औरो की पीडा को दूर करने के लिये सकल्पबद्ध होता है। श्री दुगड का हृदय भी ऐसे ही सुख की विस्तृत सीमा को स्पर्श करता हुआ दिखाई देता है। इसी का परिणाम है कि सामाजिक, शैक्षणिक चिकित्सकीय, साहित्यिक, सास्कृतिक और धार्मिक हर क्षेत्र म उनका बेमिसाल योगदान। ईश्वर उनकी सामर्थ्य एव सेवा-भावना मे निरन्तर वृद्धि करते रहे, यही शुभाशसा है।

सुप्रसिद्ध समाजसेवी, उद्योगपति, आत्म निर्मित एव प्रेरक व्यक्तित्व

श्री सुन्दरलाल दुगड़

राजस्थान कर्मवीरो एव शूरवीरो की भूमि है, जिनके सपूतो के पावन कर्म-कौशल पर राष्ट्रीय परिवार को अधिकतम गर्व है और इतिहास के स्वर्ण पृष्ठ इस सत्य के साक्षीभूत प्रमाण है। प्रत्येक समाज और प्रत्येक वर्ग मे काल प्रवाह के बीच समय-समय पर ऐसे रत्न उत्पन्न हुए है, जिनके व्यक्तित्व एव कृतित्व से जहाँ समाज महिमामण्डित हुआ है, वही समाज को भी समय सन्दर्भ से अनेक प्रकार की विकासोन्मुखी प्रेरणा प्राप्त हुई है। उदारमना श्री सुन्दरलाल दुगड का विशिष्ट व्यक्तित्व सर्वतोभावेन अपने आप मे गौरवोज्ज्वल महिमादीप्त रूप से प्रभावशाली है।

श्री सुन्दरलालजी का जन्म भामाशाहो व शूरवीरो की धरती राजस्थान मे बीकानेर जिले के देशनोक गाँव मे १९५४ ई को हुआ था आपके स्वनामधन्य पिता स्व मोतीलालजी दुगड थे। आप बडे ही धर्मावलम्बी तथा उदार विचारो के व्यक्ति थे। समाज व गाँव मे आपकी काफी प्रतिष्ठा थी। आपकी मातुश्री स्व सूरजदेवी दुगड भी बहुत ही धर्मपरायण महिला थीं, जिन्होने मृत्यु का स्वय वरण किया, अर्थात् १९ दिनो के चौविहार सथारे के पश्चात् उन्होने अपना शरीर त्याग दिया। श्री सुन्दरलालजी ने अपने गाँव मे ही उच्च माध्यमिक तक शिक्षा प्राप्त की, तत्पश्चात् आप १९७१ मे कलकत्ता आ गए व अपने पैतृक स्टेशनरी व मणिहारी व्यवसाय मे कार्य करने लगे। सन् १९७२ मे पाणिग्रहण सस्कार बीकानेर निवासी स्व केवलचन्दजी सेठिया की सुपुत्री श्रीमती कुसुमदेवी के साथ सुसम्पन्न हुआ। कालान्तर मे रेडीमेड कपडे व कपडे की रिटेल दुकान करने के पश्चात् १९८३ मे भवन निर्माण कार्य शुरू किया। सन् १९९४ मे औद्योगीकरण के तहत सिगरेट फैक्टरी, जूट मिले व दैनिक बगला समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ किया। वर्तमान मे आप सिगरेट फैक्टरी, प्लास्टिक फैक्टरी, जूट फैक्टरी, ट्रासमिशन लाइन व टावर फैक्टरी, ऑटोमोबाइल तथा भवन निर्माण उद्योग से जुडे हुए है। सन् १९९४ से व्यवसाय आपके एकमात्र सुपुत्र विनोद दुगड की देखरेख मे चल रहा है तथा दिनो-दिन प्रगति के पथ पर अग्रसर है। आपके होनहार युवा सुपुत्र विनोद दुगड का विवाह १९९६ मे कुमारी शीतल के साथ सम्पन्न हुआ। आप द्वारा निर्मित भवन कोलकाता मे अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। आपकी एकमात्र सुपुत्री रूपरेखा है, जिसका विवाह मई २००२ मे श्री आलोक झाबक (जैन) के साथ बडी धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ, जिसकी सर्वत्र मुक्तकठ से प्रशसा की गयी। आपके दो सुपौत्री यशस्वी एव मनस्वी दुगड तथा एक दौहित्र जीत झाबक है। सामाजिक कार्यो व अर्थ विसर्जन की प्रेरणा आपकी सुपुत्री रूपरेखा द्वारा मिली।

श्री दुगडजी का सार्वजनिक जीवन अत्यन्त प्रेरणादायक है। नेकी कर भूल जाओ, यही आपकी सेवा भावना का मूल मत्र है। दीन-दुखियो की सेवा करना, कलाकारो, साहित्यकारो, पत्रकारो, बुद्धिजीवियो का सम्मान करना, आपके सार्वजनिक जीवन का अभिन्न अग है। आप अपने अधीनस्थ कर्मचारियो से भातृभाव रखते है। यही कारण है कि आपसे सभी कर्मचारी पूर्ण रूप से सतुष्ट रहते है। आप अनेकानेक लोकमगलकारी व शैक्षणिक सस्थाओ से पदाधिकारी के रूप मे जुडे हुए है।

वर्तमान मे आप श्री जैन विद्यालय, हावडा के यशस्वी सभापति है। श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सभा, कोलकाता के कार्यकारिणी के सदस्य, श्री जैन सभा, कोलकाता के पूर्व उपसभापति तथा कार्यकारिणी सदस्य, श्री करणी गौशाला (देशनोक) के उपसभापति, श्री साधुमार्गी जैन सघ (देशनोक) के पूर्व सभापति, श्री माँ करणी आदर्श विद्यालय (देशनोक) के सरक्षक, जैन कल्याण सघ (कोलकाता) के सरक्षक, महेन्द्र मुनि मिशन (कोलकाता) के न्यासी, बीकानेर कार्डियेक केयर फाउण्डेशन ट्रस्ट के न्यासी, आगम अहिंसा समता और प्राकृत सस्थान (उदयपुर) के सरक्षक, श्री जीतयशा फाउण्डेशन (कोलकाता) के न्यासी, देशनोक नागरिक सघ (कोलकाता) के वर्तमान व सस्थापक सभापति, जैन श्वेताम्बर श्री सघ (कोलकाता) के न्यासी तथा कार्यकारी अध्यक्ष, आदिनाथ जैन श्वेताम्बर टेम्पल ट्रस्ट (हावडा) के न्यासी, लॉर्ड महावीर श्वेताम्बर श्री सघ (हावडा) के न्यासी एव मत्री, श्री जिनेश्वर सुरि फाउण्डेशन (कोलकाता) के सरक्षक सदस्य, अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गीय जैन सघ (बीकानेर) के पूर्व उपसभापति तथा कार्यकारिणी सदस्य, श्री आत्म बल्लभ जैन कल्याण ट्रस्ट (कोलकाता) के न्यासी, श्री जैन पाठशाला (बीकानेर) के न्यासी, श्री समता जन कल्याण ट्रस्ट, बीकानेर और जयपुर के न्यासी, एस एल दुगड चैरिटेबल ट्रस्ट, कोलकाता के न्यासी, श्री सच्चियाय माँ सेवा ट्रस्ट के न्यासी, राजस्थान परिषद् कोलकाता के उपाध्यक्ष, जवाहर विद्यापीठ, कानोड (उदयपुर, राजस्थान) के उपसभापति आदि पदो को सुशोभित कर रहे है। इसके अतिरिक्त आप कोलकाता वस्त्र व्यवसायी सेवा समिति के सदस्य, पश्चिम बगाल प्रादेशिक मारवाडी सम्मेलन के सरक्षक सदस्य, कास्मोपोलिटन क्लब के कार्यकारिणी सदस्य, सगीत कला मन्दिर के सदस्य, कोलकाता पिजरापोल सोसाइटी के न्यासी, आर्यन्स स्कूल, अगरपाडा के न्यासी है। मानव कल्याण समिति, कोलकाता के प्रदेश सदस्य, द यूनाईटेड फिजीकल हैन्डीकैप्ड स्कूल, कोयम्बटूर के सरक्षक सदस्य है।

अपने जन्म स्थान देशनोक मे श्री करणी अस्पताल मे क्वार्टर का निर्माण, श्री करणी कन्या विद्यालय मे हॉल का निर्माण, श्री जैन जवाहर मडल मे हाल व तलघर का निर्माण, श्री भोमियाजी के मदिर मे कमरे का निर्माण, करणी सुबोध विद्यालय निर्माण मे अर्थ सहयोग, श्री करणी गोशाला के निर्माण तथा अकाल के समय गो ग्रास के लिए अर्थ सहयोग। श्री करणी औषधालय के सचालन मे अर्थ सहयोग, वर्तमान मे श्री करणी अस्पताल को रेफरल अस्पताल का दर्जा दिलाने के बाद अस्पताल भवन निर्माण मे विशेष सहयोग (निर्माणाधीन), आदर्श विद्यामदिर, देशनोक मे २ कमरे तथा फर्नीचर बनवाकर दिए। देशनोक ग्राम मे करीब ५००० गज का प्लाट खरीद कर श्री जैन जवाहर मण्डल को भेट किया, जहाँ महिलाओ के विकास हेतु स्व सूरजी देवी दुगड समता भवन का निर्माण होगा एव उसमे भी विशेष सहयोग का आश्वासन तथा श्मशान भूमि की चारदीवारी व अन्य

कार्यो मे विशेष अर्थ सहयोग। आप गॉववासियो के साथ कधे से कधा मिलाकर गाँव के उत्थान हेतु हर समय तत्पर रहते है, जिससे गाँववासियो के दिल मे आपके प्रति असीम श्रद्धा है।

वीकानेर के पी वी एम अस्पताल के कार्डिक वार्ड को सन् १९९० मे गोद लेकर सचालन मे आपके अर्थ सहयोग फलस्वरूप सरकारी अस्पताल मे भी प्राइवेट नर्सिंग होम की तरह साफ-सुधरी व्यवस्था का सृजन हुआ है। वीकानेर मे मिड-डे मिल योजनान्तर्गत करीव २०००० छात्रो के लिए रसोई घर का निर्माण तथा समता नगर वीकानेर मे निर्माणाधीन समता भवन मे सभागार का निर्माण। वीकानेर के उपनगर गगाशहर मे आदर्श विद्या मदिर (उच्च माध्यमिक) मे छात्रो के लिए २४ कम्प्यूटर उपकरण भेट।

नोखामडी के आदर्श विद्यामदिर मे कमरे का निर्माण, महिला एव वाल विकास समिति नोखा को कम्प्यूटर भेट तथा श्री डूगरगढ के तुलसी सेवा सदन अस्पताल मे करीव ४००० वर्गफीट हॉल का निर्माण। सुगनी देवी जैसराज वैद हॉस्पीटल एण्ड रिसर्च सेन्टर, वीकानेर मे एक आई आर सी मशीन तथा एक ऑटो अनालाइजर भेट किया। वावा श्री जसनाथ मदिर ग्राम कररियासर के जीर्णोद्धार मे अर्थ सहयोग। समता भवन, नागौर के तलकक्ष का निर्माण। राजकीय वालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, ग्राम साभर मे स्व मोतीलाल सुरजीदेवी दुगड स्मृति हॉल का निर्माण। उदयपुर के जवाहर शिक्षण सस्थान मे कमरे का निर्माण एव कम्प्यूटर कक्ष हेतु अर्थ सहयोग, आचार्य नानेश ध्यान केन्द्र मे लगभग ५००० वर्गफीट के हॉल का निर्माण तथा ज्ञानशाला के लिए निधि स्थापन मे सहयोग। आगम अहिंसा प्राकृत शोध सस्थान मे रूपरेखा साहित्य निधि की स्थापना। श्री गणेश जैन छात्रावास मे कमरे का निर्माण तथा २००० वर्गफीट के प्रार्थना हॉल का निर्माण। समता भवन मगलवाड चौराहा, उदयपुर के प्रवचन हॉल का निर्माण। अरिहन्त अस्पताल एव रिसर्च सस्थान, भीवलवाडा मे दो डॉक्टर क्वार्टर का निर्माण।

कानोड जिला उदयपुर मे जवाहर विद्यापीठ मे शिक्षक प्रशिक्षण छात्रावास भवन मे २८ कमरो का निर्माण, स्कूल वच्चो के लिए एक वस तथा गाँव के समता भवन मे करीव ५००० वर्गफीट के स्वाध्यायी हॉल का निर्माण अपनी सुपुत्री रूपरेखा के नाम से करवाया। कानोड स्कूल मे ही जीत शिशु उद्यान का निर्माण। श्री आदिनाथ पशुरक्षा सस्था-कानोड को एक पशु चिकित्सा हेतु एम्वुलेन्स प्रदान की।

कपासन जिला-चित्तौडगढके समता भवन मे लगभग ५००० वर्गफीट का हॉल निर्माण तथा आचार्य नानेश रामेश रूपरेखा गौशाला का निर्माण तथा सचालन मे वरावर अर्थ सहयोग। दाता ग्राम जिला चित्तौडगढमे आचार्य नानेश शिक्षा सस्थान मे ३० कमरे का आधुनिक छात्रावास भवन का निर्माण। आचार्य रामेश ग्राम सेवा सस्थान ग्राम दाता मे करीव ४००० फीट के हॉल का निर्माण। दाता ग्राम मे ही श्रीमती सुरजीदेवी दुगड प्राथमिक विद्यालय भवन का निर्माण का आश्वासन। चित्तौडगढके आदिवासी श्रीवाल भाईयो के वच्चो के अध्ययन हेतु अर्थ सहयोग। आचार्य श्री नानेश हॅम्योपथिक मेडिकल हॉस्पीटल वडी सादडी मे २ कमरो का निर्माण। मोरवन गॉव के समता भवन के हॉल का निर्माण, जोधपुर के समता भवन के कमरे का निर्माण, ग्राम खिरकिया व कानवन मध्य प्रदेश मे समता भवन मे प्रवचन हॉल का निर्माण। समता भवन, चपलाना, वदनावर, सवाई माधोपुर, कथारियाजी का चौक तथा वाधाडी मे सहयोग। समाज के अन्य स्थानो पर जहाँ समता भवन वनते है, प्राय उन सभी मे अर्थ सहयोग। गाँव वजरिया के समता भवन मे कमरे का निर्माण, गॉव सासुसी तहसील जावरा मे समता भवन का निर्माण, ग्राम धमनिया जिला-नीमच के समता भवन मे प्रथम तल का निर्माण, ग्राम खाचरौद जिला रतलाम के समता भवन मे हॉल का निर्माण तथा चित्तौडगढमे समता स्वाध्यायी भवन मे एक हॉल का निर्माण। अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ, वीकानेर की लगभग ३० धार्मिक पुस्तको के प्रकाशन मे आर्थिक सहयोग। नाना शक्ति मदिर पो-सुहरसा जिला-भिवानी के फर्श मे मार्वल लगवाने मे अर्थ सहयोग, अजमेर मे मणिपुज न्यास सेवा सस्थान मे हॉल का निर्माण तथा वहाँ रहने वाले वच्चो के लिए अर्थ सहयोग। आचार्य तुलसी कैन्सर रिलीफ सोसायटी, बीकानेर मे चार डॉक्टर क्वार्टर का निर्माण। श्री जैन पाठशाला बीकानेर के यु को वैक का भवन निर्माण एव किराये पर चलाना।

सिलचर के जैन भवन के निर्माण मे अर्थ सहयोग। तेजपुर मे महाभैरव मदिर मे तथा गौडी पार्श्वनाथ मदिर के जीर्णोद्धार मे सहयोग। विहार मे कटिहार के स्कूल मे कमरे का निर्माण। क्षत्रियकुण्ड ग्राम-लछवाड के निर्माणाधीन चिकित्सालय मे एक वार्ड का निर्माण। धनवाद जिले के आदिवासी महल गाँव के छात्रावास मे कमरे का निर्माण। गिरिडीह जिले के शिखरजी तीर्थ स्थल मे जैन म्यूजियम के निर्माण मे सहयोग तथा भोमियाजी भवन की धर्मशाला मे कमरो का निर्माण। पिछले १५ वर्षो से सचालन मे अर्थ सहयोग। शिखरजी के ही कल्याण निकेतन के निर्माण मे सहयोग व नेत्र चिकित्सा शिविर लगवाना। वीरायतन सस्थान मे समय-समय पर अर्थ सहयोग। श्री हनुमान आदर्श विद्यालय, सिरसी मे कमरे का निर्माण। रतलाम, मध्य प्रदेश के आदिवासी क्षेत्र दिलीपनगर मे श्री प्रेमराज गणपतराज वोहरा, धर्मपाल जैन छात्रावास के छात्रो के अध्ययन हेतु श्रीमती रूपरेखा धर्मपाल जैन सहयोग निधि की स्थापना। रतलाम जिले के सेलाना गाँव की गौशाला मे गायो हेतु गौ ग्रास घर का निर्माण। रतलाम मे अखिल भारतवर्षीय जैन समता युवा सघ के कार्यालय भवन के निर्माण मे आर्थिक सहयोग। समता मच राजनादगाँव मे नि शुल्क वृद्धाश्रम मे भोजनशाला का निर्माण। देव आनन्द विद्यालय, राजनन्दगाँव मे सहयोग। श्री पार्श्व भक्ति विहार दादावाडी, नलखेडा जिला-शाजापुर मे फर्श मे मार्वल लगवाया, ग्राम विकास समिति-छत्तरपुर के स्कूल मे एक कमरे का निर्माण, सत्सग भवन समिति-छपरा मे एक कमरा व हॉल का निर्माण, दादावाडी उपासरा मन्दसौर का जीर्णोद्धार। श्री आत्मवल्लभ जैन उपाश्रय, अम्वाला शहर मे व्याख्यान माला हॉल के निर्माण मे सहयोग। राजस्थान व्राह्मण सघ, कोलकाता मे अर्थ सहयोग। कोलकाता मे महाराणा प्रताप की प्रतिमा लगाने मे अर्थ सहयोग।

हावडा के महावीर भवन मे लगभग ३५०० वर्गफीट का हॉल अपने दादाजी श्री अमोलकचन्द दुगड स्मृति हॉल का निर्माण, श्री अपार्टमेन्ट, हावडा मे भगवान आदिनाथ मदिर निर्माण हेतु विशेष सहयोग। श्री जैन अस्पताल व रिसर्च सेन्टर

हावडा मे स्ट्रेस टेस्ट एव २२ बिस्तर के आईटीयु वार्ड का निर्माण। श्री जैन विद्यालय, हावडा के निर्माण मे विशेष सहयोग। हावडा मे ही हावडा शिक्षा सदन व हावडा शिक्षा निकेतन मे सहयोग। विचार मच, हावडा के माध्यम से विभिन्न स्कूलो के मेधावी छात्रो को पुरस्कृत करने मे सहयोग। बादल बोस मेमोरियल हेल्थ सेन्टर के सचालन मे अर्थ सहयोग। बी गार्डन क्रीडा समिति के अर्थ सहयोग, रामराजातल्ला के जगाछा मे प्राइमरी विद्यालय की दूसरी मजिल के निर्माण मे सहयोग। कुपराई हाई स्कूल जिला पूर्व मिदनापुर में १० कम्प्युटर सेट भेट।

श्री सचियाय मा सेवा ट्रस्ट, कोलकाता द्वारा निर्मित मदिर मे विशेष सहयोग, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक सघ, कोलकाता द्वारा निर्मित महावीर सदन मे २ कमरो का निर्माण, जिनेश्वर सुरी फाउण्डेशन, कोलकाता के मदिर व भवन निर्माण मे विशेष सहयोग। सागर दत्त राजकीय विद्यालय, कमरहट्टी मे ६ कमरो के एक ब्लॉक का निर्माण। बलाईकृष्ण रामस्मृति बालिका विद्यालय, इलम बाजार जिला वीरभूमि मे एक कमरे का निर्माण। वैद्यवाटी कल्पना बसु छात्र एकादमी का लेबोटरी कक्ष बनवाने मे सहयोग। श्री चेतन ज्योति सस्कृत महाविद्यालय हरिद्वार मे स्कूल बस खरीदने मे अर्थ सहयोग।

श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सभा, कोलकाता के प्रस्तावित कुसुम देवी सुन्दरलाल दुगड जैन डेन्टल कॉलेज के लिए विशेष सहयोग का आश्वासन तथा सभा के विभिन्न सेवा प्रकल्पो के समय-समय पर अर्थ सहयोग। अबोध बच्चो की सस्था बोधना,राजरहाट के सचालन व दूसरे तल्ले मे ५००० फीट का निर्माण। आदर्श विद्या मदिर दमदम के एक ब्लॉक का निर्माण। विभूति देव मेमोरियल सोसाइटी के विशेष आग्रह पर दमदम मे २००० वर्गफीट जगह मे एक हेल्थ सेन्टर का निर्माण। विचार मच कोलकाता व अपनी भाषा, साल्टलेक द्वारा विभिन्न क्षेत्रो के प्रतिभावन व्यक्तियो को सम्मानित करने मे अर्थ सहयोग। कलकत्ता वस्त्र व्यवसायी समिति के गगासागर मेला धर्मशाला मे विशेष अस्पताल एव रिसर्च सेन्टर, कोलकाता के चक्षु अस्पताल मे एक तल्ले के निर्माण मे अर्थ सहयोग श्री विशुद्धानन्द अस्पताल एव रिसर्च सेन्टर, कोलकाता मे एक तल्ले के निर्माण मे सहयोग। समता भवन, असावरा (चित्तौडगढ) मे प्रवचन हॉल का निर्माण, समता भवन पो खींवसार जिला नागौर के निर्माण मे अर्थ सहयोग।

कोलकाता मे एस एल दुगड चैरिटेबल ट्रस्ट के माध्यम से समय-समय पर चक्षु ऑपरेशन शिविर लगवाना, कम्बल वितरण करना तथा आर्थिक रूप से कमजोर व्यक्तियो की चिकित्सा के लिए सहयोग करना, उच्च शिक्षा हेतु छात्रो को पूर्णरूप से छात्रवृत्ति देना तथा देहात के बच्चो मे पुस्तक वितरण का कार्य तथा सर्दी मे कम्बल व वस्त्र वितरण समय-समय पर करते रहते है।

कोलकाता की ही श्री जिनेश्वर फाउण्डेशन के मन्दिर निर्माण आत्मबल्लभ जैन कल्याण ट्रस्ट, जैन सघ, श्री काशी विश्वनाथ सेवा समिति, स्पोर्ट्स काउसिल, लेकटाउन पुस्तक मेला, पजाब बिरादरी, श्री बाबोसा महाराज, सूरदास न्यास, श्री हनुमान जागरण मच, भूकैलाश वेलफेयर सोसाइटी, पद्मावती शक्तिपीठ कृष्णागिरी (कोलकाता), श्री आदिश्वर मण्डल, वीर मण्डल, मित्र मण्डल, गगासागर यात्री सेवा सस्था, जैन कल्याण सघ, अणुव्रत ग्रामभारती सस्थान विनयपुरम मे एक कमरे का निर्माण, श्री बडाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय कोलकाता, लायस जिला ३२२बी-१ के ब्लड बैक के निर्माण मे सहयोग, रोटरी क्लब सेन्ट्रल कलकत्ता ट्रस्ट मे सहयोग। लायस क्लब ऑफ कोलकाता-पार्क स्ट्रीट मे सहयोग। गवरजा माता के मेले के आयोजन मे विशेष अर्थ सहयोग। श्री शान्तिनाथ भक्तामर जिन प्रसाद के अजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव मे सहयोग। राजस्थान ब्राह्मण द्वारा आयोजित अध्यात्म महोत्सव २००५ मे विशेष अर्थ सहयोग। तालतल्ला पीपुल्स वेलफेयर एसोसिएशन मे सहयोगी। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापथ महिला मण्डल हावडा (नॉर्थ) के मेडिकल कैम्प मे सहयोग। पानीहट्टी डॉ विधानचन्द्र राय टेक्स बुक लाइब्रेरी मे टेक्स बुक भेट। चौधरी राजाराम जाखड चैरीटेबल ट्रस्ट दिल्ली को सहयोग। श्री लक्षचण्डी महायज्ञ बीकानेर मे सहयोग। पूज्य प्रेमा दीदी के कथा सरक्षक। डॉ पी सी सेन मेमोरियल कमेटी मे सहयोग। श्री सिद्धि विनायक भक्त मण्डल कोलकाता। शहीद खुदीराम बोस इन्स्टीट्युट मे सहयोग। श्री जैन हॉस्पीटल एण्ड रिसर्च सेन्टर, हावडा, सुगमी देवी जैसराज बैद हॉस्पीटल, बीकानेर, टाटा मेमोरियल हॉस्पीटल-मुबई, शहीद खुदीराम बोस इस्टीट्यूट-कमरहट्टी, मुलजीभाई पटेल यूरोलोजिकल हॉस्पीटल, ऑल इण्डिया मेडिकल इस्टीट्यूट-दिल्ली, मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पीटल, कोलकाता, आर एन टैगोर हर्ट हॉस्पीटल-कोलकाता, सवाई मानसिह चिकित्सालय-जयपुर मे रोगी की चिकित्सा मे सहयोग।

इसके अतिरिक्त भी विभिन्न सेवा सस्थाओ को समय-समय पर आर्थिक सहयोग देते रहते है। श्री सुन्दरलाल दुगड अत्यन्त मिलनसार एव मृदुभाषी है। आपसे मिलने व बातचीत करने वालो पर आपकी शिष्टता, सौजन्य तथा गरिमा का प्रभाव पडता ही है। सामाजिक जीवन व अन्य कार्यों मे आपकी सफलता का रहस्य भी बहुत कुछ यही है।

आपकी धर्मपत्नी कुसुमजी अपने आप मे परम्परा और प्रगतिशीलता का समुज्ज्वल रूप है। आप त्याग-तपस्या की, साधना-उपासना की, मृदुता-कोमलता की, विनय-विनम्रता की तथा स्नेह-सौजन्य की साक्षात मूर्ति है। आप नारी जाति की गौरव गरिमा हैं। प्रसादजी की ये पक्तियाँ भी श्रीमती कुसुमजी पर पूरी तरह अर्थसिद्ध होती है–

नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग-पग तल मे,
पीयूष श्रोत सी बहा करो, जीवन के सुन्दर समतल मे।

आप आदर्श भारतीय नारी की गौरव-गरिमामयी साकार सभ्रान्त परिभाषा है और लगता है कि ऐसी ही गुणवती, शीलवती भारतीय ललना को देखकर शायद महाराज मनु को लिखना पडा था–

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता।

अस्तु धन्य है श्री दुगडजी, जिन्हे ऐसी धर्म परायण, उदात्त सहयोगी मिली।

सकलित

वेयावक्त्रेणं तित्थयर नाम गोतं कम्मं निबंद्धई

रिधकरन बोथरा

'विलियम कोलगेट' अमेरिका निवासी था। कोलगेट गरीव था। उसके माता-पिता अपने घर साबुन वनाते और शहर की गलियो मे जाकर वेचते थे। गरीव लोग साबुन खरीदते क्योंकि उनको कम दाम मे साबुन मिलता था। एक दिन निराश कोलगेट को पिता ने कहा,'वेटे, तुम न्यूयॉर्क जाओ, तुम अपना भाग्य वहाँ आजमाओ।' विलियम घर से निकला। गाँव की सीमा पर एक वुजुर्ग मिला। उसने विलियम से पूछा, कहाँ जा रहे हो वेटा ?विलियम ने कहा 'न्यूयॉर्क जा रहा हूँ।' 'क्यो ?' 'भाग्य आजमाने के लिए।'

अच्छा वेटा चल, मुझे भी न्यूयॉर्क ही जाना है। वृद्ध और विलियम न्यूयॉर्क की तरफ आगे वढे। रास्ते मे उस वृद्ध पुरुष ने विलियम को कहा 'देख विलियम, धन्धे मे कुछ वाते अनिवार्य रूप से ध्यान मे रहनी चाहिए। पहली वात है 'ऑनेस्टी' की, प्रामाणिकता की। धन्धे मे प्रामाणिकता का चुस्त पालन करना। दूसरी बात है वस्तु मे मिलावट कभी नही करना। वस्तु मे मिलावट करने से धधा लम्वे अर्से तक नही चलता। कभी न कभी ग्राहको को अविश्वास हो ही जायेगा। तीसरी बात यह है कि ग्राहक को माल पूरा देना, धोखा कभी नही करना। वजन कम नही देना। चौथी बात कहता हूँ मनुष्य को जो कुछ मिलता है परमात्मा की कृपा से मिलता है। इसलिये तुझे व्यापार मे जो भी नफा हो, मुनाफा हो, उसमे से भगवान का एक हिस्सा निकालना और उसे सत्कार्य मे खर्च कर देना।'

रास्ते मे एक चर्च आया। विलियम ने वृद्ध के साथ भगवान से प्रार्थना कि 'ओ गॉड, मै धन्धे मे जो कुछ कमाऊँगा, मुझे जो मुनाफा होगा, उसका दसवाँ हिस्सा सत्कार्यो मे व्यय करूँगा।' विलियम ने करोडो डॉलर कमाया, कमाया उसे खुले हाथ से दान भी दिया। विश्व मे 'कोलगेट' दत मजन व साबुन दोनो का नाम।

उपर्युक्त सदर्भ मे हम श्री सुन्दरलालजी दुगड के जीवन का निरीक्षण करेगे।

करीव दो साल पहले कलकत्ता मे वडतल्ला एरिया मे 'ज्वेलरी पार्क' हिसाव से एक मकान की नीव का मुहूर्त किया, उसी दिन चार घन्टे मे पूरे मकान की वुकिग हो गई–समय पर मकान तैयार हो गया व दुकान मालिको को दुकाने सौप दी गई। अभी यह दृश्य मूरत मे सुनने को आया। वहाँ पर एक मार्केट के लिये नीव का मुहूर्त किया गया – उसी दिन पूरे मार्केट की वुकिग भी हो गई व समय पर सारा कार्य सम्पन्न हो गया। यह उनके कार्यो की गुडविल है।

वहुत साल पहले की वात है किसी एरिया मे मकान वनाना था। पाडे के मस्तान मोटी रकम इस हेतु माग रहे थे। इनका विचार था–मै इस हेतु उन्हे कुछ भी नहीं दूगा, मरने-मारने की नौवत थी। दूसरे दिन का समय तय हुआ–ये निहत्थे व अकेले। उनके पास गये, उनकी माग को सुना, सुनकर इन्होंने सुझाव दिया कि मेरे इस मकान मे फ्लैट जो वन रहे है उन्हे आप वेचे। उसकी दलाली मैं आपको दूगा। आपकी सारी समस्याएँ हल हो जायेगी। उन लोगो को यह सुझाव पसन्द आया – फ्लैट वेचने के साथ-साथ उस मकान की व रहने वालो की पूरी हिफाजत करने लगे। वहाँ इस तरह के लोगो को काम मिल गया व उनकी जीवनशैली मे पूरा वदलाव आ गया। यह फारमूला इन्होंने सभी एरिया मे अपनाया। वहाँ के निवासियो को काम मिला व इनकी गुडविल अच्छी रही।

जैन व जैनेतर दोनो समाज मे जिन लोगो के साथ कोशल था पर आर्थिक कमी होने के कारण वे काम नहीं कर पा रहे थे। ऐसे सैकडो लोगो के साथ इन्होंने काम किया। इनकी गुडविल व आर्थिक मदद से इन्हे भी नया काम मिला व इन लोगो को ऊपर उठने का मौका मिला। नये-नये कामो मे एक्सपर्ट व विश्वसी आदमी मिले। इनके धन्धा का फैलाव (विस्तार) थोडे से अर्से मे दिन-दुना व रात-चौगुना होता गया।

अभी कुछ दिन पहले की वात है। ये श्री जैन हॉस्पीटल से वाहर निकल रहे थे कि इनके दूर के रिश्ते की एक वहिन मिली। उसने इनसे कहा कि मैने अपने पतिदेव को यहाँ भर्ती गले की मामूली विमारी वास्ते कराया। निदान मे डॉक्टर कहते है कि व्रेन की सर्जरी अतिशीघ्र आवश्यक है तथा जो डॉक्टर इस हॉस्पीटल मे है वह वाहर चला गया है अन्य डॉक्टर यहाँ आने के लिये मना कर रहा है। इन्होने उस डॉक्टर का मोवाईल नम्बर लिया, वात की और उसी दिन श्री जैन हॉस्पीटल मे व्रेन ऑपरेशन की सारी व्यवस्था इन्होने अपने खर्चे से की। आज वह परिवार आराम से है, खुश है। इस तरह के केस इनके सम्बल से प्रति सप्ताह रिलीफ पाते है। यह सिर्फ कलकत्ता ही नहीं पूरे भारतवर्ष मे इनकी यह सहृदयता विख्यात है।

बीकानेर प्रिन्स विजयसिह मेमोरियल हॉस्पीटल आज से प्राय दो दशक पहले आई सी यु मे ४२ बेड बनवाये ही नही इसे गोद भी लिया, यानि इसकी पूरी देख-रेख का जिम्मा। उस समय ये आज की तरह सम्पन्न नही थे, पर हृदय मे इस तरह की सेवा का लगाव शुरु से ही था – ऐसा लगता है।

शिक्षा के लिए माध्यमिक, उच्च माध्यमिक, कॉलेज व उच्च शिक्षा के लिये छात्रो को हर तरह की सहायता ये बरावर करते है। उच्च शिक्षा हेतु यदि कोई लडका वाहर जाने के लिये उत्सुक है तो ये उसकी पूरी आर्थिक सहायता करते है। आर्थिक सहायता के अभाव मे कही एडमिशन इनके प्रभाव से होता हो तो वे खुद फोन करके उस कार्य को सम्पन्न कराने की पूरी चेष्टा करते है।

श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सभा की कुछ वर्षो पहले की वात है। सभा के कर्मठ कार्यकर्त्ता व ट्रस्टी महोदय से किसी वात पर काफी तू-तू मै-मै हो गई, वोलचाल भी वद हो गई। इसी पिरियड मे पर्यूषण पर्व आया। ट्रस्टी महोदय के मन मे विचार आया इनसे खमतखामणा करने का। वे इनकी ऑफिस गये, खमतखामणा करने हेतु। उन्हे देखते ही श्री दुगडजी के मन मे विचार आया, गल्ती मेरी थी और ये आये है खमत खामणा करने। तत्क्षण मानसिक भावो मे परिवर्तन आया और ये ट्रस्टी महोदय से पूरे मन से खमत खामणा किया। यही नही कई वार खुले मच पर से भी इन्होने इस घटना का जिक्र किया। आज दोनो महानुभाव अभिन्न अग है। यह है दिल की सरलता व सहजता का उदाहरण।

अभी पिछले साल की वात है। अखिल भारतवर्षीय स्तर की एक सस्था इनको अध्यक्ष वनाने के लिए पूरा जोर लगा रही थी। इन्होंने स्थिति को समझा व आचार्यश्री को निवेदन किया कि अध्यक्ष मे जो आवश्यक गुण चाहिए वे मै पालन नही कर रहा हूँ। अध्यक्ष वनना ठीक नही। जिस पद को पाने के लिये लोगो मे होड लगी हुई थी, सहज मे ही इनको मिल रहा था, ऐसे मे इसे सही स्थिति का जायजा लेना व ठुकराना विरले व्यक्ति ही कर पाते है।

उपर्युक्त तथ्यो पर हम गहराई मे ध्यान करते है तो ऐसा लगता है – पीडितो की पीडा निवृत्ति के लिये अपने जीवन का एक-एक क्षण, अपने प्राप्त साधना का एक एक कण पीडितो की सेवा मे अर्पण करना ही इनके जीवन का ध्येय लगता है। वास्तव मे निष्काम भाव से किये गये ये कार्य, किसी भी प्रकार के स्वार्थ या प्रतिफल की आकाक्षा के विना केवल कर्त्तव्य के नाते किया जाए तो ये सत्कर्म हमारे जीवन के वन्धनो को तोडकर मुक्ति का द्वार खोल सकते है।

इनके इन सद्गुणो सेवा, करुणा और सहिष्णुता को देखकर उत्तराध्ययन सूत्र (२९०४३) निम्न सूत्र की कामना इनके जीवन के लिये श्री जिनशासन देव से करते है–

"वयावच्चेण तित्थयर नामगोत कम्म निवद्धई

सुन्दरलालजी की सुन्दरता दानशीलता से सुशोभित है

अभयसिह सुराणा

श्री सुन्दरलालजी दुगड का विचार मन मे आते ही मेरे समक्ष उनके पूर्ववर्ती दो महान् दुगड मनीषियो की भव्य एव सौम्य मूर्ति प्रकट हो उठती है – स्वनामधन्य स्व सोहनलालजी दुगड एव स्व भवरलालजी दुगड की, जिन्होने अपनी दानशीलता एव जनसेवा से जुडे कार्यो के कारण पूरे समाज को गौरवान्वित किया है। उसी शृखला मे आज तीसरा नाम जुडा है श्री सुन्दरलालजी दुगड का, जिन्होने अपनी उदात्त सेवाभावना, दानवीरता एव त्यागोत्कर्ष के फलस्वरूप पूरे समाज एव देश मे अजस्र यश अर्जित किया है। स्व सोहनलालजी दुगड के बारे मे सर्व विख्यात है कि उनके पास जो भी याचक जाता था वह मनवाछित सब कुछ सहज ही पाता था। कहा जाता है कि वे भारतीय इतिहास के अविस्मरणीय महान दानवीर भामाशाह के साक्षात् अवतार थे। ऐसा ही यश स्व भवरलालजी दुगड ने भी अर्जित किया था। विद्यमान समय मे हमारे सर्वप्रिय एव सर्वजन हितैषी श्री सुदरलालजी दुगड भी उन्ही दोनो महान् दुगडो के पदचिह्नो पर चलते हुए समाज सेवा के प्राय सभी क्षेत्रो – शिक्षा, स्वास्थ्य, सस्कृति, जनकल्याण के कार्यो मे अपना अप्रतिम योगदान कर रहे हैं। मानव-जीवन से सबधित शायद की कोई ऐसा क्षेत्र होगा जिसमे सुदरलाल दुगड किसी न किसी रूप मे सहयोगी के रूप मे शामिल नही होगे।

श्री सुदरलाल दुगड की विशेषता केवल इस बात मे नही है कि वे महान् दानी है, बल्कि उनकी दानवीरता उनकी विनम्रता, सौम्यता, सुदरता के साथ जुडकर अत्यत महान् बन गई है। भगवद्गीता की यह पक्ति उन पर सटीक बैठती है कि–

दातव्यमिति यद्यान दीयतेऽनुपकारिणे।
देशे काले च पात्रे च तद्दान सात्विक स्मृतत्।।

अर्थात् दान देना अपना कर्त्तव्य है, ऐसे भाव से जो दान देश, काल और पात्र के प्राप्त होने पर प्रत्युपकार न करने वाले को दिया जाता है, वह सात्विक दान है।

अपने नाम की सार्थकता को सिद्ध करने वाले श्री सुदरलाल केवल अपने माता-पिता या परिजनो के लिए ही सुदर लाल नही हैं बल्कि वे पूरे समाज के सुदर लाल है। उन्होंने नामरूपात्मक सृष्टि मे अपने नाम को सार्थक किया है और सुदरलाल केवल सुदर नहीं, बल्कि सुदरतर एव सुदरतम भी है। शास्त्र कहता है कि व्यक्ति की सुदरता तन की सुदरता से नहीं, बल्कि मन की सुदरता से निर्धारित होती है। श्री सुदरलाल के मामले मे हम देखते है कि वे न केवल मन से सुदर एव आकर्षक है, अपितु कर्म से भी अत्यत मनोहर है। उनके सारे सेवार्थ कार्य अत्यत सुदर एव सर्वमान्य हैं। शेक्सपियर ने कहा है कि – Beauty lives with kindness सही अर्थो मे देखे तो सुदरलालजी की सुदरता उनकी दयालुता एव दानशीलता से सुशोभित है।

सुदरलालजी ने समाज हित मे जो कुछ भी किया है वह किसी यशैषणा के वशीभूत नही, बल्कि सहज मानवीय मूल्यो के तहत किया है। यह कर्त्तव्य समझ कर किया है कि प्रत्येक समर्थ व्यक्ति का धर्म है कि वह मानव एव समाज के उन्नयन के लिए यथायोग्य सहयोग करे। इसीलिए सुदरलाल के प्रत्येक कार्य मे एक विनम्र, शालीन, अहकाररहित भाव विद्यमान रहता है।

सुदरलालजी तकदीर के साड है। उन्होने जिस कार्य मे हाथ दिया वही स्वर्ण सदृश्य हो गया। उन्होने अपने परिश्रम एव उद्यम से अजस्र धन अर्जित किया और उसका सदुपयोग भी कर रहे है। उनके द्वारा समाज के विभिन्न क्षेत्रो मे किए गए महान् योगदान की सूची को देखकर सहज आश्चर्य होता है कि यह व्यक्ति मन का कितना सुदर एव उदात्त है। बिना किसी प्रत्याशा के जीवन एव समाज के तमाम क्षेत्रो मे वे सहज भाव से सहयोग करते रहे है। यह उनके उन्नत विचारो एव मानवीय हिताकाक्षा को प्रमाणित करती है।

मेरी मान्यता है कि सुदरलालजी के उत्थान मे उनकी पत्नी श्रीमती कुसुमजी दुगड का भी बडा योगदान है। कुसुमजी का सहज स्वभाव, दयाशीलता, परहितकातरता और पति के मनोनुकूल कार्य करने की अदम्य इच्छा देखते ही बनती है।

सुदरलालजी माँ करणी के परम उपासक है और उन पर उनकी असीम कृपा भी रही है। उनकी श्रद्धा भावना ने उन्हे सभी सकीर्णताओ से ऊपर कर दिया है और सभी धर्मो, सप्रदायो एव आस्थाओ के प्रति उनमे समान समादर है।

मै श्री सुदरलालजी की यश से पूरित दीर्घायु जीवन की कामना करता हूँ और यही शास्त्रोक्त अभिशसा करता हूँ कि–

शत जीव शरदो वर्धमान
शत हेमन्ताछतमु वसन्तान्।
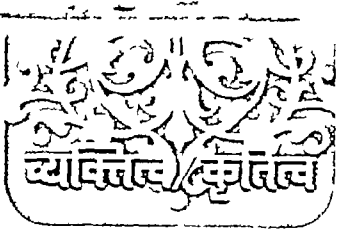
सात्विक शिक्षा सम्पन्न

आसकरण सुराणा
देशनोक (बीकानेर)

भरा नही जो भावो से, बहती जिसमे रस-धार नही।
हृदय नही वह पत्थर है, जिसमे करुणा की पुकार नही।।

सफलता का स्वरूप क्या है तथा किसे सफल व्यक्ति कहा जाये, यह एक सामान्य दृष्टिकोण है।

आचार्य चाणक्य ने अपने अमर ग्रन्थ अर्थ शास्त्र मे लिखा कि जो व्यक्ति अपनी बुद्धि से सामान्यो के बीच मे अपनी योग्यता को साबित कर सफलता अर्जित करता है तथा उसे सफल मानते है जो सासारिक वस्तुओ से ऊपर उठ कर सोचते है, ऐसा ही मेरा एक शिष्य है – सुन्दरलाल दुगड।

सुन्दरलाल दुगड का जन्म ५ फरवरी १९५४ को श्री मोतीलालजी दुगड के यहाँ हुआ। इनका लालन-पालन मृदु भाषी, धर्मपरायण, साहसी और कर्त्तव्यनिष्ठ माता सूरजदेवी की देखरेख मे हुआ। प्रारभिक शिक्षा दुगड विद्यालय मे हुई। उसके बाद मे सत्र १९६४-७० तक राजकीय करणी उच्च माध्यमिक विद्यालय मे अध्ययनरत रहे। हमेशा ही अध्ययन मे स्तर सामान्य से निम्न रहा तथा कक्षा सात मे एक बार असफल भी रहे। कक्षा आठ मे सानुग्रह अको से उत्तीर्ण हुए तथा कक्षा ११ मे पूरक परीक्षा मे उत्तीर्ण हुए। परन्तु दुगड अन्य सहगामी गतिविधियो मे जैसे खेल, समाज सेवा, एन सी सी व सास्कृतिक कार्यक्रमो मे अव्वल रहे। इस कारण ही आज वे सफल समाज-सेवी व उद्योगपति है। क्योंकि ये सस्कार उन्हे अपने माता-पिता, परिवार व समाज तथा शाला से हमेशा मिलते रहे। इनके लिए एक कहावत लागु होती है– '''होनहार वीरवान के हीत चीकने पात।'

आपकी इच्छा शक्ति वस्तुत ही कम्पास है जो समताओ और सभावनाओ को इगित करती है। यह एक विद्वान का कथन है कि जो व्यक्ति सफल होना चाहे उसे तीन शक्तिशाली परम अस्त्रो से युक्त होना चाहिए प्रथम, लक्ष्य पर अनवरत एव एकाग्र दृष्टि, दूसरा, उद्देश्य के लिए महत्त्वाकाक्षा एव तीसरा, सफल होने के लिए दृढ-निश्चय और अटूट विश्वास। ये तीनो ही गुण दुगड मे विद्यमान है जिसके कारण निरन्तर सफलता को प्राप्त कर रहा है। सफलता के मूल मन्त्र निम्न हैं–

वह पुरुष धन्य है जो धन होते हुए भी मदहीन तथा विनम्र है परन्तु ऐसे पुरुष ससार मे विरले ही होते है। धन बटोरकर मागना तृष्णा रखना बुरी बात है। ये शब्द भाईजी सुन्दरलाल दुगड के है–

भटक्या देस विदेस, यहाँ कुछ फलहु न पायो।
न कुछ को अभिमान छोड, सेवा चित्त लायो।।

दुगड के पास देश के प्राय सभी भागो से प्रतिदिन अनेको पत्र आते है जिसमे बच्चो की पुस्तके खरीदने के लिए, बच्चो के अन्न और वस्त्र की व्यवस्था के लिए, गायो के घास की व्यवस्था के लिए तथा कन्या के विवाह के लिए आर्थिक सहयोग की प्रार्थना करते है। स्वय दुगड इन पत्रो को पढते है और यथासाध्य सहायता भिजवाने का प्रयत्न करते है तथा निम्न से निम्न स्तर के व्यक्ति के साथ मिलकर उनकी माँग के अनुसार सहायता करते है और खाली हाथ नही लौटाते है। सबसे सहज, शान्त और प्रसन्न परिवार के सदस्यो की भाँति मिलकर बातचीत करते है। दुगड के मुख पर सदैव करुणा, कृतज्ञता और प्रसन्नचित्त भाव रहता है। अपने परिवार के सुजनो की सेवा भावना को अक्षुण्ण रूप मे अपनाये रखने के लिए प्रेरित करते है। अनेक सस्थाओ को वह बाढ, अकाल, भूकम्प, अग्निदाह, दैवी प्रकोपो से पीडित प्राणियो की हमेशा सहायता करने मे तत्पर रहते है। जब आपकी माता को असाध्य बीमारी हो गयी तो सभी काम-काज को छोडकर माता के इलाज हेतु सेवा मे तत्पर रहे।

रिश्ते मे छोटे सभी, माँ से बडा न कोय।
माँ की अनुकम्पा बिना, कोई बडा न होय।।

यह कथन दुगड के है। जब उनकी माता वृक्क रोग से पीडित थी तो अपनी माता को देशनोक से दिल्ले ले गये। वहाँ उन्होने अपोलो अस्पताल मे भर्ती करवाया और दिन-रात उनकी सेवा मे लगे रहे। जब हालात स्थिर रहे तो माता को पुन देशनोक लाकर माता के कहे अनुसार पुनीत कार्यो मे लग गये। किन्तु अपने व्यावसायिक कार्यो को माताजी की अतिम सेवा के आगे उस समय नगण्य माना। अगर कही से भी व्यावसायिक सदेश मिला तो उन्होने अपने अधीनस्थ को यही कहा कि आप ही इन कार्यो को देखे। अभी मेरे लिए माताजी की सेवा ही सर्वोपरि है। ऐसा कहने म मुझे गर्व है कि मेरा प्रिय शिष्य दुगड कर्त्तव्यबोध का ही सहजता से पालन करता है। मै इसके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

दुगड की सफलता के मूल मन्त्र

लक्ष्य	–	अर्जुन की तरह
ध्यान	–	बाज की तरह
एकाग्रता	–	बगुले की तरह
कडी मेहनत	–	किसान की तरह
नियोजन एव प्रबधन	–	आचार्य नानालालजी की तरह
रफ्तार	–	चीते की तरह
नीद	–	श्वान की तरह
प्रेम भाव	–	स्वामी विवेकानन्द की तरह

वही इन्सान सफल है जो माता-पिता और गुरुजनो का सम्मान करता हो, उनकी सेवा-आदर करता हो, ऐसा उदाहरण मेरे सामने कलकत्ता प्रवास के दौरान देखा गया। जब मै वहाँ गया तो मैंने देखा कि वहाँ पर दुगड से मिलने वाले व्यक्तियो की लाइन लगी हुई थी। व्यवसायी कार्यो वाले व अन्य निजी कार्यो वाले लोग उनसे मिलने आये हुए थे। जब मैंने एक सदेश शिष्य को भेजा तो वह विनम्र भाव से बाहर आकर नत-मस्तक प्रणाम किया और मेरा परिचय मैनेजमेन्ट कमेटी से करवाया। ऐसी विनम्रता शिष्य दुगड मे विद्यमान है तथा गुरुजनो के [illegible] आदर्शो पर चलना, सच्चे अर्थ मे तो यही शिक्षा ली दुगड ने।

दान : अर्थ की सर्वोत्तम गति

कृष्णबिहारी मिश्र, कोलकाता

धनपति की अर्थ-क्षमता के समुचित नियोजन की सर्वोत्तम विधि दान है, ऐसा भारतीय ऋषियो ने निर्देश दिया है और भारत के आर्य चिन्तन का एक मूल्यवान निष्कर्ष यह है कि स्व-कल्याण के लिये लोक-मगल की चिन्ता-चेतना को निरन्तर समृद्ध-पुष्ट करते रहना ही सटीक राह है। किसी भी अर्थ-समर्थ व्यक्ति के जीवन की कृतार्थता का निर्णायक आधार उसकी लोक-कल्याणमूलक भूमिका ही है। उसकी अर्थ-क्षमता कितने बडे मानव-समाज के हित मे नियोजित हुई है, इसी दृष्टि से उसकी जीवनचर्या का मूल्याकन होता है और उसकी महत्ता इतिहास मे टाकी जाती है। स्वनाम धन्य जमनालाल बजाज और काशी के बाबू शिवप्रसाद गुप्त की आर्थिक क्षमता महामना प मदनमोहन मालवीय और महात्मा गाँधी के महत् प्रयोजन से जुड कर धन्य हुई थी और ऐतिहासिक तथ्य है कि खेतडी-नरेश अजीत सिह ने एक युवा सन्यासी स्वामी विदिशानन्द सूर महत रायकृष्ण देव के आध्यात्मिक वारिस स्वामी विवेकानन्द को अपेक्षित आर्थिक सहयोग देकर धन्यता का वह उच्च सोपान उपलब्ध किया था, जिसके सामने बडे-बडो का माथा श्रद्धानत था। भारत का विवेक मानता है कि वही अर्थ-दान महत् दान की कोटि का होता है तो श्रद्धा-नमित होकर दिया जाता है। मूल्यवान निर्देश है–श्रदया देयम। कर्म-धन्य पुरुष वही माना जाता है जिसमे औदार्य और श्रद्धा-भाव सहज होता है। खेतडी-नरेश, सेठ जमनालाल बजाज और बाबू शिवप्रसाद गुप्त के दान-धर्म का महत् है कैशिष्ट्य यही है कि उसका प्रेरक तत्त्व श्रद्धा-भाव था, जिसने उन्हे लोक-वध बनाया। केवल वही श्रीमत कर्म-धन्य और समाज का श्रद्धाभाजन बन पाता है, जिसका अर्थ क्षमता लोक मगल सम्पन्न होता है।

कोलकाता के नव धनाढ्य श्री सुन्दरलाल दुगड के सुकृत्य का वृतात अपने समाज-विशिष्ट राजस्थानी बन्धुओ से सुनकर मेरा मन-आश्वस्त-प्रीत हुआ कि आज के उपभोक्तावाही समाज के उत्पाद के रूप मे खडे सघन और डरावने तमस् के बीच ऐसे उदारमना और जागरुक व्यक्ति है जो भारतीय आदर्श को अपनी जीवन-साधना से रक्षा करने मे श्रद्धया सक्रिय है।

मैंने मित्रो से सुना है कि श्री सुन्दरलालजी का आरम्भिक जीवन कठिन तपस्या और सघर्ष से, अर्थाभाव की ज्वाला से मुठभेड करते बीता है और यह कि आज वे जिस विपुल सम्पदा के स्वामी है वह उनकी स्व-निर्मित है। उज्ज्वल पक्ष है दुगडजी के चरित्र का कि बडी सम्पदा अर्जित करने के बाद भी अर्थाभाव के दश को भूले नही है। इसलिये दम्भ उनकी नैसर्गिक सरलता, नम्रता और सौजन्य पर हावी नही हो सका, उनकी भाषा और आचरणशैली मे एक सहज मानुष ही दिखाई पडता है, सौजन्य जिसका आकर्षक गुण है। वे अर्थ-अक्षम लोगो के प्रति सवेदनशील है।

सामर्थ्य और सहदयता का योग मानव जाति के लिये मागल्य विधायक होता है। सुन्दरलालजी सहदय नव श्रीमत है। अपनी विचक्षणता और श्रम-उद्योग से उन्होने बडी अर्थ-क्षमता अर्जित की है। और अपने इस सौभाग्य को दुगडजी ने लोक के मगल मे नियोजित कर धन की सद्गति का आस्वाद उपलब्ध किया है, अपने सद्कर्म और दान-धर्म से लोक-सम्मान की पात्रता का आधार तैयार किया है। यह आधार और पुण्य-सुमुखता निरन्तर पुष्ट-समृद्ध होती रहे ताकि सामाजिक मूल्यो के सरक्षण-सम्वर्द्धन का आश्वासन कायम रहे।

मेरा कर्म-क्षेत्र भिन्न है। इसलिये अपने शहर के नये समर्थ श्रीमत श्री सुन्दरलालजी दुगड से मेरा नैकट्य और अन्तरग परिचिति नही बन पाई है। महज एक बार १५ जनवरी २००७ को साहित्य-कला-जगत के कृत्री पुरुष के सम्मान मे आयोजित कोलकाता की एक सभा मे उनसे भेट हुई थी। उनकी शराफत ने मुझे स्पर्श किया था। उनकी नम्रता और मृदु व्यावहारिकता ने मुझे इसलिये प्रभावित किया था, क्योंकि ये मानवीय गुण आज विरल है। आज के उपभोक्ता-सभ्यता के अधड मे मनुष्य का शील-पक्ष बेहद कमजोर हो गया है, शालीनता, विनम्रता, शील की स्वच्छता-सादगी को भोग और दम्भ जैसे लील गया हो और घर-बाहर मनुष्य रूप मे दिखने वाला आदमी का सटीक परिचय अमानुष रूप मे दिया जाना सही जान पडने लगा है। मूल्यो की ढाही के इस अधे युग मे मानव-मूल्य और सच्चे मानुष भाव को अपने आचरण और अर्जित शक्ति से अपेक्षित पोषण देनेवाला कोई मनुष्य दिखाई पडता है तो टूटते आश्वासन को एक सहारा मिलता है। अपने राजस्थानी मित्रो, विशेषत प्रेमी मानुष श्री अभयसिह सुराणा तथा मेरे चिरकाल के परिचित भोजपुरिया भाई श्री कृष्ण गोपाल सिन्हा से श्री सुन्दरलालजी के चरित्र के बारे मे जो जानकारी मिली है वह आश्वास्तिवर्द्धक है। मन कामना है मेरी कि ऐसे चरित्रो की सख्या दिनोंदिन बढे, जो सामर्थ्य के साथ सहृदयता का मालिक हो ताकि समाज सच्ची समृद्धि का दावा कर सके।

निष्काम भाव से विवेकपूर्वक किया गया दान ही पुण्य का रूप लेता है, इस सत्य के मर्म का सटीक बोध समर्थ लोगो को होना चाहिये। मनु कहते है– 'दान सम् विभाग '। एरामस्तु।
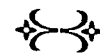
अजातशत्रु :: श्री सुन्दरलाल दुगड़

अनूपचन्द सेठिया
अध्यक्ष, श्री अरिहन्तमार्गी जैन सघ

खामेमि सच्चे जीवा, सव्वे जीवा खमतु मे।
मित्ती मे सव्वे भूएसु, वैर मज्झ न केणई।।

उपर्युक्त गाथा हर जैन कम से कम साल मे एक वार तो अवश्य उच्चारण करता ही है और कई श्रावकगण प्रतिदिन ही इसका उच्चारण करते है लेकिन श्रीमान् सुन्दरलालजी दुगड ने इसको जीवन मे उतार लिया है।

श्रीमान सुन्दरलालजी दुगड ने क्रोध को जीत लिया है। वे किसी से भी वैर का वदला लेने की भावना नही रखते। ईट का जवाव पत्थर से व चॉटे का जवाब मुक्के से नही देते किन्तु उनके रोम-रोम से करुणा निर्झरित होती रहती है। वे शारीरिक या मानसिक कष्ट देने वाले को भी तहे दिल से क्षमा कर देते है यानि उनका क्रोध उपशान्त हो चुका है। होठ मुस्कुराते है, नयन शीतल झरना निर्झरित करते है, रोम-रोम वात्सल्य वरसाता है। इनके गुणो मे वे निम्न वाक्य को अन्त करण से उच्चरित करते है–

''खामेमि सव्वे जीवा''

श्री सुन्दरलालजी दुगड ने अभिमान को तिलाजली दे दी है। आपके अन्त करण मे प्रेम का सागर हिलोरे लेता है और प्रेम का दीप जगमगाता है। आपके कार्य एव चितन निम्न स्तर के नही है। आपमे अह का रोग नही होने के कारण ही आप अर्ह की यात्रा करने की शक्ति रखते है और इन्ही गुणो वाला व्यक्ति ही किसी से याचना कर सकता है– 'सव्वे जीवा खमतु मे' सभी जीव मुझे क्षमा करे।

आपमे माया नही है, छल, कपट नही है। आप किसी से धोखा खाने के बाद भी उससे मित्रता समाप्त नही करते। आपके किसी भी क्रिया-कलाप से स्वार्थ की वू नही आती। आपने अपनी शक्ति किसी का विध्वश करने मे नही वल्कि निर्माण करने मे लगायी है। आपने किसी की लकीर छोटी नही की वल्कि अपनी लकीर वडी की है। इन्हीं गुणो का धारण करने वाला ही उच्चरित कर सकता है–

''मित्ती मे सव्व भएसु'' सभी जीवों से मेरी मित्रता है।

आपमे लाभ नही है। आप किमी दूसरे का अधिकार नही छीनते है। आपके अन्त करण मे ''वसुधैव कुटुम्वकम्'' की भावना हिलोरें लेती रहती है। आपके लिए कोई पराया नही है और इमीलिए आपका किसी से वैर-विरोध नही है।

''वैर मज्झ न केणई''

अर्थात् आपने चारो कपायो का उपशमन कर लिया है और इसी कारण से उपर्युक्त गाथा आपके जीवन मे उतर गयी है।

देशनोक मे ही नही, वीकानेर जिले म ही नहीं, वगाल मे ही नही वल्कि पूरे भारतवर्ष के सार जैन समाज मे आप जैमा व्यक्तित्व मिलना दुर्लभ है। मै आपका दानवीर की उपमा नहीं देता भामाशाह की उपमा नही देता क्योंकि लोगो ने अपने तुच्छ स्वार्थ की पूर्ति के लिए इन उपमाओ का महत्त्व ही खत्म कर दिया है। मै तो सिर्फ इतना ही कह सकता हूँ कि आप जैन समाज के एक आदर्श है एव आपका अभिनन्दन करके जैन समाज अपने आपको गौरवान्वित अनुभव कर रहा है एव अपने दायित्व का पालन कर रहा है।

राष्ट्र गौरव :: श्री सुन्दरलाल दुगड़

जयचदलाल मिन्नी, कोलकाता

श्री सुन्दरलाल दुगड ने मारवाड की माँ करणी के तीर्थ देशनोक धाम, बीकानेर जिले मे श्री मोतीलाल दुगड के यहाँ जन्म लिया। ओसवाल जैन समाज के इस बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न, प्रखर मेधावी तथा अथक अध्यवसायी व्यक्तित्व ने न केवल अपनी जन्मभूमि एव प्रदेश अपितु समग्र राष्ट्र को अपने बहुआयामी नेक क्रियाकलापो से गौरवान्वित किया है। श्री दुगड उत्कृष्ट समाज सेवी तथा सम्मानित बुद्धिजीवी है। मानवीय अधिकारो एव सरोकारो के प्रबल समर्थक आपका सम्पूर्ण जीवन लोककल्याणकारी कार्यो के लिए समर्पित है।

आप अनेक रूपो–प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप से लोकोपकारी गतिविधियो से घनिष्ठ रूप से सवद्ध है। श्री श्वेताम्वर स्थानकवासी जैन सभा, कोलकाता के शिक्षा, सेवा एव साधना के बहुआयामी सर्वजन-हित कार्यो से प्राणपण से जुडे है। विद्यालय, हॉस्पीटल, कॉलेज आदि कार्य आपके सक्रिय सहयोग से निरन्तर प्रगति पथ पर आरूढ है।

आप एक सफल भवन निर्माता, लब्धप्रतिष्ठ उद्योगपति एव ख्यातिप्राप्त व्यवसायी है। मरुधरा के इस सपूत ने राजस्थान के अतिरिक्त पश्चिम बगाल तथा अन्य प्रदेशो में निस्पृह, निष्काम एव कमलवत निर्लिप्त रहते हुए अत्यन्त उदारतापूर्वक विना किसी यश, कीर्ति एव प्रशसा के उदार एव उदात्त भाव से सहयोग देकर अपने जीवन को ही कृतार्थ नही किया है वरन् अपनी जन्मभूमि को धन्य बनाया है। एमी तप पूत आत्मा को हमारा अशेष साधुवाद। आप दीर्घायु एव यशस्वी हो, यही हार्दिक कामना।

गीत

(राग माढ) रचयिता सुश्री कल्पना जैन

सुन्दर, सुन्दर, सुन्दर, सुन्दर
सुन्दर थारो नाम ।
वीकाणे री धरती जाम्या,
दुगड कुल मे थे हो जाम्या
माँ करणी रे धाम ।। म्हाने आछा लागोसा
म्हाने चोखा लागोसा सैन वाला लागोसा
तन स्यू सुन्दर, मन स्यू समुदर, मधरा मधरा वाल ।
मान मरोड न राई रत्ती, जाणा मिनखा माल ।। म्हाने आछा लागोसा
म्हाने चोखा लागोसा सैन वाला लागोसा
भामाशाह री खोड खुडाई, दुगड़ मोहनलाल ।
वाँरै पथ पर थे हो चाल्या मोती-सुरज लाल ।। म्हाने आछा लागोसा
म्हाने चोखा लागोसा सैन वाला लागोसा

श्री सुन्दरलाल दुगड़ : उदारता एवं विनम्रता के पर्याय

डॉ० प्रेमशकर त्रिपाठी

यद्यपि श्री सुन्दरलालजी दुगड से मेरा व्यक्तिगत सम्पर्क नही है परन्तु उनकी उदारता एव विनम्रता से मै सुपरिचित हूँ। इन गुणो के कारण समाज मे उनकी अपार प्रतिष्ठा है।

समाज मे वही व्यक्ति समादृत होता है, जो क्षेत्र-विशेष मे विशेषज्ञता हासिल कर लोक-मगल के लिए स्वय को समर्पित करता है। सुन्दरलालजी ने कठिन परिश्रम एव निष्ठा से उद्योग एव व्यवसाय के क्षेत्र मे शीर्ष स्थान प्राप्त किया है। अपने उपार्जित धन के एक भाग को समाज-कल्याण के लिए मुक्त-मन से समर्पित कर वे कृतकृत्यता का अनुभव करते है। शिक्षा, चिकित्सा, धर्म तथा लोककल्याण के विभिन्न क्षेत्रो को उन्होने अपनी उदारता से परिपुष्ट किया है। अगणित सस्थाएँ, अनगिनत सेवा-प्रकल्प तथा अनेकानेक योजनाएँ उनके सहयोग से गतिशील है।

शास्त्रो मे धन की तीन गतियाँ बताई गई है–दान, भोग और नाश। गोस्वामी तुलसीदासजी ने कहा भी है – 'सो धन धन्य प्रथम गति जाकी'। यानी वही धन श्रेष्ठ है, जो अपनी सर्वोत्तम गति (दान) प्राप्त करता है। इस दृष्टि से सुन्दरलालजी धन का सर्वोत्तम उपयोग कर अपनी विवेक दृष्टि का परिचय दे रहे है। उनकी खासियत यह है कि वह उदारता, विनम्रता से समन्वित है। अह का भाव उनमे लेश-मात्र भी नही है। अपनी सदाशयता से वे सबको प्रभावित कर लेते है। आमतौर पर ऐसा देखा जाता है कि उदारमना कहे जानेवाले लोग वाणी से, कर्म से तथा अपनी देह-भाषा (Body language) से अपनी श्रेष्ठता प्रमाणित करने को उद्यत रहते है, परन्तु उसके विपरीत सुन्दरलालजी को जिस किसी सामाजिक-सास्कृतिक आयोजन मे देखा है, उनकी मिलनसारिता तथा विनयशीलता को मैंने सदैव लक्षित किया है। मृदुभाषी, मितभाषी और मिष्ट भाषी सुन्दरलालजी को देखकर तथा मित्रो से उनकी दानशीलता की बाते सुनकर एक दोहा याद आ रहा है–

दया धरम हिरदै बसै, बोलै अमरित बैन ।
तेई ऊँचे जानिए, जिनके नीचे नैन ।।

भर्तृहरि के 'नीति-शतक' के एक श्लोक मे परोपकार पद्धति का विश्लेषण करते हुए कहा गया है कि जिस प्रकार फलो से लदने पर वृक्ष झुक जाते है, नवीन जल से परिपूर्ण मेघ भी पृथ्वी पर झुक-झुककर विहार करने लगते है, उसी प्रकार सज्जन पुरुष भी ऐश्वर्य सम्पन्न होने पर विनम्र हो जाते है। सदैव विनम्र रहना परोपकारियो का स्वभाव है–

भवन्ति नम्रास्तरव फलोद्‌गमै–
नंवाम्बुभिर्भूमिविलम्बिनो घना ।
अनुद्धता सत्पुरुषा समृद्धिभ
स्वभाव एवैष परोपकारिणाम ।।

कहने की आवश्यकता नही कि श्री सुन्दरलालजी दुगड के सदर्भ मे भी यह श्लोक सार्थक है। प्रभु की कृपा उन पर अनवरत बरसती रहे तथा समाज-कल्याण की भावना अधिक बलवती होकर उन्हे अनत कीर्ति प्रदान करे, अभिनदन समारोह पर यही मगल कामना है।

"वैष्णव जन तो तेने कहिए जे, पीड़ पराई जाबे रे"

जिदगी स्वय ही प्रेरणा स्रोत बन जाती है औरो के लिए एव भोगा हुआ यथार्थ जीवन को सद्‌कर्मों की ओर प्रवृत्त करने का प्रकाश स्तम्भ। जी हाँ, मैं सुदरलालजी दुगड के सन्दर्भ मे इन पक्तियो को गुनगुना रही हूँ। परोपकार और समाज सेवा के लिए जीवनानुभवो ने ही उनको प्रेरित किया कुछ रचने के लिए कर्मठ, उद्यमी, सुन्दरलालजी दुगड को। मरुधर राजस्थान के रेतीले ग्राम देशनोक मे जन्मे सुन्दरलालजी को शिक्षा, स्वास्थ्य एव रोजगार इन तीनो क्षेत्रो मे सहयोग देने की यह प्रेरणा दी उन्ही के अपने जीवन ने। अर्थ के अभाव मे जीवन अर्थहीन न हो यही उनका मकसद था। स्वय कष्ट सहे बिना दूसरो के कष्टो का अनुभव जीवन मे नही होता। कम वय मे ही आपका विवाह उन्मुक्त वातावरण मे पली-बढी कान्वेट सुशिक्षिता कन्या से हुआ। सयुक्त परिवार का ग्रामीण परिवेश, सयुक्त परिवार की अपनी विडम्बनाओ के बीच जीवन से तालमेल बिठा पाना जब असहज हो गया तब सपत्नीक कलकत्ता आगमन हुआ। निजी व्यवसाय आरम्भ हुआ। इसी दौरान उनकी कन्या 'रूपरेखा' का जन्म हुआ। कन्या 'मेन्टली वीक' हुई। आर्थिक तगी के दिन। परिवार वालो से भी असहयोग। फलत समय से कन्या की समुचित चिकित्सा नहीं हुई। तीन-चार वर्ष के पश्चात् समर्थ होने पर इलाज हुआ किन्तु पत्नी के मन मे एक गहरा विक्षोभ था जो सम्पूर्ण जीवन मे दश देता रहा। माता-पिता के प्यार को पाने की एक नन्ही ी चाहत अन्तत पूरी हुई उनके अस्वस्थता के समय। माँ का आशीर्वाद प्रतिफलित हुआ उनके श्रीसमृद्धि की वृद्धि मे। पुत्री, माता-पिता की चिकित्सा के दौरान तय किया कि यदि चिकित्सा के लिए कोई सहयोग माँगेगा तो यथाशक्ति सहयोग देगे। इसी विचार के तहत देशनोक मे चिकित्सालय बनवाया। बीकानेर के सरकारी अस्पताल मे ३० बेड का वार्ड बनवाया और साथ ही अनेकानेक चिकित्सकीय सुविधाएँ उपलब्ध करवाईं।

तीसरा प्रण हुआ विकलाग बच्चो की देखभाल की व्यवस्था के सहयोग एव वयोवृद्धो की देख-रेख के लिए वृद्धाश्रम की स्थापना। इस सम्पूर्ण यात्रा के पीछे बुनियाद के रूपरेखा की दयालु प्रवृत्ति थी।

कहते हैं ना कि दर्द को स्व से निकालकर पर की पीडा की अनुभूति के रूप मे लेते हैं वही श्रेष्ठ होता है। उद्योग-धधो मे सफलता तो बहुतो को मिलती है किन्तु पहचान उसी की होती है जो औरो के लिए जीता है। यही तो पहचान है दुगडजी की।

माला बैद

प्रधानाध्यापिका, जैन शिक्षालय,
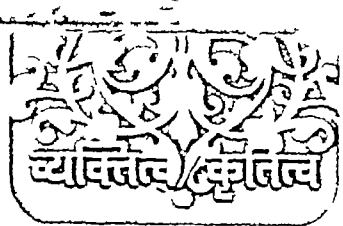
मणिकांचन संयोग

सुरेन्द्रकुमार बाँठिया

श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सभा, कोलकाता

समाज रत्न भाई सुन्दरलालजी दुगड का अभिनदन समारोह वस्तुत उनके गुणो का ही अभिनदन है। एक स्वनिर्मित व्यक्ति के रूप मे आपने अथक परिश्रम अध्यवसाय एव दूरदर्शिता का परिचय देते हुए अपने को एक व्यवसायी से ऊपर उठाकर उद्योगपति के रूप मे प्रतिष्ठित किया। उन्होंने व्यवसाय और उद्योग के जिस क्षेत्र मे हाथ डाला, सफलता अर्जित की। अपने अर्जित धन का सदुपयोग वे उसकी उत्तम गति मे ही करते है। धन की उत्तमगति है दान। सुन्दरलालजी ने कल्पवृक्ष की भाँति विभिन्न सस्थाओ, विद्यालयो, वृद्धाश्रमो, अस्पतालो, परमार्थिक सस्थानो, उपाश्रयो, धर्मस्थलो, छात्रावासो आदि के निर्माण से लेकर उसे पुष्पित और पल्लवित करने का प्रयास किया। उनकी सबसे बडी रूचि विद्यार्थियो की उच्च शिक्षा हेतु छात्रवृत्ति और आर्थिक सहयोग देने मे है। उनकी धारणा है कि उस सहायता से छात्र आत्म-निर्भर होकर भविष्य मे अपनी और राष्ट्र की सेवा कर सकता है। राष्ट्रीय स्तर पर सहायता-दान और सेवा को ध्यान मे रखकर राजस्थान परिषद् के तत्त्वावधान मे उन्हे भामाशाह सम्मान से सम्मानित किया गया।

भाई सुन्दरलालजी दानवीर तो है ही परन्तु उसमे सोने मे सुगध का कार्य करती है उनकी विनयशीलता। असहाय, रोगी, परेशान, निराश व्यक्ति जब उनसे मिलता है तो उसकी हर तरह से सहायता करके उसमे पुन आशा की किरण जगा देते है। ऐसे निरभिमानी, विनयी व्यक्ति की शीतलता के सन्मुख सभी नत मस्तक हो जाते है।

भाई सुन्दरलालजी ने 'ना' कहना तो सिखा ही नही। नैपोलियन की तरह उनके शब्दकोष मे 'असम्भव' और 'ना' है ही नही। मुझे भाई सुन्दर के साथ कई सामाजिक सस्थानो मे कार्य करने का मौका मिला। उनके साथ काम करने का मजा ही और है। यदि काम (Project) उनकी समझ मे आ जाये और कार्य को करने वाले पर उनका विश्वास हो तो वे तुरन्त ही आर्थिक अनुदान हेतु तत्पर हो जाते है।

अद्भुत कार्यक्षमता, कुशल प्रबन्ध क्षमता युक्त सुन्दरलालजी कार्य मे आने वाली हर बाधाओ का बडी आसानी से निराकरण कर देते है।

भाई सुन्दरलालजी मे एक अद्भुत विशेषता यह भी है कि उनका सम्बन्ध राजनेताओ, उच्च अधिकारियो, राजनैतिक अधिकारियो से जैसे है वैसे ही उनका सम्बन्ध साधारण लोगो, जरुरतमदों से भी है। वे उनके साथ कोई अनादर का व्यवहार नही रखते। यह उनके समता दृष्टि का परिचायक है। सभी से प्रेम से मिलना, मद-मुस्कान, मृदु भाषिता और शालीनता उनके गुणो मे चार चाँद लगा देते है।

वस्तुत उनका यश अक्षुण्ण है। उनका यश शरीर युगो-युगो तक स्मरणीय रहेगा। आज समाज उनका अभिनदन कर रहा है। वस्तुत समाज अभिनंदित हो रहा है उनके गुणो का अभिनदन कर हम आने वाली पीढी को उन गुणो का अनुसरण करने की प्रेरणा देंगे।

सुन्दरलालजी स्वस्थ रहते हुए शतायु हो और समाज को अपने अक्षय निधि से इसी प्रकार अनुदानित करते रहे। समाज को उनसे और उनके सुपुत्र श्री विनोदकुमार दुगड से काफी उम्मीद है। आशा है उनके गुणो और दान की श्रीवृद्धि उनके सुपुत्र करते रहेंगे। [illegible] वस्तुत [illegible] है।

जन-जन के हृदय सम्राट

चादमल बरडिया, उपाध्यक्ष

कर्मठ सुश्रावक श्री सुन्दरलाल दुगड जिनके जीवन की विशषताओ का वर्णन शब्द नही अपितु उनके कार्य स्वय बतलाते है। आप उद्योगपति होते हुए भी सरल स्वभावी, परोपकारी एव दयालु है। आप जरुरतमदो को बिना किसी भेदभाव के मन मे अच्छे विचार रखते हुए सहयोग देकर उपकार करते है तथा साधार्मिक भक्ति के प्रति आपकी विशेष रुचि है। आपने धार्मिक, सामाजिक एव सेवा क्षेत्र मे महत्त्वपूर्ण कार्य किये है जो सदैव स्मरणीय रहेगे। आप तन-मन-धन से सस्थाओ को सहयोग प्रदान कर उनको उन्नति की ओर ले जाते हुए पुण्योपार्जन करते है। आप शिक्षा प्रेमी है, मानव सेवा मे आपकी विशेष रुचि है, साथ ही धार्मिक क्षेत्र मे भी आप अपना सहयोग प्रदान करते रहते है। विनम्रता, प्रेम, विनय आपके जीवन के अभिन्न अग है जो आपको ऊँचाइयो के शिखर पर ले जा रही है। आप दृढविश्वासी, वाणी के पक्के, कर्मठ एव सरल स्वभावी है। व्यापार मे आपने अनेको बिल्डिगो का निर्माण करवाकर समाज व जनता को आवास-निवास की सुविधाएँ उपलब्ध करवायी है जो जीवन-निर्वाह के लिए अत्यन्त आवश्यक है। आपकी विश्वसनीयता ही व्यापार जगत मे चार चाँद लगा रही है और यही कारण है कि बिल्डीग प्रमोटरो मे आर डी बी समूह अपना विशेष स्थान रखती है। जो भी प्रोजेक्ट आप लाते है उद्घाटन के दौरान ही सम्पूर्ण बुकिग हो जाती है। एन टी सी जैसी रुग्ण कम्पनी का अधिग्रहण कर उसे लाभ मे लाकर सचालन करना आपकी कार्य कुशलता का परिचायक है। अहकार, विज्ञापनबाजी, प्रदर्शन आदि आपके जीवन से कोसो दूर हैं। विनम्रता एव सरलता ही आपके जीवन का अभिन्न अग है। यही कारण है कि आज सैकडो सस्थान आपके अभिनन्दन करने को लालायित है। आपके जीवन की यह सबसे बडी उपलब्धि है। राजनैतिक क्षेत्र मे सक्रिय न होने के बावजूद आपका इतना प्रभाव है कि सभी कार्य बिना किसी कठिनाइयो के निष्पादित हो जाता है। श्री अपार्टमेन्ट की छत पर आपने मन्दिर बनाने मे अभूतपूर्व सहयोग, यह आपकी विशुद्ध धर्म भावना का प्रतीक और पुण्याई का फल है।

प्रारम्भ से ही आप जैन श्वेताम्बर श्रीसघ के सक्रिय एव आजीवन सदस्यो मे से है तथा अविभाज्य अग भी। श्री सम्मेदशिखर महातीर्थ मे निर्मित इसकी शाखा "भोमियाजी भवन" मे आप शुरू से ही तन-मन-धन से सहयोग प्रदान करते रहे है। आपकी बराबर यही भावना रही कि तीर्थयात्रा मे पधारे हुए श्रद्धालु भक्तो की सुविधाजनक आवास-निवास एव भोजन की सुन्दर व्यवस्था हो। होली के पुनीत अवसर पर प्रतिवर्ष फाल्गुन सुदी १५ को आपकी तरफ से साधार्मिक भक्ति का आयोजन रखा जाता है जिसमे हजारो लोग इसका लाभ लेते है। १२००० वर्ग फीट की विशाल भोजनशाला निर्माण मे तथा धर्मशाला के विकास मे आपकी सेवा व सहयोग सदैव स्मरणीय रहेगा। वर्तमान मे आप संस्था के संयुक्त अध्यक्ष का भार सम्भाले हुए है। आपके मार्गदर्शन एव सहयोग से संस्था निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर होगी, यही आशा रखते है।

प्रभु से यही मगल कामना है कि आपकी सरलता, परोपकारिता, दया भावना आदि सुन्दर विचारो को कायम रखते हुए आपके विचारो का इतना सुदृढ [illegible] जन-जन के हृदय मे समा जाये।

सरस्वती उपासक, लक्ष्मी पुत्र

चिमनलाल ओस्तवाल, सयोजक
श्री गणेश जैन छात्रावास, उदयपुर

लक्ष्मी और सरस्वती का निवास एक साथ हो, यह प्राय देखने-सुनने मे कम ही आता है किन्तु आदरणीय श्री सुन्दरलालजी दुगड इसके अपवाद है। इनमे मणि-काचन का यह योग है। पुण्य कर्मों के पुण्योदय और स्वय के पुरुषार्थ से अल्प समय और अल्पायु मे ही अथाह सम्पत्ति अर्जित कर जहाँ एक ओर आप लक्ष्मी पुत्र है वही दूसरी ओर अपनी इस प्रचुर धन राशि का विनियोजन उदारता पूर्वक विशेष रूप से शिक्षा के क्षेत्र मे जिस द्रुत गति से कर रहे है उससे यह स्थापित होता है कि आप सच्चे अर्थो मे सरस्वती के उपासक हैं।

श्री गणेश जैन छात्रावास के सयोजक पद का कार्य निर्वहन करते हुए मेरे मन मे सदैव इस बात की विडम्बना रही कि विगत कुछ वर्षों से छात्रावास का कोई भी भौतिक विकास सम्बन्धी कार्य नही हुआ है, इतना ही नही छात्रावास मे रहने वाले छात्रो के लिए प्रार्थना एव सामायिक करने का उपयुक्त स्थान भी नही है। अत मैंने अपने कार्यों की प्राथमिकता मे यह सम्मिलित किया कि छात्रावास के सयोजक पद पर रहते हुए इस वर्ष छात्रावास मे सामायिक हॉल का निर्माण अवश्य करवा सकूँ। मै अपने इस दृढनिश्चय के साथ ही आचार्य श्री रामेश के इन्दौर चातुर्मास मे पहुँचा और जब मैंने अपनी इस भावना को आदरणीय श्री सुन्दरलालजी सा दुगड के सामने रखी तो आपने तत्काल ही मेरे द्वारा इस कार्य हेतु मागी गई सम्पूर्ण ५ लाख की राशि अपनी ओर से देने की न केवल स्वीकृति प्रदान की वरन् कुछ ही समय मे आपने यह सम्पूर्ण राशि भी हमे भिजवा दी जिससे हमारे कार्य का उत्साह द्विगुणीत हो गया और मात्र ६ माह की अल्पावधि मे ही इस सामायिक हॉल का निर्माण पूर्ण हो सका। वर्तमान मे यहाँ ८५ छात्र नियमित प्रार्थना एव सामायिक की आराधना कर रहे है। इस धार्मिक कार्य हेतु पर्याप्त स्थान की व्यवस्था करने का जो पुण्यार्जन आदरणीय दुगड सा ने अर्जित किया है उसके लिए निश्चय ही आप साधुवाद के पात्र है।

आप सच्चे अर्थो मे सरस्वती पुत्र हैं। शिक्षा के प्रति अनुराग का ही परिणाम है कि छात्रावास के कई जरुरतमद छात्रो को न केवल छात्रावास शुल्क वरन् कॉलेज शुल्क भी आपने अपनी ओर से प्रदान किया है। मैने सदैव यही पाया है कि शिक्षा, सेवा, चिकित्सा और जरुरतमदो को सहयोग करने मे आप सदैव अग्रणी रहते हैं। आप जैसे उदारमना व्यक्ति की जितनी प्रशसा की जाए उतनी कम है। मैं स्वय अपनी ओर से तथा छात्रावास प्रबध समिति की ओर से आपके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ और भविष्य मे भी आपसे ऐसे सहयोग की कामना करता हूँ।

आप जैसे उदारमना व्यक्ति का अभिनन्दन कर हम गौरवान्वित है। आप सदा निरोग रहे और शतायु हो – यह प्रभु से मगलकामना है।

सरल व्यक्तित्व सम्पन्न

डॉ सागरमल जैन
पूर्व निदेशक, पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी

श्री सुन्दरलालजी दुगड से मेरा परिचय श्री सरदारमलजी काकरिया के कारण हुआ है। विगत कुछ वर्षों से शिक्षा, सेवा और चिकित्सा के क्षेत्र मे जिस उदारता के साथ सुन्दरलाल दुगड ने अर्थ सहयोग दिया वह सदा-सदा के लिए चिरस्मरणीय रहेगा। आपके अनुदान से अनेक शिक्षण सस्थाएँ सस्थापित हुई हैं, पल्लवित हुई है और निरन्तर गतिमान हैं। अनेक जरूरतमद व्यक्तियो को जाति-सम्प्रदाय भेद से ऊपर उठकर आपने सम्बल प्रदान किया, इस हेतु आप निश्चय ही साधुवाद के पात्र है।

श्री सुन्दरलालजी दुगड़ के सरल व्यक्तित्व का एक प्रसग मेरे मानस-पटल पर अकित है, जिसे मै यहाँ उल्लेख करना चाहता हूँ। तीन वर्ष पूर्व श्री सुन्दरलालजी दुगड का अपने कुछ साथियो एव श्री सरदारमलजी काकरिया के साथ उदयपुर आने का प्रसग बना था तब मेवाड क्षेत्र के विभिन्न सभागो की अनेक सस्थाओ को श्री सुन्दरलालजी दुगड ने लाखो रुपये का अनुदान दिया था। उस समय सयोगवश मै भी उदयपुर मे ही था। मैं अपने शिष्य डॉ सुरेश सिसोदिया के साथ श्री सरदारमलजी काकरिया से मिलने जहाँ वो ठहरे थे उस होटल पर गया। वहाँ श्री सुन्दरलालजी दुगड भी ठहरे हुए थे किन्तु जब मै गया तब वो किसी अन्यान्य समारोह मे व्यस्त होने के कारण वहाँ नहीं मिल पाए, तब मैंने वहाँ उनके साथियो को अपनी यह भावना प्रकट की कि सम्पूर्ण भारत मे जिस उदारता के साथ श्री सुन्दरलालजी विभिन्न सस्थाओ और व्यक्तियो को अर्थ सहयोग दे रहे है यदि आगम-अहिंसा, समता एव प्राकृत सस्थान को भी ५ लाख रुपये का अनुदान दुगड सा द्वारा प्राप्त हो जाये तो सस्थान के नवीन साहित्य प्रकाशन करने की जो अर्थ की आवश्यकता सस्थान को है उसकी पूर्ति होकर सस्थान अच्छा कार्य कर सकती है। मैं तो यह भावना उनके साथियो को कह कर प्राय भूल चुका था किन्तु मुझे तब आश्चर्य हुआ कि सायकाल जब मै डॉ सुरेश के घर खाना खा रहा था तो श्री सुन्दरलालजी दुगड का सुरेश के मोबाइल पर फोन आया और उन्होने सुरेश से कहा कि डॉ साहब मुझसे मिलने आये और मै नही मिल सका, इसका मुझे बेहद अफसोस है किन्तु सुरेशजी आप डॉ साहब को बता देना कि उनकी भावनारूप राशि मै आगम सस्थान को शीघ्र ही भेज दूगा। सुरेश से यह कर कर उन्होने मुझसे भी बात की किन्तु अपनी निस्पृहीवृत्ति के कारण उन्होने सिर्फ मेरे स्वास्थ्य आदि के बारे मे सामान्य बातचीत की किन्तु आगम सस्थान को सहयोग राशि देने का कोई जिक्र उस वार्ता मे उन्होने नही किया। यह सुन्दरलालजी दुगड के उदारमना सरल व्यक्तित्व होने का मेरे लिए प्रत्यक्ष अनुभव था। कुछ दिनो बाद ही मुझे सुरेश से पता चला कि श्री सुन्दरलालजी दुगड ने वह ५ लाख रुपये की राशि कुछ ही दिनो मे आगम-अहिंसा, समता एव प्राकृत सस्थान को भिजवा दी। ५ लाख राशि के अनुदान का जिक्र करना मेरी लेखनी का विषय नही है किन्तु जिस निस्पृही भाव से सुन्दरलालजी दुगड ने न केवल आगम सस्थान को वरन् ऐसे ही अन्यान्य सस्थाओ एव व्यक्तियो को जो सहयोग एव सम्बल प्रदान किया है, कर रहे है और उसको स्मरण करते हुए अपनी ओर से उन्हे साधुवाद देते हुए परमपिता परमेश्वर से मगल कामना करता हूँ कि वे सस्वस्थ दीर्घायु हो तथा अपने पुरुषार्थ से अर्जित सम्पत्ति का विनियोजन इसी प्रकार सृजनात्मक कार्यो मे करते रहे, इसी शुभ भावना सहित।

ईश्वर की सर्वोत्तम कृति श्री दुगड़

कृष्णगोपाल सिन्हा
कोलकाता

दुगड जी से मेरा परिचय सन् १९८२ मे एक छोटे भाई के रूप मे हुआ और यह सम्बन्ध दिन प्रतिदिन घनिष्ठ होते हुए कव अभिन्न हो गया, याद नहीं। हम दोनो के अपने व्यक्तिगत जीवन मे अनेक उतार-चढाव आये, पर उनके कारण हमारे सम्बन्धो को कभी खटास-मिठास का अनुभव नही हुआ। विगत २५ वर्षो के भीतर दुगड जी के जीवन मे भी अनेक उतार-चढाव आये, पर कभी भी मैंने कष्ट के समय उन्हे वहुत दु खी या निराश होते हुए एव सुख के समय अति खुश होते हुए नही देखा। दुगडजी को मैंने सम्पन्नता-अभाव, सुख-दु ख सफलता-विफलता सव समय एक भाव मे मस्त पाया। गीता के अनुसार परिणाम से निश्चित होकर कार्य मे लगे रहना, परोपकार करते रहना, दुगडजी का स्वभाव है, जीवन दर्शन है।

दुगडजी जैन धर्मावलम्वी है, केवल जन्म से नही अपितु कर्म से भी। भगवान महावीर ने अपने अनुयायियो को पाँच महाव्रतो का उपदेश दिया है। ये पाँच महाव्रत है– अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह एव व्रह्मचर्य। अहिंसा का अर्थ है किसी जीवधारी को कष्ट न पहुँचाना, सत्य का अर्थ है असत्य से दूर रहना, अस्तेय का अर्थ है चोरी न करना, अपरिग्रह का अर्थ है सपत्ति का सचय न करना, व्रह्मचर्य अर्थात् इन्द्रियो पर नियत्रण रखना। किसी ससारी व्यक्ति के लिए इन व्रतो का कठोरता पूर्वक पालन करना वहुत मरल नही है, पर मैंने देखा है कि दुगड जी अपने कर्म और व्यवहार मे इन मार्गो पर चलने का मदा प्रयास करते है।

दुगडजी एक साधारण व्यक्ति से सम्पन्नता और व्यक्तित्व की वुलन्दी पर पहुँचने मे सफल हुए है। उनकी इस सफलता मे उनका सबसे वडा साथी उनका श्रम, उनकी कर्मठता और उनका आकर्षक व्यक्तित्व रहा है। अपने आचरण और व्यवहार से किसी को अपना वना लेना दुगडजी के व्यक्तित्व की सबसे वडी विशेषता रही है। आदमी वडा हो [illegible] छोटा [illegible] सबको समान सम्मान देना दुगडजी के लिए ही सम्भव है। अपने इन्ही सद्गुणो एव कर्मठता के कारण कभी पीछे मुडकर नही देखा।

गाँधीजी कहा करते थे कि यदि तुम एक रुपये का रोजगार करते हो तो याद रखो उसमे से १२ आना समाज का है। दुगडजी ने गाँधीजी के इस अर्थशास्त्र को अपने जीवन मे मूर्तरूप से उतारा है। दुगडजी धन की तीनो गतियो के वारे मे भी ठीक जानते है, अत वे चचला लक्ष्मी को कैद कर रखना नहीं चाहते है। यही कारण है कि दोनो हाथो से समाज कल्याण के क्षेत्र मे अपनी कमाई का वडा भाग खर्च कर देते है। वे जानते है कि धन का उपयोग सदुपयोग मे है।

कविवर पत ने मनुष्य को प्रकृति या ईश्वर की सर्वोत्तम कृति कहा है। मनुष्य अपने बल-विद्या-बुद्धि, सुन्दर शरीर के कारण सुन्दर नही है, बल्कि वह अपने मानवीय गुणो के कारण सुन्दर माना जाता है। मेरे मित्र सुन्दरलाल दुगडजी अपने मानवीय गुणो के कारण ही ईश्वर की कृति का एक सुन्दर उदाहरण है। इनके स्वभाव की सरलता, वाणी की नम्रता, मन की दानशीलता, सबसे बढकर इनका अभिमान रहित व्यवहार इन्हे कविवर पन्त का सुन्दरतम मानव बना देता है। अपने व्यवसाय से भी अधिक ध्यान सामाजिक कार्यो के लिए देना इनका स्वभाव है। कोई भी जरूरतमद व्यक्ति इनके द्वार से निराश होकर नही लौटता। इन्होने विद्यालया, छात्रावासो, मन्दिरो, अनाथालयो, अस्पतालो का निर्माण करवाया है तथा अनेक लोगो को इन कार्यो के लिए सहयोग भी किया है। सुदूर क्षेत्रो मे इनकी सहायता से अनेक सस्थाये निर्मित हो रही है और चल रही है। शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र मे दुगड का अतुलनीय सहयोग रहा है।

अन्त मे मै अपने इस कर्मठ परोपकारी, सुहदय मित्र के दीर्घ सफल जीवन के लिए ईश्वर से शत-शत विनय करता हूँ।

एक सजीव ग्रन्थ

डॉ शुभकरण बोथरा, कोलकाता

अग्रणी उद्योगपति, सुप्रसिद्ध समाजसेवी और यशस्वी दानवीर श्री सुन्दरलालजी दुगड अपने आपमे एक सजीव ग्रन्थ हैं जिसके सिर्फ कुछ पृष्ठो पर मै प्रकाश डालना चाहूँगा।

श्री दुगड से मेरा परिचय मेरे जीजाजी स्व भवरलालजी लूनिया ने १९८५ मे करवाया था जब मैं फ्लैट के विषय मे उनके हावडा निवास मे मिलने गया था। तब मुझे वे अत्यन्त सरल, सादगीपूर्ण एव सहयोगी प्रकृति के इसान लगे।

सन् १९८८ मे मेरी भानजी (सुपुत्री श्री कन्हैयालालजी लूनिया) की शादी के लिए श्री अपार्टमेन्ट, हावडा का हॉल आपने रात-दिन एक करके समय से पूर्व तैयार करवा दिया था। उन दिनो आप भोजन भी सिर्फ एक समय करते थे। मुझे लगा कि आप मेरे बाबाजी स्व मूलचन्दजी बोथरा की तरह बहुत ही कर्मठ व्यक्ति है।

कुछ वर्षो बाद आपने अपने लडके और लडकी की शादी खूब धूमधाम से की, ऐसी शादियाँ मैंने पहले कभी नही देखी। ऐसा भव्य और विशाल आयोजन हुआ जिसमे समूचे बीकानेर जिले के प्रवासी बधुओ के अलावा देश के कोने-कोने से लोग पधारे।

आपकी सर्वविदित दानशीलता के बारे मे तो जितना कहा जाय, उतना ही कम है। सामाजिक, सास्कृतिक, धार्मिक, स्वास्थ्य, शिक्षा आदि हर क्षेत्र मे आपने अपनी अमिट छाप छोडी है। हर धर्म, सम्प्रदाय, प्रान्त, सस्था आदि के लोग सेवा कार्यों के लिए सर्वप्रथम आपको स्मरण करते है। आपने कोलकाता मे मद बुद्धि वाले बच्चो के लिए एक वार्ड बनाया है जो विशेष रूप से सराहनीय एव अनुकरणीय है क्योंकि मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र मे सेवाकार्यों का अभी तक बहुत ही अभाव है, यद्यपि मानसिक अस्वस्थता एक बहुत बडा अभिशाप है, सबसे बडी विकलागता है।

आपकी धर्मपत्नी श्रीमती कुसुमदेवी दुगड मे भी सेवाकार्यों के प्रति अत्यधिक रुचि है और दान करने की असीम आकाक्षा-अभिलाषा है।

अपनी पुत्री रूपरेखा के प्रति आपका अगाध स्नेह अद्वितीय है। जन्म से मूक व बधिर होने के बावजूद वह मुझे फोन करके अपनी तकलीफ बता सकती है तथा सुन भी सकती है। यह आपका वात्सल्य ही है जिसने असभव को सभव बना दिया है। ससुराल जाने के बाद भी तेज बुखार होने पर आप उसके पास बैठकर पट्टी कर सकते है, ऐसा दृश्य अन्यत्र दुर्लभ है।

आपने अपने पूज्य माता-पिता की सेवा मे कोई कसर नही रखी, यह सबको मालूम है लेकिन यहाँ मै यह भी बताना चाहता हूँ कि आपने अपने ससुरजी को भी पिता तुल्य समझ उनकी जो सेवा की, वह सचमुच ही अवर्णनीय है। आप अपने परिवार, भाई-बहिनो, सगे-सबधियो और गाँव वालो का भी पूरा ख्याल रखते है। सबसे छोटे भाई व उसकी बहू को आप अपने बच्चो की तरह समझते है।

आपने एक साधारण व्यक्ति के रूप मे अपनी जीवन-यात्रा शुरू की तथा बिना किसी सहारे के अपने अदम्य साहस, परिश्रम और लगन से एक असाधारण एव अविस्मरणीय व्यक्ति बन गये। आप युवा उद्यमियो के लिए हमेशा प्रेरणा के अजस्र स्रोत बनकर रहेगे। आपमे नाम व पद का लालच भी नही है। अनेक जगहो पर आपने गुप्तदान किये है और अनेक महत्वपूर्ण पद व अलकरण आपने स्वीकार नही किये। आप सिर्फ काम करने मे मगन रहते है, बोलते भी कम है। आपमे मैंने समय की पाबदी, मिलनसारिता, विनम्रता, छोटे-बड़े सबके प्रति सम्मान व समभाव, बुजुर्गों के प्रति आदर, सहिष्णुता, आधुनिकता और प्राचीनता का समावेश, वक्त के साथ चलने की कला आदि अनेक सद्गुण देखे है जो आपकी सफलता की कुजी है। आपके सेवा कार्यों का विवरण अगर कोई प्रस्तुत करे तो वह थक जायेगा, लेकिन आपके सेवाकार्य कभी खत्म नही होगे।

मेरे विचार से देशनोक की मरुधरा के तीन रत्न इतिहास मे हमेशा अमर रहेगे– करणीमाता और उनका मदिर, युग प्रधान आचार्य श्री रामेशजी महाराज और दानवीर दयावान मानव प्रेमी श्री सुन्दरलालजी दुगड। यहाँ कोलकाता मे किसी जमाने मे दानवीर सेठ सोहनलालजी दुगड हुआ करते थे और आज के युग के दानवीर सेठ सुन्दरलालजी दुगड हैं।

मै आपके दीर्घायु, सुखी एव स्वस्थ रहने की कामना करता हूँ।

वीतरागता की परिणति ही समताऽमृत बरसायेगी

राधेश्याम मिश्रा

शीर्षक पढकर चौक गए न। चौकिए मत। श्री सुन्दरलालजी दुगड वस्तुत वीतरागी है। अर्जन और उपार्जन का स्वामी यदि मुक्त हाथो से जन-कल्याण के लिए मानव ही नही प्राणीमात्र की सेवा मे अहर्निश देता रहे तो उसे आप यदि वीतरागी नही कहेगे तो क्या कहेगे ?

कष्ट काठिन्यो, झँझावतो से सघर्ष करते हुए जो व्यक्ति अपने पैरो पर खडा ही नही होता अपितु वह दूसरो को पैरो पर खडा कर उसमे स्वावलम्वी जीवन जीने की आशा-आकाक्षा जगा देता है तो वह निश्चित ही राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का 'वैष्णव जन' है। इसलिए कि वह पराई पीडा को जानता एव समझता ही नहीं अपितु स्वय भी उससे गुजर चुका है, उन्हे भोग चुका है। दर्द क्या होता है, सघर्ष क्या होता है ? उसे वे खूब जानते, पहचानते है, अत उन्होने दूसरो को दुख-मुक्त करना अपने जीवन का मिशन बना लिया है, उद्देश्य बना लिया है, बिना किसी प्रदर्शन, पाखण्ड, विज्ञापन और दिखावे से दूर रहकर।

महाकवि तुलसीदासजी ने कहा है कि इस ससार मे तीन प्रकार के मनुष्य है, एक कहता है करता नही पर उपदेश कुशल बहुतेरे की उक्ति चरितार्थ करता है ... कहता है और करता भी है यानि विज्ञापन और प्रदर्शन के साथ तीसरा करता ... नाम-स्मार प्रदर्शन पाखण्ड विज्ञापन आदि से सर्वथा दूर।

ससार मह पुरुष त्रिविध, पाटल रसाल, पानस समा।
एक कहहि, कहहि करहि अपरस, एक कहहिं कहत न बाजहिं।।

अप्रतिम व्यक्तित्व सम्पन्न श्री दुगडजी तीसरी और उत्तम कोटि की श्रेणी मे आते है। वे त्याग और विसर्जन के ऐसे प्रकाश स्तम्भ है जो आने वाले कई वर्षो तक नई युवा पीढी के लिए मार्गदर्शक और आदर्श रहेगे। खाओ, पीओ और मौज उडाओ की भौतिकवादी पाश्चात्य सस्कृति की गहन तमसावृत पीढी के लिए भोर की तरोताजा नव्य प्रकाश युक्त प्रथम किरण सिद्ध होगे श्री दुगडजी।

दानवीर कर्ण, भामाशाह, जगडू शाह की तरह श्री दुगडजी का जीवन उदारता, परदुख-कातरता एव लोक-कल्याण का प्रतीक है, ऐसा त्रिवेणी सगम है जिसमे अवगाहन कर शुद्ध, निर्मल और सात्विक जीवन जी सकता है व्यक्ति। विपरीत परिस्थितियो एव सकट की घडियो मे सतुलन, विश्वसनीयता और साख को कायम रखना श्री दुगडजी जैसे व्यक्तित्व के लिए ही सभव है।

सम्पन्न होकर भी सादगी, सरलता और सहजता से जीवन जीने की कला के एक उत्कृष्ट उदाहरण के रूप मे श्री दुगडजी को प्रस्तुत किया जा सकता है। माता-पिता का आशीर्वाद बचपन के सस्कारो एव धर्मपत्नी के सयम, अनाग्रह एव कारुण्य भाव से आवेष्टित श्री दुगडजी का जीवन जिस उदग्रता एव उदात्त सेवा भावना स परिप्लावित होकर समाज, धर्म, शिक्षा, चिकित्सा जगत मे लोक-कल्याण क लेख लिख रहे है वे काल के भाल पर लिखे गये अमिट लेख है, कालजयी है एव है उनकी कीर्ति कौमुदी के अमिट कीर्तिमान।

श्री दुगडजी का समग्र जीवन निम्नाकित दोहे का ही प्रतिरूप है–

ज्यौ जल बाढै नाव मे, घर मे बाढै दाम।
दोनो हाथ उलीचिये, यही सयानो काम।।

सदा मुस्कराते रहना एव दूसरो के चेहरे पर मुस्कान बिखेरना, उपार्जन कर उस का उदारता पूर्वक विसर्जन करना श्री सुन्दरलालजी के जीवन की नियति है। सदा स्वस्थ सुखी रहे और मानव कल्याण मे दत्तचित्त – यही अभीप्सा है, प्रभु से प्रार्थना है।

रागद्वेष के कण्टक वन को, शुद्ध बोध से पूर्ण जलाएँ।
सदा मुस्कराने वाला, मुक्ति भाव के पुष्प खिलाएँ।।
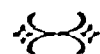
सहृदयता की प्रतिमूर्ति

डॉ सुरेश सिसोदिया
शोधाधिकारी, आगम, अहिंसा,
प्राकृत एव समता शोध सस्थान, उदयपुर

मै अपने आपको अत्यन्त सौभाग्यशाली मानता हूँ कि मैं सहृदयता की प्रतिमूर्ति श्री सुन्दरलालजी दुगड से व्यक्तिश परिचित हूँ। कोई ८-१० वर्ष पूर्ण आदरणीय दुगड सा की पुत्री रूपरेखा के विवाह समारोह के अवसर पर श्री सरदारमलजी सा काकरिया के कारण मेरा परिचय श्री सुन्दरलालजी दुगड से हुआ था। १० वर्ष की इस अल्प अवधि मे मैंने श्रद्धेय श्री सुन्दरलालजी दुगड के व्यक्तित्व को जिस रूप मे देखा है उसे शब्दो की परिसीमाओ मे बाँधना मेरे लिए असम्भव नही तो दुष्कर अवश्य है। सौम्यता, सरलता एव मृदुता के पर्याय श्री सुन्दरलालजी दुगड जहाँ एक ओर कुशल व्यवसायी है वही दूसरी ओर उदारमना सुश्रावक के रूप मे आपकी विशिष्ट पहचान है। आप जैसे उदात्तचित्त, निरहकारचेता एव सहृदयी व्यक्ति विरले ही होते हैं। धन एव सम्पत्ति की प्रचुरता होते हुए भी सादगी और सरलता की आप प्रतिमूर्ति है आप और आपका व्यक्तित्व सम्प्रदायातीत है। जबसे मेरा आदरणीय दुगड सा से परिचय हुआ है मैंने सदैव यही पाया है कि वे विभिन्न शैक्षणिक, सामाजिक सस्थाओ और जरुरतमद व्यक्तियो को उदारभाव से अर्थ सहयोग करने मे सदैव अग्रणी रहते है। ''नैकी कर कुएँ मे डाल'' यह दुगड साहब का स्वभाव है। लाखो रुपये का अनुदान देकर भी उनके चेहरे पर अथवा उनके व्यक्तित्व मे अहकार के किचित भी भाव मैंने कभी नही देखे।

तीन व्यक्तित्व मेरे आदर्श है–प्रथम मेरे लेखन और चितन को निश्चित दिशा मे गतिमान करने मे मेरे शिक्षाप्रदाता गुरू डॉ सागरमल जैन तथा दूसरे व्यक्तित्व है श्री सरदारमलजी काकरिया, जिन्होने सदैव मुझे पुत्रवत स्नेह दिया और कार्य करने का ऐसा उचित अवसर एव मच दिया ताकि मै जैन विद्या के क्षेत्र मे आगे बढसकू और मेरे आदर्श का तीसरा व्यक्तित्व श्री सुन्दरलालजी दुगड है जिनके उदारमना व्यक्तित्व से मैं बहुत कुछ सीखा हूँ कि इस भौतिकवाद के समय मे भी कोई व्यक्ति इतनी उदारता के साथ, निस्पृही भावना के साथ प्रचूर धन राशि का विनियोजन सत्कार्यो मे करता हो, यह सब मैंने सुन्दरलालजी दुगड मे देखा है। मै इन तीनो महानुभावो का अत्यन्त उपकार मानता हूँ।

श्री सुन्दरलालजी दुगड के अभिनन्दन के अवसर पर उनके उदारमना व्यक्तित्व के सदर्भ में एक घटना का उल्लेख मै अवश्य करना चाहता हूँ कि मेरे एक परिचित की दोहित्री का डी फार्मेसी मे एडमिशन हो गया किन्तु पारिवारिक स्थिति ऐसी नही थी कि वो फीस का भुगतान (रुपये ४७ हजार) कर सके। उस परिचित ने मुझसे सम्पर्क साधा और किसी महानुभाव से यह राशि उपलब्ध कराने का मुझसे आग्रह किया। प्रथम तो मेरे स्वभाव मे नही कि मैं किसी को अनुदान देने हेतु कहूँ किन्तु उस परिवार की आर्थिक स्थिति और बच्ची के भविष्य को देखते हुए मैंने सहज ही उस बच्ची से एक पत्र लिखवा कर आदरणीय दुगड सा को अपनी अनुशसा सहित वह पत्र भेजा। पत्र जब कलकत्ता पहुँचा तब दुगड सा विदेश प्रवास पर थे और दस दिन बाद जब वो पुन कलकत्ता आये तो उस पत्र को पढते ही उन्होंने मुझे फोन किया कि सुरेशजी आप बच्ची के नानाजी को कह दे कि बच्ची की फीस की सम्पूर्ण राशि मै उस महाविद्यालय को सीधे यहाँ से ड्राफ्ट द्वारा भेज दूगा। आप मुझे सिर्फ इतना बता दे कि उसकी कॉलेज और हॉस्टल की फीस कितनी-कितनी है ताकि दोनो ड्राफ्ट अलग-अलग बनवाकर भेज सकू। इस उदारता हेतु मैंने दुगड सा का आभार व्यक्त किया और तुरन्त ही सदर्भित व्यक्ति को अपने कार्यालय मे बुला कर कहा कि आपकी समस्या दूर हो गई है और आपकी दोहित्री के लिए जो फीस की राशि दिलाने का आपने मुझे आग्रह किया था उसकी सम्पूर्ण पूर्ति आदरणीय सुन्दरलालजी दुगड कर रहे है। तब उन्होने मुझे कहा कि डॉ साहब इस उदारता हेतु मै दुगड साहब का अत्यन्त आभारी हूँ किन्तु कुछ समय व्यतीत हो जाने के कारण कॉलेज की फीस जमा कराने की तिथि निकल रही थी। अत बच्ची ने बैंक से शैक्षणिक ऋण लेकर अपनी फीस का भुगतान कर दिया है। तब मैंने उसी समय आदरणीय दुगड सा को फोन कर यह बात कही कि बच्ची ने शैक्षणिक ऋण लेकर कॉलेज की फीस जमा करवा दी है इसलिए आपको अब यह राशि नही भिजवानी है तब आदरणीय दुगड सा ने तुरन्त ही कहा कि मुझे लेकुना नही देखना है। बैंक से ऋण लेकर बच्ची पढाई करेगी तो उसके मस्तिष्क पर ऋण का भार बना रहेगा अत आप पता करे कि सात दिन बाद ब्याज सहित बैंक को कितनी राशि का भुगतान करना है ताकि मै वह राशि आपको भेज सकू और आप उस बच्ची का वह शैक्षणिक ऋण जमा करवाकर उसे ऋण भार से मुक्त करवा दे। ऐसे विचार श्री सुन्दरलालजी दुगड जैसे उदारमना व्यक्ति के ही हो सकते है अन्यथा और कोई महानुभाव होता तो उसका उत्तर यही होता कि मेरी तो सहयोग करने की भावना थी किन्तु अब जब व्यवस्था हो गई है तो आगे और किसी के लिए काम पडे तो याद करना किन्तु आदरणीय दुगड सा ने ऐसा जवाब नही देकर उस बच्ची के फीस की सम्पूर्ण राशि का भुगतान बैंक को कर उसे ऋण मुक्त किया। आज वह बच्ची डी फार्मेसी करके कुशलता पूर्वक नौकरी कर रही है और अपने परिवार के सचालन मे भी सहयोगी बनी हुई है।

मै सोचता हूँ आदरणीय श्री सुन्दरलालजी दुगड सा ने अपनी मेहनत से अर्जित सम्पत्ति से न जाने ऐसे कितने ही विद्यार्थियो, जरुरतमद व्यक्तियो एव सस्थाओ को सहयोग किया है, कितने ही लोगो की मगलकामनाएँ आदरणीय दुगड सा के प्रति सतत निकलती होगी जो दुगड सा के व्यक्तित्व को उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर होने मे सहयोगी बनेगी।

बहुविध सस्थाओ की तरह ही आगम-अहिंसा, समता एव प्राकृत सस्थान, उदयपुर के प्रमुख अर्थ सहयोगी भी आदरणीय दुगड सा ही है। प्राय देखा जाता है कि दानदाता अपना अर्थ सहयोग वहाँ प्रदान करता है जहाँ उनका नामपट्ट प्रदर्शित किया जाता हो किन्तु आदरणीय दुगड सा ने लाखो रुपये का अर्थ सहयोग आगम सस्थान को कर रखा है किन्तु वहाँ किसी भी रूप मे उनका कोई नामोल्लेख नही है। मैंने आदरणीय दुगड साहब को सदैव एक उदारमना दानी महानुभाव, सरलचित्त व्यक्तित्व, हसमुख स्वभाव वाले एव अपने से छोटे से छोटे व्यक्ति के साथ भी आत्मीयता के साथ व्यवहार करते हुए देखा है। मै उन्हे कोटिश वन्दन करता हूँ और जिनदेव से कामना करता हूँ कि जरुरतमदो को सहयोग करने मे सहयो[illegible] बनने हेतु आदरणीय दुगड साहब को चिरायु होने का यशस्वी वरदान प्रद[illegible] आप सदा निरोग रहे और शतायु रहे, यही मगलकामना करते हु[illegible] को विराम देता हूँ।

एक सामाजिक प्राणी

तिलोकचद डागा, कोलकाता

जिस समाज म हम जीते है, उसके प्रति हमारी कुछ जिम्मेदारियाँ भी होती हैं। समाज के समर्थ-सक्षम व्यक्ति अगर सामाजिक जरुरतो और समस्याओ से मुँह फेर लेगे तो फिर प्राचीनकाल से चली आरही सामाजिक अवधारणा समाप्त हो जायेगी। इसलिए सामाजिक सरोकारो से जुडे रहना आज की सबसे बडी जरुरत है। समाज क सुपरिचित उद्योगपति श्री सुन्दरलाल दुगड का कर्मजीवन कुछ ऐसा ही सदेश देता है। श्री दुगड के व्यक्तित्व और कृतित्व दोनो मे ही सामाजिक चिता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। स्वभाव से सरल, मिलनसार और मृदुभाषी श्री दुगड ने अपने कर्मजीवन की दोनो धाराओ मे समान रूप से सफलता अर्जित की है। पहली धारा व्यापार-उद्योग की है, जिसमे सफलता की बुलदियाँ चूम रहे है और दूसरी धारा है– सामाजिक चितन की, इस क्षेत्र मे भी एक अनुकरणीय व्यक्तित्व के रूप मे उभर कर सामने आए है।

आजकल के अर्थ प्रधान युग मे उद्योग-व्यापार की बुलदियो तक पहुँचने के बाद समाज की चिता बहुत कम लोग कर पाते है। लोग तो यहाँ तक भूल जाते है कि समाज क्या है। लेकिन श्री दुगड इस मामले मे अपवाद ही कहे जाएँगे। आपने उद्योग-व्यापार क्षेत्र मे तरक्की की गति के साथ-साथ अपने को सामाजिक जरुरतो-समस्याओ से उतनी ही गति से जोडे रखा है। विभिन्न समाजसेवी सस्थाओ के प्लेटफार्म से समाज के कमजोर और जरुरतमद तबके की सेवा से जुडे हुए है। कई ऐसी सस्थाएँ है, जिनसे सीधे तौर पर जुडे न रहने के बावजूद आर्थिक सहयोग देकर सेवा के अपने दृढसकल्प को पूरा करते जा रहे है जग जाहिर है कि श्री दुगड गरीबो की सेवा के काम मे बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते है सबसे बडी सेवा और पूजा गरीबो की मदद करना है। यह बात आपके व्यावहारिक जीवन के हर मोड पर दखने-सुनने को मिल जाती है। आपका व्यक्तित्व शायद इसीलिए अनुकरणीय है, जो समाज की युवा पीढी को सदेश देता है कि आर्थिक उपलब्धियाँ हासिल कर लेना ही व्यक्ति का एकमात्र लक्ष्य नही होना चाहिए। जिस समाज मे हम पले-बढे, जहाँ से हमे सासारिक जीवन की जानकारियाँ हासिल हुई, उसक प्रति हमारा उत्तरदायित्व भी होता है और उसका पालन करना एक 'सामाजिक व्यक्ति' के लिए अनिवार्य होता है। समाज को नजरअदाज कर कोई भी व्यक्ति कभी भी 'पूर्ण मानव' नही बन सकता। यह बात हमारे वेद-शास्त्रो ने भी साफतौर पर कही है।

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम ने जो नर-लीला सतयुग मे की वह आज कलियुग मे भी अनुकरणीय है। उनके पावन जीवन को देखे तो उनमे सत्य, चिंतन, सुधार उत्तरदायित्व, कर्तव्य, न्याय का उत्कृष्ट उदाहरण मिलता है। राम के जीवन मे सामाजिक उत्तरदायित्व का महत्व साफ दिखता है। भगवान राम ने सामाजिकता का निर्वाह करना [illegible] और जब १४ वर्षों के वनवास के बाद वापस लौटे तो राजा बनने के पश्चात् भी उन्होने समाज को ही तरजीह दी एव रामराज्य का श्रेष्ठ उदाहरण दिया। सब कुछ पाने के पश्चात् भी उन्होने कभी भेदभाव नही किया। सभी को समान समझा और न्याय किया। श्री दुगड ने भी हमेशा समाज को महत्व दिया है। हर तरह से सक्षम एव सपन्न होने के बावजूद हर वर्ग के लोगो के साथ सहजता से जुडे रहे है। धन के आगमन के साथ जैसे ही सपन्नता आती है, लोग यह समझते हैं कि उन्हे सब कुछ मिल गया है। उन्हे समाज की नही, समाज को उनकी जरुरत है, जैसी बडी भूल कर बैठते है। वह किसी से सपर्क नही करेगे, जिन्हे उनसे सपर्क करना होगा, वह उन तक पहुँचेगे। पर श्री दुगड का यह बडप्पन ही है कि आपने अपनी सपन्नता को अपने कोमल मन की राह मे रोडा नही बनाया। आपने हर किसी को अपनाया। बराबर के लोगो से हाथ मिलाया, तो बेसहारो को सहारा देकर उन्हे गले भी लगाया।

श्री दुगड का जीवन हर क्षण कर्त्तव्य से भरा रहा है। जीवन के हर मोड पर उन्होने अपने कर्तव्य एव उत्तरदायित्व का पालन किया है। हाँ, ऐसा करते वक्त आपको कठिनाइयो का सामना भी करना पडा, पर आप कभी भी अपने कर्तव्यपथ से डिगे नही और डटे रहे। आपके इसी अटल निश्चय क कारण उनकी राह मे रोडा बने बड़े से बडे तूफान भी शात हो गए। एक सार्थक जीवन जीने के उद्देश्य से आपने जीवनमूल्यो को न सिर्फ अपने जीवन मे अपनाया, बल्कि औरो को भी ऐसी ही नसीहत दी।

अगर सच कहे तो आपका जीवन ही ऐसा है कि कोई भी अनायास उनमे प्रभावित हो जाता है। लोग आपके सान्निध्य मे बने रहना चाहते है। हर वर्ग, हर उम्र के लोगो को आपसे उचित सम्मान, स्नेह व प्रेम मिलता रहता है। हर किसी को आपसे सीख मिलती है। सामाजिकता के साथ-साथ आपकी धर्मपरायणता भी उत्कृष्ट श्रेणी की है। आपने अपने हर धर्म का निर्वाह किया है। आपकी धार्मिक भावनाएँ सदैव उदाहरणीय एव अनुकरणीय रही है। ईश्वर म अगाध विश्वास तथा परमपिता के प्रति असीम श्रद्धा का परिणाम है कि आज आप सभी सुखो से परिपूर्ण है।

अपनी तरक्की के दौरान श्री दुगड ने कभी भी अनियमितताओ का सहारा नही लिया। मन की उत्तम भावनाओ को कभी चोटिल नही होने दिया। आपने उन्ही कार्यो को किया, जिसने उनके जीवन मे सतुष्टि प्रदान की। हर हाल म आपने अपने चित्त को विचलित नही किया। उच्च विचारो से भरे श्री दुगड ने सादा जीवन जिया है। तडक-भडक और दिखावे से दूर रहकर आपने सिर्फ जरूरत को ही ज्यादा तरजीह दी। आत्मा और मन के द्वद्व मे आप कभी विचलित नही हुए। आपके हर कर्म मे विवेक के दर्शन होते है। यही कारण है कि आप पर परमपिता का असीम आशीर्वाद है और हर दृष्टि मे सफलता के सभी सोपानो को प्राप्त कर रहे है।
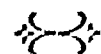
समाज के नव-रत्न

मानमल कुदाल, उदयपुर (राज)

आदरणीय सुन्दरलालजी सा दुगड का जीवन एक विशाल ग्रन्थ है और वह ग्रन्थ है जिसका हर पृष्ठ प्रेरणा का पृष्ठ है। वैयक्तिक साधना के उत्कर्ष पर चलने वाला व्यक्ति समाज के लिए कितना योग दे सकता,उसका यह एक अन्यतम उदाहरण है। श्रीमान् दुगड सा समाज के उन नव-रत्नो मे से एक है जिन्होने अपने जीवन का उत्कृष्ट समय समाज के विकास एव सवर्द्धन मे समर्पित किया है। आपकी उदारतापूर्वक दान देने की शैली अद्भुत है। आपको वर्तमान समय का 'लोंकाशाह' कह दे तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। "नेकी कर कुएँ मे डाल" वाली उक्ति को आपने जीवन-व्यवहार मे आत्मसात कर रखा है। विगत एक दशक मे सम्पूर्ण भारत के विभिन्न प्रातो मे सम्प्रदाय निरपेक्ष दृष्टि से आपने स्कूलों, कॉलेजो, छात्रावासो, स्थानको, मदिरो, गौशालाओ आदि मे करोडो रुपये के स्थाई निर्माण कार्य करवाये तथा निर्धन, असहाय, जरुरतमदों, विधवाओ एव छात्रो को उच्च एव तकनीकी शिक्षा के लिए मुक्त हस्त से आर्थिक सहयोग प्रदान किया है। यश और प्रतिष्ठा प्राप्त करने का अशमात्र भाव भी आपमे नही देखा। आप सदैव निस्पृह भाव से दान देते है। सहजता, सरलता, समता, समान्वेता, निर्मलता, धैर्य, गभीरता, उदारता आदि बाह्य एव आन्तरिक दीप्तिमान गुणरत्न एव विलक्षण दानवीर के व्यक्तित्व की अलग ही पहचान है। यही कारण है कि आज जब हम किसी को दानी कहते है तो श्रीमान् दुगड सा की भव्य आकृति स्मृति-पटल पर हठात् उभर आती है।

आपके रोम-रोम एव जीवन के पल-पल मे दया, करुणा, प्रेम, सौहार्द और सवेदनशीलता का अजस्र स्रोत प्रवाहमान है। आडम्बर और प्रदर्शन से दूर रहने वाले दुगड सा सरल एव सादगीमय जीवन जीने वाले है। आपकी मान्यता है कि मानव जितना सभ्य, सुसस्कृत एव नैतिक एव उदार होगा, उतना ही समाज एव राष्ट्र सुसम्पन्न होगा। इसलिए आपने मानव मे मानवीय गुणो का प्रादुर्भाव हो, इसका जीवन भर प्रयत्न किया – जो आपके जीवन से झलकता है। भारतवर्ष के कोने-कोने मे 'समता-भवनो' का निर्माण हुआ जो आपके आशीर्वाद और सहयोग का ही सुफल है। विचार, कथन एव आचरण की एकरूपता आपका जीवन मत्र है।

समाज सेवा के लिए समर्पित जीवन जीने वाले माननीय दुगड सा की अद्भुत कार्यक्षमता लोगो को आश्चर्यचकित किये बिना नहीं रहती, क्योंकि निस्वार्थ भाव से लोकोपकार की भावना के वशीभूत होकर समाज के लिए जीवन अर्पण कर देना अति दु साध्य कार्य है। जो व्यक्ति ऐसा करते है, वे विरले ही होते है। श्रीमान् दुगड सा इन्हीं विरल व्यक्तियो में से एक है। आपकी सेवाओ का मूल्याकन किया जाना समाज का परम पुनीत कर्त्तव्य है। आपका साधुवत् आचरण समाज के लिए प्रेरणाप्रद एव अनुकरणीय है। आचरण की शुद्धता, विचारो की परिष्कृतता, हृदय की निर्मलता आपकी साधुवृत्ति के ही परिचायक हैं। अपार सम्पत्ति के स्वामी होते हुए भी सरल एव सादगीपूर्ण जीवन आपकी निर्लोभवृत्ति एव अपरिग्रही जीवन का द्योतक है।

आप केवल समाज की ही नही अपितु देश की महान विभूति हैं। समाज आपकी सेवाओ से उपकृत है। आपने समाज को जो कुछ दिया है वह अकल्पनीय है। आप जैसे साधु पुरुष समाज के लिए अनुकरणीय आदर्श हैं।

वर्तमान युग के शालिभद्र

प्यारेलाल भडारी, अलीबाग (महाराष्ट्र)

श्री सुन्दरलालजी दुगड से मेरा काफी वर्षों से परिचय है। ये सरलमना, उदार, धर्म प्रेमी, सप्रदाय निरपेक्ष, समाजसेवी है। आप सुलझे हुए विचारो के विशिष्ट व्यक्तित्व सम्पन्न है। बडप्पन से कोसो दूर निरभिमानी व्यक्ति हैं। आपने आपके माताजी की बीमारी की स्थिति मे अतिम समय देशनोक मे माताजी के पास रह कर छ महीने तक नि स्वार्थ भाव से उत्कृष्ट सेवा की। लबे समय तक व्यवसाय से दूर रहने से आपको व्यापार मे रोजाना लाखो रुपयो का घाटा हो रहा था। मगर आपका दृढसकल्प था कि जब तक माताजी जीवित है, मै इन्ही के पास रहूँगा, चाहे कितना ही घाटा हो। आपने दृढमनोबल के आधार पर अतिम समय तक माताजी के पास रहकर तन-मन-धन से उत्कृष्ट सेवा की और "मातृ देवो भव" की उक्ति चरितार्थ कर सेवा का महान् आदर्श उपस्थित किया।

मनुष्य के जीवन मे उतार-चढाव तो आता ही रहता है, मगर ऐसी कठिन और विषम परिस्थितियो मे भी आपने निश्चित और सतुलित रहकर दृढमनोबल का परिचय दिया। शास्त्र मे प्रसग आता है कि शालिभद्र के पूर्वभव मे उन्होने उत्कृष्ट भावना से मुनि को दान दिया, जिसके फलस्वरूप शालिभद्र के भव मे उन्हे स्वर्ग से दिव्य सपत्ति प्राप्त होती थी। इसी प्रकार आपको भी माताजी की उत्कृष्ट सेवा करने के फलस्वरूप व्यापार मे रोजाना लाखो की सपत्ति प्राप्त होती है। प्राप्त सपत्ति का आप सग्रह ही नही करते, मगर सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र मे उसका खुलकर उपयोग करते है। इसलिए समाज मे आप भामाशाह कहलाते हैं। नि स्वार्थ एवम् शुद्ध भाव से सेवा, शिक्षा और चिकित्सा के क्षेत्र मे आपका महत्वपूर्ण योगदान रहता है। आपने सामाजिक एवम् धार्मिक कार्यों के लिए कई ट्रस्ट स्थापित किये हैं। इनके माध्यम से आप दीन दुखियो की, ज़रूरतमद व्यक्तियो की असाध्य रोगो से पीडित रोगियो की सहायता करते है। मेरे स्मृतिपटल पर एक प्रसग आ रहा है कि उदयपुर के पास धरियावद है, वहाँ एक भाई जिनके जवान लडके की दोनो किडनियाँ फेल हो गई थी, वह जीवन और मौत के बीच झुल रहा था, आर्थिक परिस्थिति कमजोर रहने से और पैसे के अभाव के कारण ऑपरेशन मे विलब हो रहा था। मैने आपसे इस व्यक्ति की सहायता के लिए निवेदन किया। आपने तुरत दूसरे दिन ही हॉस्पीटल के नाम पैसे भेजकर उस असहाय व्यक्ति की जान बचाई। इस तरह परोपकार एवम् दीन-दुखियो की सेवा को ही आपने अपना कर्तव्य माना है। धार्मिक क्षेत्र मे भी आप अग्रणी है, आप उदारतापूर्वक लाखो रुपयो का दान देते है, फिर भी आप मे किसी भी प्रकार का अहकार का भाव नही है। नर की सेवा ही नारायण की सेवा है और सच्ची साधना है। इस बात को हृदयगम करके आपने मानवसेवा को अपने जीवन का परम लक्ष्य बना लिया है। आप अनेक सस्थाओ मे विभिन्न पदो को सुशोभित कर रहे है। सेवा, शिक्षा और चिकित्सा के क्षेत्र मे समस्त जैन समाज मे आपका नाम रोशन हुआ है। आपका यशस्वी जीवन निरतर विकास की ओर अग्रसर होता हुआ, नई ऊँचाइयाँ प्राप्त करे, यही

संघ एवं शासन सेवक

राजकरण बरडिया

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ, बीकानेर

मरुधरा के रत्न श्री दुगड वास्तव मे सेवा, समर्पणा एव साधना के त्रिविध आयाम है। जीवन के प्रत्येक क्षण मे आपने अपने आपको सेवा के प्रत्येक आयाम से जोडकर रखा, जो आपके विशाल एव उदात्त हृदय का परिचायक है। समाज सेवा, मानवसेवा का कोई भी कार्य क्यो न हो श्री दुगड का नाम प्रमुख रूप से उभरकर हमारे समक्ष परिलक्षित होता रहा है। लक्ष्मी पुत्र होना एक अलग बात है, लेकिन अपनी लक्ष्मी का सदुपयोग सद्कार्यो मे करना बिरले व्यक्तियो का ही कार्य है और उन्ही बिरले व्यक्तियो मे आपका नाम सर्वोच्च श्रेणी मे आता है। कभी-कभी आपको देखकर मन मे स्वत ही दानवीर सेठ श्री सोहनलालजी दुगड की स्मृतियाँ मानस पटल पर उभर कर आ जाती है। जिस प्रकार से श्री सोहनलालजी ने अपने जीवन मे अग्लान भाव से मानवसेवा का कार्य अत्यन्त सुचारु रूप से सपादित किया उसी प्रकार वर्तमान मे श्री सुन्दरलालजी दुगड भी अपने कुल की यशोगाथा को चहु दिशा मे गुजायमान कर रहे है। आप मे अनुपम उदाहरण है।

जिस प्रकार से श्री सुन्दरलालजी दुगड ने सघ एव शासन की अनुपम सेवा की है वह वास्तव मे अनुकरणीय एव अनुमोदनीय है। आपका पथ हमेशा प्रशस्त बना रहे एव आप इसी प्रकार जिनशासन की भव्य सेवा करते रहे, इसी आशा एव विश्वास के साथ

कर्म का बीज ही भाग्य की फसल है

विजय नाहटा

उप-सभापति, श्री जैन हॉस्पिटल एड रिसर्च सेटर, हावडा

एक विभ्राट व्यक्तित्व जिसने अपने प्रारम्भिक जीवन मे मध्यम श्रेणी की राहे सवार कर, उच्चता के सौपान पर चढकर, भावी मजिल निखार कर, फिर सेवा-भावी बनकर, जिन्दगी की धार को पहाड से उतारा है, वे है भाईजी श्री सुन्दरलालजी दुगड जो वर्तमान मे शिक्षा, सेवा और साधना की सुवृत्तियो मे कार्यरत है।

गीतड़ा रह जासी

जानकी नारायण श्रीमाली
बीकानेर

जब कवि ने ललकार कर कहा था कि – ''है कौन उसे कहता उजाड, मरुधरा रही उर्वरा धरा'' तो कवि मानस मे मरुधरा के जन वैभव का गौरवशाली चित्र अकित था। महाभारत काल से आज तक मे मरु-जागल प्रदेश नाम से विख्यात इस मरुधरा के सत्पुत्रो के शौर्य-औदार्य और अकल्पनीय तेजस्विता के आख्यान सम्पूर्ण विश्व मे चर्चित हैं। राजा शिवी ने शरणागत के प्राण बचाने के लिये अपने शरीर के अग काट-काट कर न्याय की तुला पर भेट कर दिए। मरुभूमि के लिए प्रख्यात अकाल की विभीषिका मे राजा रन्तिदेव ने अतिथि को भोजन-जल अर्पित करके परिवार सहित महामृत्यु का आलिगन कर लिया। पश्चिमी भारत की, मरु-जागल की इन विभूतियो का यश युगो की सीमाओ को पार करके आज भी जन-जन को प्रेरित और पुलकित करता है।

जब कवि लिखता है – ''इस धरती के पुत्रो ने ही हस-हस महामृत्यु को झेला'' तो मुझे लगता है निश्चय ही उसके मनोलोक मे मरुधरा रही होगी। सरस्वती नदी लुप्त हो गई। वेद के दर्शन करनेवाले ऋषि पलायन कर गए, काम्यक वन का स्थान रेत के महासमुद्र ने ले लिया किन्तु इस धरती के पुत्रो ने ''ऊजड खेडा फिर बसे'' की उक्ति को चरितार्थ किया। वेद-वाणी जिसका यशगान करती थी, उसी शमीवृक्ष (खेजडी) रूपी कल्पवृक्ष को हृदय से लगाए। लूओ की लपटो मे, अधड और झझावातो मे मरुपुत्रो के पुरुषार्थ ने आज राजस्थान नहर के रूप मे मानो पुन सरस्वती को प्रत्यक्ष कर दिखाया है। ऐसी यह अमर मरुभूमि और ऐसे इसके ओजस्वी-तेजस्वी-यशस्वी मरुपुत्रो की कालजयी अमर गाथा में एक जीवन्त प्रत्यक्ष गाथा, नक्षत्रो की मणिमालिका मे एक ज्योतित नक्षत्र है – देशनोक की

ठेठ मारवाडी अदाज मे बात करने लगे। जब मैंने कहा कि दुगड स्कूल जाकर आया हूँ तो वे बोले – ''आपारी स्कूल है।'' मुझे सहसा विश्वास नही हुआ कि यह सीधा-सरल व्यक्ति ऐसे विशाल-सुन्दर शिक्षा सस्थान का सस्थापक है और सस्थापक होकर भी कितने सहज और निष्काम। बस वह दिन था और फिर उनकी जीवन यात्रा की पूर्णाहुति तक मुझे उनसे बात करने मे आनन्द आता रहा। हृदय मे सरसता, भुजाओ मे शौर्य किन्तु जीवन मे अध्यात्म की जोत।

अल्हड दुगड – कालान्तर मे मेरी श्री सुन्दरलालजी दुगड से भेट हुई। वही अल्हड अन्दाज, सरलता और उत्कर्षकामिता। वही सहजता, सरसता और तेजस्विता। उत्तान हृदय मे तरुणाई का ओज, सौम्य मुखमडल पर अतस्थ आध्यात्मिक उपासना की हिस्ति। अहा! भेट कर हर्ष हुआ। भोले और भले किन्तु गजब के परिश्रमी व सदाशयी। मरुधरा के विकसित, पूर्ण यौवन पुरुष श्री दुगड मे, उछलते मनोभावो के युवा काल में भी धैर्य और मनुष्यता अपने चरम पर थी। उत्कर्षानुरागी श्री दुगड की जीवन-यात्रा का मात्र विहगावलोकन भी करे तो उनके जीवन मे अतिथि सत्कार, स्वधर्मी सहयोग, धार्मिक-सामाजिक कार्यों मे सदैव अग्रगामिता

कथनी व करनी की एक रूपता

दीपसिह बैद
अरिहन्तमार्गी जैन सघ, बीकानेर

सुप्रसिद्ध समाजसेवी (कलकत्ता) उद्योग जगत के पितामह, दानवीर, धर्मवीर, मरुभूमि के भामाशाह श्री सुन्दरलालजी दुगड एक ऐसा समाज रत्न है जो न केवल तन से सुन्दर है अपितु मन-वचन और कर्म से भी सुन्दर है। जैसा नाम वैसा ही गुण है। श्रीमान् का जन्म भामाशाह की धरती राजस्थान बीकानेर जिले के देशनोक गाँव मे सन् १९५४ को [illegible] आपश्री के स्वर्गीय दादाजी श्री अमोलकचन्दजी दुगड व स्वर्गीय पिता श्री मोतीलालजी दुगड थे। आप बडे [illegible] धर्मावलम्बी तथा उदार विचारो के धनी [illegible]। समाज व गाँव मे आपकी काफी प्रतिष्ठा है। आपश्री की दादीजी स्व श्रीमती वादुदेवी दुगड एव मात[illegible] [illegible]मर[illegible] दुगड भी बहुत ही धर्मपरायण महिला थी। श्रीमती सूरजदेवी दुगड ने मृत्यु का स्वयम् वरण किया। १९ दिन के चौविहार सथारा के पश्चात् उन्होने अपना देह त्याग दिया। आपश्री बीकानेर, देशनोक, कल[illegible] [illegible]शिष्ट स्थान रखते है। आपश्री ने देशनोक गाँव मे ही उच्च माध्यमिक शिक्षा ग्रहण की उसके [illegible] कलकत्ता मे अपने पिता के साथ कार्य करने लगे।

बीकानेर निवासी श्री केवलचन्जी सेठिया की सुपुत्री सुश्री कुसुमदेवी दुगड समाजसेवी दानवीर श्री सुन्दरलालजी दुगड की धर्मपत्नी है। आपश्री भी धार्मिक सुसस्कारो से प्रेरित है। इनकी [illegible]क्षी से दो सन्ताने हुई [illegible] पुत्र एव एक पुत्री है। आपके पुत्र श्री विनोदकुमारजी दुगड अपने पिताश्री के कार्य का [illegible] सूझबूझ व सरलता से अच्छी तरह से सम्पन्न कर रहे है, [illegible] अप[illegible] की तरह ही समाज सेवा मे व गरीबी रेखा से नीचे जीवन-यापन करने वालो के लिये हमेशा हर तरह से सहारा बनकर उनकी सेवा मे [illegible] रहते है। जैसे श्री सुन्दरलालजी साहब दुगड है वैसे ही उनके [illegible] पर [illegible] वाले इनके सुपुत्र श्री विनोदकुमार [illegible]गड है। इनकी पुत्री कुमारी [illegible] [illegible] वह [illegible] तरह [illegible] पिता [illegible] [illegible] मे तल्लीन [illegible] है। इनका विवाह श्री [illegible] [illegible] के सा[illegible] हुआ है। वह भी एक [illegible] [illegible] सुन्दर है।

कुछ समय पूर्व श्री सुन्दरलालजी दुगड ने अपनी जन्म भूमि देशनोक मे सुगनीदेवी जेसराज वैद अस्पताल व रिसर्च सेन्टर के माध्यम से हर तरह की शल्य चिकित्सा, डेन्टल, इ एन टी व फिजिशियन का एक बडा नि शुल्क कैम्प लगाया जिसमे मरीजो को सुप्रसिद्ध डॉक्टरो द्वारा परामर्श देकर दवाइयो का भी नि शुल्क वितरण किया। आपश्री ने सुगनीदेवी जेसराज वैद अस्पताल एव रिसर्च सेन्टर बीकानेर को एक आई आर सी मशीन तथा एक ऑटो एनालाईजर सहर्ष भेट किया जो आज गरीबो को न्यूनतम से न्यूनतम मूल्य पर इलाज सुलभ करवा रहा है। सुगनीदेवी जेसराज वैद अस्पताल के प्रबन्धक व सभी डॉक्टर व कर्मचारी आपका तहेदिल से आभार मानते है।

श्रीमान् जयचन्दलालजी सुखानी उपाध्यक्ष, सुगनीदेवी जेसराज वैद अस्पताल व रिसर्च सेन्टर को कहा कि कोई भी बीकानेर व देशनोक समाज का व्यक्ति रुपयो के अभाव मे इलाज न करवा पा रहा हो तो आपश्री मेरे एकाउन्ट मे डेबिट करके मुझे सूचना भेज देना ताकि मै उसका रुपया भेज दूँगा। श्री सुन्दरलालजी दुगड की विनम्रता, प्रेम और वत्सलता उनके जीवन के अविच्छिन्न अग है, जिसकी सर्वत्र मुक्तकण्ठ से भूरि-भूरि प्रशसा हो रही है।

आपश्री के सहयोग से अरिहन्त मार्गी जैन महासघ मे अनेक धार्मिक पुस्तके एव शास्त्र छपे है। इस प्रकार आप समाज मे व अन्य अनेक सस्थाओ को सहयोग देकर सोने मे सुगन्ध का कार्य कर रहे है। आपका पूरा परिवार ही इस कार्य मे सहभागी है। खास कर विनोद बाबू दुगड सहृदयतापूर्वक तन-मन-धन से सेवा कर रहे है। आपका भावी जीवन मगलमय, ज्योतिर्मय हो।

आचरण से ही कहलाते इन्सान है । आचरण से ही बन जाते शैतान है।
आचरण मे गुरु के तो ज्ञान मिले, आचरण से मिल जाते भगवान है।।

एक अनूठे व्यक्तित्व के धनी जिनको मैंने नजदीक से देखा

मदन चण्डालिया
कपासन, चित्तौडगढ(राज)

श्रीमान् सुन्दरलालजी दुगड के गुण उनके महान व्यक्तित्व के परिचायक है। ऐसे महापुरुष का अभिनन्दन ग्रन्थ द्वारा सम्मान करना कोई बड़ी बात नही है। आपका वास्तव मे भारत भूषण एव भारत रत्न के योग्य का व्यक्तित्व है। किन्तु हमारे जैन समाज का दुर्भाग्य है कि हमारी जनसख्या कम होने से ऐसे नर-रत्नो की आभा भारत सरकार की आँखो तक नही पहुँचती है। आप जब से कोलकाता की धरती पर पधारे है, आपने श्री साधुमार्गी जैन सघ का ही नहीं सम्पूर्ण जैन समाज का नाम उच्चता के महान शिखर पर पहुँचाने मे तन-मन-धन से सहयोग दिया है। आपमे अनेक गुण है जिनकी व्याख्या मैं अपने शब्दो में नही कर सकता। किन्तु फिर भी सूर्य को दीपक दिखाने की चेष्टा जरुर करूँगा।

आदर्श व्यक्तित्व श्रीमान् सुन्दरलालजी दुगड अपने परिवार से एव सुख सुविधा से परिपूर्ण होते हुए भी हमेशा साधर्मी लोगो के प्रति सद्‌विचार, सदाचार तथा समयानुकूल सद्व्यवहार करके प्रत्येक व्यक्ति के हृदय मे भावनात्मक आदर की जगह बना चुके है।

शिष्ट आचरण शिष्ट आचरण आपका मुख्य गुण है। साहित्यकारो ने कहा है कि शिष्ट आचरण सज्जनो का आभूषण होता है। श्री सुन्दरलालजी दुगड अपने परम्परागत सास्कृतिक मूल्य के अनुसार बडे-बुजुर्गो को तथा गुरु नानेश एव गुरू राम का हमेशा चरणवन्दन तथा भाववन्दन करते हैं। आपके मन मे सम वयस्को के प्रति हमेशा आत्मीय भाव तथा छोटो के प्रति स्नेह सौहार्द भाव बना रहता है तथा हर व्यक्ति को आदर भाव पूर्वक आयु के अनुसार उच्च सम्बोधन देना तथा उनके प्रति अवसरानुसार उचित सम्मान प्रदर्शित करना आपके व्यक्तित्व का विशेष गुण है। आप जहाँ भी जाते है, अपनी मधुरता की अमिट छाप छोडते है।

दानशीलता आपमे दानशीलता कूट-कूट कर भरी है। आपने अपने धन का सदुपयोग हमेशा अच्छे कामों मे किया है। पूरे भारतवर्ष मे तथा विशेषकर मारवाड और मेवाड क्षेत्र में हॉस्पिटल, समता भवन, गोशाला का निर्माण करवाया है। शिक्षा सस्थाओ, धार्मिक सस्थाओ, सामाजिक सस्थाओ मे दिल खोलकर धन का सदुपयोग किया। राजनीतिक पार्टियाँ भी आपके सहयोग से अछूती नही रही।

५ **उत्तेजना से बचना** उत्तेजना से बचना आपका महान गुण है। हमेशा देखने मे आता है कि व्यक्ति छोटी-छोटी बातो से उत्तेजित हो जाता है तथा उत्तेजना मे आकर अट-सट कुछ का कुछ बोल जाता है। उससे उस व्यक्ति का मधुर सवाद समाज में नही रहता है। लोग उससे बात करने से भी डरते है। सोचते है कि कुछ वापस सुनना पडेगा। यह बात श्री सुन्दरलालजी दुगड मे नही है। उनका व्यक्तित्व शात, सौम्य, सहज, सरल, निरभिमानी है। सामने वाले व्यक्ति की उग्रता मे भी आप अपनी सहजता, सौम्यता को नही छोडते है। आपका हमेशा हसता-मुस्कराता चेहरा हमारे जैसे युवको के अशात, उत्तेजित, उद्वेलित मन को सोचने के लिये मजबूर कर देता है कि आप जैसा बनना कितना मुश्किल है।

६ **मितव्ययी भाषा** आप कभी भी लम्बे भाषणो मे विश्वास नही करते है। आप व्यर्थ की बातो और अनर्गल विवादो से मुक्त रहकर मौन रहने मे विश्वास करते है। उचित आवश्यक नपे-तुले शब्दो मे सार्थक वार्तालाप कर अपनी बात को दूसरो तक पहुँचा देते हैं। आप अपनी बातो से किसी के हृदय को ठेस नही पहुँचाते है तथा आपका व्यक्तित्व इतना महान् है कि आग्रही बनकर अ' नी बात मनवाने का दुराग्र ना ,, करते है। बोलने के साथ आप दूसरो की सुनने मे तत्पर रहते है। अक्सर देखा गया है कि हमारे जैसे व्यक्ति अपनी बात कहने मे तत्पर रहते है पर वे दूसरो की बात जरा भी सुनने को तैयार नहीं रहते है कि ु दुगड सा का व्यक्तित्व इतना अनूठा है कि वे हमेशा दूसरो को सुनने के लिये तत्पर रहते है तथा अगले व्यक्ति की बात मे कोई सच्चाई - है तो उसका खुले दिलो-दिमाग से अनुमोदन करर ह एव उसकी प्रशसा करने से भी पीछे नही हटते है। इसलिये दुगड सा छोटे-बडे हर व्यक्ति के हृदय सम्राट बने हुए है। उपरोक्त गुण उनके बच्चो मे भी देखने को मिल सकते है। जिसका उदाहरण श्री विनोदजी दुगड को ले सकते हैं।

७ **सका का सोच** श्रीमान् सुन्दरलालजी दुगड का व्यक्तित्व हमेशा सकारात्मक सोच का रहा है। श्री दुगड ुराई मे भी अच्छाई का पुट ढूँढते है। अ ा व्यक्तित्व आशावादी तथा आदर्शवादी है। इन विचार से ही आपको निराशा मे भी आशा, निरुत्साह मे भी उत्साह है, दीनता हीनता मे भी उत्सुकता और श्रेष्ठता का अनुभव होता है। आप लाखो-करोडो का दा किन्तु धारण व्यक्ति को अपनी सामर्थ्य अनुसार दान देने के लिये प्रेरणा देते हैं तथा उसकी भूरि-भूरि प्रशसा करके उसके मनोबल को बढाते है। आपके इसी सोच ने आपको भय, चिता, कुठा व निराशा से

जिससे मानवता का उज्ज्वल इतिहास लिखा जाता है।
मानवता के उज्ज्वल इतिहास मे स्वर्णाक्षरो मे अकित होनेवाले,
दुगडजी जैसे महामना समाज का प्राण है।
समाज मे अधिकतर लोग खाने-पीने, धन बटोरने और जिन्दगी के अन्य धधो मे लगे रहते है।
यह समाज की देह है।
उसके प्राण वह गि -गिनाए मनुष्य है जो उसकी रक्षा के लिए सदैव लडते रहते है,
समर्पण करते रहत है, सेवा देते रहते है।
इन्ही लडन्तियो के साहस और बुद्धि पर समाज का आधार है।
महामना श्री सुन्दरलालजी दुगड समाज के प्राण है, लडन्तिये है।
का द्वार सबके लिए स्वागत द्वार है और उनका प्यार सबके लिए अपना उपहार है।
उनके जीवन की सबसे महत्वपूर्ण तस्वीर यह है कि रूपया बढोतरी के इस युग मे
उन्होंने उन रूपया मे खूब बढोतरी की
पर उससे ज्यादा बढोतरी की उन रूपयो को मानव सेवा के लिए खर्च करने मे।
उनकी आय ईर्ष्या की चीज है
उनका दान और समर्पण वदना का पात्र।
एक ऐसे चातक (पक्षी) के रूप मे मुझे नजर आते है
स्वाति की बूंद तक से पीठ फेर उस ओर उडता है जिस ओर बादल नहीं है
चाहता है कि वह बूँद औरो को मिले जिससे किसी और की प्यास बुझे।
ि कहे– अनासक्ति कहे– या कि– निष्काम घनिष्ट प्रेममय आसक्ति

इस निष्काम कर्मयोगी प्रेमी को कोटि-कोटि प्रणाम।
''कोलकत्ता की धन्य माटी हो गयी
जब मिले सहसा उसे तुम रत्न लाल।
और सुन्दर वन किया तुमने सुशोभित,
राष्ट्र भारत भारती का दिव्य भाल।
पीडा से मुक्ति के सग्राम मे
बन सिपाही तुम वतन के हो गये।
गध में बनकर जिओ, जब तक जिओ,
इस तरह सारे चमन के हो गये।
आज भी फुलवारियो मे मुस्कराते रहा,
हर घडी हम सभी को प्रेरणा देते रहो।

उदारता व विशालता के धनी श्री सुन्दरलाल दुगड़

हनुमानमल सेठिया (मासोजी)

मेरे सामने पला-बडा हुआ, आज परिवार मे ही नही बल्कि समाज मे एव व्यवसाय के क्षेत्र मे जो शिखर की ऊँचाइयाँ छू रहा है यह सब आराध्य देव एव गुरुभक्तो की कृपा है।

व्यक्ति मे सम्पन्नता होना गर्व की बात है ही लेकिन सम्पन्नता के साथ उदारता व विशालता के बिना जीवन नीरस है, फीका है, आज अनतराय कर्मो का फल है कि समृद्धि के साथ उदारता, विशालता, मिलनसारिता के कारण ही श्री सुन्दरलाल ने अपना व परिवार का नाम समाज व व्यवसाय के क्षेत्र मे अग्रगण्य किया है।

इसकी मिलनसारिता की मै क्या तारीफ करूँ कोई भी साधारण से साधारण व्यक्ति भी जो इसके सम्पर्क मे एक बार आ गया, उससे मिलना एव उसको गाडी म साथ बैठाकर गन्तव्य स्थल तक पहुचाना, यह एक मिशाल है।

कन्शट्रक्शन का कार्य का भी लम्बे समय से कर रहा है एव कितने भवनो का निर्माण किया है उसकी गिनती नही है लेकिन अपने लिए कोई बगला या मकान नही बनाया है।

माताजी एव पिताजी की इन्होने जो सेवा की है, वह अपने आप मे बहुत ही एक उ आदर्श है। ऐसी सेवा इतना विशाल व्यवसाय एव व्यस्त होते हुए भी लगातार दा-ढाई महीना देशनोक (राजस्थान) मे रहकर अपने हाथो से दवाई एव सेवा सुश्रुषा करना यह लाखो मे देखने पर भी मिलना मुश्किल है।

समाज मे अगर कोई असहाय या निर्धन हो, तो उनकी भी गुप्त रूप से सहायता करता है। मेधावी छात्रो को भी समय-समय पर सहयोग प्रदान करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

इसका हृदय इतना विशाल व सरल है उसका मै शब्दो के द्वारा वर्णन नही कर सकता।

मै जिनेश्वर देव से उज्ज्वल भविष्य एव दीर्घायु की कामना करते हुए यही प्रार्थना करता हूँ कि आगे भी सभी गुरु का आशीर्वाद मिलता रहे एव जन-जन के लिए समाज के लिए परिवार के लिए और ज्यादा उपयोगी सिद्ध हो।

पूर्वजों का पुण्य प्रताप

भँवरलाल दुगड, काकाजा

मनुष्य जब पैदा होता है वह अपने कर्मों को साथ लेकर आता है। वह किये हुए कर्म भोगता है। बहुत से मनुष्यो को अपने कर्मों की बदौलत वैभव मिलता है, बहुत से अपने ही ऊपर खर्च करता है। कुछ वैभव को दूसरो के लिए खर्च करते है। परिवार-कुटुम्ब-समाज-देश आदि पर उसी मे मेरा भतीजा सुन्दरलाल की गिनती करूँ तो कोई अतिशयोक्ति नही होगी। ऐसे तो देशनोक का मेरा दुगड परिवार अपने आप मे गौरवशाली है। मेरे पूर्वजों ने भी ऐसी मिसाल कायम की है जिससे हम सब लोगो का सिर गर्व से ऊँचा उठ जाता है। हमारे दादाजी श्री मौजीरामजी दुगड देशनोक मे रहते ते तथा गल्ला किराना का काम था। पहले जमाने मे गाडी, रेल आदि नहीं था। तब ऊँटो तथा बैलगाडी से सामान ढोया जाता था। उस समय कन्धार आदि अरब देशो से कतार (सौ-पचास वाहन एक साथ चलते थे) आती थी। बीकानेर रियासत मे जगात की प्रथा थी। हमारे दादाजी की कतार देशनोक के लिए आ रही थी तो बीकानेर महाराजा ने उस कतार को रोककर सामान अपने गोदाम में उतार लिया। छह माह बाद भी जब कोई उसकी फरियाद लेकर नहीं आया तो बीकानेर महाराजा ने देशनोक अपने अरदली को भेजकर हमारे दादाजी को बुलाया और कहा सेठजी आपने अपने सामान की कोई फरियाद नही की तो उन्होंने जवाब दिया, अन्नदाता धणी रो धणी कुण। कोई छोटा-मोटा आदमी मेरी कतार रोकता तो मै आपके पास फरियाद लेकर आता लेकिन जब आपने ही उसको रोक लिया तो मै किसके पास जाऊँ। इसी बात से महाराजा बहुत प्रसन्न हुए और बोले-''सेठा कोई गाव हाथी या हाथ मे कडा मागो। मैं बहुत ही प्रसन्न हूँ आपकी बात से'' तब उन्होने सिर्फ कबूतरो के चुगे के लिए एक पावली अनाज मागा था। उस समय पावली ३।। सेर की होती ती तथा भाव एक आना एक पावली का था। अन्नदाता एक पावली अनाज आपके खजाने से हमेशा कबूतरो को चुग्गा गिरना चाहिये तो बीकानेर महाराजा ने एक रुपया चौदह आना हर महीना देशनोक आता था। फिर जब हिन्दुस्तान आजाद हुआ और बीकानेर रियासत का विलीनीकरण हो गया तब महाराजा शार्दुल सिहजी ने सब धर्मार्थ राशि डबल कर दी। तब वह राशि बढकर ३)७५ हो गई। वह आज तक भी हमलोगो को मिलती है। कितनी सन्तोष भावना इसमे झलकती है।

उन्ही पूर्वजो के पुण्य प्रताप से हमारे परिवार मे सुन्दर ल जैसा पुत्र पैदा हुआ। कुटुम्ब के प्रति इसकी भावना मैंने बहुत दफे देखी है।

मेरे ही परिवार मे जिनका जवाई जैन हॉस्पीट मे भर्ती था। मै अनायास अस्पताल चला गया तो मैंने वहाँ उनको भर्ती देखा। तब डॉ आर चटर्जी आ गये। मेरे को थोडा जानते थे। उन्होने मेरे को पूछा क्या बात है मैंने कहा मेरा एक पेशेन्ट भर्ती है। वो बोले मेरे अन्डर मे ही है। तब उन्होने बताया सिर मे क्लॉट है। वो ऑपरेशन द्वारा ही ठीक होगा नही तो पेरालाइसिस (लक होने का डर है तथा जा भी जा सकती है। तब मैंने वहीं से सुन्दर को फोन किय , वह बोला मै आ रहा हूँ। आधा घण्टे मे वह वहाँ आकर श्री सरदारमलजी काकरिया को सब हकीकत समझा कर डॉक्टर को बुलाया। श्री जैन हॉस्पीटल मे एक - न्यूरो सर्जन था। उसने कहा मैं छुट्टी जाऊँगा। मै ऑपरेशन नही करूँगा। उसक समझाया कि आप ऑपरेशन कर चले जाना। हमलोग दूसरे डॉक्टर को फीस देकर बुलाकर व्यवस्था कर लेंगे डॉक्टर नहीं माना तब सुन्दरलाल ने उसी वक्त दूसरे आदमी को भेजकर हॉस्पीटल से जो टॉप का न्यूरो सर्जन था पुस्टी को बुलाया। उसको आपकी मर्जी हो जितना ले लेना लेकिन ऑपरेशन आज ही करना है। पहल कि मैं हावडा में नहीं जाता हूँ फिर वे मान गये तथा रात मे ९ बजे आकर किया। सारी व्यवस्था सुन्दरलाल ने ही करवाई तथा पूरा खर्चा दिया। अनेक घटनाएँ मेरी जानकारी मे है। सुन्दर मे कुटुम्ब के प्रति किस यह झलकती है। ऐसा परिवार को देखने वाला होता है तो गर्व होन जिनेश्वर देव से मेरी प्रार्थना है कि इनको दीर्घायु प्रदान करे

ही महत्व मिलता है जितना एक जैन को जैसे जैन विद्यालय या जैन हॉस्पीटल ही ले लीजिये जहाँ विशेषकर अन्य समाज के व्यक्तियो की फ्री सेवा ज्यादा की जाती है।

श्वेताम्वर स्थानकवासी जैन सभा द्वारा किये गये कार्यो की बडी सराहना कोलकाता महानगर मे अक्सर सुनी जाती है। आपकी दृष्टि मे कुछ महत्वपूर्ण लोग ?

इस सस्था के सस्थापको ने शुरू से ही कोई जाति विशेष को ध्यान मे रखकर सस्था की स्थापना नही की थी और वही परम्परा अभी तक चल रही है। मैंने स्व सूरजमलजी वच्छावत, स्व भवरलालजी कर्नावट व वर्तमान मे शरी सरदारमलजी काकरिया, श्री रिखवदासजी भसाली, श्री ग्दिकरणजी बोथरा, श्री विनोदजी मिन्नी तथा यो भी कह सकता हूँ कि वर्तमान मे सभी सदस्य सस्था के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित है तथा किसी भी प्रकार का विवाद नहीं है।

अपने परिवार एव भावी योजना पर प्रकाश डाले ?

मै वहुत ही भाग्यशाली हूँ कि मुझे पत्नी से समाज सेवा कार्य मे पूर्ण सहयोग मिला। आज मेरे पास कितनी सम्पत्ति हो गयी परन्तु मेरी पत्नी का स्वभाव वैसा ही है जो ३० वर्ष पूर्व राजा कररा मे रहते था। आज भी अपने हाथ से कार्य करना तथा किसी भी चीज का दुरुपयोग नही करना। आज भी मुझे घर नही खाना हो तो पहले घर मे वोलना पडेगा अन्यथा मै वाहर खा नही सकता। पत्नी का कहना है कि मैंने जो वनाया वह वेकार नहीं जायेगा। जिस घर मे ऐसी पत्नी हो तो बच्चो मे भी वही सस्कार आते है। मै वहुत ही भाग्यशाली हूँ कि आज प्राय १५ वर्ष से मेरा पुत्र व्यवसाय देखता है परन्तु सामाजिक कार्यो मे धन खर्च करने मे मुझे कभी पुत्र को नही पूछना पडा। १-२ वार मैंने पूछा तो उसका जवाब था पिताजी सम्पत्ति आपकी है आप जैसा चाहे उपयोग करे। परन्तु मेरी एक इच्छा है कि मै अपने जन्मस्थान पर कोई ऐसी सस्था वनाऊ ताकि आस-पास के सभी लोग उससे लाभान्वित हो सके। अत अव मेरे जन्म स्थान वीकानेर क्षेत्र मे वहुत ही जनोपयोगी कुछ योजनाओ पर चिन्तन चल रहा है और ईश्वर ने चाहा तो शीघ्र ही ये साकार रूप ले लेगी।

धन्यवाद। आपका वहुत समय लिया। श्री भूपराजजी ने निम्न श्लोक मे इस साक्षात्कार का समापन किया। यह श्लोक श्री दुगडजी के जीवन को चरितार्थ करता है–

मत्वेषु मैत्री, गुणीषु प्रमोदम्,
क्लेष्टेषु जीवेषु कृपा परत्वम्।
माध्य स्थ भाव विपरीत वृत्तौ,
सदा ममात्मा विदधातु देवा।

हिन्दी विभागाध्यक्ष, ए ए
जयपुरिया कॉलेज, कोलकाता
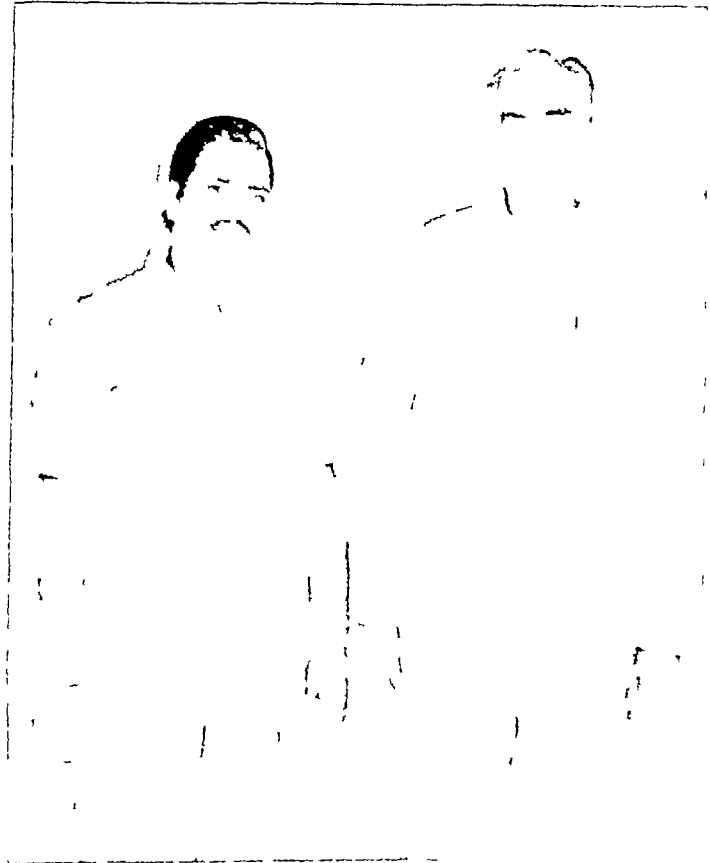
श्री वलराम झाखड के साथ

आचार्य नेमिचन्द्रसूरि कृत रयणचूडरायचरियं में वर्णित शिक्षा एवं विद्याएँ

डॉ हुकुमचद जैन
सह आचार्य एव विभागाध्यक्ष
जैन विद्या एव प्राकृत विभाग, उदयपुर

आचार्य नेमिचन्द्र सूरि अपर नाम देवेन्द्र गणिचन्द्र कुल के वृहद्गच्छीय उद्योतन सूरि के प्रशिष्य एव आम्रदेव सूरि के शिष्य थे। ये गुजरात के राजा कर्ण के समकालीन होने के कारण ११वी शताब्दी के उत्तरार्द्ध एव १२वी शताब्दी के पूर्वार्द्ध के माने जाते है। इन्होने अपने ग्रन्थो की रचना प्राकृत भाषा मे की है। ये रचनाएँ गद्य-पद्य एव चम्पू शैली मे है।

रचनाएँ (१) महावीर चरिय (२) उत्तराध्ययन वृति (उत्तराध्ययन की सुखबोधा टीका) (३) आख्यानक मणिकोश (४) आत्मबोध कुलक (५) रयणचूडरायचरिय है। ये रचनाएँ अणहिल्लपाटपुर मे श्री कर्ण राजा के राज्य मे दो हट्ठी (श्रेष्ठी) के द्वारा वि स ११४१ मे रची गई। रयणचूडरायचरिय की भाषा एव ग्रन्थ के आन्तरिक अध्ययन से ज्ञात होता है कि कवि की तृतीय कृति चम्पू शैली में रचित है। यह एक धर्म कथा है जिसमे दान, शील, तप एव भावना सम्बन्धी अवान्तर कथाओ के सहारे मूल कथा आगे बढती है।

कथा-वस्तु यह कथा छ खण्डो मे विभाजित है –

(१) **रत्नचूड का पूर्व भव** गौतम स्वामी राजा श्रेणिक को धर्म प्रतिपादन के रूप रत्नचूड की कथा सुनाते है। कचनपुर नगर मे बकुल माली रहता था। जिनेन्द्र पूजा के कारण यह मृत्यु को प्राप्त कर राजा कमलसेन एव रानी रत्नमाला से पुत्र रूप में उत्पन्न हुआ। क्योंकि रानी ने गर्भ के समय रत्न के ढेले के दर्शन किये इसलिए रयणचूड नाम रखा गया।

(२) **रत्नचूड का जन्म और तिलक सुन्दरी से विवाह** एक बार रत्नचूड को हाथी अपहरण कर लेता है। राजा-रानी बहुत विलाप करते हैं। सुरगुरू नामक नैमित्तिक द्वारा कुमार को वापिस आने की बात कहकर राजा-रानी आश्वस्त होते है। उधर हाथी कुमार को एक तालाब मे गिरा देता है। वहाँ एक तपस्वी के दर्शन होते है। तपस्वी अपने आश्रम मे ले जाता है। रत्नचूड तिलक सुन्दरी का विवाह सम्पन्न होता है।

(३) **अन्य राजकुमारियो से विवाह एव राज्य प्राप्ति** तिलक सुन्दरी को मदनकेशरी विद्याधर अपहरण कर लेता रयणचूड तिलक को खोजता हुआ निर्जन रिष्टपुर नगर पहुँचता है। जहाँ वानरी के रूप मे सुरानद मिलती है। विद्या द्वारा उसका उद्धार कर विवाह कर लेता है। बाद मे सूर्यप्रभ मुनि द्वारा मुनि के पूर्व जन्म की कथा सुनता है जिसमे समस्या पूर्ति द्वारा राजहसी से विवाह करता है। इस प्रकार तिलकसुन्दरी, सुरानदा, राजश्री, पदमश्री से विवाह कर लेता है। पाँचो पत्नियो के सुख को भोगता हुआ सपरिवार तीर्थ यात्रा करने की सोचता है।

(४) **सपरिवार तीर्थयात्रा और धर्मोपदेश** रत्नचूड पाँचो पत्नियो एव माता-पिता के साथ मेरू पर्वत पर जिनेन्द्र के दर्शन करने गये। वहाँ सुरप्रभ मुनि का धर्मोपदेश सुना। उन्होने दान के दृष्टात मे राजश्री का पूर्वभव, शील के दृष्टात मे पद्मश्री का पूर्वभव, तप धर्म के दृष्टात मे राजहसी का पूर्वभव, भावना धर्म के दृष्टात मे सुरानन्दा के पूर्वभव की कथा सुनाई। अन्त मे रत्नचूड और तिलक सुन्दरी का पूर्वभव भी सुनाया। सभी लोगो की धर्म मे दृढआस्था हो गई।

(५) **दुश्चेष्टा के परिणाम**–कथन के रूप मे अमरदत्त और मित्रानद की कथा सुरप्रभ मुनि से तिलकसुदरी ने रत्नचूड के वियोग का कारण पूछा तब मुनि ने कहा पूर्वजन्म मे तिलक सुन्दरी ने क्रीडा करते हुए कबूतर को यह कहकर उडा दिया कि वह कभी न मिले। ऐसी दुश्चेष्टा के कारण वियोग हुआ। ऐसी ही एक कथा अमरदत्त और मित्रानद की सुनाता है। रत्नचूड आदि सभी श्रावक दीक्षा स्वीकार करते है।

(६) **रत्नचूड द्वारा धार्मिक अनुष्ठान एव क्रमश मोक्ष प्राप्ति** रत्नचूड ने धार्मिक जीवन जीते हुए अनेक धार्मिक अनुष्ठान किये। मन्दिरो का निर्माण करवाया। पूजा, दान आदि कार्य किये और केवल ज्ञान प्राप्त किया। आगे चलकर मोक्ष की प्राप्ति करेगे।

इस प्रकार गौतम स्वामी ने श्रेणिक राजा को रत्नचूड का चरित्र सक्षेप मे सुनाया। जिन पूजा के महत्व आदि के रूप मे यह कथा प्रसिद्ध है।

रयणचूडरायचरिय की कथावस्तु से प्राचीन भारतीय शिक्षा एव विद्याओ के सम्बन्ध मे भी कुछ जानकारी प्राप्त होती है। यद्यपि शिक्षा और विद्या से स, ग्रन्थ मे उपलब्ध सामग्री मध्ययुग की शिक्षा और विद्या के सबध मे कोई विशेष तथ्य प्रस्तुत नहीं करती है। किन्तु इससे प्राचीन सस्कृति की पुष्टि अवश्य हो ग्रन्थ मे उपलब्ध सामग्री को सक्षेप मे यहाँ दिया जा रहा है –

शिक्षा और विद्या –

रत्नचूडकुमार की शिक्षा राज-भवन के भीतर किशाला बनवाकर प्र थी। ग्रन्थ से यह पता चलता है कि शिक्षा प्रारभ करते समय तिथि-नक्षत्र ध्यान रखा जाता था। रत्नचूड को प्रशस्त गुरुवार को रिक्ष और हस्त नक्षत्र पचमी के दिन श्वेत वस्त्र और फूलो से अलकृत करके सरस्वती देवी पूर्वक कलाचार्य को समर्पित किया गया था।[1] शिक्षा प्राप्त करने के लिए विनीत और मेधावी होना, गुरू का सकल कलाओ पारगत हो अभिभावक का अनुशासन मे रहना आवश्यक था। रत्नचूड ने इसीलि

ग्रन्थ के इसी अध्ययन मे श्रावकाचार का वार-वार उल्लेख प्राप्त होता है और मध्य रात्रि मे सुवाहुकुमार उन सभी को धन्य व पुण्यशाली मानता है जो ५ अणुव्रत व ७ शिक्षाव्रत ग्रहण कर गृहस्थ धर्म का पालन करते है।

द्वितीय भद्रनन्दी अध्ययन मे भी भगवान महावीर से (सावगधम्म) श्रावकधर्म अगीकार करने का उल्लेख है।

तृतीय सुजात कुमार ने श्रावक व्रत ग्रहण किया। सुवासव कुमार ने वैश्रमण भद्र को निर्दोष आहार दान देकर श्रावक धर्म का पालन किया। जिनदास ने महावीर से १२ प्रकार क (श्रावक) गृहस्थ धर्म स्वीकार किया। धनपति ने श्रावक व्रत ग्रहण किये। महाबल राजपुत्र का भी व्रतो के ग्रहण मे उल्लेख प्राप्त है। भद्रनन्दी महाचन्द्र व वरदत्त के भी श्रावक व्रत ग्रहण का उल्लेख इस ग्रन्थ मे प्राप्त होता है।

इस प्रकार विपाकसूत्र के द्वितीय श्रुतस्कन्ध मे जिन १० महापुरुषो का वर्णन है, उन सभी ने श्रावक वनकर व्रतो को अगीकार किया और ५ अणुव्रत, ७ शिक्षाव्रतो के साथ-साथ निर्दोष दान-पौषध-सलेखना-सथारा ग्रहण किया।

विपाक सूत्र मे श्रावक के समणोपासक, सावग व गिही नामो का प्रयोग हुआ है।

हकीकत मे देखा जाय तो विपाक सूत्र मूलत कर्म सिद्धान्त से सवध रखता है। व्यक्ति के अच्छे व बुरे कर्म ही उसके आगामी भवो को सुधारने या विगाडने वाले वनते है। कर्म ही आत्मा से सवद्ध होते है और जीव ही कर्म का वधन करता है। ज्ञानावरणीय आदि ८ कर्म ही समय-समय पर उदय मे आते है।

विपाक सूत्र मे प्राप्त श्रावकाचार के सदर्भो का जब अन्य आगम ग्रन्थो-टीकाओ-चूर्णियो व इतर साहित्य मे अवलोकन करते है तो अनेकानेक नामो, शब्दो व भेदो की ओर हमारा ध्यान जाता है। इसी सदर्भ मे श्रावक व उसके व्रतो का अन्य ग्रन्थो मे भी दृष्टिपात आवश्यक हो जाता है। सूत्रकृताग सूत्र मे समणोपासक, अगारिक श्रावक शब्द श्रावक के सदर्भ मे प्राप्त होता है। स्थानाग सूत्र मे अगार-उपासक शब्द का प्रयोग मिलता है। समवायाग सूत्र मे उपासक शब्द प्राप्त है। भगवती सूत्र मे सागार, श्रमणोपासक, उपासक व श्रावक शब्द प्राप्त है। ज्ञाताधर्मकथा मे श्रमणोपासक शब्द का ही प्रयोग है। उपासक दशाग मे सावय, अगार, उपासक, शब्द का प्रयोग हुआ है। अन्तगढदशाग मे उपासक शब्द का प्रयोग हुआ है। उत्तराध्ययन सूत्र मे श्रमणोपासक शब्द का प्रयोग हुआ है। आचार्य कुन्दकुन्द के चारित्र पाहुड मे सागार शब्द का प्रयोग सागार धर्मामृत मे प आशाधरजी ने श्रावक शब्द का प्रयोग किया है। श्रावकाचार मे श्रावक शब्द प्रयुक्त है।

मे श्रावकाचार

आगम साहित्य के स्थानागसूत्र मे आगार धर्म के अन्तर्गत श्रावक के धर्म का चिन्तन हुआ है। इसी ग्रन्थ मे श्रावको के ५ अणुव्रतो का भी वर्णन हुआ है। समवायागसूत्र मे श्रावक की ग्यारह प्रतिमाओ का वर्णन प्राप्त होता है। उपासकदशाग, जो श्रावकाचार का मूल ग्रन्थ है, इसमे आनन्द श्रावक भगवान महावीर से पाँच अणुव्रत और सात शिक्षाव्रत ग्रहण करता है, वाद मे ग्यारह प्रतिमाओ को धारण कर सल्लेखना स्वीकार करता है। विपाकसूत्र मे सुवाहुकुमार द्वारा श्रावक के वारह व्रत ग्रहण करने का वर्णन है। दशाश्रुतस्कन्ध मे श्रावक की ग्यारह प्रतिमाओ का वर्णन है। आवश्यकसूत्र मे षट् आवश्यक, वारह व्रतो के अतिचारो का वर्णन है।

अन्य ग्रन्थो मे श्रावकाचार

आगमो के परवर्ती मूल ग्रन्थो मे आचार्य उमास्वाति के तत्त्वार्थसूत्र मे श्रावक के वारह व्रतो का वर्णन है, जिनमे पाँच अणुव्रत, तीन गुणव्रत, चार शिक्षाव्रतो का उल्लेख है। इसके साथ ही इनके अतिचारो का भी वर्णन है। आचार्य हरिभद्र ने धर्म-विन्दु-प्रकरण मे जैन मार्गानुगामियो के पैंतीस गुणो का सर्वप्रथम वर्णन किया है। आचार्य हेमचन्द्र ने योगशास्त्र मे पाँच अणुव्रत, तीन गुणव्रत, चार शिक्षाव्रतो के साथ-साथ श्रावक के दैनिक षट्कर्म और तीन मनोरथो का भी वर्णन किया है। सुविहित आचार्य जिनेश्वर ने षट्स्थानप्रकरण मे षट्कर्मो का उल्लेख किया है। आचार्य जवाहर ने गृहस्थ धर्म के तीन खण्डो मे पाँच अणुव्रत, तीन गुणव्रत, चार शिक्षाव्रतो के साथ षट्आवश्यको का वर्णन किया है। महासती उज्ज्वल कुवर ने श्रावक धर्म मे श्रावक के वारह व्रतो का वर्णन किया है।

वारह व्रत

पाँच अणुव्रतो के सम्बन्ध मे कही भी मतभेद नहीं है। उनके नाम भेद अवश्य प्राप्त होते है। आचार्य कुन्दकुन्द ने अपने चारित्रप्राभृत मे पाँचवे अणुव्रत का नाम 'परिग्गहारभ परिमाण' रखा है एव चतुर्थ अणुव्रत का नाम 'परपिम्म परिहार' जिसका अर्थ परस्त्रीत्याग है तथा प्रथम अणुव्रत का नाम 'स्थूलत्रसकायवधपरिहार' रखा है। आचार्य समन्तभद्र ने 'रत्न-करण्डकश्रावकाचार' मे चौथे अणुव्रत का नाम 'परदारनिवृत्ति' और 'स्वदार सन्तोष' रखा है एव पाँचवे अणुव्रत का नाम 'परिग्रह परिमाण' के साथ 'इच्छापरिमाण' भी रखा है। आचार्य रविषेण ने चौथे व्रत का नाम 'परदारसमागम विरति' एव पाँचवे का 'अनन्तार्द्धाविरति' दिया है। आदिपुराण मे चौथे व्रत का 'परस्त्रीसेवननिवृति' एव पाँचवे का नाम 'तृष्णाप्रकर्षनिवृति' रखा है।

गुणव्रतो और शिक्षाव्रतो के भी नामो एव सख्याओ मे भी भेद पाये जाते है। उपभोगपरिभोग, दिशा परिमाण व अनर्थदण्ड विरमण तीन गुणव्रत एव सामायिक देशावकाशिक, पौषध और अतिथिसविभाग चार शिक्षाव्रत है। आचार्य कुन्दकुन्द ने चारित्रप्राभृत तथा रविषेण ने पद्मचरित मे दिशाविदिशा प्रमाण, अनर्थदण्डत्याग एव भोगोपभोग परिमाण ये तीन गुणव्रत व सामायिक, प्रोषधोपवास, अतिथिपूजा व सल्लेखना ये चार शिक्षा व्रत वतलाये है। प्राकृत भावसग्रह व सागारधर्मामृत मे भी यही क्रम है। आचार्य उमास्वाति ने तत्त्वार्थसूत्र मे गुणव्रत तथा शिक्षाव्रत ये भेद नहीं करके सात शीलव्रत वतलाये है, यथा-दिग्विरति, देशविरति, अनर्थदण्ड

सामायिक, प्रोषधोपवास, उपभोग परिभोग परिमाण एव अतिथिसविभाग। सल्लेखना को इनमे सम्मिलित नहीं किया गया है।[४५] आचार्य अमृतचन्द्र ने पुरुषार्थसिद्ध्युपाय, सोमदेव ने उपासकाध्ययन, अमितगति उपासकाचार, पद्मनन्दि पचविशतिका और लाटो सहिता मे भी उपर्युक्त सात शील ही बताये है। रत्नकरण्डकश्रावकाचार मे आचार्य वसुनन्दि ने दिग्व्रत, अनर्थदण्ड एव भोगोपभोगपरिमाणव्रत, ये तीन गुणव्रत एव देशावकाशिक, सामायिक, प्रोषधोपवास और वैयावृत्य ये चार शिक्षाव्रत बतलाये है।[४६] हरिवशपुराण मे गुणव्रत तो तत्त्वार्थसूत्र के अनुसार ही है परन्तु शिक्षाव्रत मे भोगोपभोगपरिमाण के स्थान पर सल्लेखना का जोडा है।[४७] आदिपुराण मे दिग्व्रत, देशव्रत और अनर्थदण्ड को गुणव्रत तथा सामायिक, प्रोषधोपवास, अतिथिसविभाग व सल्लेखना को शिक्षाव्रत कहा है।[४८] स्वामी कार्तिकियानुप्रेक्षा और सागारधर्मामृत मे भी रत्नकरण्डकश्रावकाचार का क्रम ही अपनाया गया है।[४९]

इस प्रकार हम देखते है कि जैन साहित्य मे प्राचीन समय से ही श्रावकाचार का निरूपण प्राप्त होता है। देशकाल की आवश्यकतानुसार श्रावकाचार मे क्रमश विकास भी हुआ है। किन्तु उसके मूल मे मनुष्य के आचरण को सयमित, धर्ममय एव नैतिक बनाने की भावना रही है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि विपाकसूत्र मे श्रावकाचार से सबधित सामग्री के सदर्भ व सकेत प्राप्त तो होते है परन्तु उन सदर्भो का विस्तार प्राप्त नही होता है परन्तु आगमीक परम्परा यही रही है कि एक चीज का वर्णन अगर एक सूत्र मे एक स्थान पर किया जाता है तो उसके पुन पुन लेखन की परम्परा नही रहती और केवल जाव शब्द के द्वारा उसे वहाँ समाहित मान लिया जाता है। यही पद्धति ही इस आगम में दर्शायी गई है। फिर भी हमने श्रावक शब्द से लगाकर व्रतो तक जो जो नाम भिन्नता जैन आगमो व इतर ग्रन्थो मे प्राप्त होती हैं, उनको बताने का प्रयास किया है।

सदर्भ ग्रन्थ सूची

१	विपाक सूत्र	१/१-३	१०	वही	२/३/२
२	वही	१/६-८	११	वही	२/४/२
३	वही	१/२३	१२	वही	२/५/२
४	वही	१/३१	१३	वही	२/६/२
५	वही	१/२०	१४	वही	२/७/२
६	वही	१/१/१४	१५	वही	२/८/२
७	वही	१/१/१५	१६	वही	२/९/२
८	वही	१/१/१६	१७	वही	२/१०/२
९	वही	२/२/२			

१८ ''से ण लेवे णाम गाहावई समणोवासए यावि होत्था'',
—सूत्रकृतागसूत्र (सुत्तागमे), सूत्र २

१९ क ''चरितधम्मे दुविहे अगारचरितधम्मे चेव अणगार चरित धम्मे'',
—ठाण (सुत्तागमे), २/१/९८८

ख ''चत्तारि समणोवासणा पण्णत्ता तजहा-'',
—ठाण (सुत्तागमे), ४/३/४०६

२० क ''एक्कारस उवासग पडिमाओ पण्णत्ता तजहा-दसणसावए'
—समवाए (सुत्तागमे), पृ ३२४

ख ''समणभूए आविभवइ समणाउसो'',
— समवाए (सुत्तागमे), पृ ३२४

२१ ''सोच्चा ण केवलिस्स वा केवलिसावगस्स वा केवलिसावियाए वा केवलिउवासगस्स वाकेवलिउवासियाए वा''।
— भगवई (अगसुत्ताणि, भाग २) ५/९६

२२ ''तओ ण अह देवाणुप्पिआण अतिए पच्चणुव्वइय जाव समणोवासए'
—ज्ञाताधर्मकथा-भारिल्ल, शोभाचन्द्र, अध्याय-५, पृ १९०

२३ ''से वि य विणए दुविहे पण्णत्ते तजहा-अगार विणय अणगार विणय''
—ज्ञाताधर्मकथा-भारिल्ल शोभाचन्द्र,
अध्याय-५, पृ १९३ उवासगदाशाओ १/१/४७

२४ ''से मोग्गर पाणी जक्खे सुदसण समणोवासय अदूरसामतेण वीईवयमाण''
—अन्तगडदसाओ (सुत्तागमे), वर्ग ६, अध्याय ३, पृ ११९७

२५ ''उवासगाण पडिमासु भिक्खुण पडिमासु य,
जे भिक्खु जयइ णिच्चसेन अच्छइ मण्डले।''
—उत्तराध्यानसूत्र-मुनि पुण्यविजय, सूत्र ३१, ९१

२६ ''दुविह सजमचरण सायार तह हवे णिरायार''
—चारित्रपाहुड-कुन्दकुन्द, गाथा २२

२७ सागारधर्मामृत - प आशाधर, १/१५

२८ ''सम्मत्त विसुद्धमई सो दसण सावयो भणिओ'',
— वसुनन्दि श्रावकाचार, सूत्र २०५

२९ स्थानागसूत्र, ३/४/२१०

३० स्थानागसूत्र, ५/१/३८१

दान की महानता

सज्जनसिंह मेहता 'साथी'
एम०ए० (१) हिन्दी (२) जैन दर्शन (३) राज -शास्त्र

दान का अर्थ– दान का अर्थ है-देना। 'दीय दया जाता है वह दान है। अधिक स्पष्ट शब्दो मे दान की व्याख्या
'अनुग्रहार्थ स्वस्याति सर्गो दानम्''–तत्वार्थ सूत्र अ०७ गाथा ३३
अर्थात् अपने और दूसरे के ह क लिए जो धन का त्याग किया जाता है, उसे दान कहते है।

जैन सिद्धान्त दीपिका ग दानम्'' (जैन सिद्धान्त दीपिका' ११७)

दान से खोया नही, पाया जाता है– से धन घटता नही, वरन् बढता है। ससार मे जड कहलाने वाले पदार्थो से भी दान की शिक्षा मिलती है। आम की गुटली बोने पर व्यक्ति को हजारो हजार आम एक दाना डालकर अनेक दाने प्राप्त करता है। इसी प्रकार शुभ भाव से दान देने पर पुण्य का होती है। इसके विपरीत यदि केवल सग्रह वृत्ति मे आसक्त होता है तो आवृत्त हो जाता है। जैसे निरन्तर बाहर निकलता हु निर्मल रहता है तथा निरन्तर उपयोग मे न लिया जाने वाला कुए का पानी गन्दा एव दुर्गन्धियुक्त हो जाता है। यही नदी, कु , तालाब आदि का पानी सिचाई आदि मे काम आता रहा है उनमे पुन जल्दी पानी भर भी जाता है तथा पानी स्वच्छ निर्मल रहता है, लेकिन समुद्र का पानी निरन्तर भरे रहने स खारा हो जाता है। बादल ससार को पानी देते है तो उन्न आकाश मे निवास करते है और समुद्र सग्रहित करता रहता है तो उसे नीचे रहना पडता है। इसीलिए देने वाला महान है। दान से सम्पत्ति घटती नहीं, अपितु बढती है। कवि ने कहा है

चिडी चोच भर ले नदी नीर।
दान दिया धन ना घटे, कह गये दास कबीर।।

न करता है।

दान कभी व्यर्थ नही जाता/ देना, खोना, नही पाना है।

किसी कवि ने कहा है–

दीन को दीजिये होत दयावन्त, मित्र को दीजिये प्रीति बढावे।
सेवक को दीजिए काम करे बहु, शायर को दीजिये आदर पावे।
शत्रु को दीजिए वैर रहे नही, याचक को दीजिए कीरति गावे।
साधु को दीजिये मुक्ति मिले पिण, हाथ को दीघो एलो नही जावे।

यह दानवीरो का भूमि है– भारत की पवित्र वसुन्धरा पर सदैव उदार मनीषियो का अवतरण होता रहा है। यहा पर उत्पन्न दानियो के नाम गिनाना यद्यपि सम्भव नही है। तथापि महाराजा मेघरथ, दानवीर कर्ण, राजा भोज, महाराजा हरिश्चन्द्र, भामाशाह, जगडूशाह आदि अनेक दानवीरो के नाम उल्लेखनीय है, जिन्होने अपने शरीर का ममत्व हटाकर जीवन की बाजी लगाकर भी दान के महत्व को सर्वोच्च शिखर पर प्रस्थापित कर दिया।

कहा जाता है, इन्द्र ने दानवीर कर्ण से, ब्राह्मण का रूप बनाकर कुण्डल और कवच की याचना की। कुण्डल एव कवच का दान देने का अर्थ था मौत को आमत्रित करना। फिर भी कर्ण ने अपने जीवन का मोह त्यागकर याचक की याचना पूरी की। महाराजा मेघरथ ने शरणागत कबूतर को अभयदान देने के लिए जीवन की बाजी लगा दी। राजा भोज, सम्राट हर्ष की दानप्रियता इतिहास प्रसिद्ध है।

मेवाड के महाराणा प्रताप जब धन के अभाव मे देश छोडकर जाने को उद्यत हुए तो भामाशाह ने अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति महाराणा के चरणो मे समर्पित कर दी। इतिहास आज भी उनकी गौरव गाथाएँ गाता है। खेमाशा-देदरानी ने देश मे अकाल के समय अपने अन्न के भण्डार खोलकर दानवीरता का परिचय दिया, शाह पद की रक्षा की तथा हृदय की विशाल करुणा का परिचय दिया। अन्न का दान करके प्राणियो को काल कवलित होने से बचाया, जिस कार्य को बादशाह नही कर पाए, उस कार्य अकेले खेमाशाह ने कर दिखाया। वर्तमान म भी अनक दानवीर है जैसे श्री सुन्दरलाल जी सा० दुग्गड, कोलकाता प्रत्येक क्षेत्र म उदारता पूर्वक दान देकर दानवीरो मे नया कीर्तिमान स्थापित कर रहे है, अत आपने सम्पूर्ण देश म विशेष ख्याति प्राप्त की है। ऐसे दानवीर धन्य हैं।

दान का महत्व– मोक्ष मार्ग मे दान का विशेष महत्व है।

'दाण, सील च तवो, भावो एव चउव्विहो।

अर्थात् दान, शील, तप और भाव यह चार प्रकार दो। अफवाह मत फैलाओ और इनमे दान का प्रथम स्थान पर लिया गया मत करो।
माधुअ तप एव दृष्टु अमत्य घोषणा मत करो।
है। महाकृपि चोरी करो, न चोर को सहयोग दो और न चोरी का माल खरीदो।

देने को टुकडो भलो, लेने को हरिनाम।।

विश्व के सभी दर्शन एव धर्मो मे दान की महता को स्वीकार किया गया है। आज के इस भौतिक युग मे दान का विशेष महत्व है। विश्व मे आर्थिक असमानता, असतोष एव परिग्रह वृत्ति अधिक बढी हुई है। अत इस पर काबू पाने के लिए धन के समान वितरण से सुख शान्ति का अनुभव होता है। दान अपरिग्रह का सुन्दर रूप है।

ससार मे व्याप्त लगभग सभी मतो ने करुणा (अहिंसा) को स्वीकार किया है। करुणा से दान की प्रेरणा मिलती है। यदि करुणा होगी तो दान स्वत होगा। दान के अभाव मे दया अपूर्ण है। दान मानवता का स्वभाव है। दान देने मे सक्षम होते हुए भी दु खी को देखकर नहीं देना मानवता के विपरीत है। रहीम कवि कहते है–

रहिमन वे नर मर चुके, जे कहुँ मागन जाहिं।
उनते पहले वे मुए, जिन मुख निकसत नाहिं।

दान देने से दोहरा लाभ है, जिसे दिया जाता है उसका सकट दूर होता है तथा दान दाता को आत्म-शान्ति प्राप्त होती है, पुण्य का बन्ध होता है, मानवता की अभिवृद्धि होकर देवत्व की भावना प्रबल होती है। वेद मन्त्र मे कहा है–

'शत हस्त समाहर, सहस्त्र हस्त सकिर' अर्थात् सौ हाथो से एकत्रित करो और हजार हाथो से बाँट दो।

उपदेश तरगिंणी की सूक्ति है– 'पृथिव्या प्रवर दानम्' अर्थात् धरनी पर सर्वश्रेष्ठ कार्य दान है।

दान से अनन्तगुणा लाभ सामान्यतया लोग ऐसा सोचते है कि दान देने से तो धन कम हो जाता है, परन्तु ऐसा सोचना उचित नहीं है। दान देने से पुण्य मे वृद्धि होती है तथा पुण्य के प्रभाव से सब प्रकार की ऋद्धि सहज रूप से प्राप्त हो जाती है।

सगम ग्वाले को आस-पास की पडोसिन महिलाओ ने सामग्री देकर खीर उपलब्ध कराई। वह खीर खाना चाहता था कि मास खमण के तपस्वी मुनिराज पारणे लिए गोचरी पधारे। सगम ने उत्कृष्ट भावना पूर्वक खीर मुनिराज को दे दी, मुनिराज को खीर बहराने के बाद सगम का आयुष्य पूर्ण हो जाता है और गोभद्र सेठ के घर जन्म लेता है। सगम का जीव सहज ही अतुल धन सम्पत्ति का स्वामी बन [illegible]। खीर का शुद्ध आहार दान मे देकर सगम ने शालिभद्र का भव पाया जिसने

२९ अतिथि [illegible] अपनी सम्पत्ति से विस्मित कर दिया।

३० कभी दुराग्रह के वशीभूत [illegible] के अनुसार भी दान आवश्यक तत्व है।

३१ देश और काल के प्रतिकूल आचर[illegible] बढ जाती है तो उन्हे समाज [illegible] हित

३२ जिनके पालन-पोषण करने का उत्तरदा[illegible]हिये। जब ए[illegible] होता है पालन-पोषण करो।

३३ अपने प्रति किए हुए उपकार को नम्रता पूर्वक स्वीकार करो।

३४ अपने सदाचार एव सेवाकार्य के द्वारा जनता का प्रेम सपादित करो।

जो जल बाढे नाव मे, घर में बढे दाम।
दोऊ हाथ उलीचिये, यही सयाने काम।।

धन के बढने पर उसे मुक्त हस्त से दान मे लगा देना चाहिये। जि[illegible] की [illegible]पत्ति दान और भोग मे नहीं लगती तो वह नष्ट हो जाती है। कहा भी है–

धन की गतियाँ ती[illegible] है, दान, भोग और नाश।
[illegible] भोग [illegible] ल[illegible] तो, [illegible] होवे विनाश।।

[illegible] नाश मे सबसे उत्तम उपयोग दान है। दानी व्यक्ति सदैव अमर रहता है। [illegible] न बडा [illegible]पक[illegible]।

सम्राट हर्षवर्धन के लिए ऐसा क[illegible] है कि वे प्रयाग मे कुम्भ के मेले पर अपना [illegible] दान में देते थे। यहा तक कि अपने पहिनने [illegible] वस्त्र भी अपनी तपस्विनी [illegible]श्री स [illegible]लते थ। यह दान का अद[illegible] उदाहरण है।

राजा भो[illegible] की दानप्रियता भी इतिहास प्रसिद्ध है। राज रन्तिदेव ने भी दान मे सम्पूर्ण राज्य दे दि[illegible] [illegible]की परीक्षा ली। उन्हे लगभग ४९ दिन तक आहार नही मिला उसके [illegible] थाडा-सा रूखा-सूखा आहार मिला तो वह भी देव की माया से बने भिखारियो ने मागा और रन्तिदव ने सहर्ष दे दिया। भारतीय इतिहास ऐसे अ[illegible] महापुरुषो के [illegible] से भ[illegible] है। यह यहा की सुसस्कृति का प्रभाव है।

खानखाना रहीम [illegible] [illegible]शिष्ट प्रकार के दाता थे। मुक्त हस्त से दान देते। याचक को कभी रिक्त नही जाने देते थे। देते समय भी नैत्र नीचे रखते थे। कहा जाता है कि उनव[illegible] सम्पूर्ण सम्पत्ति दान मे समाप्त हो गई। उनके पास कुछ भा नहा रहा, ऐसा अवस्था म भा एक याचक आ गया और वे उसे कुछ देना चाहते थे, परन्तु क्या [illegible] यह समस्या थी। उन्हे याद आया कि उनके खाट मे [illegible] [illegible]दी की कील निकालकर नीचे नैत्रो से [illegible] को दे दी। इसी समय उनके मित्र कवि गग आ गये उनसे रहा नहीं गया, पूछ [illegible] भी नैन नीचे क्यो ?

सीखे कहाँ नवाब जु, देनी ऐसी देन।
ज्यो [illegible] [illegible]र [illegible]च [illegible] नीचे नैन।।

कवि रहीम ने जवाब दिया-

[illegible] हार कोऊ और है, देता है दिन रैन।
[illegible] मानव भ्रम मुझपे करे, नाते नीचे नैन।।

[illegible] दन का कैसा विशिष्ट तरीका था। दान देते हुए भी [illegible] मस्तक झुक रहा था। सोचते थे कि [illegible] तो माध्यम हूँ देता तो मालिक है लेकिन मैं अपने हाथ से [illegible] हू इसलिए लोग [illegible] कि [illegible] मैने दिया है। यह सोचकर वे शर्म से मस्तक झुका देते थे।

काम ही पूजा थी

मुकेश अम्बानी
चेयरमैन, रिलायस इण्डस्ट्रीज लिमिटेड

आज मै जो कुछ भी हूँ मेरे पापा की वजह से ही हूँ। वे मेरे पिता, शिक्षक, मार्गदर्शक सभी कुछ थे। उनके बारे मे कुछ लिखना उतना ही मुश्किल है जितना कि अपनी आत्मा मे झाकना। जब अपना साथ देने के लिए उन्होने मुझे स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय से वापस बुलाया तो उन्होने मेरे लिए एक नई दुनिया के दरवाजे खोल दिये। मैंने यह महसूस किया कि वे अपने आप में स्वय एक विश्वविद्यालय थे, ऐसा विश्वविद्यालय जो जिन्दगी के उतार-चढाव की कसौटी पर खरा उतरा था, जहाँ चुनौतियो का और मुश्किलो का धैर्य से सामना करने की सीख मिलती है। उनके विश्वविद्यालय मे दूरगामी रणनीतियाँ समझदारी की स्याही से लिखी जाती थी और सामने ऐसे लक्ष्य प्रस्तुत किए जाते जो पहले कभी प्राप्त नही किए गया। ऐसे लक्ष्य जिन्हे हासिल करने के लिए लगातार चुनौतियो का सामना करना होता था।

उनके लिए जिदगी का अर्थ था ... ने आगे निकलना। उन्होने हमे स्थापित मूल्यो को पुनर्परिभाषित करना सिखाया है। वे कडी मेहनत करवाने वाले शिक्षक थे। वे प्यार भी करते थे और प्रोत्साहन भी देते थे, लेकिन वे ऐसे नेता थे जिसे काम मे आलस्य या लापरवाही ...

हर कार्य समय पर पूरा देखना चाहते थे। अधीरता उनकी पहचान थी। बाहर से उनका व्यक्तित्व कठोर प्रतीत होता था परन्तु अन्दर से उनका हृदय कोमल आत्मीयता से भरपूर था।

हर दिन मै देखता कि कई लोग उनके पास दुनियादारी की बहुत सी प्रार्थना लेकर आते थे जैसे– बेटी की शादी के लिए आशीर्वाद मागने, अपने बेटे की उपलब्धियो की खुशी बाटने, लघु उद्योग स्थापित करने पर भूमि पूजन मे उन्हे आमत्रित करने या उन्हे गर्व से यह याद दिलाने कि आपका ... नान रिल... ी शेयरधारको मे है। हर कोई खुशी-खुशी वापस जाता, यह देख कर कि जिन धीरुभाई के बारे मे इतना सुना था वह ... वह ही सहृदय पुरुष है। हर व्यक्ति से वे एक दोस्त और शुभचिन्तक का रिश्ता बना लेते थे।

काम उनके लिए असली पूजा थी। उनमे सदा इस बात का उत्साह रहता था कि कुछ ऐसा किया जाए जिससे एक दिशा खुल जाए। उन्होने हमे सदैव नामुमकिन को मुमकिन बनाने का साहस जुटाने और उसे साकार करने के लिए प्रेरित किया। उनमे वह जादू था जो आपको अपनी समस्त सभावनाओ और छिपी हुई शक्ति को उजागर करने के लिए प्रोत्साहित करता था। उनसे मैंने नेतृत्व का सही अर्थ सीखा। हमेशा आगे रहकर कमान सभालो, मुसीबत के समय सुरक्षा कवच बनो और सफलता का यश अपनी टीम के सदस्यो को दो। बुलद शिखरो पर सफलतापूर्वक चढने के बावजूद उनकी जडे धरती मे गहरी थी। अपनी असाधारण जिदगी का ताना-बाना उन्होने आम आदमी को केन्द्र बनाकर ही बुना था। उन्होने अपनी जिदगी की इस डोर को हमेशा मजबूती से पकडे रखा और इसीलिए अन्य धनपतियो की जमात से उन्होने अपनी अलग पहचान बनाई। असल मे वे एक साधारण भारतवासी के सपनो, आकाक्षाओ और सभावनाओ के असाधारण प्रतीक के रूप मे उभरे। वे क्या करना चाहते थे, इसका वे पहले से बिगुल नही बजाते थे। वे एक शिखर पर विजय प्राप्त करते, फिर अगले और ऊँचे शिखर की ओर बढते चले जाते थे। इस दौरान वे राह मे आने वाली चुनौतिया का सामना करने के लिए हमेशा तैयार रहते थे। दर्द और पीडा से वे अनजान हो ऐसी बात नही थी। परन्तु उसकी शिकन भी वे अपने चेहरे पर नही आने देते थे। वे बरगद के एक बडे वृक्ष के समान थे। परन्तु एक पिता के रूप मे उनकी महानता इस बात मे उजागर हुई कि वे कभी भी मुझ पर हावी नही हुए। उन्होने मुझमे अपना पूर्ण विश्वास जताया। इससे मैंने यह बात सीखी और समझी कि विश्वास प्रेरणा का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत है। उन्होने मुझे अपने अडिग विश्वास के साथ भविष्य के सपने बुनने का मौका दिया। उन्होने मेरी योग्यता पर पूर्ण विश्वास किया और मैंने सीखा कि अगर व्यक्ति पर विश्वास किया जाए तो वह बडी से बडी चुनौती का सामना करने के लिए तैयार हो जाता है।

हर व्यक्ति की मन स्थिति को एक साधारण सवाल से मापते थे। वे सबसे पूछते थे, 'क्या तुम्हे काम मे आनद आ रहा है?' और यही उनकी पूरी जिदगी का फलसफा था कि जो काम हमारे लिए बोझ बन जाए उसे करना ही नही चाहिए। इसके लिए वे सदैव जूझते रहे और काम करते रहे। आम लोगो की जिदगी मे खुशियाँ लाने मे ही उन्हे अपार सतुष्टि प्राप्त होती थी। जो भी उनके सम्पर्क मे आया उन्होने उन सभी को भरपूर खुशियाँ दी। पापा मे एक बच्चे जैसी मासुमियत थी, युवाओ जैसी ... थी और एक समझदार बुजुर्ग जैसी निपुणता और अनुभव था। इसीलिए वे एक अद्भुत इसान थे। मै उनका पुत्र होने पर गर्व महसूस करता हूँ। उन जैसे अपूर्व व्यक्तित्व के ७५ वे जन्मदिवस के शुभ अवसर पर मुझे बार-बार यह अनुभूति होती है कि मै कितना भाग्यशाली हूँ कि व मेरे पिता है।

राजस्थान पत्रिका का दि २९-१२-०७ के सौजन्य से

STORY OF SHALIBHADRA

Ganesh Lalwani

The saintly youth Samgama, son of the poor widow Dhanya, grew up in the village of Saligrama in Magadha One day he asked his mother for a dish of sweet rice-milk She could not afford to buy the materials, but her neighbours made her a present of them, and Dhanya gave the dish of rice-milk to her son Just then a great ascetic, about to break a month's fast, arrived Samgama, with profound devotion, handed his dish of rice-milk, and received the blessing of the ascetic He reborn as Salibhadra, the son of the merchant prince Gobhadra and his wife Bhadra, in the city of Rajagriha When grown up, Gobhadra married his son to thirty two beautiful women and proposed to retire from the world Meanwhile Mahavira arrived and Gobhadra took his vows at the Lord's hands Subsequently he died by fasting and was reborn as a god. Thence he descended to visit his son and bestowed upon him rare treasures

Merchants now came from abroad with rare and magnificent shawls which they offered to king Srenika He, however, thought that he could not afford to purchase them Salibhadra's mother then bought the eight shawls, cut each into four pieces and presented them to Salibhadra's wives, who in turn placed them at his feet Cellana, king Srenika's queen, hearing of the shawls begged him to take the shawls from the merchants by force He found that Salibhadra's mother had secured them and repenting of his previous parsimony, offered to buy them from her She, however, could do nothing as she had already given away the shawls The king's messenger reported these matters to the king, who wondered what sort of man this wealthy Shalibhadra must be The king sent his messenger to invite Shalibhadra to visit him But Bhadra instead invited the king to visit Shalibhadra He agreed and was received in state The occasion of the king's visit was the means of Shalibhadra's enlightenment for he reflected he was not his own master

Bhadra prepared a great shampoo for the king As he was being rinsed his signet ring fell into the water, and was lost, but when the water was poured away it was discovered in the jeweled bath, where, however, its glory was dimmed by the splendour of its surroundings The king was somewhat cast down by this but recognized Salibhadra's spiritual superiority He returned to [illegible] palace Salibhadra now proposed to abandon the household life Bhadra endavoured [illegible] him, [illegible]ut the only compromise he would make was to abandon his wives one by one on successive days,

In the same city lived Shalibhadra's sister Subhadra, whose h[illegible] was [illegible] Dhanya She told him in tears that Sh[illegible]bhadra was daily abandoning his wives Dhanya rem[illegible]ked that such a g[illegible] process of renunciation was far from admirable Dhanya's seven other wives protested against this criticism on Dhanya's part, as he was making no renunciation whatev[illegible] On hearing this he renounced the world then and there

Salibhadra heard of this and followed his footsteps Dhanya and Salibhadra received ordination from the hands of Mahavira [illegible]

Dhanya and Salibhadra entered upon a life of severe asceticism [illegible] the end of twelve years they returned to Rajagriha in [illegible] following of Mahavira They were about to break [illegible] fast and visited Bhadra's palace But Bhadra failed to recognize them in their changed guise They received food from a woman anmed Mathataharika who had in the former birth been Salibhadra's mother in Saligrama

[illegible] Dhanya now determined to pursued their path [illegible] end, practiced more severe asceticism, and attained to death by starvation They were reborn in the Sarvarthasiddha [illegible] here they enjoyed the highest bliss